Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

p.6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनु. पंडित श्रीनिवास राघवन दिव्य प्रबंध (आलवारों की वाणियां)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Ground Floor, R.K. Khanna Tennis Stadium Comm...	
...Floor, S.C.O. 26, Commercial Compl... Gurgaon - 122001	51617766
...No. 6, Community Centre, Push Vihar, South Delhi - 110062	51617766
...Deep, 3rd Floor, Unit Nos. 301 to 328, Plot No. 8, Laxmi Nagar Distt Centre, Vikas Marg, New Delhi - 110092	51617766
...No. K-3, 6th Floor, Brahm Datt Tower, Sector 18, Noida - 201301, Uttar Pradesh	51617766
...A-9, Netaji Subhas Palace, Pitampura, West Delhi - 110034	51617766
...Mahatta Tower, 4th Floor, DDA Commercial Centre, Janakpuri - 110058	51617766
..., 2nd Floor, Plot No. 255-256, Sector 12, Phase I, Urban Estate, Karnal - 132001	9896177766
...Floor, S.C.O. 9/10/11, Sector 9-D, Madhya Marg, Chandigarh - 160017	9815977766
...No. 22-23, 1st Floor, G.T. Road, Above Panjab & Sindh Bank, Jallandhar - 144001	9815977766
..., 8th Floor, S.C.O. 146 & 147, Land Mark Chambers, Firoz Gandhi Market, Ludhiyana - 1410..	9815977766
...No. 6, 2nd Floor, Choti Baradari, Patiala - 147001	9815977766
...Computer, 2nd Floor, Above Bharat Overseas Bank, Court Road, Amritsar - 143001	9815977766
...Floor, Raj Honda Building, Plot No. 195/11, Kacheri Road, Ajmer - 305001	9828020066
...No. C 93, Subhas Marg, C-Scheme, Jaipur - 302001	9828020066
...4, PWD Colony, 1st Floor, Jodhpur - 342003	9828020066
..., Rajpur Road, Dehradun - 248001	9897307766
...Building, 1st Floor, Sanjay Place, Agra - 282002	9897307766
...S.P. Marg, Civil Lines, Allahabad - 211001	9897307766
...Building, 1st Floor, 12 C & 12 D, Civil Lines, Near Old R.T.O Office, Bareilly - 243001	9897307766
...Tower, 6th Floor, 16/106, Mall Road, Kanpur - 208001	95522 22945..
..., 1st & 2nd Floor, Thandani Mansion, 31.49, M.G. Marg, Hazratganj, Lucknow - 226001	9935277766
...Palace, 3rd Floor, Tejgarhi, Garh Road, Meerut - 250005	9897307766
...Floor, Arihant Complex, Sigra, Varanasi - 221010	9897307766

West	
Address	Customer Care Number
...Floor, Abhijeet III, Law Garden Road, Near Mithakali, 6 Road, Ahmedabad - 380006	9898277766
...House, 3rd Floor, Judges Bungalow Road, Bodakdev, A32/D32, Sarkhej Gandhi Nagar Highway, Ahmedabad - 380015	9898277766
...Floor, Landmark Complex, Race Course Circle, Baroda - 390007	9898277766
...Plaza, 2nd Floor, Swami Vivekanand Chowk, Dr. Yagnik Road, Rajkot - 360001	9898277766
...State Building, 1st Floor, Unit No. 101, Udhna Darwaja, Ring Road, Surat - 395002	9898277766
...Gold, 2nd Floor, 201-207, Y.N. Road, Indore - 452001	9898277766
...Palace, 1st Floor, Plot No. 11, Zone - II, M.P. Nagar, Bhopal - 462011	9898277766
...Ananta, 2nd Floor, Adalat Road, Aurangabad - 431005	9898277766
...4, Appa Saheb Marathe Marg, Prabhadevi, Mumbai - 400025	28307766
...Floor, Ketan Bhavan, Jamshedji Tata Road (Near Eros Cinema), Churchgate, Mumbai - 40[illegible]	28307766
...Apartments, 1st Floor, Linking Road, Santacruz (W), Mumbai - 400054	28307766
..., Alica Arcade, Jayprakash Road, Opp Wadia High School, Andheri (W), Mumbai - 40005..	28307766
...Arcade, 1st Floor, Sodawala Lane, Borivali (W), Mumbai - 400092	28307766
...Floor, Shreepal Complex, M.G. Road, Ghatkopar (W), Mumbai - 400086	28307766
...Floor, Golden Plaza, Golden Dyes' Compound (Near Royal Inn), Old Agra Road, Thane (W) - [illegible]601	28307766
...Floor, [illegible] (Near U14), Sector 17, Vashi, New Mumbai - 400705	28307766
...House, 2nd Floor, Rabindranath Tagore Road, Civil Lines, Nagpur - 440001	9890447766
...Chambers, Plot No. 196 C, 3rd Floor, Trimbak Road, Trimbak Naka, Nashik - 422002	9890447766
...House, 5th Floor, Jungli Maharaja Road, Shivaji Nagar, Pune - 411005	9890447766
...Group, S. No. 210, T.P. No. 5, Shankar Seth Road, Gultekadi, Swargate, Pune - 41100..	9890447766
...Towers, 3rd Floor, Units No. 304-305 & 306, Plot No. 16, EDC Plaza, Patto, Panjim - [illegible]001	9890447766

South	
Address	Customer Care No.
...1st Floor, [illegible] Building, 13th Lane, Arundelpet, Main Road, Guntur - 522002	9849577766
...Floor, Reliance Classic, Road No. 1, Banjara Hills, Hyderabad - 500034	9849577766
..., 1st Floor, [illegible] Complex, M.G. Road, Near Benz Circle, Vijayawada - 520010	9849577766
...Floor, 401, 402, 403, 10-1-[illegible] Bungalow Road, CBM Compound, Visakhapatnam - [illegible]003	9849577766
...Plaza, 2nd Floor, #136, Residency Road, Bangalore - 560025	9849577766
...14, 9th Main, 3rd Block, Jayanagar, Bangalore - 560011	9849577766
...Floor, City Light Building, Balmatta Road, Hampankatta, Mangalore - 575001	9849577766
...Building, 2nd Floor, [illegible] Bungalow Road, Hubli - 580029	9849577766
..., Thomas Towers, [illegible] Road, North End, Kochi - 682035	9849577766
...Coastal, 1st Floor, K.K. Road, [illegible] - [illegible]	9849577766
...Building, 5th Floor, [illegible] South Lane, Round North, Thrissur - 680001	9849577766
...Floor, Kannampalli Arcade, East Fort, Trivandrum - 695023	9849577766
...Corporate Center, No. 3, Village Road, Nungambakkam, Chennai - 600034	52107766
..., 1st & 2nd Floor, Plot No. 11, [illegible] Road, Above Pizza Corner, Adyar, Chennai - 600020	52107766
...Floor, [illegible], 1085, Avanashi Road, P.N. Palayam, Coimbatore - 641037	9894477766
...Complex, 3rd Floor, 41 [illegible] Road, Cantonment, Tiruchirappalli - 620001	9894477766
...2nd Floor, Gown Plaza, [illegible] Pass Road, Madurai - 625010	9894477766

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हलवासिया शोध ग्रंथमाला—ग्रंथांक—१
संपादक—रामसिंह तोमर

दिव्य प्रबंध

(आलवारों की वाणियां)

मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद

भाग—१

परियाळवार तिरुमोळि (संत विष्णुचित्त) की रचनाएं

अनुवादक
पंडित श्रीनिवास राघवन, एम० ए०, रा० भा० विशारद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हलवासिया शोध ग्रंथमाला—ग्रंथांक—१
संपादक—रामसिंह तोमर

दिव्य प्रबंध

(आलवारों की वाणियाँ)

मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद

भाग—१

पेरियाळवार तिरुमोळि (संत विष्णुचित्त) की रचनाएँ

अनुवादक
पंडित श्रीनिवास राघवन, एम० ए०, रा० भा० विशारद

।। हिन्दी भवन, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन ।।

१९८०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकाशक :
हिन्दी भवन, विश्वभारती
शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

प्रथम संस्करण—११०० प्रतियाँ, १९८० ई०

मूल्य—अजिल्द २० रुपये,
सजिल्द २५ रुपये

मुद्रक :
दास प्रिन्टर्स
१२३/१, आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रोड,
कलकत्ता-७०० ००६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रस्तावना

शान्तिनिकेतन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की इच्छानुसार हिन्दी भवन की स्थापना एक शोध केन्द्र के रूप में सन् १९३८ में हुई थी। हिन्दी भवन के कार्यक्रम की योजना पर विचार करने के लिए सन् १९४४ में विशेषज्ञों की एक समिति गठित की गई थी जिसके सदस्य थे डा० धीरेन्द्र वर्मा, पं० ललिता प्रसाद सुकुल, पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य क्षितिमोहन सेन और श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर। समिति ने अन्य सुझावों के साथ एक सुझाव यह दिया था कि हिन्दी भवन में हिन्दी भाषा और साहित्य के मूल उत्सों पर विशेष रूप से कार्य हो और इस सुझाव को ध्यान में रखते हुए महायान, संत मत, सूफ़ीमत, अपभ्रंश जैसे क्षेत्रों को शोध कार्य के लिए चुना गया। योजना का दूसरा पक्ष था हिन्दी साहित्य की प्रमुख विचार धाराओं तथा उत्तरी भारत की चिंतन परंपरा को जिन महान् परंपराओं ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया है उनके मूल साहित्य का हिन्दी में प्रामाणिक अनुवाद उपलब्ध करना। ऐसे आकर साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है दक्षिण के आलवार भक्तों की मूल तमिल रचनाओं का, सूफियों की मूल अरबी, फारसी, तुर्की रचनाओं का, ग्रीक भाषा की प्राचीन ऐतिहासिक रचनाएँ, जिनमें भारत के संबंध में ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उल्लेखनीय सूचनाएँ दी गई हैं।

इनमें से कई योजनाओं पर कार्य हो चुका है और कुछ पर कार्य हो रहा है। आलवारों की वाणियों के कुछ अंशों का अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। प्रथम बार पूरी मूल वाणियों का देवनागरी लिप्यंतरण तथा प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो रहा है। विद्वद्वर पं० श्रीनिवास राघवनजी ने यह महत्वपूर्ण कार्य किया है। कलकत्ता के सुप्रसिद्ध राय बहादुर विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट का विश्वभारती के साथ संबंध—घनिष्ठ और पुराना है। ट्रस्ट ने इस कार्य के लिए तीन वर्ष के लिए एक शोध वृत्ति प्रदान की, उसी कार्यक्रम में पण्डितजी को विश्वभारती ने आमंत्रित किया था। पं० श्री राघवन संस्कृत प्राकृत के प्राध्यापक रह चुके हैं। हिन्दी उन्होंने महात्मा गांधीजी की प्रेरणा से सन् १९२० के आसपास सीखी थी। वर्षों उन्होंने हिन्दी में "नृसिंहप्रिया" नामक पत्रिका का संपादन किया। हिन्दी भाषा पर उनका पूरा अधिकार है। वे 'रामानुज संप्रदाय' के अनुयायी नैष्ठिक वैष्णव हैं। तमिल साहित्य विशेषरूप से आलवारों के वैष्णव साहित्य के वे अधिकारी विद्वान् हैं। हमारे अनुरोध को उन्होंने स्वीकार किया और अनेक असुविधाओं के रहते हुए भी वे यहाँ आकर दो वर्ष हिन्दी भवन में रहे और अपूर्व लगन से उन्होंने यह कार्य पूरा किया। विश्वभारती उनकी इस कृपा के लिए आभारी है।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिव्य प्रबंध के प्रकाशन के लिए हलवासिया ट्रस्ट तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने आर्थिक सहायता प्रदान की है। हम हलवासिया ट्रस्ट तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दोनों के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

आलवारों की कृतियों को आठ भागों में प्रकाशित करने की योजना है। इनमें से एक भाग में आलवारों की भक्ति, दर्शन, उनकी रचनाओं के संबंध में विवेचन रहेगा। अन्य भागों में मूल रचना का देवनागरी में लिप्यंतर तथा हिन्दी अनुवाद रहेगा।

आशा है विद्वान् इस प्रकाशन का आदर करेंगे।

रामसिंह तोमर
सम्पादक,
हलवासिया शोध ग्रंथमाला

गुरु पूर्णिमा,
स० २०३७ वि०
हिन्दी भवन
शांतिनिकेतन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निवेदन

मानव द्वारा परब्रह्म का अन्वेषण दर्शन है और सर्वेश्वर द्वारा मानव का अनुसरण धर्म है। ब्रह्म में दो प्रकार के गुण हैं—परत्व और सौलभ्य। दर्शन में प्रधानतया ब्रह्म के परत्व का उल्लेख है और धर्म में सौलभ्य का। परत्वप्रधान होती हैं उपनिषदें और सौलभ्यप्रधान होते हैं संतों के प्रवंध। परब्रह्म के इस सौलभ्य गुण का अनुसंधान कर के संत प्रेमभक्तिप्रवाह में मग्न हो कर रहते हैं। अतएव तमिल में वैष्णव संत 'आल्वार' (अर्थात् प्रेमभक्ति सागर मग्न) कहलाते हैं।

आल्वारों ने श्रीमन्नारायण के स्वरूप और रूप, गुण और लीला का अनुभव नाना प्रकार से किया है। कभी परब्रह्म और वैकुंठस्थ पर वासुदेव का अनुभव करते हैं तो कभी क्षीरसागरशायी व्यूहरूप का अनुभव; कभी मत्स्य कूर्म वामन नरसिंह राम कृष्ण आदि विभवावतार का अनुभव करते हैं तो कभी श्रीरंग, वेंकटाचल, वृन्दावन बदरी आदि क्षेत्रों में विराजमान क्रमशः भगवान् श्रीरंगनाथ, श्रीवेंकटेश्वर, श्री मुरलीधर, नारायण आदि अर्चावतार के रूप में अनुभव करते हैं।

यह अनुभव भी विचित्र रूप से है—कभी भक्त के रूप में, कभी पिता दशरथ के रूप में, कभी कौसल्या यशोदा देवकी आदि माताओं के रूप में, कभो नायिका के रूप में—वह भी संयोग दशा में और विरह दशा में। संत परकाल का एक विलक्षण अनुभव है जिसमें वे पराजित रावण के सैनिक हो कर श्रीरामचन्द्र से करुणा की प्रार्थना करते हैं। संतों में कुछ उच्चकुल के होते हैं तो कुछ तद्भिन्न कुल के। उन में अनेक पुरुष हैं—एक आंडाल (गोदादेवी) को छोड़ कर ये बारह संत हैं।

संतों की प्रेमभक्ति का अनुभव-परीवाह ही तमिल में पद्य-माला के रूप में निकला है जिन में ४००० पद्य हैं। यह चतुःसहस्री चौबीस प्रबंधों में विभक्त है। ब्रह्मा के अनुग्रह से वाल्मीकि महर्षि द्वारा रामायण प्रवंध के अवतार के समान साक्षात् परब्रह्म श्रीमन्नारायण की कृपा से इन प्रबंधों का आविर्भाव हुआ। तमिल भाषा में होने के कारण, भाषा की सरलता के कारण, भक्तिपूर्ण होने के कारण ये प्रबंध दक्षिण में लोकप्रिय हैं, विशेष कर श्रीवैष्णवों में तथा तमिल साहित्यज्ञों में।

वैष्णव संतों के पद्यों के इस हिन्दी अनुवाद के विषय में कुछ निवेदन करना है। तमिल के मूल पद्यों में प्रत्येक पद्य के पादों के तथा पदों के भी क्रमानुसार अनुवाद करने का प्रयत्न किया है। अतः कहीं कहीं कुछ शब्द परिवर्तन अथवा वाक्य परिवर्तन कर के लिखा गया हैं, जिससे वह हिन्दी प्रेमियों को मधुर और श्रवणप्रिय लगे। मूल पद्य के क्रमानुसार अनुवाद करने का संकल्प करने से कुछ त्रुटि हुई होगी। हिन्दी-प्रेमी क्षमा करें। संस्कृत के जो जो शब्द आल्वारों के पद्यों में हैं वे वैसे ही रखे गए हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगभग साठ वर्ष पहले हिन्दी सीख कर दक्षिण भारत हिंन्दी प्रचार सभा की ओर से हिन्दी प्रचार करने लगा। चालीस वर्ष पहले आचार्य श्री सौम्यमूर्ति स्वामी से संत-वाणी का अध्ययन किया था। अब भगवान् आल्वार और आचार्य के अनुग्रह से विश्वभारती विश्वविद्यालय की ओर से हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री राम सिंह तोमर की सहायता से यह हिन्दी अनुवाद पूर्ण हो रहा है। मैंने ईश्वर पर भार रख कर यथाज्ञान और यथाशक्ति यह हिन्दी अनुवाद किया है। त्रुटियों की संभावना होगी ही। भक्तों से तथा विद्वज्जन महानुभवों से प्रार्थना है कि वे कृपया दोषों की उपेक्षा करें और संतवाणी-संबंध देख कर इसे स्वीकार कर के मुझे अनुगृहीत करें।

यहाँ पर मैं विश्वभारती हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यापक श्री रामपूजन तिवारी को अपनी कृतज्ञता निवेदन करना चाहता हूं जिन्होंने मेरे शान्तिनिकेतन में रहते समय मेरे साथ बैठकर प्रथम १५०० तमिल पद्यों को सुन कर उनके अनुवाद को भी देखा और संशोधन किया।

दक्षिण के इन वैष्णव संतो की (अर्थात् आल्वारों की) जीवनी, उन के प्रबंधों कां संक्षेप, दक्षिण भारत की सांप्रदायिक रीति, तमिल साहित्य की संक्षिप्त परिपाटी, आदि का विवरण देने का विचार है। आशा है कि विश्वभारती विश्वविद्यालय की सहायता से वह संपन्न हो जायगा।

ईश्वर कृपा करे कि मेरी सेवा और परिश्रम सफल हो।

श्रीनिवास राघवन

मद्रास
१२।७।८०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सन्त श्रीविष्णुचित्त

(पेरियाल्वार)

"ज्येष्ठे स्वातीभवं विष्णुरथांशं धान्विनः पुरे ।
प्रपद्ये श्वशुरं विष्णोः विष्णुचित्तं पुरःशिखम् ।।"

[श्री धन्वीनगर में जेठ महीने में स्वाती नक्षत्र के दिन अवतरित संत श्रीविष्णुचित्त की वन्दना करता हूं जो पुरःशिखकुलीन हैं, जो विष्णुरथांश (अर्थात् गरुड़ांश) हैं और जो (श्रीरंगनाथ) के ससुर माने जाते हैं।]

कलियुग के आरम्भ में दक्षिण भारत के श्रीविल्लिपुत्तूर क्षेत्र में—जो धन्वीक्षेत्र भी कहलाता है—एक पूर्वशिख ब्राह्मणकुल में जेठ मास स्वाती नक्षत्र में विष्णुचित्त का जन्म हुआ। कहते हैं कि वह श्रीमन्नारायण के वाहन गरुड का अंश था। परमात्मा की निर्हेतुक कृपा से बालक में ईश्वर-भक्ति का उदय हुआ और वह दिन-दिन बढ़ती रही। जात्युचित वेदाध्ययन और शास्त्र शिक्षा आदि प्राप्त कर के वह सोचने लगा कि आत्मोज्जीवन का समीचीन उपाय कौन है ? वह इस निश्चय पर आया कि परमात्मा की सेवा ही सर्वश्रेष्ठ है और उसमें ही पुष्प-माला गूंथ कर उसको भगवान् को समर्पित करना। इतिहास में कृष्णावतार में एक मालाकार की कथा है। वह कंस का सेवक था और उसे प्रतिदिन मालाएँ देता था। एकदिन जब श्रीकृष्ण मथुरा आ कर वीथी में जाते थे और दैववशात् देखा कि एक मालाकार सुंदर पुष्पमालाएँ ले कर राजमहल की ओर जा रहा है, कृष्ण ने उससे माला मांगी, मालाकार ने कृष्ण की शोभा और सौंदर्य देख कर सब मालाएँ उन्हें दे कर अपने को कृतार्थ माना। कृष्ण भी मालाएँ ले कर बहुत प्रसन्न हुए और मालाकार पर अनुग्रह किया। इस कथा से विष्णुचित्त बहुत प्रभावित हुआ।

श्रीविष्णुचित्त ने एक फुलवारी तैयार कर के रंगबिरंगे सुगंधित फूलों की लताएँ, पौधे और वृक्ष लगाए। प्रतिदिन तुलसी और चम्पक, मालती और मल्लिका के पुष्पचुन कर गूंथ कर श्रीविल्लिपुत्तूर के भगवान् श्रीवटपत्रशायी को समर्पित करके अपने को कृतकृत्य मानते थे।

इसी समय दक्षिण मथुरा (कूडल) में पांड्य वंश का वल्लभदेव नाम का एक नृपति राज करता था। वह बड़ा धार्मिक और प्रजाप्रेमी था और स्वयं रात में वेष बदल कर नगर में घूम कर जान लेता था कि प्रजा को किसकी कमी है और कैसे उसे संतुष्ट करे। एक रात इस प्रकार जाते समय उसने देखा कि एक वृद्ध ब्राह्मण एक घर की बाहरी वेदी पर लेटा था। उसे जगा कर राजाने पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो। ब्राह्मण ने कहा—मैं एक ब्राह्मण हूँ। गंगा-स्नान कर के आया हूँ और अब रामेश्वर जा रहा हूँ।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रात होने से यहाँ ठहरा हूँ। राजा ने उससे प्रार्थना की कि आप बड़े विद्वान दीखते हैं। मुझे कुछ उपदेश दीजिए। ब्राह्मण बोला—वर्षा के दिनों में जीविका के लिए अन्य महीनों में अर्थ कमाना चाहिए, रात्रि के लिए दिन में, वार्धक्य के लिए यौवन में तथा परलोक की प्राप्ति के लिए इसी जन्म में।

"वर्षार्थमष्टौ प्रयतेत मासान् निशार्थमर्थं दिवसं यतेत।
वार्धक्यहेतोः वयसा नवेन परत्र हेतोरिह जन्मना च॥"

उपदेश ग्रहण कर के नृपति महल लौटा। प्रातःकाल होते ही अपने पुरोहित धनपूर्ण को बुला कर उससे प्रश्न किया कि सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ प्राप्ति का ज्ञान हमें कैसे होगा? पुरोहित ने उत्तर दिया—राज्य के सुशिक्षित विद्वानों को बुला कर उनसे चर्चा कर के निश्चय कर लें। राजा को भी यह उचित लगा। उसने एक थैली में धन बाँध कर एक खंभे के सिरे पर लटका दिया और घोषणा करवायी कि सभी विद्वान लोग आवें और अपनी बुद्धिमत्ता से परतत्त्व निर्णय के वाद-विवाद में जीत कर धन ले लें। दूसरे दिन वैसे ही सब किया गया और पढ़ेलिखे शास्त्रज्ञ विद्वान् आ कर एकत्रित हुए।

श्रीविल्लिपुत्तूर के भगवान् ने संकल्प किया कि मैं अपने भक्त विष्णुचित्त से परतत्त्व का निर्णय कर के लोकोज्जीवन काम करूँ। रात में विष्णुचित्त को स्वप्न में दर्शन दे कर कहा कि आप मथुरा जाइए और विद्वत्सभा में परतत्त्व का निर्णय कर के विजय-सम्मान प्राप्त कर आइए। विष्णुचित्त ने निवेदन किया—मुझे वेदांत का ज्ञान कहाँ है? मेरा तो परिचय हंसिया और कुदाली से, फुलवारी और टोकरी से है। पंडितों के आगे मैं बोल कैसे सकता हूँ? भगवान् ने कहा—आप सभा में जाइए और बोलिए। हम आपके जिह्वाग्र में रह कर परतत्त्व निर्णय की वचनशक्ति देंगे।

दूसरे दिन श्रीविष्णुचित्त प्रातःकाल उठ कर दैनिक कर्मानुष्ठान समाप्त कर के पुष्पमालाएँ ले कर मंदिर गए और भगवान् को पहना कर अंजलिसहित खड़े रहे। भगवान् ने पूजकों द्वारा अपनी माला उतरवा कर उन्हें पहनवा कर मथुरा जाने की आज्ञा दी। भक्तियुक्त विष्णुचित्त मथुरा आए और पांड्य नृपति ने सादर स्वागत कर के सभा में स्थान दिया। चर्चा प्रारंभ हुई। विद्वानों ने अपने अपने अधीन शास्त्र के अनुसार पुरुषार्थ तथा तत्प्राप्ति के उपाय का उल्लेख किया। अंत में श्रीविष्णुचित्त उठे और सांजलिबंध भगवान् का ध्यान कर के पंडितों की युक्तियों का सप्रमाण खंडन किया और यह सिद्धान्त स्थापित किया कि श्रीमन्नारायण ही परतत्त्व है, उसके चरणकमल ही उपाय है और उसकी सेवा ही परम पुरुषार्थ है। "श्रीमान् नारायणो नः पतिः अखिलतनुः मुक्तिदः मुक्तभोग्यः"—श्रीमन्नारायण ही हमारे स्वामी सब चेतानाचेतन उसके शरीर हैं, वही मोक्ष-दाता है, और मोक्ष दशा में उसी का अनुभव किया जाता है। श्रीविष्णुचित्त के सुदृढ़ श्रुति-स्मृति आदि के प्रमाण वचनों के साथ युक्तियुक्त और निष्पक्षपात वाद सुन कर सब पंडितों ने उनकी प्रशंसा की। नृपति इससे बहुत प्रभावित हुआ। एक अद्भुत घटना दैवयोग से हुई कि धन-थैलीयुक्त स्तंभ ने स्वयं झुक कर थैली श्रीविष्णुचित्त के हाथ में रख दी।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांड्य नृपति ने श्रीविष्णुचित्त को हाथी पर बिठा कर छत्रचामर और वाद्य-वृंद के साथ मथुरा की वीथियों में एक जुलूस निकाला। श्रीविष्णुचित्त की प्रशंसा करते हुए सब पंडित और नृपति उसमें सम्मिलित हुए। जब जुलूस चल रहा था तब गरुड़ पर आरूढ़ हो कर आयुध-आभरणों से भूषित साक्षात् लक्ष्मी और नारायण अंतरिक्ष में दिखाई दिए मानो अपने पुत्र की विजययात्रा देखने के लिए माता पिता निकल आए हों। उनके दर्शन कर के श्रीविष्णुचित्त पहले आनन्दित हुए। परंतु उत्तरक्षण में उनके मन में यह आशंका उत्पन्न हुई कि उसके निरुपम सौंदर्यमय जलदसदृश मनोहर रूप को देख कर संसारियों की बुरी दृष्टि उस पर पड़े तो क्या करें। अतिस्नेह के कारण श्रीविष्णुचित्त भूल गए कि परमात्मा सर्वशक्त है और जगद्रक्षक है। सर्वरक्षक का रक्षा मंगल करने के लिए (अर्थात् मंगलाशासन) करने के लिए श्रीविष्णुचित्त ने हाथी पर लटकती घंटियाँ हाथ में ले कर झाँझ के काम में लाए और दिव्यदंपती लक्ष्मी-नारायण की रक्षा के लिए 'जुग जुग जीओ' ('पल्लाण्डु पल्लाण्डु') गाने लगे। विद्वद्गोष्ठी भजनमंड्ली बन गई।

सर्वशक्ति परमात्मा की रक्षा करने के लिए उत्कंठित हो जाने की यह भावना और प्रवृत्ति संत श्रीविष्णुचित्त की असाधारण है। अधिक स्नेह से भय की आशंका होती है— "अतिस्नेहः पापशंकी"—और वह प्रेमभक्ति ईश्वर को अपनी रक्षा वस्तु समझ कर उसकी रक्षा में लग जाती है। जीवात्मा और परमात्मा में जो रक्ष्य-रक्षक भाव है वह उलटा हो जाता है अत्यंत भक्तियुक्त संतों में।

इस प्रकार 'कूडल्' क्षेत्र में (जो आजकल 'मथुरा' नाम से प्रसिद्ध है) संत श्रीविष्णुचित्त के प्रबंध (श्रीविष्णुचित्त पद्यावली 'पेरियाल्वार तिरुमोलि') का अवतार रक्षामंगल से आरब्ध होता है। श्रीविष्णुचित्त पांड्य नृपति का सम्मान और पंडितों की प्रशंसा पा कर अपने स्थान श्रीविल्लिपुत्तूर लौटे और सीधे वट-पत्र-शायी के मन्दिर जा कर अपने सम्मान को उसके चरणों में अर्पित किया। फिर यथापूर्व माला-कैंकर्य में लग गए और भगवान् के गुण और विभूति के अनुभव में मग्न हो कर रहे। आण्डाल नाम से प्रसिद्ध श्रीगोदादेवी इनकी पुत्री थी जिसका आविर्भाव इनकी फुलवारी में तुलसी-पौधे के पास हुआ था जैसे सीता जी का मिथिला के जनकमहाराज की यज्ञभूमि से। आण्डाल भी तमिलनाडु के संतों में एक है ; साथ ही भगवान् श्रीरंगनाथ की प्रियतमा।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संत श्रीविष्णुचित्त के प्रबंध का संक्षेप

श्रीविष्णुचित्त के प्रबंध में ४७३ पद्य हैं जो पाँच शतकों में विभक्त हैं और प्रत्येक शतक दस दशकों में। प्रबंध का आरंभ 'रक्षामंगल' से (तिरु-प्-पल्लाण्डु से) होता है श्रीकृष्ण के लावण्य, गुण और लीलाओं में आल्वार इतने मग्न हुए कि वे साक्षात् यशोदा बन गए। उन्हें श्रीकृष्ण के जन्म से ले कर क्रीड़ाओं का साक्षात्कार हुआ जो गान-योग्य पद्यों के रूप में निकला। तमिल साहित्य में एक प्रबंध-निर्माण की प्रथा है जो 'पिळ्ळै-त्-तमिल्' (अर्थात् बाल-चरित्र) कहलाता है। कदाचित् यह प्रथा श्रीविष्णुचित्त के प्रबंध में ही हम पहले पहल देखते हैं। इसमें कृष्ण का जन्म, गोकुल में गोपों का आनन्द-कोलाहल, श्रीकृष्ण को पालने में सुलाना, लोरी सुनाना कर्णवेधन, कुछ महीने बीत जाने पर शिशु को बाहर ले जा के चन्दा-मामा दिखाना, स्नान कराना, बालक कृष्ण का ताली-पीटना, नर्तन करना, माता की पीठ से लग जाना, दूध पीना, घुटनों के बल चलना आदि बाल्य-क्रीड़ाएँ, दही-माखन-चोरी, मटका लुढ़काना, बछड़ों को खोल देना, गाय-बछड़े चराना, वृंदावन-नृत्य, बंसी बजाना गोवर्धनोद्धार आदि अति भावुक रीति से वर्णित हैं। बीच बीच में संसारी लोगों को उपदेश देते हैं—अपनी सन्तान को परमात्मा का नाम रखो जिससे बार बार वह नाम लेने से तुम्हारा पाप दूर हो जाएगा। वे कहते हैं कि "नारायण की माता नरक नहीं जाती"। कभी कभी नैच्यानुसंधान भी है जहाँ वे परमात्मा से निवेदन करते हैं कि मरते समय तुम्हारा स्मरण करने की शक्ति मुझ में नहीं होगी। अतः अभी मैं स्मरण करता हूँ और तुम सावधान रह कर मेरी रक्षा करो। एक दशक में हनुमान के श्रीराम का संदेशवाहक हो कर सीता जी से कथित कई स्मारक-चिह्न सुंदर रूप से वर्णित हैं। संत श्रीविष्णुचित्त अंत में भगवान् कृपा से अपने सौभाग्य और कृतकृत्यता का वर्णन करते हुए प्रबंध समाप्त करते हैं।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेरियाळ्वार

संत श्रीविष्णुचित्त

संत-वंदन

संस्कृत

i. गुरुमुखम् अनधीत्य प्राह वेदान् अशेषान्
नरपति-परिक्लृप्तं शुल्कम् आदातुकामः।
श्वशुरम् अमरवन्द्यं रंगनाथस्य साक्षात्
द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि॥

[मैं द्विजकुल-तिलक श्रीविष्णुचित्त को नमस्कार करता हूं जो साक्षात् रंगनाथ भगवान् के ही श्वशुर थे, जो देवों के द्वारा भी पूजनीय थे और जिन्होंने पांड्य नृपति से परिकल्पित विद्याशुल्क को ग्रहण करने के संकल्प से अशेष वेदों के सारार्थ का प्रतिपादन किया— वेद जिनका उन्होंने गुरुमुख से अध्ययन नहीं किया था और जो उन्हें स्वयं वरण कर आये।]

तमिल-पद

ii. मिन्नार् तड-मदिळ् शूळ् विल्लिपुत्तूर् एन्रु ओरु-काल्
शोन्नार् कळर्-कमलम् शूडिनोम्-मुन्नाळ्
किळि अरुत्तान् एन्रु उरैत्तोम् कीळ्मैयिनिल् चेरुम्
वळि अरुत्तोम् नेञ्जमे वन्दु।

[मन ! तुम्हारे आनुकूल्य के कारण ही उन महापुरुषों के चरण-कमल हमने शिरोभूषण बनाये जिन्होंने एक बार भी चमकीले परकोटों से परिवृत श्रीविल्लिपुत्तूर नगर का नाम लिया हो ; जो (नगर) संत श्रीविष्णुचित्त का जन्मस्थान है। तुम्हारे ही कारण पूर्वकाल में श्रीविष्णुचित्त ने विद्या-शुल्क जीत लिया यह कहने में हम समर्थ हुए और अधःपतन के मार्ग को भी नष्ट कर दिया।]

[विद्या-शुल्क—एक स्पर्धा में भाग ले कर जीतनेवालों को पुरस्कार के रूप में देने के लिये सुवर्ण आदि बहुमूल्य वस्तुओं को एक रेशमी वस्त्र में बांध कर ऊंचे खंभे पर लटका देते हैं। जीतनेवाला उसे काट कर अपनाता है। कभी कभी जीतनेवाले की महिमा के कारण वह खंभा स्वयं झुक कर पुरस्कार-सहित रेशमी वस्त्रको उसके हाथ में पहुंचा देता है जैसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेरियालवार के संबंध में हुआ था। तमिल साहित्य में बार बार इस विद्या-शुल्क का उल्लेख मिलता है।]

iii. पाण्डियन् कोण्डाड-प्-पट्टर्-पिरान् वन्दान् एन्रु
ईण्डिय शङ्गम् एडुत्तु ऊद—वेण्डिय
वेदङ्गळ् ओदि विरैन्दु किळि अरुत्तान्
पादङ्गळ् यामुडैय पर्रु ॥

[संत श्रीविष्णुचित्त के चरण-कमल ही हमारे अवलंब हैं जिन्होंने अपेक्षित वेद-वाक्यों का प्रतिपादन कर अनायास ही विद्या-शुल्क को काट कर अपनाया, जो पाण्ड्य-राजा से सम्मानित हुए और जिनकी प्रशंसा में शंख-ध्वनि करते हुए सभी बोल उठे—'पूज्य भट्टनाथ (श्रीविष्णुचित्त) पधारें'।]

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेरियाळ्वार तिरुमोळि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेरियाळ्वार् तिरुमोळि

I. i. पल्लाण्डु

1. पल्लाण्डु पल्लाण्डु, पल्लायिरत्ताण्डु पल्कोडि नूरायिरम्,
मल्लाण्ड तिण्डोल् मणिवण्णा ! उन् शेवडि शेव्वि तिरुक्काप्पु ॥ 1

2. अडियोमोडुम् निन्नोडुम् पिरिविन्रि आयिरम् पल्लाण्डु,
वडिवाय् निन् वल-मार्बिनिल् वाळ् किन्र मंगैयुं पल्लाण्डु,
वडिवार् शोदि वलत्तु उरैयुम् शुडराळियुम् पल्लाण्डु,
पडै पोर् पुक्कु मुळङ्गुम् अप्-पांच-शन्नियमुम् पल्लाण्डे ॥ 2

3. वाळाट्पट्टु निन्रीर् उळ्ळीरेल् वन्दु मण्णुम् मणमुम् कोण्मिन्,
कूळाट्पट्टु निन्रीर्हळै एङ्गळ् कुळुविनिल् पुहुदलोट्टोम्,
एळाट्कालुम् पळिप्पिलोम् नाङ्गळ् इराक्कदर् वाळ् इलङ्गै,
पाळाळाह-प् पडै पोरुदानुक्कु-प्-पल्लाण्डु कूरुदुमे ॥ 3

4. एडु निलत्तिल् इडुवदन् मुन्नम् वन्दु एङ्गळ् कुळाम् पुहुन्दु,
कूडु-मनम्-उडैयीर्हळ् वरम्बोळि वन्दु ओल्लै-क् कूडुमिनो,
नाडुम नहरमुम् नन्गरिय नमो नारायणाय एन्रु,
पाडु-मनम्-उडै-प् पत्तर्-उळ्ळीर् ! वन्दु पल्लाण्डु कूरुमिने ॥ 4

5. अण्ड-क् कुलत्तुक्कु अदिपदियाहि अशुरर्-इराक्कदरै,
इण्डै-क्-कुलत्तै एडुत्तु-क् कळैंद इरुडीकेशन्-तनक्कु,
तोण्ड-क् कुलत्तिल्-उळ्ळीर् वन्दडि-तोळुदु आयिर-नामम् शोल्लि,
पण्डै-क्-कुलत्तै-त् तविर्न्दु पल्लाण्डु पल्लायिरत्ताण्डु एन्मिने ॥ 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पेरियाळ्वार् तिरुमोळि

संत श्रीविष्णुचित्त की श्रीसूक्ति

I. i. तिरु-प्प-ल्लाण्डु

श्रीमंगलाशासन

[परमात्मा के रूप और गुणों से आकृष्ट हो कर संत उनके प्रति भक्ति करते हैं और उसी से आनंदित होते हैं। भगवदनुभव में संतों की दो दशाएँ होती हैं— ज्ञान-दशा और प्रेम-दशा। ज्ञानदशा में उन्हें इस बात का ज्ञान बना रहता है कि श्रीमन्नारायण ही सर्वेश्वर और सर्वरक्षक हैं और बाकी सब उनके अधीन रक्ष्यवर्ग हैं जो परमात्मा से अपने निस्तार की प्रार्थना करते हैं। प्रेम-दशा में संतों को परमात्मा से अत्यधिक प्रेम है, जिसके कारण वे समझने लगते हैं कि परमात्मा रक्ष्य-वस्तु हैं और उनकी रक्षा करना अपना कर्तव्य है। अत: वे भगवान् के मंगल की कामना अर्थात् मंगलाशासन करने लगते हैं।

इस तरह परमात्मा के मंगलाशासन करनेवालों में प्रमुख स्थान संत श्रीविष्णुचित्त (पेरियाळवार) को दिया जाता है। वे अपने पदों को इस मंगलाशासन (पल्लाण्डु) से आरंभ करते हैं।]

1. बहु वर्ष (विजयी रहो), बहु वर्ष (विजयी रहो), बहु सहस्र वर्ष (विजयी रहो)। बहु कोटि शत सहस्र (वर्ष विजयी रहो) मल्ल को परास्त करने में (समर्थ) प्रबल भुजावाले मणि-वर्ण ! तुम्हारे अरुण चरणों का सौंदर्य सुरक्षित रहे।

['पल्लाण्डु' शब्द का अर्थ है 'बहु वर्ष'। यहां 'बहु वर्ष तक जीतते और जीते रहो' इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार 'पल्लाण्डु' कह कर मंगल का आशासन करने से उस शब्द का अर्थ ही मंगलाशासन करना माना जाता है।]

[पांड्य देश की राजधानी मधुरै में राजसभा में एक शास्त्रार्थ हुआ कि कौन पर-देव हैं। जब पेरियाळवार (संत श्री विष्णुचित्त) ने यह स्थापित किया कि श्रीमन्नारायण ही पर-देव हैं, पांड्य-नृपति ने उन्हें हाथी पर बिठा कर एक जुलूस निकाला। तब लक्ष्मीदेवी के साथ भगवान् विष्णु गरुड़ारूढ़ होकर आकाश में आविर्भूत हुए। उन्हें देख कर श्रीविष्णुचित्त 'पल्लाण्डु' (बहु वर्ष विजयी रहो) कह कर उनका मंगलाशासन करने लगे जिससे उन पर संसारियों की नज़र न लगे और उन्हें सब तरह के कल्याण हो।]

2. हम, जो तुम्हारे दास हैं, तथा तुम, (दोनों) बिना वियोग के बहु सहस्र वर्ष (विजयी रहें)। सुंदर रूप के साथ तुम्हारे दक्षिण वक्ष:स्थल में निवास करनेवाली देवी (लक्ष्मी) भी बहु वर्ष (विजयी रहें)। सशरीर ज्योति के समान तुम्हारे दक्षिण में स्थित दीप्तिमान (सुदर्शन) चक्र भी बहु वर्ष (विजयी रहे)। सेना सहित युद्ध में उतर कर गरजनेवाला वह पांचजन्य भी बहु वर्ष (विजयी रहे)।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

6. एन्दै तन्दै तन्दै तन्दै तम्–मूत्तप्पन् एळ्–पडि काल् तोडङ्गि,
वन्दु वळि वळि आट्–चेय् किन्रोम्, तिरु-ओण–त् तिरु-विळविल्
अन्दि-अम्पोदिल् अरि उरुवाहि अरियै अळित्तवनै,
पन्दनै तीर-प् पल्लाण्डु पल्लायिरत्तु आण्डु एन्रु पाडुदुमे ॥ 6

7. तीयिर् पोलिहिन्र शेम्-शुडर् आळि तिहळ्–तिरु–च् चक्करत्तिन्,
कोयिर् पोरियाले ओरुण्डु निन्रु कुडि-कुडि आट्चेय्किन्रोम्,
माय-प्-पोरु–पडै वाणनै आयिरम्–तोळुम् पोळि कुरुदि
पाय-च्–चुळर्रिय आळि-वल्लानुक्कु–प्–पल्लाण्डु कूरुदुमे ॥ 7

8. नेय्यिडै नल्लदु–ओर् शोरुम् नियतमुम् अत्ताणि-च्-चेवहमुम्
कै-अडैक्कायुम् कळुत्तुक्कु-प् पूणोडु कादुक्कु-क् कुण्डलमुम्
मेय्यिड नल्लदोर् शान्दमुम् तन्दु एन्नै वेळ्ळुयिर आक्क–वल्ल,
पैयुडै नाह-प् पहै-क् कोडियानुक्कु–प्–पल्लाण्डु कूरुवने ॥ 8

9. उडुत्तु–क् कळैन्द निन्–पीतह–आडै उडुत्तु–क् कलत्तदु उण्डु,
तोडुत्त तुळाय्-मलर्-शूडि-क् कळैन्दन शूडुम् इत्तोण्डर्हलोम्,
विडुत्त तिशै-क् करुमम् तिरुत्ति–त् तिरु-ओण-त् तिरु-विळविल,
पडुत्त पैन्नाहणै-प् पळ्ळि कोण्डानुक्कु-प्-पल्लाण्डु कूरुदुमे ॥ 9

10. एन्नाळ् एम्पेरुमान् उन्–तनक्कु अडियोम् एन्रु एळुत्तुप्पट्ट
अन्नाळे, अडियोङ्गळ् अडि-क् कुडिल् वीडु पेरु उय्न्ददु-काण्,
शेन्नाळ् तोर्रि-त् तिरु-मदुरैयुळ् शिलै कुनित्तु, ऐन्दलैय
पैन्नाह-त् तलै-प् पायन्दवने ! उन्नै-प् पल्लाण्डु कूरुदुमे ॥ 10

11. अल्–वळक्कु–ओन्रुम् इल्ला अणि-कोट्टियर्-कोन्, अबिमान-तुङ्गन्,
शेल्वनै-प् पोल-त् तिरुमाले ! नानुम् उनक्कु-प् पळवडियेन्,
नल्–वहैयाल् नमो नारायणा एन्रु नामम् पल परवि,-प्-
पल्वहैयालुम् पवित्तिरने ! उन्नै–प्–पल्लाण्डु कूरुवने ॥ 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

3. (तुम लोग) निस्तार के लिये दास बन कर रहनेवाले हो तो आकर मृत्तिका एवं गंध को ग्रहण करो। अन्न के दास बन कर रहनेवालों को (हम) अपने दल में प्रविष्ट होने नहीं देंगे। सात पीढ़ियों से हम निंदा-रहित हैं। राक्षसों का वासस्थान लंका राक्षस-शून्य हो गया, इस प्रकार आयुध लेकर युद्ध करनेवाले को 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' (हम सब) बोलेंगे। 3

4. शरीर को भू-तल में डालने के पहले (अर्थात् मृत्यु के पहले) आ, हमारे दल में प्रविष्ट होकर एक हो जाने के मनवालो! परिमित (फल की अपनी इच्छा) छोड़ कर शीघ्र ही आ, (हम से) एक हो जाओ। जनपद और नगर जिससे सुस्पष्ट जान लें इस प्रकार 'नमो नारायणाय' कह कर गाने के मनवाले भक्त हो तो, आकर 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोलो। 4

5. दास-कुल में होनेवालो! जो ब्रह्मांड के समूहों का अधिपति है और जिसने असुरों तथा राक्षसों के हीन कुल को उखाड फेंक दिया, उस हृषीकेश के पास आ, पुराने कुल को छोड़ कर, चरणों में नमस्कार कर, सहस्रनाम बोल कर, 'वहु वर्ष (विजयी रहो) वहु सहस्र वर्ष (विजयी रहो)' कहो।

[परमात्मा के स्वरूप तथा स्वभाव को जान कर भक्ति से दास बन कर रहनेवालों का कुल 'दास-कुल' है। उसके पहले अनादि काल से आनेवाला कुल 'पुराना कुल' है। पुराने कुल के मनुष्यों के मन में अहंभाव और अभिमान बना रहता है और वे अपने को स्वतंत्र मानते हैं। दासकुल में आने के बाद वे अपने को भगवान् के अधीन और दास मानते हैं।] 5

6. हम, हमारे पिता, (उनके) पिता, (उनके) पिता, (उनके) पिता और (उनके) पिता एवं पितामह सात पीढियों से आरंभ कर आ यथाविधि दास्य करते हैं। श्रवण के मंगल त्यौहार पर सायंकाल के समय जिन्होंने सिंह-रूप धारण कर शत्रु का वध किया उनके प्रति 'वहु वर्ष (विजयी रहो) वहु सहस्र वर्ष (विजयी रहो)' कह कर गाओ जिससे बालारिष्ट (उनका अमंगल) न हो।

[श्रवण नक्षत्र के अभिमानी देवता विष्णु हैं। यद्यपि श्रीनृसिंह भगवान् का अवतार स्वाती नक्षत्र में हुआ यहां श्रवण कहने का तात्पर्य यह है कि जहां भगवान् के अवतार के नक्षत्र का उल्लेख नहीं, वहां श्रवण नक्षत्र ही माना जाय। यदि रोहिणी, पुनर्वसु, स्वाती किसी भी नक्षत्र में भगवान् का अवतार कहा गया हो, तब मानना चाहिये कि उस नक्षत्र में श्रवण नक्षत्र का अंश है।] 6

7. अग्नि (चंद्र सूर्य आदि) ज्योतिर्मय वस्तुओं से भी दीप्तिमान लाल तेजोराशि से शोभायमान (सुदर्शन) श्री चक्र जिस मंडलाकार वस्तु में रहता है, उसके चिह्न से अंकित हो कर सकुटुंब (हम) कैंकर्य करते हैं। हम चक्र (सम्हालने में) समर्थ उन (भगवान्) को 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोलेंगे जिन्होंने चक्र को ऐसा घुमाया जिससे माया से युद्ध करनेवाले बाण (असुर) की सहस्र भुजों से रक्त-वर्ष प्रवाहित हो उठा। 7

8. घृत से तर, शुद्ध और विलक्षण अन्न और नियति और (परमात्मा की) अंतरंग सेवा, और हाथ से (दिया हुआ) पान सुपारी और गले के हार के साथ कान का कुंडल और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

12. पल्लाण्डु एन्रु पवित्तिरनै-प्-परमेट्टियै,-च् चार्ङ्गम् एन्नुम्
विल्लाण्डान्-तन्नै विल्लिपुत्तूर् विट्टुचित्तन् विरुम्बिय शोल्,
नल्लाण्डु एन्रु नविन्रु उरैप्पार् नमो नारायणाय एन्रु,
पल्लाण्डुम् परमात्मनै-च् चूळ्न्दिरुन्दु एत्तुवर् पल्लाण्डे ॥ 12

I. ii. वण्णमाडङ्गळ्

श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव

13. वण्ण-माडङ्गल् शूळ् तिरु-क् कोट्टियूर्,
कण्णन् केशवन् नम्बि पिरन्दिनिल्,
एण्णेय् शुण्णम् एदिर्-एदिर् तूविड-क्,
कण्णम् मुर्रम् कलन्दु अळरायिर्रे ॥ 1

14. ओडुवार् विळुवार् उहन्दालिप्पार्,
नाडुवार् नम्बिरान् एङ्गु उर्रान् एन्पार्,
पाडुवार्हळुम् पल्-परै कोट्ट निन्रु,
आडुवार्हळुम् आयिर्रु आय्प्पाडियै ॥ 2

15. पेणि-च् चीरुडै-प् पिळ्ळै पिरन्दिनिल्,
काण-त् ताम् पुहुवार् पुक्कु-प् पोदुवार्,
आणोप्पार् इवन् नेर्-इल्लै काण्, तिरु-
ओणत्तान् उलहाळुम् एन्पार्हळे ॥ 3

16. उरियै मुर्रत्तु उरुट्टि निन्रु आडुवार्,
नरु-नेय् पाल् तयिर् नन्राह-त् तूवुवार्,
शेरि-मेन् कून्दल् अविळ-त् तिळैत्तु, एङ्गुम्
अरिवळिन्दनर् आय्प्पाडि-आयरे ॥ 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शरीर पर लगाने के लिये अच्छा निरुपम चंदन, (ये सब) देकर जो मुझको धवल आत्मा बनाने में समर्थ है और जिसके ध्वज में विकसित-फण-वाले सर्प का शत्रु (गरुड़) है ; उसको 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोलूंगा। 8

9. हम दास-जन हैं जो पहन कर उतारा हुआ तुम्हारा पीतांवर धारण करते हैं ; तुम्हारी थाली का अवशिष्ट खाते हैं ; और सिंगार कर उतारी हुई गूंथित तुलसीमाला पहनते हैं। (एक) दिशा में निर्दिष्ट कार्य को यथावत् पूरा करते हैं। त्रिछाये हुए मनोहर सर्पशय्या पर शयन करनेवाले को श्रवण के श्री त्यौहार में हम 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोलते हैं। 9

10. जिस दिन यह लिखा गया कि हमारे प्रभु ! हम तुम्हारे दास हैं, उसी दिन दास-जन हमारा दास-कुल (अहंकार-ममत्व से) छुटकारा पा कर निस्तार का भागी बना। शुभ दिवस में अवतरित हो कर मथुरा में (तुमने) धनुष को झुकाया (धनुष का भंजन किया)। पांच सिरवाले चमकीले (कालिय) नाग के सिर पर कूद पड़नेवाले ! तुमको 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोलते हैं। 10

11. (भगवद्-दास होने के) अभिमान से तुंग शेल्वन् (विभववाला) नामक सुंदर तिरुक्कोट्टियूर् के अधिप के जैसे, जिसमें कोई अनीति नहीं, मैं भी अनादिकाल से तुम्हारा दास हूं। (सब प्रकार से) हे पवित्र ! समीचीन रीति से 'नमो नारायण' कह (तुम्हारे) अनेक नाम संकीर्तन कर अनेक प्रकार से तुमको 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोलूंगा। 11

12. पवित्र को, परमेष्ठी को, शार्ङ्ग नामक धनुष को सम्हालनेवाले को 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' बोल कर श्रीविल्लिपुत्तूर के श्रीविष्णुचित्त ने प्रेम से जो शब्द कहे, उनको (यह) भाग्यवान् वर्ष (समय) सोच कर जो निरंतर बोलते हैं, वे 'नमो नारायण' कहते हुए वहु वर्ष परमात्मा को घेरे खड़े हो कर 'वहु वर्ष (विजयी रहो)' कह स्तुति करेंगे। 12

[श्रीविष्णुचित्त की श्रीसूक्ति]

I. ii. वण्ण-माडङ्गळ् [वर्ण प्रसाद]

श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव

13. सुन्दर प्रासादों से घिरे तिरुक्कोट्टियूर के अधिपति गुणाभिराम केशव श्रीकृष्ण जब (गोकुल में) अवतरित हुए उससे (अतिप्रहृष्ट व्रज-वासी) आमने-सामने तेल और (हरिद्रा) चूर्ण छिड़कने लगे तो श्रीकृष्ण का गृहांगण पंकिल हो गया।

[इस दशक में श्रीकृष्ण-जन्म से आनन्दित होकर गोकुलवासियों ने जो उत्सव मनाया, उसका वर्णन किया गया है। परमात्मा के पर व्यूह विभव आदि पांचों ही रूप आलवारों के अनुभव के विषय हैं ; परंतु श्रीरंग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

17\. कोण्ड-ताळ्-उरि कोल-क् कोडु-मळु,
तण्डिनर् परि-ओलै-च् चयनत्तर्,
विण्ड-मुल्लै-अरुम्बन्न पल्लिनर्,
अण्डर् मिण्डि-प् पुहुन्दु नेय्याडिनार् ॥ 5

18\. कैयुम् कालुम् निमित्तु-क् कडार-नीर्
पैय आट्टि-प् पशुम् शिरु-मञ्जळाल्,
ऐय ना-वळित्ताळुक्कु अङ्गान्दिड,
वैयम् एळुम् कण्डाल् पिळ्ळै वायुळे ॥ 6

19\. वायुळ् वैयहम् कण्ड मड-नल्लार्,
आयर् पुत्तिरन् अल्लन् अरुम् देय्वम्,
पाय-शीर्-उडै-प् पण्पुडै-प् पालहन्,
मायन् एन्रु महिळ्न्दनर् मादरे ॥ 7

20\. पत्तु-नाळुम् कडन्द इरण्डा-नाळ्
एत्-तिशैयुम् शय-मरम् कोडित्तु
मत्त-मा-मलै ताङ्गिय मैन्दनै,
उत्तानम् शेय्दु उहन्दनर् आयरे ॥ 8

21\. किडक्किल् तोट्टिल् किळिय उदैत्तिडुम्,
एडुत्तु-क् कोळ्ळिल् मरुङ्गै इरुत्तिडुम्;
ओडुक्कि-प् पुल्हिल् उदरत्ते पाय्न्दिडुम्,
मिडुक्किलामैयाल् नान् मेलिन्देन् नङ्गाय् ॥ 9

22\. शेन्नेल्-आर् वयल्-शूळु तिरुक्कोट्टियूर्,
मन्नु नारणन् नम्बि पिरन्दमै,
मिन्नु-नूल् विट्टु-चित्तन् विरित्त, इप्-
पन्नु पाडल् वल्लारक्कु इल्लै पावमे ॥ 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदि दिव्य क्षेत्रों में विराजमान अर्चावतार भगवान् पर उन्हें पक्षपात-सा है। वे कहते हैं कि राम, कृष्ण आदि रूप में अवतरित परमात्मा ही श्रीरंग वेंकटाद्रि आदि पुण्यक्षेत्रों में विराजमान हैं। फिर कहेंगे कि श्रीरंग आदि क्षेत्रों में स्थित भगवान् ही राम, कृष्ण आदि रूप में अवतरित होते हैं।

अब यहां कहा जाता है कि तिरुक्कोट्टियूर नामक क्षेत्र के स्वामी ही गोकुल में श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए। 1

14. (गोकुल में श्री श्रीकृष्ण का जन्म हुआ है।) (लोग) दौड़ते हैं, चूक कर गिर पड़ते हैं। प्रेम विह्वल बोलते हैं ; पूछते हैं कि हमारे स्वामी कहां हैं ? गानेवालों, ढोल बजानेवालों, नर्तन करनेवालों से गोप-भूमि भर गयी है। 2

15. भव्य गुणों से पूर्ण श्रीकृष्ण के दर्शन के लिये सूतिकागृह में प्रविष्ट होते हैं ; प्रविष्ट होकर निकल आते हैं। कहते हैं कि पुरुषों में इसके समान कोई नहीं है और यही सब जगत् का पालन करेगा जो (जगत्) श्रवण-नक्षत्राधिदेव नारायण का है।

[भगवान् विष्णु, श्रवण नक्षत्र के अधिदेव माने जाते हैं। श्रीकृष्ण तो साक्षात् विष्णु हैं। अतः विष्णु के भुवनों का पालन ये करेंगे।

जननकाल में श्रीकृष्ण शंखचक्रादिसहित चतुर्भुजरूप में आविर्भूत हुए। देवकी-वसुदेव को परमानन्द हुआ, साथ ही भय भी लगा कि कहीं कंस इस देव-शिशु की हानि न करे। अतः उन्होंने उनसे वह रूप छिपा लेने की प्रार्थना की। माता-पिता की आज्ञा मान कर श्रीकृष्ण ने भी द्वि-भुज-रूप धारण कर लिया। इस गुण का अनुसन्धान कर के आलवार कहते हैं कि श्रीकृष्ण भव्य-गुण-पूर्ण हैं।] 3

16. आंगन में छींके लुढ़का कर (लोग) नर्तन कर रहे हैं। सुगन्धित घी दूध दही अच्छी तरह लुटा रहे हैं। हर्ष से नाचते हैं तो उनका मृदु कच-भार खुल कर बिखर जाता है। गोप-भूमि के गोपों ने सुध-बुध खो दी।

[अवतरित श्रीकृष्ण की भलाई की कामना से सभी गोप घृत-दधि-दुग्ध का अपरिमित दान कर रहे हैं।] 4

17. गोपों ने जिनके दाँत प्रस्फुटित जुही के समान हैं, और जो दृढ़ ग्रथित छींके, सुन्दर तेज़ बरछा, लाठी और पत्तों के बने विस्तर साथ लाये थे, रेल-पेल कर एकसाथ प्रविष्ट हो घृत-नृत्य किया।

[विस्तर लाठी आदि साधन ले कर जो गोप वन में गायों की रखवाली करते थे, वे कृष्ण-जनन की बात सुनते ही सबको समेट कर गोकुल दौड़े आये।]

[गोपों में यह प्रथा-प्रचलित है कि पुत्र-जन्म आदि शुभ-कार्य हों तो उसे मनाने के लिये शरीर पर घी लेप कर सब मिलकर नाचते हैं। यही 'घृत-नृत्य' कहलाता है।] 5

18. (बालक के) हाथ और पैर प्रसारित कर कडाहे के जल से धीरे से स्नान कराने के उपरान्त छोटी मृदु हल्दी से जिह्वा साफ़ करनेवाली माता के लिये श्रीकृष्ण ने मुंह खोला तो माता ने पुत्र के मुँह के भीतर सातों लोक देखे। 6

19. विनीत गुणवती स्त्रियाँ (शिशु के) मुंह के भीतर लोकों को देख यह कहते हर्षित हुईं कि यह तो गोप-पुत्र नहीं, दुर्ज्ञेय देव है। यह बालक, जो गुण-गण-पूर्ण तथा सौलभ्य-संपन्न है, आश्चर्य-शक्ति-युक्त (मायी) है।

[स्त्रियों के आश्चर्य का कारण यह है कि वे देखती हैं अपने सामने एक छोटा बालक, उसके मुँह में सप्तलोक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. iii. शीद-क्-कडल्

पादादि-केशांत वर्णन

23. शीत–क् कडलुळ् अमुदन्न देवकि,
कोदै–क् कुळलाळ् अशोदैक्कु–प् पोत्तन्द,
पेदै–क् कुळवि पिडित्तु–च् चुवैत्तु उण्णुम्,
पादक्कमलङ्गळ् काणीरे,
पवळ–वायीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 1

24. मुन्तुम् मणियुम् वयिरमुम् नन्–पोन्नुम्,
तत्ति–प् पदित्तु–त् तलैप्पेय्दार् पोल्, एङ्गुम्
पत्तु विरलुम् मणिवण्णन् पादङ्गल्,
ओत्तिट्टु इरुन्दवा काणीरे,
ओण्णुदलीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 2

25. पणैत्तोळ्–इळ–आय्च्चि पाल्–पायन्द कोङ्गै,
अणैत्तु आर उण्डु किडन्द इप्–पिळ्ळै,
इणैक्कालिल् वेळ्ळि–त् तळै निन्रु इलङ्गुम्,
कणैक्काल् इरुन्दवा काणीरे,
कारिकैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 3

26. उळन्दाळ् नरु–नेय् ओरोर् तडा उण्ण,
इळन्दाळ् एरिविनाल् ईर्त्तु, एळिल् मत्तिन्,
पळन्दाम्बाल् ओच्च–प्–पयत्ताल् तवळ्न्दान्,
मुळन्दाळ् इरुन्दवा काणीरे,
मुहिळ्–मुलैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तदन्तर्भूत भारतवर्ष, उसके अन्तर्गत गोप-भूमि, उसमें नन्द-बाबा का महल, वहाँ फिर भी यह बालक और उसके सामने स्वयं अपने को।

पिछली गाथा में कहा गया कि यशोदा देवी ने पुत्र के मुँह में सातों लोक देखे। इसमें कहा जाता है कि गोप-ललनाओं ने भी वह देखा। इससे यह समझ लेना चाहिये कि यशोदा ने पहले यह आश्चर्य-दृश्य देखा और आसपास की स्त्रियों को भी बुला कर दिखाया। श्रीकृष्ण ने भी न केवल अपनी माता को यह दृश्य देखने की दिव्य दृष्टि दी, परंतु अपनी कृपा से मातृ-तुल्य उन स्त्रियों को भी दी, जिस प्रकार विश्वरूप के दर्शन के लिये अर्जुन को दिव्य चक्षु दिया और भक्त संजय को भी।] 7

20. दस दिन बीत गये। उसके दो दिन उपरान्त सभी दिशाओं में अलंकृत जय-स्तंभ खड़ा कर दिये। मत्त-गजाश्रित महापर्वत को धारण करनेवाले बालक को लेकर गोप प्रसन्न हुए।

[यद्यपि गोवर्धनोद्धार की घटना कृष्ण के जन्म के बारहवें दिन नहीं हुई, फिर भी पश्चाद्कालीन होने के कारण आलवार उसका उल्लेख करते हैं।] 8

21. पालने में लिटाऊँ तो ऐसा लात मारता है कि वह फट जाता है। गोद में लूँ तो कमर तोड़-सा डालता है। छाती से कस कर लगाऊँ तो चरण से उदर पर मारता है। शक्ति न होने के कारण मैं अतीव खिन्न हूँ, सहेलियो!

[यशोदा माता इसलिये खिन्न होती है कि बच्चा-तो इतना करता है जिसे करने की शक्ति की संभावना उसमें नहीं होती।] 9

[अन्त में दशक के पाठ की फलश्रुति है।]

22. चमकीले यज्ञोपवीत से युक्त श्रीविष्णुचित्त ने शालियों से भरे खेतों से परिवृत तिरुक्कोट्टियूर् में नित्य-स्थित गुणसंपन्न नारायण के जन्म के प्रकार का वर्णन किया। इन रमणीय पदों के कथन में समर्थों को कोई पाप नहीं रहता। (अर्थात् भगवदनुभव-विरोधी पाप नहीं रहता)। 10

I. iii. शीदक्कडल्

शीत-समुद्र

[इस दशक में यशोदा माता अवतरित श्रीकृष्ण का दिव्य शरीर देख कर पादादि-केशान्त उसके सौन्दर्य का अनुभव करती हैं।]

23. यह है वह मुग्ध शिशु जिसको शीत-समुद्रोत्पन्न अमृत-सी देवकी ने मालालंकृत सुकेशी यशोदा को भिजवाया था। वह नन्हा बच्चा (छोटे हाथों से) अपने चरण-कमल पकड़, चख कर चूस रहा है। वे चरण-कमल देखो, विद्रुमाधर स्त्रियो, आकर देखो। 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

27. पिरङ्गिय पेय्च्चि मुळै शुवैत्तु उण्डिट्टु,
उरङ्गुवान्-पोले कि डन्द इप्पिळ्ळै,
मरङ्कोल् इरणियन्-मार्पै मुन् कोण्डान्,
कुरङ्गुकळै वन्दु काणीरे,
कुवि-मुलैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 5

28. मत्त-क् कळिर्रु-वशुदेवर्-तम्मुडै,
चित्तम्-पिरियाद देवकि-तन् वयिर्रिल्,
अत्तत्तिन् पत्ता-नाळ् तोन्रिय अच्चुदन्,
मुत्तम् इरुन्दवा काणीरे,
मुहिळ्-नहैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 6

29. इरुङ्कै मद-कळिरु ईर्क्किन्रवनै,
परुङ्गि-प् परित्तु-क् कोण्ड ओडुम् परमन्-तन्,
नेरुङ्गु पवळमुम् नेर्-नाणुम् मुत्तुम्,
मरुङ्गुम् इरुन्दवा काणीरे,
वाणुदलीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 7

30. वन्द मदळै-क् कुळात्तै वलि-शेय्दु,
दन्त-क् कळिरु पोल् ताने विळैयाडुम्,
नन्दन् मदलैक्कु नन्रुम् अळहिय
उन्दि इरुन्दवा काणीरे,
ओळि-इळैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 8

31. अदिरुम् कडल्-निर-वण्णनै, आय्च्चि
मदुर-मुलै ऊट्टि वञ्चित्तु वैत्तु,
पदर-प् पडामे पळन्ताम्बाल् आर्त्त,
उदरम् इरुन्दवा काणीरे,
ओळि-वळैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

24. मानों मुक्ता और मणि और वज्र और उत्तम सुवर्ण सुचारु रूप से खचित हों, नीलमणि के वर्णवाले श्रीकृष्ण के पादों की दसों उंगलियों की कैसी मनोज्ञ और सुदृश्य छवि है, देखो, भास्वर ललाटवाली स्त्रियो, आकर देखो।

[भगवान् के पादों का वर्ण श्यामल है और एक एक उंगली भिन्न भिन्न वर्ण के लाक्षारस से अलंकृत है। उन्हें देखने पर ऐसा लगता है मानों इन्द्रनील रत्न पर नव-रत्न और सोना जटित हों।] 2

25. वंश-सदृश भुजवाली तरुण गोपी के स्तन्य-प्रसृत स्तन से लग यह बालक भर-पेट पी कर लेटा है। चांदी के नूपुर से भूषित उसके गुल्फों की अनोखी छवि देखो सुन्दरियो! आ कर देखो।

[सुंदर भुजाओं को वंश (बाँस) से उपमा देने की परिपाटी तमिल साहित्य में उपलब्ध है। इन दोनों के साधारण धर्म हैं— कोमलता, लावण्य और गोल-मटोल आकृति।] 3

26. परिश्रम से तयार किये हुए मटकों में रखे सुगन्धित घी को एक एक कर के खाया तो (माता ने) बेचैनी से उसको खींच कर सुन्दर मथानी की जीर्ण रस्सी से धमकाया। भय से रेंगनेवाले के घुटनों की अनोखी छवि देखो, मुकुल-पयोधर-वालियो! आ कर देखो। 4

27. दीप्ति-युक्त दानवी का स्तन चाव से पी कर अब पड़ा रहता है, मानों सो रहा हो। पूर्व काल में क्रुद्ध हिरण्य (कशिपु) की छाती को विदीर्ण करनेवाले की जांघों की अनोखी छवि देखो, वर्तुल-स्तनवालियो, आ कर देखो। 5

28. मत्त गजों के स्वामी वसुदेव के चित्त की अनुवर्तिनी देवकी के गर्भ से, हस्त से दसवें नक्षत्र में, आविर्भूत अच्युत के दन्तों की अनोखी छवि देखो, मन्द-स्मित-वदनियो, आ कर देखो।

[श्रीकृष्ण का जन्म-नक्षत्र रोहिणी है। उसकी मंगलकामना से माता यशोदा उसे छिपाती है। माता को डर है कि सही नक्षत्र जाना जाय तो शत्रु अभिचार का प्रयोग कर के श्रीकृष्ण का कोई अनिष्ट कर देगा। स्पष्ट-तया रोहिणी न कह कर हस्त से दसवाँ नक्षत्र कहती है। हस्त से पूर्व का दसवां नक्षत्र रोहिणी है और पश्चात् का दसवां श्रवण। भक्तों को विदित होगा कि श्रीकृष्ण का जन्म-नक्षत्र रोहिणी है और अनिष्टकारियों को संशय होगा कि वह रोहिणी है या श्रवण।] 6

29. लंबी सूंडवाले मस्त हाथी (कुवलयापीड) को चलनेवाले (महावत) को मार कर (हाथी के दाँत) उखाड़ कर (कंस पर आक्रमणार्थ) दौड़नेवाले पर-देव की कमर जो घने विद्रुम और सुन्दर करधनी और मोती से सुशोभित है उसकी अनोखी छवि देखो, भास्वर ललाटवालियो, आ कर देखो।

[अथवा लड़के हाथी का खेल खेलते हैं। उनमें एक को लंबी सूंड़वाला हाथी बना कर दूसरा उस पर बैठ कर उसको चला रहा है। श्रीकृष्ण उस महावत बालक को (थप्पड़) मार कर हाथी-बालक को खींच कर भाग जाते हैं। खेलते समय श्रीकृष्ण की कमर पर की, सुनहली करधनी, प्रवालों और मोतियों की छवि अनोखी है।] 7

30. आगत बालक-वृंद को खींच कर दन्तुर गजवत् स्वयं विहार करनेवाले नन्द बालक की बहुत ही सुन्दर नाभि की अनोखी छवि देखो, समुज्ज्वल-भूषण-भूषिताओ, आ कर देखो। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

32. पेरु-मा-उरलिल् पिणिप्पुण्डु इरुन्दु, अङ्गु
इरु-मा-मरुदम् इरुत्त इप्-पिळ्ळै,
कुरु-मा-मणि-प् पूण् कुळावि-त् तिहळुम्,
तिरु-मार्पु इरुन्दवा काणीरे,
शेयिळैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 10

33. नाळ्हळ्-ओर् नालैन्दु तिङ्गळ्-अळविले,
ताळै निमिर्त्तु-च् चकडत्तै-च् चाडि-प् पोय्,
वाळ्-कोळ्-वळै-एयिर्रु-आर्-उयिर् वव्विनान्,
तोळ्हळ् इरुन्दवा काणीरे,
शुरि-कुळलीर ! वन्दु काणीरे ॥ 11

34. मैंत्तडम्-कण्णि यशोदै वळर्क्किन्र,
शेय्त्तलै नोल-निरत्तु-च् चिरु-प् पिळ्ळै,
नेय्त्तलै नेमियुम् शङ्गुम् निलाविय,
कैत्तलङ्गळ् वन्दु काणीरे,
कनङ्-कुळैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 12

35. वण्डु-अमर्-पुङ्-कुळल् आय्च्चिच-महनाह-क्-
कोण्डु, वळर्क्किन्र कोवल-क् कुट्टर्क्कु,
अण्डमुम् नाडुम् अडङ्ग विळुङ्गिय
कण्डम् इरुन्दवा काणीरे,
कारिकैयीर् वन्दु काणीरे ॥ 13

36. एन्तोण्डै वाय्-च् चिङ्गम् वा एन्रु एडुत्तु-क् कोण्डु
अन्तोण्डै-वाय्-अमुदु आदरित्तु, आय्च्चियर्
तन्तोण्डै-वायाल् तरुक्कि-प् परुहुम्, इच्-
चेन्तोण्डै वाय् वन्दु काणीरे,
श-इळैयीर् ! वन्दु काणीरे ॥ 14

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

31. गोपी-द्वारा मधुर स्तन पिला भुलावा दे, जीर्ण रस्सी से सफलतापूर्वक बंधे, घोष-युक्त सागर के रंग तुल्य वर्णवाले (वालक) के उदर की अनोखी छबि देखो, उज्ज्वल-कंकण-शालिनियो, आ कर देखो। 9

32. अति वृहत् उलूखल में बद्ध हो कर वहीं पृथु यमलार्जुन का भंग करनेवाले बालक के दीप्त स्पन्दित श्रेष्ठ मणियों की माला से शोभित वक्ष की अनोखी छबि देखो, कान्तियुक्त-भूषणवालियो, आकर देखो। 10

33. चार पांच महीनों की अवधि में थोड़े ही दिनों के अन्दर चरण पसार, शकट को तोड़, तव जा कर कान्तिमत् वक्र दंष्ट्रा से युक्त (दानवी) के दुर्लभ प्राणों के हरण करनेवाले के भुजों की अनोखी छबि देखो, कुटिल कुन्तलवालियो, आ कर देखो। 11

34. अंजन-भूषित विशाल लोचना यशोदा से पालित खेत में (स्थित) सस्य (सदृश) श्यामल वालक के घृत लिप्त तीक्ष्णाग्र चक्र और शंख के सहित करतल आकर देखो, कांचन कुण्डलवालियो, आ कर देखो।

[यद्यपि देवकी माता के प्रार्थनानुसार श्रीकृष्ण ने अपने शंख-चक्र-धर भुजद्वय को छिपा लिया था, फिर भी अनन्य-वत्सला माता यशोदा की दृष्टि से वे छिपे नहीं थे। अथवा, हस्ततल में सर्वेश्वरत्वसूचक शंख-रेखा और चक्र-रेखा को देख कर इस तरह यशोदा माता बोलती हैं।] 12

35. भ्रमरासीन मनोहर चिकुरों से सुशोभित गोपी जिसको पुत्र बना कर पालती है उस गोप-शिशु के अण्ड (ब्रह्माण्ड) तथा भुवन को पूर्णतः निगलनेवाले कण्ठ की अनोखी छबि देखो, सुन्दरियो, आ कर देखो। 13

36. हमारे बिंवाधरयुत सिंह आओ, कह, उठा कर, गोपिकाएँ आदर कर जिस बिंवाधर के अमृत का अपने बिंवाधर से वलपूर्वक पान करती हैं इस अरुण बिंबाधर को आ कर देखो, छवियुत-भूषणवालियो, आ कर देखो। 14

37. ध्यान लगा कर यशोदा घिसी हुई हरिद्रा से जीभ साफ कर जिसको स्नान कराती है उस पूर्ण के वाक् और नयन और अधर और स्मित और नासा की अनोखी छबि देखो, घन कुन्तलवालियो, आ कर देखो। 15

38. स्वर्ग-निवासी अमरों की वेदना मिटाने प्रथमतः भूपालक वसुदेव के पुत्ररूप से आ कर इधर पलता है, उधर पराक्रमी असुरों का नाश हो जाता है, उसके नयनों की अनोखी छबि देखो, कांचनकंकणवालियो, आ कर देखो। 16

39. वयस्क होने के पहले ही सारे भुवन की रक्षा के लिये लक्ष्मी की मूर्ति से उपमित देवकी ने जिसको जन्म दिया उस श्यामल शरीर समुज्ज्वल मणि वर्ण की भौंहों की अनोखी छबि देखो, भूषण सहित पयोधरवालियो, आ कर देखो। 17

40. भूमि और पर्वत और सागर और सातों लोक निगलते समय हर्ष से निगलनेवाले बालक के वर-वर्ण-सौन्दर्य-युत मकर कुंडलों की अनोखी छबि देखो, छवियुत भूषणवालियो, आ कर देखो। 18

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

37. नोक्कि यशोदै नुणुक्किय मञ्जळाल्,
नाक्कु वंळित्तु नीराट्टुम् इन्-नम्बिक्कु,
वाक्कुम् नयनमुम् वायुम् मुरुवलुम्,
मूक्कुम् इरुन्दवा काणीरे,
मोय्-कुळलीर्! वन्दु काणीरे ॥ 15

38. विण्-कोळ् अमरर्हळ् वेदनै तीर, मुन्
मण्-कोळ् वशुदेवर्-तम् महनाय् वन्दु,
तिण् कोळ् अशुररै-त् तेय वळर्हिन्रान्,
कण्गळ् इरुन्दवा काणीरे,
कन वळैयीर्! वन्दु काणीरे ॥ 16

39. परुवम् निरम्बामे पारेल्लाम् उय्य,
तिरुविन् वडिवु ओक्कुम् देवकि पेर्र,
उरुवु करिय ओळि मणि वण्णन्,
पुरुवम् इरुन्दवा काणीरे,
पूण् मुलैयीर्! वन्दु काणीरे ॥ 17

40. मण्णुम् मलैयुम् कडलुम् उलहेळुम्,
उण्णुम् तिरत्तु महिळ्न्दु उण्णुम् पिळ्ळैक्कु,
वण्णम्-एळिल् कोळ मकर-क् कुळै इवै,
तिण्णम् इरुन्दवा काणीरे,
शेयिळैयीर्! वन्दु काणीरे ॥ 18

41. मुर्रिलुम् तूदैयुम् मुन् कैम्मेल् पूवैयुम्,
शिर्रिल् इळैत्तु-त् तिरिदरुवोर्हळै,
पर्रि-प् परित्तु-क् कोण्डु ओडुम् परमन् तन्,
नेर्रि इरुन्दवा काणीरे, 19
नेर् इळैयोर! वन्दु काणीरे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

41. घरौंदा बनाकर विहरण करनेवाली बालिकाओं को पकड़ कर, सूप और घड़ा और हस्ताग्र का मैना छीन कर भागनेवाले परम (देव) के ललाट की अनोखी छवि देखो, समुचित-आभरणवालियो, आ कर देखो। 19

42. सुन्दर उत्तम सुवर्ण की छडी कमनीय करतल में ले कर, नूपुर किंकिणी के मिश्रित रुनझुन के साथ बाल-गोवत्सों को रोक कर संचरण करनेवाले के चिकुर-भार की अनोखी छवि देखो, वर्तुल-स्तनवालियो, आ कर देखो। 20

43. भ्रमर-गुंजित कच-भार से शोभित यशोदा ने पूर्वकाल में (पुत्र श्रीकृष्ण के) जो पादादिकेशान्त वर्णन किया, उसे सुन्दर श्रीविल्लिपुत्तुर के भट्टनाथ (श्रीविष्णुचित्त) ने आदर से (तत्तादात्म्य से) दुहराया। इन बीस और एक पदों को कथन करनेवाले श्रीवैकुंठ पहुँच कर विराजेंगे। 21

I. iv. माणिक्कम् कट्टि

[माणिक्य जडकर]

लोरी गीत की अवस्था

44. माणिक्य जड़ कर बीच बीच में हीरा जड़ कर उत्तम सुवर्ण का बना रमणीय चमकीला छोटा पालना ब्रह्मा ने आदर-सहित तुम्हें भेजा है। सुन्दर वामन, सो जाओ, भुवन-विक्रान्त, सो जाओ। 1

45. भूषोचित सुवर्ण-मणि-सहित बीच में मिश्रित दाडिम-पुष्प सदृश-भूषण पिरोयी हुई करधनी वृष-वाहन कपाली ईश्वर ने भेजी। प्रभो, रोओ मत, रोओ मत। सो जाओ, लोक-विक्रान्त, सो जाओ। 2

46. मेरे प्रभु अतिमनोहर वक्षवाले को, वर्ण से मनोज्ञ कमल-चरणवाले को इन्द्र स्वयं सौन्दर्य-युत किंकिणी समर्पित कर नातिदूर खड़ा है। सो जाओ, अंबुज-लोचन, सो जाओ। 3

47. शंखों में दक्षिणावर्त (शंख) और रक्तिम चरण की किंकिणी, और मनोज्ञ हस्त का वलय और कटि-सूत्र और करधनी सुन्दर विशाल स्वर्ग के अमरों ने भेजीं। अरुण-विलोचन नील-जलद, सो जाओ, देवकी-सिंह ! सो जाओ॥ 4

48. सौन्दर्य से भरे वक्षवाले को ये सब योग्य होंगे सोच कर मनोरम पंचायुध और हार ला कर अनघ, उदार वैश्रवण (कुबेर) प्रणत हो नातिदूर खड़ा है। सो जाओ, निर्मल मणि-वर्ण, सो जाओ। 5

[पंचायुध— विष्णु के पांच आयुध हैं—शंख, चक्र, खड्ग, गदा और धनुष। उन आयुधों की आकृति के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

42. अळहिय पैम्पोन् निन् कोल् अङ्-कै-क् कोण्डु,
कळल्हळ् शतङ्गै कलन्दु एङ्गुम् आर्प्प,
मळ-कन्रिनङ्गल् मरित्तु-त् तिरिवान्,
कुळल्हळ् इरुन्दवा काणीरे,
कुवि-मुळैयोर् ! वन्दु काणीरे ॥ 20

43. शुरुप्पार्-कुळलि यशोदै मुन् शोन्न,
तिरु-प् पाद-केशत्तै-त् तेन्-पुदुवै-प्-पट्टन्,
विरुप्पाल् उरैत्त इरुपदोडु ओन्रुम्
उरैप्पार् पोय्, वैकुन्दत्तु ओन्रुवर् तामे ॥ 21

I. iv. माणिक्कम् कट्टि

तालाट्टु

44. माणिक्कम् कट्टि वयिरम् इडै कट्टि,
आणि-प-पोन्नार् चेय्द वण्ण-च् चिरु तोट्टिल्,
पेणि उनक्कु-प् पिरमन् विडु-तन्दान्,
माणि-क् कुरलने ! तालेलो,
वैयम् अळन्दाने ! तालेलो ॥ 1

45. उडैयार् कन-मणियोडु ओण्-मादुळम्-पू,
इडै विरवि-क् कोत्त एळिल तेळ्हिनोडु,
विडै-एरु कापालि ईशन् विडु-तन्दान्,
उडैयाय् ! अळेल् अळेल् तालेलो,
उलहम् अळन्दाने ! तालेलो ॥ 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोने के छोटे गहने बना कर हार में पिरो बालक को पहनाने की प्रथा दक्खिन में प्रचलित है। यहां उन्हीं पांच आयुधों का उल्लेख है।]

49. तरंगित सागर के उज्ज्वल मोतियों का हार और उत्तम विद्रुम और सुन्दर अंगद बहुत योग्य सोच कर वरुण ने भेजा। ज्योतिर्मय-किरीटवाले, सो जाओ, सुन्दर भुजवाले, सो जाओ। 6

50. कानन में उत्पन्न सुगंधित तुलसी से गूंथी माला को और स्वर्ग के सुन्दर उपवन के कल्प-वृक्ष (के पुष्पों) की ललाट-माला को मधु-स्यन्दि-कमल पर स्थित महालक्ष्मी ने भेजा। प्रभो, रोओ मत। रोओ मत सो जाओ, कुडन्दै-शायी, सो जाओ। 7

[दक्खिन में कुडन्दै नामक दिव्यक्षेत्र में भगवान् की मूर्ति शयनावस्था में दर्शन देती है। अतः यहां श्रीकृष्ण को कुडन्दै शायी कहा है। वह क्षेत्र कुंभकोणम् नाम से प्रसिद्ध है।]

51. मेखला-सहित सोने की छुरिका, कौशेय-वस्त्र, कनक-वलय, रत्न-ललाटिका, चारु चरण के योग्य सुवर्ण-सुमन अच्युत के लिये (अर्पणीय) सोच कर अवनी (भूदेवी) ने भेजा। विषैला स्तन पीनेवाले, सो जाओ, नारायण, रोओ मत, सो जाओ। 8

52. शरीर-उवटन कस्तूरी-चूर्ण-संमिश्रित हल्दी, और रक्तिम विशाल लोचनके लिये काजल और सिन्दूर ला कर भीषण हरिण-वाहिनी (दुर्गा) नातिदूर खड़ी है। प्रभो, रोओ मत, रोओ मत। सो जाओ, श्रीरंग-शायी, सो जाओ। 9

53. वंचना से आगत दानवी के स्तन-पायी अंजन-वर्णवाले को गोपी ने जो लोरी गा कर सुलाया, वही ऋजु-वाक् श्रोत्रियों से आश्रित श्रीविल्लिपुत्तूर के भट्ट (श्रीविष्णुचित्त) बोले। निरवशेष के कथन में समर्थों को कोई क्लेश नहीं। 10

I. v. तन् मुकत्तु

[मुख पर]

चन्द्राह्वान की अवस्था

[अब श्रीकृष्ण घुटनों के बल चलने लगे हैं। आगन पहुँच कर धूल में खेलते हैं। पूर्व दिशा में पूर्णचन्द्र उदित होता है। उसको देख कर वह खिलौना दिलाने के लिये माता से आग्रह करते हैं। माता यशोदा चन्द्र को संबोधित कर कहती है।]

54. (मेरे बालक के) मुख पर लटकन झूम झूम रहा है। सोने की किंकिणियां रुनझुन कर रही हैं। घुटनों के बल चल कर (वह) धूल में क्रीडा कर रहा है। मेरे लाल गोविंद के नृत्य को, अभिनव पूरण-चन्द्र, तेरे चेहरे पर नेत्र रहे तो तू इधर देख जा। 1

55. मेरा नन्हा बालक, मेरा मधुर अमृत, मेरा देव अपने नन्हे हाथों से दिखा दिखा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

46. एन्तम्-पिरानार् एळिल् तिरु-मार्वर्क्कु-च्,
चन्दम् अळहिय तामरै-त्ताळर्क्कु,
इन्दिरन्-तानुम् एळिल्-उडै-क् किण्किणि,
तन्दु उवनाय् निन्रान् तालेलो,
तामरै-क् कण्णने ! तालेलो । 3

47. शङ्गिन् वलम्बुरियुम् शेवडि-क् किण्किणियुम्
अङ्कै-च् चरिवळैयुम् नाणुम् अरै-त् तोडरुम्,
अङ्कण्-विशुम्बिल् अमरर्इळ् पोत्तन्दार्,
शेङ्-कण् करु-मुहिले ! तालेलो,
देवकि-शिङ्गमे ! तालेलो ॥ 4

48. एळिलार्-तिरु-मार्वुक्कु एर्क्कुम् इवै एन्रु,
अळहिय ऐम्पडैयुम् आरमुम् कोण्डु,
वळुविल्-कोडैयान् वयिच्चिरवणन्
तोळुदु उवनाय् निन्रान् तालेलो,
तू-मणि वण्णने ! तालेलो ॥ 5

49. ओद-क् कडलिन् ओळि-मुत्तिन् आरमुम्,
शादि-प् पवळमुम् शन्त-च् चरिवळैयुम्,
मा-तक्क एन्रु वरुणन् विडु-तन्दान्,
शोदि-च चुडर्-मुडियाय् ! तालेलो,
शुन्दर-त् तोळने ! तालेलो ॥ 6

50. कान्-आर् नरुम्-तुळाय् कै-शेय्द कण्णियुम्,
वान्-आर् शेळुम्-शोलै-क् कर्पकत्तिन् वाशिकैयुम्,
तेन्-आर् मलर्-मेल् तिरु-मङ्गै पोत्तन्दाळ्,
कोने ! अळेल्, अळेल्, तालेलो,
कुडन्दै-क् किडन्दाने ! तालेलो ॥ 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुलाता है। अंजन-वणवाले से खेल खेलना चाहता है तो बादल में मत छिप जा, पूर्ण-चन्द्र, आनन्दित हो दौड़ा आ। 2

56. चारों ओर आलोकमण्डल घिर कर सर्वत्र ज्योति व्याप्त हो कर, कितना ही करो, मेरे पुत्र के मुख के समान नहीं हो सकते। विदग्ध वेंकट-गिरि के स्वामी तुम्हें बुला रहे हैं। चांद, शीघ्र ही दौड़ आओ। तुम्हें बुलानेवाले के हाथों को क्लेश न हो। 3

57. चक्रपाणि विशाल नेत्र से भरपूर देखकर गोद में रह तुम्हीं को उंगली उठा कर दिखाता है, देखो। क्या उचित है जानते हो तो, चन्द्र! छल मत करो। पुत्रहीन वन्ध्य न हो तो, आ जाओ। 4

58. मनोहर मुंह में अमृत-निस्सरण से अस्पष्ट तोतली बोली के अभिनव वचन से तुम्हें बुलाता है। नन्हे श्रीधर के बुलाते बुलाते तुम (चले) जाओगे तो तुम्हारे कान छिद्रहीन कहलायंगे कि नहीं, आलोकमय पूरण चांद! 5

59. गदासहित चक्र-शार्ङ्ग-धर दीर्घ भुजावाला निद्रित होने की चाह से जंभाई लेता है। न सोने से पिया हुआ स्तन का दूध नहीं पचेगा, समझ लो। आकाश में नित्य स्थित पूर्ण चन्द्र! वेग से दौड़ आओ। 6

60. बालक समझ कर परिभव (निरादर) मत करना। पूर्वकाल में एक दिन वट-पत्र पर शयित छोटा बालक यह है। यदि कुपित हो जाय, तो ऊपर उछल झपट पकड़ लेगा। बड़े को छोटा समझे विना, पूर्ण चंद्र! हर्षित हो दौड़ आओ। 7

61. छोटा समझ कर मेरे इस छोटे सिंह का अनादर मत करना, देखो। छुटपन की बात को महाबलि के पास जा कर पूछ लो। यदि छोटा समझने की भूल तुम मान लेते हो तो तुम भी सेवा के योग्य बन जाओगे, समझे। पूर्ण चंद्र! सर्वश्रेष्ठ अधीरता से तुम्हें बुला रहा है। 8

62. मटके में रखा मक्खन विशाल हाथों से भरपूर ले निगल कर फूले पेटवाला हमारा उपकारक तुम्हें बुला रहा है, देखो। चक्र द्वारा तुमको फेंक देगा। (इसमें) सन्देह नहीं जानो। ज़ीना चाहते हो तो, पूर्ण चन्द्र! आनन्दित हो दौड़ आओ। 9

63. अंजन-युत विशाल लोचनवाली यशोदा ने अपने लाल के लिये इसी प्रकार से बोल कर जो चेतावनी दी उसका उज्ज्वल श्रीविल्लिपुत्तुर के विदग्ध विष्णुचित्त ने तमिल में विवरण दिया। क़िसी भी प्रकार इनका कथन करनेवालों को कोई क्लेश नहीं। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

51. कच्चोडु पोर्-चुरिकै काम्बु कनक-वलै,
उच्चि मणि-च चुट्टि ओण्-ताळ्-निरै-प् पोर्-पू,
अच्चुतनुक्कु एन्रु अवनियाळ् पोत्तन्दाळ्,
नच्चु मुलै उण्डाय् ! तालेलो,
नारायणा ! अळेल् तालेलो ॥ 8

52. मेय्-तिमिरुम् नान-प् पोडियोडु मञ्ञळुम्,
शेय्य तडम्-कण्णुक्कु अञ्जनमुम् शिन्दुरमुम्,
वेय्य कलै-प् पाहि कोण्डु उवळाय् निन्राळ्,
ऐया ! अळेल् अलेल् तालेलो
अरङ्गत्तु अणैयाने ! तालेलो ॥ 9

53. वञ्ञनैयाल् वन्द पेय्च्चिच मुलै-उण्ड,
अञ्जन-वण्णनै आयच्चि तालाट्टिय
शेञ्चोल् मरैयवर् शेर् पुदुवै-प्-पट्टन् शोल्,
एञ्जामै वल्लवर्क्कु इल्लै इडर्-ताने ॥ 10

I. v. तन्मुकत्तु

अम्बुलि-प्-परुवम्

54. तन्-मुकत्तु-च् चुट्टि तूङ्ग-त् तूङ्ग-त्-तवळन्दु पोय्,
पोन्मुक-क् किण्किणि आर्प्प-प् पुळुदि अळैहिनरान्,
एन्-महन् गोविन्दन् कूत्तिनै इळ-मा-मदी,
निन्-मुकम् कण् उळवाहिल् नी इङ्गे नोक्कि-प् पो ॥ 1

55. एल् शिरु-क् कुट्टन् एनक्कु ओर् इन्नमुदु एम्पिरान्,
तन् शिरु-क् कैकळाल् काट्टि-क् काट्टि अळैक्किन्रान्,
अञ्जन-वण्णनोडु आडल् आड उरुदियेल्,
मञ्जिल् मरैयादे मामदी ! महिळ्न्दु ओड वा ॥ 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. vi. उय्य उलहु

[निस्तार के लिये लोक]

नटवर की नाट्यावस्था

64. निस्तार के लिये लोक-सृष्टि कर निगलनेवाले, मणि-उदरवाले ! कल्प-कल्प में अनेक (कल्पों में) वट के पत्र पर कोमल योग-निद्रा में लीन परात्-पर (देव) ! दीर्घ पंकज-लोचन अंजन-वपुवाले (देव) ! यह मन में रख कर कि लक्ष्मी का स्थान तुम्हारा वक्षःस्थल सुरक्षित रहे और ऐश्वर्योज्ज्वल-मकरकुंडल से भूषित कर्ण उद्भासित हो दमके, मेरे लिये तांत ! एक बार नाचो। 'शेङ्कीरैं' (सुन्दर नाच), गोपों के युद्ध-ऋषभ ! (निर्भीक हो कर गंभीरता से चलनेवाले गोप-पुंगव !) नाचो, नाचो। 1

65. प्रभु ! यहा सोच कर कि (नास्तिक्य-वुद्धि से) निवृत्त हो (हिरण्यकशिपु) अपने पुत्र को सत्यवादी समझे, प्रवल हरिरूप ले कर तुमने असुर का शरीर तीक्ष्ण नख से विदीर्ण कर दिया जिससे शरीर से रक्त उमड़ कर प्रवाहित हुआ। उत्कृष्ट अमरों का अधिप (देवेंद्र) जब अत्यधिक कुपित हो कर आया, और उन काले सुन्दर मेघोंने प्रचंड वायु-सहित पत्थरों की वर्षा की, तुमने (यह) स्मरण करके (कि मैंने गोपों से कहा था कि यह पर्वत ही हमारा रक्षक है) पर्वत को ही छत्र बना कर गायों की रक्षा की। पौरुष-संपन्न ! मेरे लिये एक बार नाचो 'शेङ्कीरैं', (सुन्दर नाच)। गोपों के युद्ध-ऋषभ ! नाचो नाचो। 2

66. हमारे नायक ! चार वेदों के सार-भूत ! नाभि के चारु कमल (से उद्भूत) चतुर्मुख के लिये एक समय माता होनेवाले ! सारे धरणी-तल तथा तारकों के लोक को सहला कर उसके उस पार भी प्रसारित हो बढ़नेवाले ! गज और सप्त वृषभों को साथ ही आते समय झट जीत कर विजयी निकलनेवाले ! स्वामी ! मेरे लिये एक बार नाचो 'शेङ्कीरैं'—(सुन्दर नाच)। गोपों के युद्ध-ऋषभ ! नाचो नाचो। 3

[यहां गज शब्द से कुवलयापीड नामक हाथी से तात्पर्य है।

सप्त वृषभ—कुंभ एक गोपाधिप था जिसके नप्पिन्नै नामक एक बहुत सुन्दर पुत्री थी। उसके विवाह के लिये उसने एक प्रण रखा कि 'मेरी गोशाला में स्थित सात बैलों को जो वश में करेगा वही मेरी पुत्री को प्राप्त कर सकता है।' वे बैल इतने बली और अदम्य थे कि कोई उनके पास फटक भी न सकता था। श्रीकृष्ण ने अपने दिव्य बल से अनायास ही सातों पर एक साथ आक्रमण कर उनका वध किया। नप्पिन्नै के साथ उनका विवाह संपन्न किया गया।

हिन्दी साहित्य में ब्रज-नन्दन की 'प्रेयसियों में' राधा का जो सर्वोच्च स्थान है, वही तमिल साहित्य में नप्पिन्नै का है। कभी कभी 'पिन्नै' नाम से उनका उल्लेख है।]

67. जिससे देव हर्षित हुए और प्रवल-शकट लुढक कर नष्ट हुआ (इस प्रकार) वंचक दानवी के स्तन के विष को अमृत के समान पीनेवाले ! वन के बली कपित्थ के फल गिराने के विचार से एक बछडे को पकड़ कर फेंकनेवाले मेरे श्यामल गोवत्स (बालक) !

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

56. शुर्रुम् ओळि-व्वट्टम् शूळ्न्दु शोदि परन्दु एङ्गुम्,
एत्तनै शेय्यिलुम् एन् महन् मुकम् नेर्-ओव्वाय्,
वित्तहन् वेङ्कट-वाणन् उन्नै विळिक्किन्र्,
कैत्तलम् नोवामे अम्बुलो ! कडिदु ओडि वा ॥ 3

57. शक्कर-क्-कैयन् तडम्-कण्णाल् मलर विळित्तु,
ओक्कलै-मेल् इरुन्दु उन्नैये शुट्टि-क् काट्टुम् काण्,
तक्कदु अरिदियेल् चन्दिरा ! चलम् शेय्यादे,
मक्कळ् पेराद मलडन् अल्लैयेळ् वा कण्डाय् ॥ 4

58. अळहिय वायिल् अमुद ऊरल् तेळिवुरा,
मळलै मुर्राद इलम्-शोल्लाल उन्नै-क् कूवुकिन्रान्,
कुळहन् शिरी-दरन् कूव-क् कूव नी पोदियेल्,
पुळै-इल आहादे निन्-शेवि पुहर्-मामदी ॥ 5

59. तण्डोडु शक्करम् शार्ङ्गम् एन्दुम् तड-क्कैयन्,
कण्-तुयिल् कोळ्ल-क् करुदि-क् कोट्टावि कोळ्हिन्रान्,
उण्ड मूलै-प्-पाल् अरा कण्डाय् उरङ्गा-विडिल्,
विण्-तनिल् मन्निय मा-मदी ! विरैन्दु ओडि वा ॥ 6

60. बालकन् एन्रु परिपवम् शेय्येळ्, पण्डु ओरुनाल्
आलिन् इलै वळर्न्द शिरुक्कनवन् इवन्,
मेलेळ-प् पाय्न्दु पिडित्तु-क्-कोळ्ळुम् वेहुळुमेल्,
मालै मदियादे मा-मदी ! महिळ्न्दु ओडि वा ॥ 7

61. शिरियन् एन्रु एन् इळम्-शिङ्गत्तै इहळेल् कण्डाय्
शिरुमैयिन् वात्तैयै मावलि-यिडै-च् चेन्रु केळ्,
शिरुमै-प् पिळै कोळ्ळिल् नीयुम् उन्तेवैक्कु उरियै काण्,
निरै-मदी ! नेडु-माल् विरैन्दु उन्नै-क् कूवुकिन्रान् ॥ 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धनुक और मुर और स्थिरबली क्रूर नरक नामक असुरों के विरुद्ध जो तुम्हें मात्र देखने से अपने आप मृत से हो गये— युद्ध के लिये गंभीरता से चलनेवाले हाथी हो तुम। मेरे लिये एक बार नाचो 'शेङ्कीरै' (सुन्दर नाच)। गोपों के युद्ध-ऋषभ ! नाचो, नाचो। 4

68. मथानी से मथित दही और दीर्घ केशवाली सुन्दर मुग्धाओं का रखा घृत चोरी से लेकर निगलनेवाले ! दुरभिप्राय से आपस में विचार कर आगत यमलार्जुन को ऊरु और कर से धक्का दे गिरानेवाले उग्र पराक्रमशाली ! दंतुलियों का मंदहासपूर्ण हो आने से पहले मुँह पर सुंदर चिकुर-भार के झूमने के साथ, तात ! मेरे लिये एक बार नाचो 'शेङ्कीरै' (सुन्दर नाच) गोपों के युद्ध-ऋषभ ! नाचो नाचो। 5

69. अतसी-पुष्प के वर्णवाले ! नील जलद-सदृश रूपवाले ! वन के गंभीर ह्रद में कालिय के सिर पर पावन नाट्य करनेवाले सुंदर मेरे लाल ! तुंग मस्त हाथी के दांत उखाडनेवाले ! प्रणाली जान कर युद्ध के लिये सम्मुख आगत मल्ल को (अपने को) हानि के विना वध कर के संचारित चरण-युगवाले ! गोपाल ! मेरे लिये एक बार नाचो, शेङ्कीरै (सुंदर नाच)। गोपों के युद्ध-ऋषभ ! नाचो नाचो। 6

70. प्रवल अहीरों के वचन से विना चूके एक समय स्वच्छ नील-केशिनी सुंदर पुच्छवाले मयूर-तुल्या नप्पिन्नै (को प्राप्त करने) के लिये उत्तम सप्त ऋषभों का वध करने में समर्थ पराक्रमवाले एवं गोपों के नाथ होनेवाले ! (जनमते ही) अदृश्य होनेवाले पुत्रों को (अन्वेषण करते अपने परम ज्योतिर्मय परमधाम जाने ले लिये एक विलक्षण रथ चला कर) (वहां से पुत्रोंको ला) माता के साथ मिलानेवाले मेरे तात ! मेरे लिये एक वार नाचो 'शेङ्कीरै' (सुंदर नाच)। गोपों के युद्ध-ऋषभ ! नाचो, नाचो। 7

[वैदिक पुत्रानयन का वृत्तांत]

एक ब्राह्मण था जो श्रीकृष्ण का भक्त था। उसके घर में ज्यों ही बच्चा पैदा हुआ त्यों ही वह अदृश्य हो गया। इस प्रकार तीन बच्चे हुए और जन्मते जन्मते तीनों अदृश्य हो गये। व्रजभूमि के कान्ह के सौंदर्य को ज्यों का त्यों वैकुंठ में देखने की इच्छा से श्रीवैकुंठनाथ का महिषियां अपने संकल्प से जनमते ही बच्चों को ले गयी थीं। फिर एक बार जब ब्राह्मण की पत्नी आसन्नप्रसवा हुई, उसने अपने पति से जन्म लेने वाले बच्चे की रक्षा के लिये श्रीकृष्ण की सहायता लेने की प्रार्थना की। ब्राह्मण श्रीकृष्ण के पास गया जो एक ही दिन में किये जानेवाले एकाह-यज्ञ में दीक्षित थे और सहायता मांगी। श्रीकृष्ण उसके साथ निकलनेवाले ही थे कि अर्जुन ने आगे बढ़ कर कहा— आप यज्ञ में दीक्षित हैं। अतः आप न जायं। मैं ही जाऊंगा। श्रीकृष्ण की अनुमति पा कर अर्जुन ब्राह्मण के घर गया और उसके चारों तरफ अस्त्र-पंजर बांध कर प्रसव-काल की प्रतीक्षा में था। बच्चा पैदा हुआ, साथ ही अदृश्य हो गया। आकाश में बच्चे के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। ब्राह्मण दुखी हो कर अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण के पास गया जो प्रातः सवन (प्रातःकाल का होम) कर के विराजमान थे और सारा वृत्तांत कह सुनाया। श्रीकृष्ण ने अपना रथ मंगवाया और ब्राह्मण तथा अर्जुन दोनों को साथ ले कर उस पर बैठ कर चलाते हुए ब्रह्मांड के आवरण तक गये। वहां उस रथ में ही दोनों को छोड़ कर श्रीकृष्ण स्वयंप्रकाशमय परमधाम जा पहुंचे। वहा लक्ष्मी आदि महिषियों ने उनको देख आह्लादित हो कर स्वागत किया और ब्राह्मण-शिशुओं को जैसे के तैसे उनके हाथ में दे दिया। श्रीकृष्ण भी उनको ले कर ब्राह्मण और अर्जुन के साथ माध्यंदिन सवन (अर्थात् मध्याह्न के होम) के समय के पहले ही यज्ञशाला आये और चारों पुत्रों को उनकी माता के पास पहुंचाया।) 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

62. ताळियिळ वेण्णै तडङ्गै आर विळुङ्गिय,
पेळै वयिररु एँम्-पिरान् कण्डाय् उन्नै-क कूवुकिन्रान्,
आळि कोण्डु उन्नै एरियुम् ऐयुखु इल्लै काण्,
वाळ उरुदियेल् मा-मदी ! महिळ्न्दु ओडि वा ॥ 9

63. मैत्तडम्-कण्णि यशोदै तन् महनुक्कु, इवै
ओत्तन शोल्लि उरैत्त मार्रम्, ओळि-पुत्तूर्
वित्तहन् विट्टु-चित्तन् विरित्त तमिळ्-इवै
एत्तनैयुम् शोल्ल वल्लवरक्कु इडर् इल्लैये ॥ 10

I. vi. उय्य-उलहु

शेङ्कीरै-परुवम्

64. उय्य-उलहु पडैत्तु उण्ड मणि-वयिरा !
ऊळि-तोरूळि पल आलिन् इलै-अदन् मेळ,
पैय उयोगु-तुयिल् कोण्ड परम्परने !
पङ्गय-नीळ्-नयनत्तु अञ्जन-मेनियने !
शेय्यवळ् निन्नहलम् शेमम् एन-क्-करुदि-च्
चेल्वु पोलि-मकर-क् कादु तिहळन्दु इलह,
ऐय ! एनक्कु ओरुकाल् आडुह शेङ्कीरै,
आय हंळ पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 1

65. कोळ-अरियिन् उरुवम् कोण्डु अवुणन् उडलम्
कुरुदि कुळम्बि एळ-क् कूर् उहिराल् कुडैवाय् !
मीळ अवन् महनै मेय्म्मै कोळ-क् करुदि,
मेलै अमरर् पदि मिक्कु वेहुण्डु वर,
काळ-नन्-मेकम् अवै कल्लोडु काल् पोळिय-क्-
करुदि वरै-क् कुडैया-क् कालिहळ काप्पवने !
आळ एनक्कु ओरु-काल् आडुह शेङ्कीरै,
आयहंळ पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

71. तुमको गोद में ले अपने घर पहुँच तुम्हारे साथ यथामनोरथ व्यवहार कर लौटनेवाली कन्याएँ प्रसन्न होती हैं ; देखनेवालों के नेत्र जुड़ा जाते हैं ; और शिक्षित जन-स्तुति करते आते हैं। जन्म देनेवाली मुझपर कृपा करते हो। नित्य-कुरुंगुडि में विराजमान ! वेळ्ळरै में विराजमान ! प्राकारों से परिवृत शोलैमलै के अधिराज ! कण्णपुर के अमृत ! मेरा क्लेश दूर करनेवाले ! नाचो सुंदर नाच। सात लोकों के स्वामी ! नाचो नाचो।

[तिरु-क्-कुरुङ्गुडि, तिरु-वेळ्ळरै तिरु-माल्-इरुंशोलै-मलै, तिरुक्-कण्णपुरम्—ये सब दक्खिन के पुण्यक्षेत्र हैं।]

72. जिससे दूध के साथ घृत दही, निर्मल चंदन के साथ चंपक पंकज और उत्तम कर्पूर सुगंध को प्रवाहित करें, रमणीय सुरभित विद्रुम-तुल्य रक्तिम अधरों के वीच कोमल चांदी के अंकुर-जैसे कुछ दांत उद्भासित हों, श्यामल शरीर पर (हार के) सुंदर पंचायुधों के बीच तुम्हारा विंबाधर-अमृत एक एक कर के स्रवित हो। सुयोग्य वेद के सारभूत ! नाचो सुंदर नाच। सात लोकों के स्वामी ! नाचो नाचो। 9

73. अरुण पंकज-सदृश चरण की छोटी पंखड़ी-जैसी उंगली से समन्वित उज्ज्वल अंगूठियाँ और (नूपुर) किणकिणि और कमर में पड़ी सुवर्ण की करधनी, और वृन्त-युत उत्तम दाड़िम के पुष्प की आकृति की सुनहली घंटियाँ और अंगुलीयक और विद्रुम-कंकण और मंगल पंचायुध और अंगद और कर्ण-भूषण और मकरी और बाली और लटकन सब समान रूप से उद्भासित हो उठें। हमारे कुल के अधिराज ! नाचो सुंदर नाच। सात लोकों के स्वामी ! नाचो, नाचो। 10

74. "हँस और मत्स्य-रूप और नरसिंह और वामन और कूर्म (अवतरित) हो जानेवाले ! गोपों के नायक ! मेरे क्लेश-निवारक ! नाचो 'शेङ्कीरै' (सुंदर नाच)। सात लोकों के स्वामी ! नाचो नाचो" कह कर हँस-गामिनी कोमल-स्वभावा यशोदा जिस प्रकार से प्रफुल्लित हुईं, उसी को ले कर यश समृद्ध श्रीविल्लिपुत्तूर के भट्ट (श्रीविष्णुचित्त) ने तमिल में ये दस मधुर-संगीत-मालाएँ रचीं। इन के कथन में समर्थ लोक में आठ दिशाओं में अधिक यशस्वी हो कर आनंद को प्राप्त करेंगे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

66. नम्मुड नायकने ! नान्-मरैयिन् पोरुळे !
नावियुळ नर्-कमल नान्मुकनुक्कु, ओरु-काल्
तम्मनै-आनवने ! तरणि-तल-मुळुदुम्
तारकैयिन् उलहुम् तडवि अदन् पुरमुम्,
विम्म वळर्न्दवने ! वेळमुम् एळ्-विडैयुम्
विरविय वैले-तनुळ वेन्रु वरुमवने !
अम्म ! एनक्कु ओरुकाल् आडुह शेङ्कीरै
आयर्हळ पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 3

67. वानवर् ताम् महिळ वन्-शकटम् उरुळ
वञ्ज मुलै-प् पेयिन् नञ्जमदु उण्डवने !
कानक वल्-विळविन् काय् उदिर-क् करुदि-क्
कन्रु-अदु कोण्डु एरियुम् करु-निर एन् कन्रे !
तेनुकनुम् मुरनुम् तिण्-तिरल् वेन्नरकन्
एन्पवर् ताम् मडिय-च् चेरु-अदिर च चेल्लुम्,
आनै ! एनक्कु ओरुकाल् आडुह शेङ्कीरै,
आयर्हल पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 4

68. मत्तळवुम् तयिरुम् वार्-कुळल् नन्-मडवार्
वैत्तन नेय् कळवाल् वारि विळुङ्गि, ओरुङ्गु
ओत्त इणै मरुदम् उन्निय वन्दवरै
ऊरु करत्ति नोडुम् उन्दिय बेन्तिरलोय् !
मुत्तिन् इळ मुरुवल् मुर्र वरुवदन् मुन्
मुन्नम् मुहत्तु अणि-आर्-मोय्-कुळल्हल अलैय,
अत्त ! एनक्कु ओरु-काल् आडुह शेङ्कीरै,
आयर्हळ पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. vii. माणिक्क-क्-किण्किणि

[माणिक्य-किंकिणी]

I. vii. करताली-अवस्था

75. पूर्वकाल में जिनसे अपने क्षेत्र का ग्रहण किया, उन हाथों से (बजाओ) करताली जब कि उत्तम सुवर्ण के बने निर्दोष सुंदर मणि (तुल्य) कमर पर माणिक्य 'किणकिणि' (किंकिणी) की रुनझुन सुनाई पड़े, प्रेम से विद्रुमाधर और मोती (जैसे दांत) उद्भासित हों। नील अलकवाले बालक ! बजाओ करताली। 1

76. मेरी कमर (गोद) से खिसक कर, अपने गोपों के अधिराज की कमर (गोद) में बजाओ करताली जब कि सुवर्ण के कटि-सूत्र के साथ माणिक्य-किणकिणि अपनी कटि (अपने स्थान) पर हिल उठे, निरुपम लटकन झुक कर झूम उठे। मायी (प्रभु) ! बजाओ करताली। 2

77. तुम्हारे मणि-तुल्य मुंह के मोती (दांत) उद्भासित हों जो मेरे मणि-वर्णवाले के प्रकाशमान सुवर्ण के कर्णभूषण में खचित अनेक मणि मोती विद्रुम आदि के जसे हैं। अपनी माता की गोद में बजाओ करताली। चक्र-सहित सुंदर हाथवाले ! करताली। 3

78. 'आकाश में संचरित चाँद ! चन्द्र ! शुभ्र चांदनी से युक्त आंगन में उतर खेलने आओ' कह कर तुम खड़े हो कर बजाओ करताली, जिससे (तुम्हारी) प्रशंसा करनेवाले गोपों के अधिप हर्ष से विलसित हो जावें। कुडन्दै-शायी ! करताली।

[आजकल दक्षिण भारत में कुंभकोण नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र संतों के पदों में कुडन्दै कहा जाता है।]

79. कमर (गोद) में पंक और धूल से आ, कस कर गले लगा, घर में प्रविष्ट हो, चुपके से घड़े का दही और मटके का मक्खन खानेवाले भटकैये (नटखट) बछड़े ! बजाओ करताली। पद्मनाभ ! बजाओ करताली।

80. (सर्वलोक के) पिता (श्रीकृष्ण) के वचन को न मान कर, (पांडवों के प्रति कोप का) निरोध न कर के, भूमि पर राज करने के लोभ से युक्त (दुर्योधन आदि) सौ नृपति-गण युद्ध करने के उद्देश्य से जो आ डटे थे, वे (तुम्हारे रथ चलाने के कार्यमात्र को देखने से ही) विनष्ट हुए। पांचों (पांडवों) के लिये उसदिन रथ चलानेवाले हाथों से बजाओ करताली। देवकी-सिंह ! करताली। 6

81. जब अति-विस्तृत और गंभीर सागर अपने प्रति याचना में बढ़े हाथ पर उछलती तरंगें मार कर स्वयं अदृश्य ही खड़ा था, शर चला कर उसको विक्षुब्ध करनेवाले हाथों से (बजाओ) करताली। शार्ङ्ग-धनुर्हस्तवाले ! करताली। 7

82. वानर-वर्ग से गरजते समुद्र पर बल-पूर्वक पुल बांध कर विशाल जलधि से घिरी लंका के राक्षसों को नाश करने में समर्थ प्रबल बाणों को (युद्ध में) चलानेवाले हाथों से (बजाओ) करताली। चक्र-सहित सुंदर हस्तवाले ! करताली। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

69. काय-मलर् निर वा ! करु मुहिल् पोल् उरुवा !
कानक मा-मडुविल् काळियन् उच्चियिले
तूय नटम् पयिलुम् शुन्दर एन् शिरुवा !
तुङ्ग मद-क् करियिन् कोम्बु परित्तवने !
आयम् अरिन्दु पोरुवान् एदिर् वन्द मल्लै
अन्दरम् इन्रि अळित्तु आडिय ताळे-इणैयाय् !
आय ! एनक्कु ओरु-काल् आडुह शेङ्कीरै,
आयहैल पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 6

70. तुप्पुडै-आयहळ्-तम् शोल् वळुवादु ओरु-काल्
तूय-करुङ्-कुळल् नल्-तोहै मयिल्-अनैय,
नप्पिनै-तन् तिरमा नल्-विडै एळ्-अविय
नल्ल तिरल्-उडैय नादनुम् आनवने !
तप्पिन-पिळ्ळैहळ्-त् तन मिहु शोदि पुह-त्
तनि ओरु तेर् कडवि-त् तायोडु कूट्टिय, एन्
अप्प ! एनक्कु ओरु-काल् आडुह शेङ्कीरै,
आयहळ् पोरेरे ! आडुह आडुहवे ॥ 7

71. उन्नैयुम् ओक्कलैयिर् कोण्डु तम् इल् मरुवि
उन्नोडु तङ्गळ करुत्तायिन शेय्दु वरुम्
कन्नियरुम् महिल-क् कण्डवर् कण् कुळिर-क्
कर्रवर् तेर्रिवर-प् पेर्र एनक्कु अरुळि,
मन्नु कुरुङ्गुडियाय् ! बेळ्ळरैयाय् ! मदिल्-शूळ्
शोळै-मलैक्कु-अरशे ! कण्ण-पुरत्तु-अमुदे !
एन्नवलम् कळैवाय् ! आडुह शेङ्कीरै,
एळ्-उलहुम् उडैयाय् ! आडुह आडुहवै ॥ 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

83. नाप-माप कर निर्मित खंभे को जब हिरण्य ने (हाथ से) मारा तो वहीं उज्ज्वल नखों से युक्त अतिवर्धित सिंह-रूप धारण कर, (हिरण्य के) हृदय को स्पर्श कर, उसको भासमान विशाल छाती को विदीर्ण करनेवाले हाथों से (बजाओ) करताली। दानवी का स्तन पीनेवाले ! करताली। 9

84. जब अमर-गण ने शरण ली, (उनके लिये) गंभीर सागर को दाब कर, मंदर पर्वत को मथानी के रूप में स्थापित कर, वासुकि को सुदृढ़ रस्सी के रूप में बांध कर, उसको मथनेवाले हाथों से (बजाओ) करताली। नील जलद-वर्णवाले ! करताली। 10

85. दास बनाने के लिये अवतरित गोपों के अधीश्वर को सदा सुगंधित सुंदर उपवनों से युक्त श्रीविल्लिपुत्तूर के भट्ट (श्रीविष्णुचित्त) के द्वारा रुचि के साथ कथित करताली-द्वि-पंचक को रुचि से कहनेवालों के पाप दूर होंगे। 11

I. viii. तोंडर् शङ्गिलि

[निगड़-सांकल]

86. मानो एक वारण मंद गति से झूमता चलता हो, निगड़-सांकल झनझन करते हों, लटके सुनहले घंटे नाद करते हों, उद्भूत तीन मद-जल स्रवित होते हों, वैसे ही साथ मिल कर किंकिणि की रुनझुन हो, कटि की घंटी पटह-जैसे बज उठे, विशाल चरण युगल से शार्ङ्गपाणि लटपट चाल चलेगा भी क्या।

[तीन मद-जल—मत्त हाथी के कपोल, सूंड़ और मेढ़ तीन अवयवों से स्रवित होनेवाला मद-जल।] 1

87. रक्तिम आकाश के बीच शाखाग्र पर उदित बाल-चंद्र के अंकुर-जैसे सुस्मित अरुण अधर-वेदी पर शीतल धवल दंतांकुर उद्भासित हो शंख-मणि की माला पहन कर, कूर्माकृति के गहने को धारण करनेवाला अनंतशयन (अपने ही) सदृश नील रत्न-वर्णवाला वासुदेव लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 2

88. मानो विद्युल्लता और एक धवल चंद्र और घेरता परिवेष-मंडल हों, कटिसूत्र और शोभायमान पीपल-पत्र (की आकृति का आभूषण), नन्हे पीतांबर के साथ विद्युत-विलसित नील जलद-जैसे गले पर कंठ-भूषा के साथ स्वयं ही शोभायमान हृषीकेश लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 3

89. मानो इक्षु-रस-भरे मटके के खुलने से रस स्रवित हो, कलकल किलकारी करता, आ कर अभिमुख खड़ा हो कर चुंबन देनेवाला मेरा जलद-वर्ण लक्ष्मी-शोभित छातीवाला अपने को जन्म देनेवाली मुझको अपना अधरामृत दे कर मुझे पनपाता है। अपने ऊपर झपटते शत्रुओं के सिरों के ऊपर लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

72. पालोडु नेय्-तयिर् ओण् शान्दोडु शण्पहमुम्
पङ्क्यम् नल्ल करुप्पूरमुम् नारि वर,
कोल नरुम्-पवळ-च्-चेन्तुवर्-वायिनिडै-क्-
कोमळ-वेळ्ळि-मुळै पोल् शिल पल् इलह
नील-निरत्तु अळहार् ऐम्पडैयिन् नडुवे
निन् कनि-वाय् अमुदम् इऱ्ऱु मुरिन्दु विळ,
एलु-मरै-प् पोरुळे आडुह शेङ्कीरै,
एळ्-उलहुम् उडैयाय् ! आडुह आडुहवे ॥ 9

73. शेङ्-कमल-क् कळलिल् शिऱ्रिदळ् पोल् विरलिल्
शेर् तिहळ आळिहळुम् किणकिणियुम्, अरैयिल्
तङ्गिय पोन् वडमुम् ताळ नन् मादुळैयिन्
पूवोडु पोन् मणियुम् मोदिरमुम् किरियुम्
मङ्गल ऐम पडैयुम् तोळ् वळैयुम् कुळैयुम्
मकरमुम् वाळिहळुम् शुट्टियुम् ओत्तु इलह,
एङ्गळ् कुडिक्कु अरशे ! आडुह शेङ्कीरै,
एळ्-उलहुम्-उडैयाय् ! आडुह आडुहवे ॥ 10

74. अन्नमुम् मोन्-उरुवुम् आळरियुम् कुरळुम्
आ मैयुम् आनवने ! आयर्हळ् नायकने !
एन् अवलम् कळैवाय ! आडुह शेङ्कीरै,
एळ्-उलहुम् उडैयाय् ! आडुह आडुह' एन्रु,
अन्न-नडै मडवाळ् अशोदै उहन्द परिशु
आन पुहळ्-प पुदुवै-प् पट्टन् उरैत्त तमिळ्,
इन्निशै मालैहळ् इप्पत्तुम् वल्लार् उलहिल्
एण्-दिशैयुम् पुहळ् मिक्कु इन्पमदु एय्दुवरे ॥ 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

90. मानो पहले सुंदर एक ऊंचे रजत-गिरि का नन्हा पुत्र घड़ाघड़ दौड़ता हो, और पीछे अनुगत एक नील-गिरि का नन्हा पुत्र मंद पग रख कर चलता हो, उसी प्रकार बार बार दुनिया की की हुई प्रशंसा के भी परे अनंत-कीर्तिमान बलदेव-नामक अग्रज दौड़ता हो, (और उसका) अनुगमन करनेवाला लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 5

91. एक चरण में शंख, एक चरण में चक्र, तलवे में अंकित हैं। दोनों चरणों से ऐसा चल कर जिससे चिह्न दिखाई दे मानो स्थान स्थान पर चित्र खींचे हों, बहते हुए आनंद-प्रवाह पर और भी बरस बरस कर श्यामल शीतल सागर-वर्ण मन्मथ का तात लटपट चाल चलेगा भी क्या !

[मन्मथ का तात—मन्मथ का एक नाम प्रद्युम्न है। प्रद्युम्न श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र है। अतः श्रीकृष्ण मन्मथ के पिता कहलाते हैं ॥]

92. मानो विपुल पंकज-पुष्प के मुंह खुलते ही शीतल छोटी बूंदें (टपकती हों), उसी प्रकार दीर्घ रक्तिम अधर से (लार) स्रवित हो कर छूट छूट कर गिरती है। तेज़ बल के गले की घंटी के नाद-जैसे घुंघुरू 'घण-घण' बज उठे, (उस प्रकार) खड़ा हो कर विशाल चरण-युगल से शार्ङ्गपाणि लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 7

93. जिस (लटपट चाल) से शंखों से बनी करधनी खिसक चढ़ फिर नीचे हो, मानो श्यामल छोटे शैल के ढाल पर झरने दीप्तिमान हों, जिस (लटपट चाल) से सुंदर नितंब पार्श्व में चलायमान हों, जिसके तुल्य बालक को संसार में मनुष्यों ने जन्मा कर न जाना हो, ऐसे मणि-शिशु-रूप-वाला (उपमा) योग्य नीलमणि वर्ण वासुदेव लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 8

94. मानो एक गज का कलभ धवल धूल ऊपर डाल कर खेलता हो, (उसी प्रकार) स्वच्छ धूल में खेल, त्रिविक्रम पसीने से तर स्वल्प कांतियुक्त हो, समय पर विकसित विलसित कमल के सदृश (जिसके) छोटे पांव जिसमें कहीं टकरा कर पीड़ित न हों, शीतल पुष्पों की बनी गद्दी पर लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 9

95. रक्तिम लोचन प्रभु केशव के मनोज्ञ ललित मुख पर विलसित लटकन उद्भासित हो (उसकी लटपट चाल से) पार्श्व में झूमता है, मानों तरंगित जल पर चंद्र-मंडल (हो)। उछलती उच्च तरंगोंवाली गंगा से भी अधिक तीर्थ-फल देनेवाले जल-युक्त पुरुषेंद्रिय से बूंदें (उसके चलते चलते) स्रवित हों, इस प्रकार से लटपट चाल चलेगा भी क्या ! 10

96. अहीर-कुल में आकर अवतरित अंजन-वर्ण जो लटपट चाल चला जिससे माताएं प्रफुल्लित हुईं और वैरी अवसन्न हुए, उसको वेयर-कुल से प्रशंसित श्रीविष्णुचित्त ने भली भांति सविस्तर वर्णन किया। उसका कथन करने में जो समर्थ हैं, वे मायी मणिवर्ण के चरण में प्रणत संतान को प्राप्त करेंगे ॥

[वेयर-कुल—श्रीविष्णुचित्त जिस कुल में उत्पन्न हुए थे उसका नाम वेयर-कुल है।]

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. vii. माणिक्क-क् किणकिणि

(शप्पाणि-प् परुवम्)

75. माणिक्क-क् किणकिणि आर्प्प मरुङ्गिन् मेल्,
आणि-प् पोन्नार् चेयद आय् पोन्नुडै मणि,
पेणि-प् पवळवाय् मुत्तु इलङ्ग.-प् पण्डु
काणि कोण्ड कैह्ळाल् शप्पाणि
करुङ्-कुळल् कुट्टने ! शप्पाणि ॥ 1

76. पोन्नरै नाणोडु माणिक्क-क् किणकिणि
तन्नरै आड-त् तनि-च् चुट्टि ताळन्दु आड
एन्नरै मेल् निन्रु इळिन्दु उङ्गल् आयर-तम्
मन्नरै मेल् कोट्टाय् शप्पाणि
मायवने ! कोट्टाय् शप्पाणि ॥ 2

77. पन्-मणि मुत्तिन् पवळम् पदित्तन्न,
एन् मणि वण्णन् इलङ्गु पोर्रोट्टिन् मेल्,
निन् मणिवाय् मुत्तु इलङ्ग निन् अम्मै-तन्,
अम्मणि मेल् कोट्टाय् शप्पाणि,
आळि-अङ् कैयने ! शप्पाणि ॥ 3

78. तूनिला-मुर्रत्ते पोन्दु त्रिळैयाड,
वानिला अम्बुली चन्दिरा वा एन्रु,
नो निला निन्-ग्रुह्ळा निन्र आयर्-तम्
कोनिलाव-क् कोट्टाय् शप्पाणि
कुडन्दै-क् किडन्दाने ! शप्पाणि॥ 4

79. पुट्टियिर् चेरुम् पुळुदियुम् कोण्डु वन्दु,
अट्टि अमुक्कि अहम्-पुक्कु अरियामे,
शट्टि-त् तयिरुम् तडाविनिल् वेण्णेयुम् उण्,
पट्टि-क्-कन्रे ! कोट्टाय् शप्पाणि,
पद्मनापा ! कोट्टाय् शप्पाणि ॥ 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. ix. पोन्नियर्- किंकिणि

[सुवर्ण की बनी किंकिणी]

I. ii. (अच्चो-प् परुवम्)

(आलिंगन करने के लिये आह्वान)

97. सुवर्ण की बनी किंकिणी और लटकन स्थान पर सुबद्ध हो अपना स्वाभाविक "चलँ चलँ" नाद उत्पन्न करें, मानो विद्युत से सम्मिलित बादल त्वरित हो सामने से आता हो, मेरी गोद में दौड़ आ 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ) । मेरे प्रभु ! आओ । 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ) । 1

98. लाल कमल पर मधु पीनेवाले भ्रमर जैसे चिकुर आकर तुम्हारे विद्रुमाधर पर जुड़ गये हों, शंख, धनुष, खड्ग, गदा तथा चक्र के धारण करनेवाले सुंदर हस्तों से आ 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ) । आलिंगन करो. जिससे पूर्ण तृप्ति हो । 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ) । 2

99. पांचों (पांडवों) के दूत बन, भारत (युद्ध) का संचालन कर, उस सुंदर दह में जहाँ विष उगलनेवाला (कालिय) सर्प पड़ा था, प्रविष्ट हो कर उसके फण पर कूद पड़े, जिससे (सभी) भयभीत हुए। और (फिर) (उस कालिय पर) कृपा करनेवाले अंजनवर्ण ! 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ) । गोपों के स्वामी ! 'अच्चो अच्चो [कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ] । 3

100. 'सुगंधित चंदन हमें कुछ दो' कह (तुमने कुब्जा से मांगा) । निर्भय हो उसने भी सुंदर शरीर पर लगाया । निकला हुआ कूबड शरीर के भीतर ही धँस जाय और अदृश्य हो जाय इस तरह तुमने उस दिन (उसके शरीर पर) हाथ से मल दिया । 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ) । मेरे प्रभु ! आओ । 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ) । 4

101. चूड़ायुक्त (वीर) नृपतियों के मध्य में सूर्य के जैसे प्रकाशमान हो कर (दुर्योधन बैठा था और आज्ञा दे रखी थी कि श्रीकृष्ण के आने पर किसी को आसन से उठना नहीं चाहिये । परंतु ज्यों ही श्रीकृष्ण सभा में प्रविष्ट हुए सब विवश उठ खड़े हो गये ।) दुर्योधन भी उठने ही को था कि फिर (संभल कर) बैठ गया और तुमको (द्वेष से) देखा । अत्यधिक वंचना से युक्त उस दुर्योधन को आग्नेय दृष्टि से देखनेवाले ! 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ) । चक्र-सहित सुंदर हस्तवाले ! 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ) ।

[चूड़ायुक्त नृपति—विजय के उपलक्ष्य में वीरों को पुरस्कार में दिया जानेवाला पैरों का चूड़ा। उससे भूषित नृपति ।] 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

80. तारित्तु नूर्रुवर् तन्दै शोल् कोळ्ळादु,
पोर् उय्त्तु वन्दु पुहुन्दवर् मण्णाळ,
पारित्त मन्नवर् पड-प्-पञ्चवर्क्कु, अन्रु
तेर्-उय्त्तु कैकळाल् शप्पाणि
देवकि शिङ्गमे ! शप्पाणि ॥ 6

81. परन्दिट्टु निन्र पडु-कडल्, तन्नै
इरन्दिट्ट कैम्मेल् एरि-तिरै मोद,
करन्दिट्टु निन्र कडलै-क् कलङ्ग,
शरम् तोट्ट कैकळाल् शप्पाणि
शार्ङ्ग-विल् कैयने ! शप्पाणि ॥ 7

82. कुरक्किनत्ताले कुरै-कडल् तन्नै,
नेरुक्कि अणै कट्टि नीळ्-नीर्-इलङ्गै
अरक्कर् अविय अडु कणैयाले,
नेरुक्किय कैकळाल् शप्पाणि
नेमि अङ्-कैयने ! शप्पाणि ॥ 8

83. अळन्दिट्ट तूणै अवन् तट्ट, आङ्गे
वळर्न्दिट्टु वाळ्-उहिर्-च् चिङ्ग उरुवाय्,
उळन्दोट्टु इरणियन् ओण् मार्वहलम्,
पिळन्दिट्ट कैकळाल् शप्पाणि
पेय्-मुलै उण्डाने ! शप्पाणि ॥ 9

84. अडैन्दिट्टु अमरहळ् आळ्-कडल् तन्नै
मिडैन्दिट्टु मन्दरम् मत्ताह नाट्टि,
वडम् शुर्रि वाशुकि वन्-कयिराह-क्
कडैन्दिट्ट कैकळाल् शप्पाणि
कार्-मुहिल् वण्णने ! शप्पाणि ॥ 10

85. आट्-कोळ्ळ-त् तोन्रिय आयर्-तम् कोविनै,
नट्-कमळ् पूम्-पोळिल् विल्लि-पुत्तूर्-प् पट्टन्,
वेट्कैयाल् चोन्न शप्पाणि ईर्-ऐन्दुम्,
वेट्कैयिनाल् शोल्लुवार् विनै पोमे ॥ 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

102. इस भूमि का भार मिटाने के लिए तुम्हीं ने (कौरवों और पांडवों को) एक साथ ही युद्ध में उतरने का उपाय किया। अभिनव (पुष्प) माला-धारी विजय (अर्जुन) के हो कर (अन्य राजाओं के रथों के सारथियों के समान तुमने) उसका रथ चलाया। बादल के तुल्य शरीरवाले ! नील विशाल लोचनवाले ! आ कर आलिंगन करो जिससे पूर्ण तृप्ति हो। 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ)। गोपों के युद्ध- वृषभ ! 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ)। 6

103. बहुत ही अधिक यशस्वी महाबलि के यज्ञ में (जब वह वामन को दान देने को उद्यत हुआ) 'यह उचित नहीं' कहते हुए दान को रोकनेवाले शुक्र (आचार्य) के नेत्र को एक तिनके से खोद डालनेवाले चक्रपाणि ! 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ)। वाम भाग में शंखवाले ! 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ)। 7

104. (जब त्रिविक्रम रूप ले कर परमात्मा भूमि को मापने लगे, तब महाबलि के पुत्र) नमुचि ने कहा—"यह कैसी माया है ? मेरे पिता ने न जाना। पहले के जैसे ही (वामन) हो कर मापो"। यह कह हठ करनेवाले नमुचि को आकाश में घुमा देनेवाले ! उज्ज्वल किरीटवाले ! 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ)। वेंकट (गिरि) के स्वामी ! 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ)। 8

105. "दिखाई देनेवाले सागर और पहाड़ और सातों लोक (मेरे) मुंड (कपाल के भिक्षापात्र) के लिये पर्याप्त नहीं। हाय ! जलद-वर्ण !" कह कर घन जटा-मुकुट रुद्र के याचना करने पर (अपने शरीर के रक्त से ही) कपाल (का भिक्षा-पात्र) भरनेवाले ! 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ)। वक्ष पर (श्रीवत्स नामक) तिलवाले ! 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ, कंठ से लग जाओ)।

106. (एक समय) विपुल घने अंधकार ने लोक को घेर कर ढँक लिया और नित्य चार वेद पूर्णतया अदृश्य हो गये। (बिलकुल विलीन हुए)। तदनंतर इस लोक में जिससे विपुल अंधकार नष्ट हुआ उस प्रकार उस दिन हंस बननेवाले ! 'अच्चो अच्चो' (गले लग जाओ, गले लग जाओ)। दुर्ज्ञेय वेद देनेवाले। 'अच्चो अच्चो' (कंठ से लग जाओ। कंठ से लग जाओ)। 10

107. नारायण से, जो चाहनेवालों के सामने आ खड़ा होता है, ('अच्चो' कंठ से लग जाओ), आओ" बोल कर गोपी ने जो बातें कहीं, उन्हीं को, खंडों से अलंकृत प्रासादवाले श्रीविल्लिपुत्तुर के स्वामी भट्ट (श्रीविष्णुचित्त) ने कथन किया। नित्य इनको गानेवाले नित्य परमपद पर राज करेंगे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. viii. तोडर् शङ्गिलिकै

(तळर्-नडै-प् परुवम्)

86. तोडर्-शङ्गिलिकै चलार्-पिलार् एन्न-त्
तूङ्गु-पोन् मणि ओलिप्प,
पडु-मुम्मद-प् पुनल् शोर वारणम्
पैय निन्रु ऊर्वदु पोल्,
उडन्-कूडि-क् किण्किणि आर-वारिप्प
उडै-मणि परै करङ्ग,
तडम्-ताळ् इणै कोण्डु शार्ङ्गपाणि
तळर्-नडै नडवानो ॥ 1

87. शेक्कर्-इडै नुनि-क् कोम्बिल् तोन्रुम्
शिरु-पिरै मुळै पोल,
नक्क शेन्तुवर् वाय्-त् तिण्णै मीदे
नळिर् वेण्-पल् मुळै इलह,
अक्कु-वडम् उडुत्तु आमैत्तालि-पूण्ड
अनन्त-शयनन्,
तक्क-मा मणि-वण्णन् वाशुदेवन्
तळर्-नडै नडवानो ॥ 2

88. मिन्नु-क् कोडियुम् ओर् वेण् तिङ्गळुम्
शूळ् परि-वेडमुमाय्,
पिन्नल् तुलङ्गुम् अरशिलैयुम्
पीतक-च् चिर्राडै-योडुम्,
मिन्निल् पोलिन्ददोर् कार्-मुहिल् पोल्-क्
कळुत्तिनिल् कारैयोडुम्,
तन्निर् पोलिन्द इरुडीकेशन्
तळर्-नडै नडवानो ॥ 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. x. वट्टु नडुवे

[गोल के बीच]

(पीठ से लगने का आनंदानुभव)

108. गोल (द्वय) के बीच उत्पन्न माणिक्य-मुकुल के अग्र में अंकुरित मोती जैसी टप टप बूँद स्रवित होते होते, मेरा नन्हा लाल आ मेरी पीठ से लग जाता है। गोविंद मेरी पीठ से लग जाता हैं। 1

109. किंकिणि बांध, हाथ में विद्रुम-वलय बाँध, कंकण धारण कर, कंठ पर सिकड़ी वांध (पहन), अपने नेत्र से (मुझे देखने हुए) चतुर गति से चला आ, मेरा कान्ह मेरी पीठ से लग जाता है। मेरा प्रभु मेरी पीठ से लग जाता है। 2

110. अत्यधिक परिमाण में पड़ी विपुल संपत्ति को (भाइयों से) मिल एक हो कर अनुभव किये बिना भूमि पर राज्य करने का इच्छुक था (दुर्योधन, सौ भाइयों के) दल का अधिप। उसके कुल के नाश के लिये अवतरित मेरा तात मेरी पीठ से लग जाता है। गोपों का वृषभ मेरी पीठ मे लग जाता है। 3

111. "नान्दक (नामक असि) का धारण करनेवाले पूर्ण ! (मेरी) शरण (हो)" कह कर प्रणत धनंजय का हो कर, जिससे धरणी के नृपति-गण अवसन्न हुए उस प्रकार विजय (अर्जुन) का सुंदर और दृढ़ रथ चलानेवाला मेरी पीठ से लग जाता है। देवाधीश मेरी पीठ से लग जाता है। 4

112. कांसे की छुरी बांध, (मयूर के) अनेक पंखों से सिंगार कर, हरे पत्तोंवाले पेड़ों के तले विहार करता है। पूर्वकाल में यह भूमि आदि अनेक (लोकों) का ग्रहण कर रहा था और लोग विविध रागों में गा कर 'वहु वर्ष विजयी रहो' बोल रहे थे। वह मेरी पीठ से लग जाता है, वामन मेरी पीठ से लग जाता है। 5

113. छत्र धारण कर, विलक्षण एक ब्रह्मचारी हो, उत्तर-वेदी पर स्थित एक (महावलि) से क्षत्रियों के देखते देखते सारी क्षोणी का ग्रहण करनेवाला भद्राकार पीठ से लग जाता है। भूमि को मापनेवाला मेरी पीठ से लग जाता है। 6

114. छिद्रोंवाली (जीर्ण) ओखली औंधा कर, उस पर चढ़, मीठा दूध और मटके का मक्खन बड़े चावसे भर पेट निगलनेवाला तात आ कर मेरी पीठ से लग जाता है। चक्रधारी मेरी पीठ से लग जाता है। 7

115. वृद्धों के दल के देखते देखते, पुराने रेत की पहाड़ी पर चढ़, प्रीतिपूर्वक नर्तन कर, बांसुरी से गीत गा कर, (भाग्य से) उपस्थित ब्राह्मणों के प्रणत होते होते और देवों की स्तुति करते करते, आ कर मेरी पीठ से लग जाता है। मेरा प्रभु मेरी पीठ से लग जाता है। 8

116. इन्द्र के (नन्दन) उद्यान में स्थित कल्प वृक्ष की इच्छा जब प्रेयसी (सत्यभामा)

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

89. कन्नल्-कुडम् तिरन्दाल्-ओत्तु ऊरि-क्
कण-क्रण शिरित्तु वन्दु,
मुन् वन्दु निन्रु मुत्तम् तरुम् एन्
मुहिल्-वण्णन् तिरु-मार्वन्,
तन्नै-प् पेर्रेक्कु-त् तन् वाय्-अमुदम् तन्द
एन्नै-त् तळिर्प्पिक्किन्रान्,
तन्नेर्रु मार्रलर् तलैहळ् मोदे
तळर् नडै नडवानो ॥ 4

90. मुन् नल् ओर् वेळ्ळि-प् पेरुमलै-क् कुट्टन्
मोडु-मोडु पिरैन्दु ओड,
पिन्नै-त् तोडर्न्ददोर् करुमलै-क् कुट्टन्
पेयर्न्दु अडि इडुवदु पोल्,
पन्नि उलहम् परवि ओवा-प् पुहळ् प्
पल-देवन् एन्नुम्,
तन् नम्बि ओड-प् पिन् कूड-च् चेल्वान्
तळर्-नडै नडवानो ॥ 5

91. ओरु कालिल् शङ्गु ओरु कालिल् शक्करम्
उळ्ळडि पोरित्तु अमैन्द,
इरु-कालुम् कोण्डु अङ्गङ्गु एळुदिनार् पोल्
इलच्चिनै पड नडन्दु,
पेरुहा-निन्र इन्प वेळ्ळत्तिन् मेल्
पिन्नैयुम् पेय्दु पेय्दु,
करु-कार्-क् कडल्-वण्णन् कामर्-तादै
तळर्-नडै नडवानो ॥ 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने प्रकट की, कहा कि अभी दे दूंगा। चांदनी से शोभित आंगन में रोप कर उसे पनपानेवाला मेरी पीठ से लग जाता है। देवों का अधीश मेरी पीठ से लग जाता है। 9

117. वंश-विपुल-भुजवाली गोपी (यशोदा) ने उस दिन चक्रधारी प्रभु के पीठ से लगने के विषय में जो वचन कहे, उन्हें श्रीविष्णुचित्त ने प्रमुदित हो कर तमिल में प्रदान किया। इन द्वि-पंचक (पदों) के कथन में समर्थ सुयोग्य सत्संतान को प्राप्त कर आनंदित होंगे। 10

II. i. मेच्चूदु

[प्रशंसनीय प्रकार से वजाये]

(श्रीकृष्ण का हौआ दिखाना)

118. प्रशंसनीय प्रकार से वजाये हुए शंख को वाम भाग में धारण करनेवाला, मंगल वांसुरी वजानेवाला, जो झूठे जुए में पराजित हुए और जो क्षमाशील थे उन राजाओं, (अर्थात् पाण्डवों) का हो कर दूत वना और जिस दिन दस गांव भी प्राप्त न हुए, तव भारत (युद्ध) का संचालन किया। वह दूत हौआ दिखाता है, मैया री ! हौआ दिखाता है।

[श्रीकृष्ण, जो निरा नन्हा शिशु है, अपने हाथों में परत्व-सूचक शंख और चक्र को दिखा कर गोपियों को डराते हुए खेलता है। शंख-चक्र दिखाना ही यहां हौआ दिखाना है।] 1

119. जिससे गिरि-सदृश भुजवाले नृपति और महारथी और अन्य अनेक (वीर) भी ध्वस्त हुए, जिससे (दुर्योधन आदि) शत (भाई) भी निस्तेज हो मर मिटे, जिससे पार्थ का धनुष (युद्ध में वाण-वर्षा करने के लिये) झुक गया, उस प्रकार सुदृढ़ रथ पर सामने अवस्थित होनेवाला रक्तिम लोचनवाला वकवादी आ हौआ दिखाता है, मैया री ! हौआ दिखाता है।

[बंधु-स्नेह के कारण और धर्म को अधर्म समझने के कारण अर्जुन युद्ध करने में निरुत्साही बन बैठा था। उसको धैर्य-वचन कह कर उत्साह दिलाने मात्र से संतोष न कर श्रीकृष्ण ने बहुत सी अन्य बातें कहीं—शरीर, जीव, ईश्वर आदि का स्वरूप, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, शरणागति आदि—जो प्रकरण के अनुपयुक्त-सी दीखती हैं। इसलिये यहां श्रीकृष्ण को बकवादी कहते हैं ।। 2

120. (यमुना के) तप्त जल में प्रविष्ट हो, कदंब वृक्ष पर चढ़, कालिय के क्रूर फण पर कूद कर जिससे किंकिणी वज उठी, नर्तन कर, वेणु की वांसुरी बजा कर विदग्ध हो कर अवस्थित गोप आ हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है। 3

121. अंधकार में जन्म ले, (दूसरे स्थान) जा, मुग्ध वलवान् गोपों की (कंस-विषय की) वढ़ वढ़ कर बातों को रोक, प्रवल कंस को पटका जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। उस दिन (जब हम स्नान करने गयीं) हमारे सुंदर पट्ट वस्त्र को हरलेनेवाला नटखट आ हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है। 4

122. बैल जुता शकट चूर कर, घृत की चाह से चोरी कर, बद्ध हो, नंद-रानी के हाथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

92. पडर् पङ्गय मलर् वाय्-नेहिळ-प्
पनि-पडु शिरु-तुळि पोल्,
इडम् कोण्ड शेव्वाय् ऊरि ऊरि
इर्‌रु इर्‌रु वीळ निन्‌रु,
कडुम् शे-क् कळुत्तिन् मणि-क् कुरल् पोल्
उडै-मणि कण-कणेन,
तडम्-ताळ्-इणै कोण्डु शार्ङ्गपाणि
तळर्-नडै नडवानो ॥ 7

93. पक्कम् करुम्-शिरु-प्-पारै मीदे
अरुविहळ् पहर्‌न्दनैय
अक्कु-वडम् इळिन्दु एरि-त्-ताळ
अणि-अल्हुल् पुडै पेयर,
मक्कळ् उलहिनिल् पेय्‌दु अरियाद
मणि-क्-कुळवि ऊरुविन्
तक्क-मा-मणि-वण्णन् वाशुदेवन्
तळर्-नडै नडवानो ॥ 8

94. वेण्-पुळुदि मेल् पेय्‌दु-कोण्डु अळैन्ददोर
वेळत्तिन् करुम् कन्‌रु पोल्,
तेण्-पुळुदि आडि-त् तिरि विक्किरमन्
शिरु-पुहर् पड वियर्‌त्तु,
ओण्-पोदु-अलर् कमल-च् चिरु-क् काल्
उरैत्तु ओन्‌रुम् नोवामे,
तण्-पोदु कोण्ड तविशिन् मीदे
तळर् नडै नडवानो ॥ 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन्थन-रस्सी से मार खा, थरथरा तड़प तड़प कर उस दिन जो (ओखली से) बंध गया, वह हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है ॥ 5

123. तरुण मृदु कलशोपमित-स्तनवाली देवकी पूर्णा के सामने भले प्रकार से आविर्भूत हो, हम भूमिवाली गोपियों के रखे घृत और दही निगलनेवाला तात आ हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है। 6

124. यशोदा ने (इसको) दत्तक लिया क्या, अथवा स्वयं ही जन्म दिया क्या ? सदृश (अनुकूल) चित्तवाली यशोदा का बाल-सिंह, (फूलों के) गुच्छों से पूर्ण नील चिकुरवाला गोपाल, पराक्रमी सिंह, स्वामी आ हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है। 7

125. स्तन (—सदृश कूवड़वाली) क्रूर कुब्जा के वचन मान, कुवलय (भूमि) में तुंग करी (हाथी), और अश्व, और राज्य और सर्वत्र (वन भी) भरत को दे कर, क्रूर वन जा पहुँचनेवाला सुंदर लोचनवाला (कान्ह) हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है। 8

126. पातकी ग्राह के मुख में पड़ा गजेंद्र चीख हाथ जोड़ "मेरा कान्ह ! कान्ह !" बोला तो, सहायता देने के लिये पक्षी (गरुड़) को चला कर, वहां (गजेंद्र को) प्राप्त दुख मिटानेवाला पराक्रमी आ हौआ दिखाता है। मैया री ! हौआ दिखाता है। 9

127. बलवान पुरुषों से पूर्ण लंका क्षुब्ध हो गई, उस प्रकार शर-प्रयोग करनेवाले धनुर्धर का श्रीविष्णुचित्त ने सविस्तर वर्णन किया। शब्दों से पूर्ण हौआ-विषयक इन दस पदों के कथन में समर्थ (मनुष्य) (अर्चिरादि गति से) जा कर श्रीवैकुंठ (पहुंच कर) स्थिर-वास करेंगे। 10

II. ii. अरवणैयाय्

[नागशायी]

(स्तन पीने का आह्वान)

128. नागशायी ! गोप-वृषभ ! चूंची पीने निद्रा से उठो। रात में भी बिना खाये ही तुम सो गये और आज भी दुपहरिया हो गयी। (तुम स्वयं) आते नहीं दीखते। पेट (भीतर) चला गया है। पृथु स्तन से दूध स्रवित हो बहता है। सौंदर्य से पूर्ण मुंह लगा, आह्लादित हो, चरण से प्रहार करते हुए (स्तन) पीलो। 1

129. मेरे उपकारक ! तुम्हारे जन्म लेने के बाद रखा घृत, और उबला दूध और छना दही और सुगंधित मक्खन कुछ भी सुरक्षित नहीं जाना। जो चाहा तुम कर पाये। (मैं) कुछ नहीं करूंगी। कुपित मत हो ओ। मोती-जैसे (दांतों से) मुस्करा कर, नासा खींच स्तन पीलो। 2

130. अपने अपने बच्चे रोते हुए चलें तो माताएँ सह नहीं सकतीं। आ कर तुम से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

95. तिरै-नीर्-च् चन्दिर-मण्डलम् पोल्
शेङ्-कण् माल् केशवन्, तन्
तिरु-नीर् मुहत्तु-त् तुलङ्गु शुट्टि
तिहळ्न्दु एङ्गुम् पुडै पेयर,
पेरु-नीर्-त्-तिरै एळु-गङ्गैयिलुम्
पेरियदोर् तीर्त्त-पलम्
तरु-नीर्, शिरु-च् चण्णम् तुळ्ळम् शोर-त्
तळर् नडै नडवानो ॥ 10

96. आयर् कुलत्तिनिल् तन्दु तोन्रिय
अञ्जन वण्णन् तन्नै,
तायर् महिळ ओन्नार् तळर-त्
तळर् नडै नडन्ददनै,
वेयर् पुहळ् विट्टु-चित्तन् शीराल्
विरित्तन उरैक्क वल्लार्
मायन् मणि-वण्णन् ताळ् पणियुम्
मक्कळै-प् पेरुवहंळे ॥ 11

I. ix. पोन्नियल्-किण्किणि

(अच्चो-प् परुवम्)

97. पोन्नियल-क्रिण्किणि शुट्टि पुरम् कट्टि,
तन्नियल् ओशै चलन् चलन् एन्रिड,
मिन्नियल् मेहम् विरैन्दु एदिर् वन्दार्-पोल्,
एन् इडैक्कु ओट्टरा अच्चो अच्चो
एम्पेरुमान् वाराय् अच्चो अच्चो ॥ 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झगड़ा करती हैं तो (उसी से) सुखी होने में समर्थ वासुदेव ! तुम्हारे पिता तुम्हारे प्रति ध्यान देनेवाले ही नहीं। मैं तुम्हें नहीं डांट सकती। नंदगोप के सुंदर लाल ! मेरा स्रवित स्तन पी लो। 3

131. कंस से उत्प्रेरित वंचनात्मक शकट जिससे चूर चूर हो गया इस प्रकार रूई-जैसे कोमल चरण से जब तुमने लात मारी, (मैं) भयभीत हुई कि उसे पीड़ा होगी। हाय ! (सारे) गोप-वृंद की (भीति) तो इतनी नहीं थी, समझ लो। देवों के अधीश ! कंस को अपनी वंचना से जाल में फंसा दिया। स्तन पी लो। 4

132. दुष्ट-बुद्धि कंस तुमसे कुपित है। (तुम्हारी) असावधानी देख कर अपनी माया से यदि वह (तुम्हें) फंसा देता है तो मैं जी नहीं सकती, वासुदेव ! माताओं के मुंह के वचन पालनीय हैं, समझ लो। मुक्तकंठ से मैं ने कह दिया—जाओ मत। गोप-भूमि के मंगल-दीपक ! आ आराम से मेरा स्तन पी लो। 5

133. विद्युत के सदृश सूक्ष्म-कटिवालियों के दीर्घ केश में प्रविष्ट भ्रमर जहां मधुर गान करते हैं, उस श्रीविल्लिपुत्तूर में सुप्रीति से विराजित होनेवाले ! तुम्हें देखनेवाले कहते हैं—जिसके पेट से यह जनमा उस पेटवाली ने किस तरह के व्रत का पालन किया था, कौन जाने ? ऐसे वचनों को मुझको प्राप्त करानेवाले हृषीकेश ! स्तन पी लो। 6

134. तुम्हें देखनेवाली स्त्रियों ने, जो (गृहिणी हो कर) सुख से रहती हैं, इस आशा से कि तुम्हारे जैसे (पुत्र) को प्राप्त करें, (अन्यत्र) जाना ही छोड़ दिया। भ्रमर-संचरित सुंदर कुंतलवालीं (जो कन्याएँ हैं) नयन-युगल से तुम्हें पूर्णतया देख कर तुम्हारे अधरामृत पान करने की इच्छा से (तुम्हें) उठा ले जाने के लिये आ खड़ी हैं। गोविंद ! तुम स्तन पी लो। 7

135. दो पर्वत-जैसे आक्रमण करनेवाले मल्ल-द्वय का अंग दग्ध करनेवाले ! जिससे सौंदर्य से पूर्ण तुम्हारा उज्ज्वल वक्षःस्थल भींग जाय इस प्रकार मेरी गोद में चढ़ कर, एक स्तन को मुंह में रख, एक स्तन को रगड़ते हुए, दोनों स्तनों को बारी बारी से ललक ललक कर आराम से पी लो। 8

136. मानो सुंदर कमल पुष्प के भीतर सौंदर्यान्वित मोती बिखरे हुए हों, रक्तिम कमल मुख प्रस्वेदित हो, उस प्रकार इस आंगन के बीच में नटखटपन करके खेलो मत। सारा अंग धूलि-धूसरित हो जायगा। लाड़ले ! वहां देवों को पेटभर अमृत वितरण करनेवाले देवाधीश ! स्तन पी लो। 9

137. जब तुम दौड़ दौड़ कर चलते हो, किंकिणियाँ बज उठती हैं। उनकी ध्वनि के ढंग से गा गा कर आनेवाले तुम को मैं पद्मनाभ समझती थी। नाच नाच कर, झूम झूम कर उसके अनुसार नर्तन करते हुए भाग भाग कर चले मत जाना। उत्तम ! तुम स्तन पी लो। 10

138. कंचुक से अलंकृत स्तनवाली गोपी बोली-"माधव ! (स्तन) पियो।" उनके वचनों को भट्टनाथ स्वामी (श्रीविष्णुचित्त) ने गाया जिनकी कीर्ति (सारे) भूमंडल को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

98. शेङ्कमल-प् पूविल् तेन्-उण्णुम् वण्डे पोल्,
पङ्गिहळ् वन्दु उन् पवळ वाय् मोय्प्प,
शङ्गु विल् वाळ् तण्डु शक्करम् एन्दिय
अङ्कैहळाले वन्दु अच्चो अच्चो
आर-त् तळुवाय् वन्दु अच्चो अच्चो ॥ 2

99. पञ्चवर् तूदनाय्-प् पारदम् कै-शैय्दु,
नञ्चु-उमिळ् नाहम् किडन्द नळ् पोय्है पुक्कु,
अञ्च-प् पणत्तिन् मेल् पाय्न्दिट्टु अरुळ्-शेय्द
अञ्जन-वण्णने ! अच्चो अच्चो
आयर्-पेरुमाने ! अच्चो अच्चो ॥ 3

100. 'नारिय शान्तम् नमक्कु इरै नल्हु' एन्न
तेरि अवळुम् तिरु-उडम्बिल् पूश,
ऊरिय कूनिनै उळ्ळे ओडुङ्ग, अन् रु
एर उरुविनाय् अच्चो अच्चो
एम्पेरुमान् ! वाराय् अच्चो अच्चो ॥ 4

101. कळल्-मन्नर् शूळ-क्-कदिर् पोल् विळङ्गि,
एळल्-उर्रु मीण्डे इरुन्दु उन्नै नोक्कुम्,
शुळलै पेरिदुडै-त्-तुच्चोदननै,
अळल विळित्ताने ! अच्चो अच्चो
आळि-अङ्-कैयने ! अच्चो अच्चो ॥ 5

102. पोर्-ओक्क-प्-पण्णि इ-प् पूमि-प् पोरै तोर्प्पान्,
तेर्-ओक्क ऊरन्दाय् शेळुम् तार् विशयर्काय्,
कार्-ओक्कुम् मेनि-क् करुम् पेरुम् कण्णने !
आर-त् तळुवाय् वन्दु अच्चो अच्चो
आयर्हळ् पोरेरे ! अच्चो अच्चो 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

103. मिक्क पेरुम् पुहळ् मावलि वेळ्वियिल्,
तक्कदु इदन्रु एन्रु दानम् विलक्किय,
शुक्किरन् कण्णै-त् तुरुम्बाल् किळरिय
शक्कर-क् कैयने ! अच्चो अच्चो
शङ्कम् इडत्ताने ! अच्चो अच्चो ॥ 7

104. 'एन्निदु मायम् ? एन्-अप्पन् अरिन्दिलन्',
मुन्नैय वण्णमे कोण्डु अळवाय्' एन्न,
मन्नु नमुचियै वानिल् शुळर्रिय,
मिन्नु-मुडियने ! अच्चो अच्चो
वेङ्कड-वाणने ! अच्चो अच्चो । 8

105, 'कण्ड कडलुम् मलैयुम् उलहेळुम्.
मुण्डत्तुक्कु आर्रा मुहिल्-वण्णा ! ओ' एन्रु,
इण्डै-च् चडै मुडि ईशन् इर-क् कोळ्ळ,
मण्डै निरैत्ताने ! अच्चो अच्चो
मार्विल् मरुवने ! अच्चो अच्चो । 9

106 तुन्निय पेर्-इरुळ् शूळ्न्दु उलहै मूड,
मन्निय नान्-मरै मुर्रुम् मरैन्दिड,
पिन्-इव्वुलहिनिल् पेर्-इरुळ् नीङ्ग, अन्रु
अन्नमदु आनाने ! अच्चो अच्चो
अरु-मरै तन्दाने ! अच्चो अच्चो । 10

107. नच्चुवार् मुन् निर्कुम् नारायणन् तन्नै,
'अच्चो वरुह' एन्रु आयच्चि उरैत्तन,
मच्चणि माड-प् पुदुवै-क्कोन् पट्टन् शोल्,
निच्चलुम् पाडुवार् नीळ् विशुम्बु आळ्वरे ॥ 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

I. x. वट्टु-नडुवे

(पुरम् पुल्हल्)

108. वट्टु नडुवे वळर्हिन्र्, माणिक्क
मोट्टु नुनैयिल् मुळैक्किन्र मुत तेपोल्,
चोट्टु-च् चोट्टेन्न-त् तुळिक्क-त् तुळिक्क, एन्
कुट्टन् वन्दु एन्नै-प्-पुरम् पुल्हुवान्
गोविन्दन् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान् ॥ 1

109. किण्-किणि कट्टि-क् किरि कट्टि-क् कैयिनिल्,
कङ्कणम् इट्टु-क् कळुत्तिल् तोडर् कट्टि,
तन्-कणत्ताले शदिरा नडन्दु वन्दु,
एन् कण्णन् एन्नै-प्-पुरम् पुल्हुवान्
एम्-पिरान् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान् ॥ 2

110. कत्त-क् कदित्तु-क् किडन्द पेरुञ् चेल्वम्,
ओत्तु-प् पोरुन्दि-क् कोण्डु उण्णादु मण्णाळ्वान्,
कोत्तु-त् तलैवन् कुडि केड-त् तोन्रिय,
अत्तन् वन्दु एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान्
आयर्हळ्-एरु एन् पुरम् पुल्हुवान् ॥ 3

111. नान्दहम् एन्दिय नम्बि शरण् एन्रु
ताळ्न्द तनञ्जयर्कु आहि, तरणियिल्
वेन्दर्हळ् उट्क विजयन्-मणि-त् तिण्-तेर्
ऊर्न्दवन् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान्
उम्बर्-कोन् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान् ॥ 4

112. वैण्कल-प्-पत्तिरम् कट्टि विळैयाडि,
कण्-पल शेय्द करुन्-तळै-क् काविन् कीळ्,
पण् पल पाडि-प् पल्लाण्डु इशैप्प, पण्डु
मण्-पल कोण्डान् पुरम् पुल्हुवान्
वामनन् एन्नै-प्-पुरम् पुल्हुवान् ॥ 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

113. चत्तिरम् एन्दि-त् तनि ओरु माणियाय्,
उत्तर-व्वेदियिल् निन्र् ओरुवनै-क्,
कत्तिरियर् काण-क् काणि मुर्रुम् कोण्ड,
पत्तिराकारन् पुरम् पुल्हुवान्
पार्-अळन्दान् एन् पुरम् पुल्हुवान् ॥ 6

114. पोत्त उरलै-क्-कविळ्त्तु अदन् मेल् एरि,
तित्तित्त पालुम् तडाविनिल् वेण्णेयुम्,
मेत-त्-तिरुवयिरु आर विलुङ्गिय,
अत्तन् वन्दु एन्नै-प्-पुरम् पुल्हुवान्
आळियान् एन्नै-प्-पुरम् पुल्हुवान् ॥ 7

115. मूत्तवै काण मुदु मणल् कुन्रु एरि,
कूत्तु उवन्दाडि-क् कुळलाल् इशै पाडि,
वाय्त्त मरैयोर् वणङ्ग, इमैयवर्
एत्त वन्दु एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान्
उम्बर्-कोन् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान् ॥ 8

116. कर्पह-क् कावु करुदिय कादलिक्कु,
इप्पोळुदु ईवन् एन्रु इन्दिरन् काविनिल्,
निर्पन शेयदु निला-त्तिहळ् मुर्रत्तुळ्,
उय्त्तवन् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान्
उम्बर्-कोन् एन्नै-प् पुरम् पुल्हुवान् । 9

117. आय्च्चि अन्रु आळि-प् पिरान् पुरम् पुल्हिय,
वेय्-त् तडम्-तोळि शोल् विट्टु-चित्तन् महिळ्न्दु,
ईत्त तमिळ् ईवै ईर् ऐन्दुम् वल्लवर्
वाय्त्त नन्-मक्कळै-प् पेर्रु महिळ्वरे । 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. i. मेच्चूदु

(पूच्चि काट्टुदल्)

118. मेच्चूदु शङ्गम् इडत्तान् नल्-वेय् ऊदि,
पोय्च्चूदिल् तोर्र पोरै-युडै मन्नर्क्काय्,
पत्तूर् पेरादन्रु पारदम् कै-शेय्द,
अत्-तूदन् अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 1

119. मलै-पुरै तोळ् मन्नवरुम् मारतरुम् मर्रुम्,
पलर् कुलैय नूर्रुवरुम् पट्टळिय,-प् पार्त्तन्
शिलै वळैय-त् तिण् तेर् मेल् मुन्-निन्र, शेङ्-कण्
अलवलै वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 2

120. कायु-नीर् पुक्कु-क् कडम्बु एरि, काळियन्
तीय पणत्तिल् शिलम्बु आर्क्क-प् पाय्न्दु आडि,
वेयिन् कुळल् ऊदि वित्तहनाय् निन्र,
आयन् वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 3

121. इरुट्टिल् पिरन्दु पोय् एळै वल्-आयर्,
मरुट्टै-त् तविर्प्पित्तु वन्-कञ्जन् माळ-प्
पुरट्टि, अन्नाळ् एङ्गळ् पूम्-पट्टु-क्-कोण्ड,
अरट्टन् वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 4

122. शे-प् पूण्ड शाडु शिदरि,-त् तिरुडि नेय्क्कु
आप्पूण्ड नन्दन मनैवि कडै ताम्बाल्,
शोप्पूण्डु तुळ्ळि-त् तुडिक्क-त् तुडिक्क, अन्रु
आप्पूण्डान् अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

123. शेप्पिळ मेन्-मुलै-त् तेवकि नङ्गैक्कु-च्,
चोप्पड-त् तोन्रि-त् तोरु-प् पाडियोम् वैत्त,
तुप्पमुम् पालुम् तयिरुम् विळुङ्गिय,
अप्पन् वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 6

124. तत्तु-क् कोण्डाळ् कोलो ताने पेर्राळ् कोलो,
चित्तम् अनैयाळ् अशोदै इळम्-शिङ्गम्,
कोत्तार् करुङ्-कुळल् गोपाल कोळ्-अरि,
अत्तन् वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् 7

125. कोङ्गै वन्-कूनि शोल् कोण्डु. कुवलय-त्
तुङ्ग-क् करियुम् परियुम् इराच्चियमुम्,
एङ्गुम् बरतर्कु अरुळि वन्-कान् अडै,
अङ्-कण्णन् अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 8

126. पदक मुदलै वाय्प्पट्ट कळिरु,
कदरि-क् कै कूप्पि एन् कण्णा कण्णा एन्न,
उदव-प् पुळ् ऊर्न्दु अङ्गु उरु तुयर् तीर्त्त,
अदकन् वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्
अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान् ॥ 9

127. वल्लाळ् इलङ्गै मलङ्ग-च् चरम् तुरन्द
विल्लाळनै विट्टु-चित्तन् विरित्त
शोल्लार्न्द अप्पूच्चि-प् पाडल् इवै पत्तुम्
वल्लार् पोय, वैकुन्दम् मन्नि इरुप्पर ॥ 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. ii अरवणैयाय्

(स्तन्य-पान)

128. अरवणैयाय्! आयरेरे! अम्मम् उण्ण-त्-तुयिल् एळाये,
इरवुम् उण्णादु उरङ्गि नी पोय् इन्रुम् उच्चि कोण्डदालो,
वरवुम् काणेन् वयिरु अशैन्दाय् वनमुलैहळ् शोर्न्दु-पाय,
तिरुवुडैय वाय् मडुत्तु-त् तिळैत्तु उदैत्तु-प्-परुहिडाये ॥ 1

129. वैत्त नेय्युम् काय्न्द पालुम् वडि-तयिरुम् नरु-वेण्णेयुम्,
इत्तनैयुम् पेर्ररियेन् एम्-पिरान् नी पिरन्द पिन्नै,
एत्तनैयुम् शेय्य-प् पेर्राय् एदुम् शेय्येन् कदम् पडादे,
मुत्तनैय मुरुवल् शेय्दु मूक्कुरुञ्चि मुलै उणाये ॥ 2

130. तम् तम् मक्कळ् अळुदु शेन्राल् ताय्मार्-आवार् तरिक्क किल्लार्,
वन्दु निन्-मेल् पूशल् शेय्य वाळवल्ल वाशुदेवा!
उन्दैयार् उन्-तिरत्तर् अल्लर् उन्नै नान् ओन्रु उरप्प-माट्टेन्,
नन्द गोपन् अणि-शिरुवा! नान् शुरन्द मुलै उणाये ॥ 3

131. कञ्चन् तन्नाल् पुणर्क्कं-प् पट्ट कळ्ळ-च् चकडु कलक्कु अळिय,
पञ्चि-अन्न मेल्लडियाल् पाय्न्द-पोदु नोन्दिडुम् एन्रु,
अञ्चिनेन् काण् अमरर्-क्कोवे! आयर् कूट्टत्तु अळवण्रालो,
कञ्चनै उन् वञ्चनैयाल् वलैप्पडुत्ताय्! मुलै उणाये। 4

132. तीय पुन्दि-क् कञ्चन् उन् मेल् शिनम् उडैयन् शोर्वु पार्त्तु,
मायम्-तन्नाल् वलै-प् पडुक्किल् वाळ-किल्लेन् वाशुदेवा!
तायर् वाय्-च् चोल् करुमम् कण्डाय् शार्रि-च् चोन्नेन् पोह वेण्डा,
आयर् पाडिक्कु अणि विळक्के! अमर्न्दु वन्दु एन् मुलै उणाये। 5

133. मिन्-अनैय नुण् इडैयार् विरि कुळल् मेल् नुळैन्द वण्डु,
इन्निशैक्कुम् विल्लिपुत्तूर् इनिदमर्न्दाय्! उन्नै-क् कण्डार्,
एन्न नोन्पु नोर्राळ् कोलो इवनै-प् पेर्र वयिरुडैयाळ्,
एन्नुम् वार्त्तै एय्दुवित्त इरुडीकेशा! मुलै उणाये। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

134. पेण्डिर् वाळ्वार् निन्-ओप्पारै-प् पेरुदुम् एन्नुम् आशैयाले,
कण्डवर्हळ् पोक्कु ओळिन्दार् कण्-इणैयाल् कलक्क नोक्कि,
वण्डु-उलाम्-पूङ्-कुळलिनार् उन् वाय्-अमुदम् उण्ण वेण्डि-क्
कोण्डु पोवान् वन्दु निन्रार् गोविन्दा ! नी मुलै उणाये। 7

135. इरु-मलै पोल् एदिर्न्द मल्लर् इरुवर् अङ्गम् एरि-शेय्दाय्, उन्
तिरु मलिन्दु तिहळु मावु तेक्क वन्दु एन् अल्हुल् एरि,
ओरु मुलैयै वाय् मडुत्तु ओरु मुलैयै नेरुडि-क् कोण्डु,
इरु मुलैयुम् मुरै मुरैया एङ्गि एङ्गि इरुन्दु उणाये। 8

136. अङ्कमल-प् पोदु अहत्तिल् अणि-कोळ् मुत्तम् शिन्दिनार्पोल्
शेङ्कमल मुकम् वियर्प्प-त् तीमै शेय्दु इम्-मुर्रत्तु ऊडे,
अङ्गम् एल्लाम् पुळुदियाह अळैय वेण्डा अम्म !, विम्म
अङ्गु अमरर्क्कु अमुदु अळित्त अमरर् कोवे ! मुलै उणाये। 9

137. ओड ओड-क्-किण्-किणिहळ् ओलिक्कुम् ओशैप्पाणियाले,
पाडि-प् पाडि वरुहिन्रायै-प् पर्पनाबन् एन्रु इरुन्देन्,
आडि आडि अशैन्दु अशैन्दिट्टु अदनुक्कु एर्र कूत्तै आडि,
ओडि ओडि-प् पोय् विडादे उत्तमा ! नी मुलै उणाये। 10

138. वार्-अणिन्द कोङ्गै आय्च्चि 'मादवा ! उण्' एन्र मार्रम्,
नीर्-अणिन्द कुवळै वाशम् निहळ नारुम् विल्लिपुत्तूर्,
पार्-अणिन्द तोल्-पुहळान् पट्टर्-पिरान् पाडल् वल्लार्,
शीर्-अणिन्द शेङ्-कण् माल् मेल् शेन्र चिन्तै पेरुवर् तामे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. iii. पोय्-प्-पाडु

(कादु कुत्तल्)

139. पोय्-प् पाडु-उडैय निन्-तन्दैयुम् ताळ्त्तान्
पोरु–तिरल् कञ्जन कडियन्,
काप्पारुम् इल्लै कडल्–वण्णा ! उन्नै-त्
तनिये पोय् एङ्गुम् तिरिदि,
पेय्–प् पाल् मुलै उण्ड पित्तने ! केशव
नम्बी ! उन्नै-क् कादु कुत्त,
आय्-प् पालर् पेण्डुकळ् एल्लारुम् वन्दार्
अडैक्काय् तिरुत्ति नान् वैत्तेन् । 1

140. वण्ण-प् पवळम् मरुङ्गिनिल् शात्ति
मलर्-प् पाद–क् किण्किणि आर्प्प,
नण्णि–त् तोळुमवर् शिन्दै पिरियाद्
नारायणा ! इङ्गे वाराय्,
एण्णर्कु-अरिय पिराने ! तिरियै
एरियामे कादुक्कु इडुवन्
कण्णुक्कु नन्रुम् अळहुम् उडैय
कनक-क् कडिप्पुम् इवैया । 2

141. वैयम् एल्लाम् पेरुम् वार्-कडल् वाळुम्
मकर-क् कुळै कोण्डु वैत्तेन्,
वेय्यवे कादिल् तिरियै इडुवन् नी
वेण्डियदु एल्लाम् तरुवन्,
उय्य इव्-आयर् कुलत्तिनिल् तोन्रिय
ओण्-शुडर् आयर् कोळुन्दे !,
मैयन्मै शेय्दु इळ आय्च्चियर् उळ्ळत्तु
मादवने ! इङ्गे वाराय् । 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शोभा देती है और जो श्रीविल्लिपुत्तूर के स्वामी हैं जो जल को भूषित करनेवाले नीलोत्पल के सौरभ से सदा सुगंधित हैं। इन पदों के कथन करनेवाले ऐसे मन से युक्त हो जायंगे जो मंगल-गुण-भूषित रक्तिमलोचन प्रभु में ही लीन हुआ हो। 11

II. iii. पोय्-प्-पाडुडय

[रक्षण कार्य में लगा]

(कनछेदन)

139. रक्षण-कार्य में लगा तुम्हारा पिता भी गायों के पीछे चल कर (लौट आने में) विलंव करता है। युद्ध करने में प्रबल कंस तो क्रूर है। सागर-वर्णवाले ! तुम्हारी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है। अकेले ही जा कर सर्वत्र घूमते हो। दानवी का दूध पीनेवाले वावले ! केशव ! पूर्ण ! तुम्हारे कर्ण-वेधन (कनछेदन उत्सव) में सभी गोप-वालक और ललनाएं आ गयी हैं। तांवूल सज्जित कर के मैंने रखा है। 1

140, वर्ण युक्त निद्रुम को कमर में पहन कर, कमल-चरण की किंकिणी की ध्वनि के साथ इधर आओ। आश्रय ले नत होनेवालों की चिंता से कभी अलग न होनेवाले नारायण! (अनाश्रितों को) चिंतन के लिये दुर्लभ प्रभु ! (मैं) इस तरह वर्तिका कान में लगाऊंगी जिससे जलन न हो। ये सुवर्ण के कर्ण-भूषण भी (तो) हैं जो नेत्रों के लिये बहुत ही सुंदर हैं। 2

141. मैं ने यह कर्ण-भूषण ला रखा है जो विपुल सागर में जीवित मकर की आकृति जैसा है, और जिसका मूल्य सारे संसार के मूल्य के जैसा है। (वांछनीय ढंग से) कान में वर्तिका अल्प उष्णता के साथ लगाऊंगी। तुम जो चाहो सब दे दूंगी। गोप-कुल में (उनके) निस्तार के लिये अवतरित उज्ज्वल ज्योतिर्मय गोप-पल्लव ! प्रेमांध बना कर तरुण गोपियों के हृदय में बसनेवाले माधव ! इधर आओ। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

142. वणम्-नन्रु उडैय वयिर-क् कडिप्पिट्टु
वार्-कादु ताळ-प् पेरुक्कि,
गुणम् नन्रु उडैयर् इक्-कोपाल पिळ्ळैहळ्
गोविन्दा ! नी शोल्लु-क् कोळ्ळाय्,
इणै नन्रु अळहिय इक् कडिप्पु इट्टाल्
इनिय पला-प् पळम् तन्दु
शुण-नन्रु अणि-मुलै उण्ण-त् तरुवन् नान्
शोत्तम् पिरान् ! इङ्गे वाराय्। 4

143. 'शोत्तम् पिरान्' एन्रु इरन्दालुम् कोळ्ळाय्
शुरि कुळलारोडु नी पोय्,
कोत्तु-क् कुरवै पिणैन्दु इङ्गु वन्दाल्
गुणम् कोण्डिडुवनो ? नम्बी !
पेर्त्तुम् पेरियन अप्पम् तरुवन्
पिराने ! तिरि इड ओट्टिल्
वेय्-त् तडन्-तोळर् विरुम्बु करुङ् कुळल्
विट्टुवे ! नी इङ्गे वाराय्। 5

144. विण्णेल्लाम् केट्क अळुदिट्टाय् उन् वायिल्
विरुम्बि अदनै नान् नोक्कि,
मण्णेल्लाम् कण्डु एन् मनत्तु उळ्ळे अञ्जि
मदु-शूदने एन्रु इरुन्देन्,
पुण्-एतुंम् इल्लै उन् कादु मरियुम्
पोरुत्तु इरै-प् पोदु इरु नम्बी !,
कण्णा ! एन् कार् मुहिले ! कडल् वण्णा !
कावलने ! मुलै उणाये। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

142. कैसे अच्छे गुणवाले ये गोप-बालक हैं जिन्होंने सुंदर वर्णयुक्त वज्र-कुंडल धारण कर लिया और दीर्घ कान को बढ़ाया जिससे वह (कंधे तक) लटकता है। गोविंद ! तुम (मेरी) बात नहीं मानते। परस्पर अनुरूप और कमनीय कर्णभूषण पहन लोगे तो मीठा कटहल फल दे कर मैं सुवर्ण कोमल सुंदर स्तन पीने दूंगी। हाथ जोड़ती हूं, प्रभु ! इधर आ जाओ। 4

143. "हाथ जोड़ती हूँ, प्रभु !" कह कर विनती करने पर भी तुम नहीं मानते। कुटिल कुंतलवालियों के संग जा, (हाथ) मिला, रास-लीला कर यदि तुम यहाँ आते हो तो, क्या (उसको) गुण ही ग्रहण करूं ? (अर्थात् तुम्हें गुणवान् ही मानूं ?) पूर्ण ! यदि वर्तिका लगाने दोगे तो, छोटे को बदल कर बड़े होनेवाले पुए दूंगी, प्रभु ! नील चिकुरवाले विष्णु ! तुम पर वंशोपमित विशाल भुजवालियां रीझ जाती हैं। तुम इधर आ जाओ। 5

144. (जब मैं ने डांटा कि क्या तुमने मिट्टी खायी,) तुम रोये जिससे सारा आकाश ही गूँज उठा। चाहती हुई (कि देखूं क्या मुंह में मिट्टी है) जब मैं ने उसे देखा (वहां) सारी भूमि को देख कर अपने मन के भीतर चकित हो मैं ने समझ लिया कि (यह) मधुसूदन ही है। (तुम्हारे) कान में कोई व्रण नहीं। (हिलते हो तो) कान कट जायगा। थोड़ी देर सहन करते रहो, पूर्ण ! कान्ह ! मेरे नील जलद ! सागर वर्ण ! रक्षक ! स्तन पी लो। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

145. 'मुलै एदुम् वेण्डेन्' एन्ऱु ओडि
निन् कादिल् कडिप्पै-प् परित्तु एरिन्दिट्टु,
मलैयै एडुत्तु महिऴ्न्दु कल्-
मारि कात्तु-प् पशु-निरै मेय्त्ताय् !
शिलै ओन्ऱु इऱुत्ताय् ! तिरि-विक्किरमा !
तिरु-आयर् पाडि-प् पिराने !
तलै निलाप्पोदे उन् कादै-प् पेरुक्कादे
विट्टिट्टेन् कुऱ्ऱमे अन्ऱे। 7

146. "'एन् कुऱ्ऱमे' एन्ऱु शोल्लवुम् वेण्डा काण्
एन्नै नान् मण् उण्डेनाह,
अन्पुऱ्ऱु नोक्कि अडित्तुम् पिडित्तुम्
अनैवर्क्कुम् काट्टिऱ्ऱिलैये",
वन्-पुऱ्ऱरविन्-पहै-क् कोडि
वामन नम्बी ! उन् कादुहळ् तूरुम्,
तुन्पुऱ्ऱन एल्लाम् तीर्प्पाय् ! पिराने !
तिरि इट्टु-च् चोल्लहेन् मेय्ये। 8

147. "'मेय्' एन्ऱु शोल्लुवार् शोल्लै-क् करुदि
'तोडुप्पु उण्डाय् वेण्णेयै' एन्ऱु,
कैयै-प्-पिडित्तु-क् करै उरलोडु एन्नै-क्
काणवे कट्टिऱ्ऱिलैये,"
"शेय्दन शोल्लि-च् चिरित्तु अङ्गु इरुक्किल्
शिरीदरा ! उन्-कादु तूरुम्,
कैयिल् तिरियै इट्टुकिडाय् इन्-निन्ऱ
कारिकैयार् शिरियामे।" 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

145. "स्तन (आदि) कुछ भी (मैं) नहीं चाहता" कह भाग, अपने कान के आभूषण को खींच फेंक, पर्वत को उठा, हर्षित हो, पत्थर की वर्षा से रक्षा कर गो-समूह को चरानेवाले ! अद्वितीय धनुष को तोड़नेवाले ! त्रिविक्रम ! सुंदर गोप-भूमि के प्रभु ! दोष मेरा ही है जिसने तुम्हारे कान को तभी छेदन किये बिना छोड़ दिया जब (तुम्हारा) सिर अपने आप निश्चल नहीं था (अर्थात् जब तुममें अपने आप कुछ करने की शक्ति नहीं थी। अब तुम बड़े हो गये और सिर हिला रहे हो)। 7

146. (श्रीकृष्ण कहते हैं—)"अपना दोष मत कहना, समझ लो। यह सोच कर कि मैंने मिट्टी खायी और (मुंह में मिट्टी है कि नहीं जानने के लिये) प्रेम के साथ देख, मार कर और पकड़ कर सब को दिखाया नहीं क्या ?" (यशोदा कहती हैं)—"वल्मीक के प्रबल नाग के शत्रु गरुड़ को ध्वज में रखनेवाले वामन ! पूर्ण ! तुम्हारे कान (के छेद) भर जायंगे। जो जो दुःखरूप हैं उन सब को मिटानेवाले ! प्रभु ! वर्तिका लगा कर बोलूँगी (जो तुम चाहते हो)। सत्य (कहती हूँ)। 8

147. "कहनेवालों के वचन को सत्य मान कर, 'चोरी कर के (तुमने) मक्खन खाया' बोल, हाथ पकड़, बगल के उलूखल से मुझको (सब के) देखते देखते तुमने बाँधा नहीं क्या"। (यशोदा कहती हैं)—(मेरा) किया हुआ कह, हँसते हँसते वहाँ (दूर) रहते हो तो, श्रीधर ! तुम्हारे कान (का छेद) भर जायगा। हाथ की वर्तिका को लगाने दो (जिसमें) सुंदर स्त्रियाँ (भूषण-रहित कनछेदवाला कह कर) न उपहास करें। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

148. "कारिकैयार्क्कुम् उनक्कुम् इळुक्कुर्रेन्
काटुहळ् वीङ्गि एरियिल्",
"तारियादाहिल् तलै नोन्दिडुम् एन्रु
विट्टिट्टेन् कुर्रमे अन्रे,
शेरियिल् पिळ्ळैहळ् एल्लारुम्
कादु पेरुक्कि-त् तिरियवुम् काण्डि,
एर्-विडै शेर्रु इळङ् कन्रु एरिन्दिट्ट
इरुडीकेशा ! एन्-तन् कण्णे।" 10

149, कण्णै-क्-कु ळिर-क् कलन्दु एङ्गुम् नोक्कि-क्
कडि-कमळ् पूङ्-कुळलाहळ्,
एण्णत्तुळ् एन्रुम् इरुन्दु तित्तिक्कुम्
पेरुमाने ! एङ्गळ् अमुदे !,
उण्ण-क् कनिहळ् तरुवन् कडिप्पु
ओन्रुम् नोवामे कादुक्कु इडुवन्,
पण्णै-क् किळिय-च् चकडम् उदैत्तिट्ट
पर्प-नाबा ! इङ्गे वाराय्। 11

150. "'वा' एन्रु शोल्लि एन् कैयै-प् पिडित्तु
वलियवे कादिल् कडिप्पै,
नोव-त् तिरिक्किल् उनक्कु इङ्गु इळुक्कुर्रेन्
कादुहळ् नोन्दिडुम् किल्लेन्",
"नावर्पळम् कोण्डुवैत्तेन् इवै काणाय्!
नम्बी, मुन् वञ्च महळै-च्
शाव-प् पाल् उण्डु शकडु इर-प् पायन्दिट्ट
दामोदरा ! इङ्गे वाराय्। 12

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

148. (श्रीकृष्ण कहते हैं)—"सुंदर स्त्रियों को तथा तुमको क्या हानि है यदि मेरे कान सूज जल उठें।" यशोदा कहती हैं)—"सहन नहीं कर सकते तो सिर को पीड़ा होगी यह सोच कर छोड़नेवाली ही का दोष है यह। घोष में सभी बालक कान छेद कर टहलते हैं, देखो न। (आक्रमण करनेवाले अरिष्टनेमि नामक) वृषभ का नाश कर बाल-बछड़े को फेंकनेवाले हृषीकेश ! मेरे लोचन !" 10

149. (तुम्हारी आंख से) आंख मिला कर जिससे वह जुड़ जाय, पूर्णतया (तुम्हें) देख, सौरभ से सुगंधित सुंदर कुंतलवालियों के चिंतन में सर्वदा रह कर स्वादु लगनेवाले स्वामी ! हमारे अमृत ! खाने के लिये फल दूँगी, भूषण को विना पीड़ा दिये कान में पहना दूँगी। सारा अंग चूर चूर हो गया उस प्रकार शकट को लात मारनेवाले पद्मनाभ ! इधर आओ। 11

150. (श्रीकृष्ण कहते हैं—) "आओ कह, मेरा हाथ पकड़, बलपूर्वक कान में, पीड़ा होते होते, भूषण को लगाने से तुम्हें क्या हानि है ? कान दुखेंगे, मैं नहीं (सह) सकता।" (यशोदा कहती हैं—) जामुन फल ला रखे हैं ; ये देख लो, पूर्व ! पूर्व (काल में) बंचक (दानव) स्त्री का दूध पिया जिससे वह मर गयी, शकट पर आक्रमण किया जिससे वह टूट गया। दामोदर ! इधर आ जाओ। 12

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

151. वार्-कादु ताळ-प् पेरुक्कि अमैत्तु
मकर-क् कुळै इड वेण्डि,
शोराल् अशोदै तिरुमालै-च् चोन्न शोल्
शिन्दैयुळ् निन्रु तिहळ,
पारार् तोल् पुहळान् पुदुवै मन्नन्
पन्निरु नामत्ताल् चोन्न,
आराद अन्तादि पन्निरण्डुम् वल्लार्
अच्चुदनुक्कु अडियारे। 13

II. iv. वेण्णेय् अळैन्द

(नीराट्टम्)

152. वेण्णेय् अळैन्द कुणुङ्गुम् विळैयाडु पुळुदियुम् कोण्डु,
तिण्णेन इव्विरा उन्नै-त् तेय्त्तु-क् किडक्कनान् ओट्टेन्,
एण्णेय् पुळिप्पळम् कोण्डु इङ्गु एत्तनै पोदुम् इरुन्देन्,
नण्णल् अरिय पिराने! नारणा! नीराड वाराय्। 1

153. कन्रुहळ् ओड-च् चेवियिल् कट्टेरुम्बु पिडित्तिट्टाल्,
तेन्रि-क् केडुमाहिल् वेण्णेय् तिरट्टि विळुङ्गुमाकाण्पन्,
निन्र मरामरम् शाय्त्ताय् नीपिरन्द निरुवोणम्
इन्रु, नी नीराड वेण्डुम् एम्पिरान्! ओडादे वाराय्। 2

154. पेय्च्चि मुलै उण्ण-क्-कण्डु पिन्नैयुम् निल्लादु एन् नेञ्चम्,
आय्च्चियर् एल्लारुम् कूडि अळैक्कवुम् नान् मुलै तन्देन्,
काय्च्चिन नीरोडु नेल्लि कडारत्तिल् पूरित्तु वैत्तेन्,
वाय्त्त पुहळ् मणि-वण्णा मञ्जनम् आड नी वाराय्। 3

155. कञ्जन् पुणर्प्पिनिल् वन्द कडिय शकटम् उदैत्तु,
वञ्जक-प् पेय्महल् तुञ्ज वाय् मुलै वैत्त पिराने!,
मञ्जळुम् शेङ्कळुनीरिन् वाशिकैयुम् नरु-शान्दुम्,
अञ्जनमुम् कोण्डु वैत्तेन् अळहने! नीराड वाराय्। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

151. दीर्घ कान (के छेद) को वड़ा वना कर जिससे वह (कंधे तक) लटके, मकर-कुंडल पहनाने की इच्छा से मंगल गुणवाली यशोदा श्रियः पति से जो वचन बोलीं, वे जिनकी चिंता में टिक उद्भासित हुए और जो भूमि में पूर्ण प्राचीन यशवाले थे, और जो श्रीविल्लिपुत्तूर के अधिप थे, उन (श्रीविष्णुचित्त) ने द्वादश नामों से युक्त अन्त्यादि रूप में अतृप्त (बनाये रहनेवाले) द्वादश पदों को कहा। इनके कथन में समर्थ (मनुष्य) अच्युत के दास हैं।

[द्वादश-नाम—केशव, नारायण, माधव, गोविंद, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, हृषीकेश, पद्मनाभ और दामोदर—ये भगवान् के बारह नाम हैं जो क्रमशः बारहों पदों में उल्लिखित हैं।] 13

II. iv. वेंण्णेय अळैंद

[मक्खन में (हाथ) लगाने से]

(स्नान करने को आह्वान)

152. (वार वार) मक्खन में (हाथ) लगाने से उत्पन्न मक्खन की बू, तथा खेलने से लगी धूल के साथ (सोने जाओगे तो शरीर में खुजलाहट होगी।) इस रात मैं तुमको (शरीर) खुजलाते पड़े रहने न दूँगी-यह निश्चित है। (स्नान कराने के लिये) तेल और इमली फल ले कर कितनी देर से यहाँ बैठी हूँ। (स्वयत्न से किसी को भी) पास पहुँचने को दुर्लभ प्रभु ! नारायण ! स्नान करने आओ। 1

153. काले चींटे पकड़ कर बछड़ों के कान में डालते हो जिससे वे (भयभीत हो) भागते हैं। तितर-वितर हो यदि वे अदृश्य हो जायँ तो देखूं तुम किस प्रकार मक्खन ले कर खाते हो। (राम हो कर) दृढ़-स्थित (सप्त) साल वृक्षों को गिरानेवाले ! आज श्रवण नक्षत्र का दिन है जिसमें तुम जनमे थे। अतः तुम्हें स्नान करना होगा। मेरे प्रभु ! भागो मत, आओ। 2

154. दानवी का स्तन पीते हुए तुम्हें देख (डर लगने पर) भी मेरे हृदय ने नहीं माना। सभी गोपियों के मिल कर पुकारने पर भी मैंने स्तन पिलाया। तपे जल के साथ आमलक कड़ाह में भर रखा है। स्वयं आगत-यशवाले मणिवर्ण ! मज्जन करने तुम आओ। 3

155. कंस की प्रेरणा से आगत क्रूर शकट को लात मार, वंचक दानव-स्त्री के स्तन पर मुंह लगाया जिससे वह मर गयी। प्रभु ! हल्दी और कल्हार की माला और सुगंधित चंदन और अंजन मैंने सजा रखे हैं। सौंदर्य-निधि ! तुम स्नान करने आओ। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

156. अप्पम् कलन्द शिर्रुण्डि अक्कारम् पालिल् कलन्दु,
शोप्पड नान् शुट्टु वैत्तेन् तिन्नल् उरुदियेल् नम्बि !
शेप्पिळ मेन्-मुलैयार्हल् शिरु पुरम् पेशि-च् चिरिप्पर्
शोप्पड नीराड वेण्डुम् शोत्तम् पिरान् इङ्गे वाराय्। 5

157. एण्णेय्-क् कुडत्तै उरुट्टि इळम् पिळ्ळै किळ्ळि एळुप्पि,
कण्णै-प् पुरट्टि विळित्तु-क् कळकण्डु शेय्युम् पिराने !
उण्ण-क् कनिहळ् तरुवन् ओलि-क् कडल् ओद-नीर् पोले
वण्णम् अळहिय नम्बी ! मञ्जनम् आड नी वाराय्। 6

158. करन्द नर्-पालुम् तयिरुम् कडैन्दु उरि मेल् वैत्त वेण्णेय्,
पिरन्ददुवे मुदलाह-प्-पेर् ररियेन् एम्-पिराने !
शिरन्द नर्राय् अलर् तूर्रुम् एन्पदनाल् पिरर् मुन्ने,
मरन्दुम् उरै-याड-माट्टेन् मञ्जनम् आड नी वाराय्। 7

159. कन्रिनै वाल्-ओलै कट्टि-क् कनिहळ् उदिर एरिन्दु,
पिन् तोडर्न्दु ओडि ओर् पाम्बै-प् पिडित्तु-क् कोण्डु आट्टिनाय् पोलुम्,
निन् तिरत्तेन् अल्लेन् नम्बी नी पिरन्द तिरु नन्नाळ्
नन्रु नी नीराड वेण्डुम् नारणा ! ओडादे वाराय्। 8

160. पूणि-त् तोळुविनिल् पुक्कु-प् पुळुदि अळैन्द पोन् मेनि,
काण-प् पेरिदुम् उहप्पन् आहिलुम् कण्डार् पळिप्पर्,
नाण् एत्तनैयुम् इलादाय् नप्पिन्नै कानिल् शिरिक्कुम्,
माणिक्कमे ! एन् मणिये ! मञ्जनम् आड नी वाराय। 9

161. कार् मलि-मेनि निरत्तु-क् कण्ण पिरानै उहन्दु,
वार्-मलि-कोङ्गै यशोदै मञ्जनम् आट्टिय आर्रै-प्।
पार्-मलि तोल् पुदुवै-क् कोन् पट्टर् पिरान् शोन्न-प् पाडल्
शीर्-मलि शेन्तमिळ् वल्लार् ती-विनै यादुम् इलरे। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

156. अपूप से मिश्रित पकवान दूध से संमिलित मिश्री सब सुचारु रूप से मैंने बना रखे हैं। पूर्ण ! यदि खाना चाहते हो तो पहले अच्छी तरह स्नान करना होगा। (स्नान नहीं करोगे तो) तरुण कोमल कुंभ-(सदृश) स्तनवाली ललनाएं (तुम्हारे) पीठ-पीछे बातें कर हँसी उड़ायेंगी। स्वामी ! हाथ जोडती हूं, इधर आओ। 5

157. तेल के घड़े को लुढ़का, छोटे बच्चे को चिकोटी काट जगा, आँख फाड़ कर देख, नटखटी करनेवाले प्रभु ! खाने को फल दूंगी। ध्वनित सागर के तरंग-जल तुल्य वर्णवाले सुंदर पूर्ण ! मज्जन करने तुम आओ। 6

158. दुहा बढ़िया दूध और दही और मथ कर छींके पर रखा मक्खन इन सब को तुम्हारे जन्म लेने से ले कर मैंने प्राप्त कर भी न जाना है। मेरे प्रभु ! (यदि मैं तुम्हारे विरुद्ध कुछ कहूं तो) लोग कहेंगे कि उत्तम प्यारी माता दोष लगाती है। अतः दूसरों के आगे भूल कर भी (कुछ) नहीं कहूंगी। मज्जन करने तुम आओ। 7

159. (डराने के लिये) बछड़े की पूंछ से (ताल का) पत्ता बांधा। एक बछड़े को ऊपर फेंका जिससे (कपित्थ के) फल गिर पड़े। एक सर्प का पीछा करते दौड़, उसको पकड़ नचाया। तुम्हारे विषय में तो मैं कुछ नहीं जानती। पूर्ण ! आज शुभ और मंगल दिन है जिसमें तुम जनमे। अच्छी तरह तुम्हें स्नान करना होगा। नारायण ! भागो मत, आओ। 8

160. गायों के गोष्ठ में घुस कर (खेलने से) धूलि धूसरित तुम्हारा सुनहला शरीर देख कर तो मैं अत्यधिक प्रफुल्लित होती हूँ। फिर भी देखनेवाले निंदा करेंगे। तुम्हें इतनी भी लज्जा नहीं। यदि नप्पिन्नै देखती है तो वह हँसेगी। माणिक्य ! मेरे मणि ! मज्जन करने तुम आओ। 9

161. जलद से भी अधिक श्यामल शरीरवाले उपकारक कान्ह को कंचुक से भूषित स्तनवाली यशोदा (ने सप्रेम स्नान कराया।) उस मज्जन कराने के प्रकार का पृथिवी में श्रेष्ठ प्राचीन श्रीविल्लिपुत्तूर (नगर) के स्वामी श्री भट्टनाथ (श्रीविष्णुचित्त) ने वर्णन किया। (प्रसाद आदि काव्य) गुणों से संपन्न सुंदर इन शेन्तमिल-पदों के कथन में समर्थ लोगों में किसी तरह का दुष्कर्म नहीं रहता। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. v. पिन्नै मणालनै

162. पिन्नै मणाळनै-प् पेरिल् किडन्दानै,
मुन्नै अमरर् मुदल् तनि वित्तिनै,
एन्नैयुम् एङ्गळ् कुडि मुळुदु आट्कोण्ड,
मन्ननै वन्दु कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्,
मादवन्-तन् कुळल् वाराय् अक्काक्काय । 1

163. पेयिन् मुलै उण्ड पिळ्ळै इवन् मुन्नम्,
माय-च् चहडुम् मरुदुम् इरुत्तवन्,
काया-मलर् वण्णन् कण्णन् करुङ् कुळल्,
तूय्दाह वन्दु कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्,
तू-मणि वण्णन् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् ॥ 2

164. तिण्ण-क् कलत्तिल् तिरै उरि मेल् वैत्त,
वेण्णेय् विळुङ्गि विरैथ उरङ्गिडुम
अण्णल् अमरर् पेरुमानै, आयर् तम्
कण्णनै वन्दु कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्,
कार् मुहिल् वण्णन् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय ॥ 3

165. पळ्ळत्तिल् मेयुम् परवै उरु-क् कोण्डु,
कळ्ळ अशुरन् वरुवानै-त् तान् कण्डु,
पुळ्ळिदु एन्रु पोदुक्को वाय् कीण्डिट्ट,
पिळ्ळैयै वण्दु कुळल् वाराय् अक्काक्काय्,
पेय्-मुलै उण्डान् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् ॥ 4

166. कर्रिनम् मेय्त्तु-क् कनिक्कु ओरु कन्रिनै,
पर्रि एरिन्द परमन् तिरुमुडि,
उर्रन पेशि नी ओडि-त् तिरियादे,
अर्रैक्कुम् वन्दु कुळल् वाराय् अक्-काक्काय
आलियान्-तन् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् । 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. v. पिन्नै मणाळनै

[नप्पिन्नै के प्रियतम]

(चिकुर शृंगार)

162. नप्पिन्नै (देवी) के प्रियतम, तिरुप्पेर् (क्षेत्र) में शयित, पूर्व-देवों के प्रथम अद्वितीय बीज (अर्थात् कारणवस्तु), मुझे तथा हमारे सारे कुल को दास-रूप में स्वीकार करनेवाले राजा—आ कर, इनके चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! माधव के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 1

163. प्रथम दानवी का स्तन पीनेवाला बालक है यह ; इसीने मायी शकट तथा अर्जुन (वृक्षों) का भंजन किया। अतसी-पुष्प-वर्ण कान्ह के चिकुर है (ये)। शुद्ध-भाव से आ कर चिकुर सँवारो, ऐ कौए। निर्मल मणि-वर्ण के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 2

164. पुआल के बने छींके पर दृढ़ बरतन में रखा मक्खन निगल कर, सवेग भाग कर सो जानेवाला स्वामी है यह, देवों का अधीश्वर, गोपों का कान्ह। आ कर (उसके) चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! नील-जलद-वर्ण के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 3

165. गर्त में चुगनेवाले (बक) पक्षी का रूप ले जो वंचक असुर आया, उसको स्वयं देख कर, 'यह तो पक्षी है' कह, अनायास ही झट उसकी चोंच फाड़ डालनेवाले बालक के, आ कर, चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! दानवी-स्तन पीनेवाले के चिकुर सँवारो, ऐ कौए !। 4

166. (गो) वत्स-समूह को चरा, (कपित्थ) फल को (गिराने के लिये) एक वत्स को पकड़ फेंकनेवाला यह परम (पुरुष) है। मनमाना बोलते (अपने स्वभाव के अनुसार काँव काँव कर) भागते घूमो मत। प्रतिदिन आ कर उस (परम) के सुंदर सिर के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! चक्री के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

167. किळक्किल् कुडि-मन्नर् केडिलादारै,
अळिप्पान् निनैन्दिट्टु अव्वाळि यदनाल्;
बिळिक्कुम् अळविले बेर्-अरुत्तानै-क्
कुळर् कु अणियाह-क् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्
गोविन्दन् तन् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् ॥ 6

168. पिण्ड-त् तिरळैयुम् पेय्-क् किट्ट नीर्-च् चोरुम्
उण्डर्कु वेण्डि, नी ओडि-त् तिरियादे,
अण्डत्तमरर् पेरुमान् अळहमर्,
वण्डु-ओत्तिरुण्ड कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्,
मायवन् तन् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् 7

169. उन्दि एळुन्द उरुव मलर् तन्निल्,
शन्द-च् चदुमुकन् तन्नै-प् पडैत्तवन्,
कोन्द-क् कुळलै-क् कुरन्दु पुळि अट्टि,
दन्तत्तिन् शीप्पाल् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्
दामोदरन्-तन् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् 8

170. मन्नन्-तन् देविमार् कण्डु महिळ्वु एय्द,
मुन् इव्-वुलहिनै मुररुम् अळन्दवन्
पोन्निन मुडियिनै-प् पूवणै मेल् वैत्तु-प्
पिन्ने इरुन्दु कुळल् वाराय् अक्-काक्काय्
पेर्-आयिरत्तान् कुळल् वाराय् अक्-काक्काय् 9

171. कण्डार् पळियामे अक्-काक्काय्, कार् वण्णन्
वण्डार् कुळल् वार वा एन्र आय्च्चि शोल्,
विण् तोय् मदिळ् विल्लिपुत्तूर्-क् कोन् पट्टन् शोल्,
कोण्डाडि-प् पाड-क् कुरहा विनै तामे। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

167. प्राक् (ज्योतिष्पुर) के वासी (असुर) राजाओं का, (जिन का अभिमान था कि) हमें कोई विपत्ति नहीं होगी, नाश करने का संकल्प कर, प्रख्यात चक्र से पलक मारते ही समूल उखाड़ देनेवाले के चिकुरों के सिंगार के लिये चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! गोविंद के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 6

168. (पितरों के उद्देश्य से दिये जानेवाले) पिंड के कवलों को और पिशाचों को दत्त जल-मिश्रित अन्न को खाने की इच्छा से (इधर उधर) भाग घूमे विना ब्रह्माण्ड के देवों के अधीश्वर के सौंदर्य समन्वित भ्रमर-सदृश काले चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! मायी (प्रभु) के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 7

169. नाभि से उत्पन्न कमल पर छंद (वेद का अध्ययन करनेवाले) चतुर्मुख के स्रष्टा के उलझे चिकुर को इमली-रस डाल मल कर दंत की कंघी से चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! दामोदर के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 8

170. राजा (महाबली) की देवियाँ जिसे देख कर हर्षित हुईं इस प्रकार इस लोक को पूरा मापनेवाले के सुनहले (रमणीय) सिर को फूलों की गद्दी पर रख, पीछे खड़े हो, चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! सहस्र-नाम-वाले के चिकुर सँवारो, ऐ कौए ! 9

171. ऐ कौए ! जलद-वर्ण के भ्रमर-तुल्य नील चिकुर संवारने आओ जिससे चिकुर (दर्शनीय हों और उनको) देखनेवाले निंदा न करें"—गोपी ने यह वचन कहा । आकाश-स्पर्शी प्राकार-वाले श्रीविल्लिपुत्तूर के स्वामी श्री भट्ट (श्रीविष्णुचित्त) वही वचन बोले । अभिनंदन कर (जो) इसको गावें, उनके पास पाप स्वयं ही न फटकेंगे । 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. vi. वेलि-क्-कोल्

172. वेलि-क् कोल् वेट्टि विळैयाडु विल् एर्रि-त्
तालि-क् कोळुन्दै-त् तडङ्-कळुत्तिल् पूण्डु.
पीलि-त् तळैयै-प् पिणैत्तु-प् पिरहिट्टु,
कालि-प् पिन् पोवार्कु ओर् कोल् कोण्डुवा
कडल्-निर-वण्णर्कु ओर् कोल् कोण्डुवा। 1

173. कोङ्गुम् कुडन्दैयुम् कोट्टियूरुम् पेरुम्,
एङ्गुम् तिरिन्दु विळैयाडुम् एन् महन्,
शङ्गम् पिडिक्कुम् तड-क् कैक्कु-त् तक्क, नल्
अङ्गम् उडैयदु ओर् कोल् कोण्डु वा
अरक्कु वळित्तदु ओर् कोल् कोण्डुवा। 2

174. करुत्तिट्टु एदिर् निन्र कञ्जनै-क् कोन्रान्,
पोरुत्तिट्टु एदिर् वन्द पुळ्ळिन् वाय् कीण्डान्,
नेरित्त कुळल्हळै नीङ्ग मुन्नोडि,
शिरु-क् कनरु मेय्प्पार्कु ओर् कोल् कोण्डुवा
तेव-पिरानुक्कु ओर् कोल् कोण्डुवा। 3

175. ओन्रे उरैप्पान् ओरु शोल्ले शोल्लुवान्,
तुन्रु-मुडियान् तुरियोदनन्-पक्कल्,
शेन्रु अङ्गु-प् पारदं कैशेय्दानुक्कु,
कन्रुहळ् मेय्प्पदोर् कोल् कोण्डुवा
कडल्-निर-वण्णर्कु ओर कोल् कोण्डुवा। 4

176. शीर्-ओन्रु तूदाय्-त् तुरियोदनन् पक्कल्
ऊर् ओन्रु वेण्डि-प् पेराद उरोडत्ताल्
पार् ओन्रि-प् पारदं कैशेय्दु, पार्त्तर्कु-त्
तेर् ओन्रै ऊरन्दार्कु ओर् कोल् कोण्डुवा
तेव-पिरानुक्कु ओर् कोल् कोण्डुवा। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. vi. वेलिक् कोल्

[घेरे की छड़ी]

(कौए को लाठी लाने का आदेश)

172. घेरे की छड़ी काट (उसको) क्रीड़ा-धनुष बना, (ज्या) चढ़ा, ताल-पल्लव विशाल कंठ पर पहन, मोर-पंख को बुन पीठ पर डाल, गो-वृंद के पीछे चलनेवाले के लिये एक लाठी लाओ, सागर-रंग जैसे वर्णवाले के लिये एक लाठी लाओ। 1

173. सुगंधित कुडन्दै और तिरुक्कोट्टियूर और तिरुप्पेर् सब (क्षेत्रों) में घूम विहार करनेवाले मेरे पुत्र के शंखधारी हस्त के योग्य सुंदर अंगवाली एक लाठी लाओ, लाक्षा-रस-लिप्त एक लाठी लाओ। 2

174. क्रुद्ध हो सम्मुख अवस्थित कंस का इसीने वध किया। सहनशील रह कर, अभिमुख आगत पक्षी (वकासुर) का मुंह इसीने चीर डाला। (प्रलंबी) घने अलकों को हटाते आगे दौड़ छोटे बछड़ों को चरानेवाले के लिये एक लाठी लाओ, देवाधीश के लिये एक लाठी लाओ। 3

175. (रत्न)-खचित किरीटवाला (दुर्योधन) कहेगा एक ही बात (कि हम पांडवों से मिल कर नहीं रहेंगे) और बोलेगा एक ही वचन (कि हम उन्हें कुछ भी न देंगे)। उस दुर्योधन के पास (दूत बन पांडवों की ओर से) जा कर वहां भारत (युद्ध) का संचालन करनेवाले को बछड़े चराने के लिये एक लाठी लाओ। सागर-रंग जैसे वर्णवाले के लिये एक लाठी लाओ। 4

176. सद्गुण-संपन्न दूत हो (पांडवों की ओर से) दुर्योधन के पास जा (उन्हें) एक नगर देने की प्रार्थना करने पर भी उसके न मिलने से रोष से (युद्ध)-भूमि में स्थिर खड़ा हो, भारत-(युद्ध) का संचालन कर पार्थ के लिये एक रथ चलानेवाले के लिये एक लाठी लाओ। देवों के प्रभु के लिये एक लाठी लाओ। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

177. आलत्तु इलैयान् अरविन् अणै मेलान्,
नील-क् कडालुळ् नेडुङ्-कालम् कण् वळर्न्दान्,
पाल-प् पिरायत्ते पार्त्तर्कु अरुळ्-शेय्द
कोल-प् पिरानुक्कु ओर् कोल् कोण्डुवा
कुडन्दै-क् किडन्दार्कु ओर् कोल् कोण्डुवा। 6

178. पोर्रिहळ्-चित्तिर-क्-कूड प् पोरुप्पिनिल्,
उर्र वडिनिल् ओरु कण्णुम् कोण्ड, अक्-
कर्रै-क् कुळलन् कडियन् विरैन्दु, उन्नै
मर्रै-क् कण् कोळ्ळामे कोल् कोण्डुवा,
मणि-वण्ण-नम्बिक्कु ओर् कोल् कोण्डुवा। 7

179. मिन्निडै-च् चीदै पोरुट्टा, इलङ्गैयर्
मन्नन् मणि मुडि पत्तुम् उडन् वीळ,
तन्-निहर् ओन्रिल्ला-च् चिलै काल् वळैत्तिट्ट
मिन्नु मुडियर्कु ओर् कोल् कोण्डुवा
वेलै अडैत्तार्कु ओर् कोल् कोण्डुवा। 8

180. तेन्-निलङ्गै मन्नन् शिरम् तोळ् तुणि शेय्दु,
मिन्-निलङ्गु पूण् विपीडण नम्बिक्कु,
एन्-निलङ्गु नामत्तळवुम् अरशु एन्र,
मिन्नलङ्गारर्कु ओर् कोल् कोण्डुवा,
वेङ्कड-वाणर्कु ओल् कोल् कोण्डुवा। 9

181. अक्-काक्काय्! नम्बिक्कु-क् कोल् कोण्डवा एन्रु,
मिक्काळ् उरैत्त शोल् विल्लिपुत्तूर्-प् पट्टन्,
ओक्क उरैत्त तमिळ्-प् पत्तुम् वल्लवर्,
मक्कळै-प् पेर्रु महिळ्वर् इव्-वैयत्ते।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

177. (यह है) वट-पत्र (पर शयन करने)-वाला, नाग-पर्यंक पर (शयन करने)-वाला, नील समुद्र में चिर-काल निद्रा लेनेवाला जिसने बाल-प्राय (बाल-वय) में पार्थ पर कृपा की। सौंदर्य-संपन्न इस प्रभु के लिये एक लाठी लाओ। कुडन्दै-शायी के लिये एक लाठी लाओ।

[क्षीर का वर्ण धवल है। फिरभी क्षीर-समुद्र पर शयन करनेवाले प्रभु के दिव्य विग्रह की श्यामल कांति से क्षीर-समुद्र का रंग श्यामल (नील) हो गया है। अतः यहां 'नील-समुद्र' कहते हैं।] 6

178. सुनहले उद्भासित चित्रकूट-गिरि पर (सीता के) शरीर पर (बुरी भावना से) रखे एक नेत्र का इसीने ग्रहण किया। जिससे घने केशवाला और कठिन हृदयवाला यह तुम्हारे दूसरे नेत्र को न निकाल डाले शीघ्र ही एक लाठी लाओ। मणिवर्ण पूर्ण के लिये एक लाठी लाओ। 7

179. विद्युत्सम मध्या सीता (को छुड़ाने) के लिये लंकावासियों के अधिप के मणि (खचित किरीट-युक्त) दसों सिर एक ही साथ जिससे गिरे इस प्रकार स्वसदृश रहित धनुष के सिर को झुकानेवाले उस चमकते किरीटवाले के लिये एक लाठी लाओ। समुद्र (पर पुल) बांधनेवाले के लिये एक लाठी लाओ। 8

180. जिसने सुंदर लंका के राजा (रावण) के सिर और भुजाओं को काट डाला और जिसने कहा कि मेरे उज्ज्वल नाम के अस्तित्व पर्यंत यह (लंका)-राज्य विद्युत् सम चमकीले भूषणों से युक्त (भक्ति से) पूर्ण विभीषण की रहेगी, उस विद्युत्सम चमकीले (कंठ)-हारवाले के लिये एक लाठी लाओ। वेंकट (गिरि) के स्वामी के लिये एक लाठी लाओ। 9

181. (तब से) श्रेष्ठ (यशोदा) ने कहा—"ऐ कौए ! पूर्ण के लिये लाठी लाओ।" श्रीविल्लिपुत्तूर के भट्ट (श्री विष्णुचित्त ने उसी वचन को वैसे ही तमिल में दस पदों में दुहराया। इसके कथन में समर्थ (भक्तियुक्त) पुत्रों को प्राप्त कर इस भूमंडल में ही आनंदित रहेंगे। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. vii. आनिरै

(पू-च् चूट्टल्)

182. आ-निरै मेय्क्क नी पोदि अरु-मरन्दु आवदु अरियाय्,
कानहम् एल्लाम् तिरिन्दु उन् करिय तिरुमेनि वाड,
पानैयिल् पालै-प् परुहि-प् पर्रादार् एल्लाम् शिरिप्प,
तेनिल् इनिय पिराने ! शेण्पह-प् पू-च् चूट्ट वाराय्। 1

183. करुवुडै मेहङ्गळ् कण्डाल् उन्नै-क् कण्डाल् ओक्कुम् कण्गळ्,
उरुवुडैयाय् ! उलहेलुम् उण्डाह वन्दु पिरन्दाय्,
तिरुवुडैयाळ् मणवाळा ! तिरु अरङ्गत्ते किडन्दाय् !
मरुवि मणम् कमळ्किन्र मल्लिहै-प्-पू-च् चूट्ट वाराय्। 2

184. मच्चोडु माळिहै एरि मादर्हळ् तम् इडम् पुक्कु,
कच्चोडु पट्टै-क् किळित्तु-क् काम्बु तुहिल् अवै कीरि,
निच्चलुम् तीमैहळ् शेय्वाय् नीळ् तिरु-वेङ्कडत्तु एन्दाय् !
पच्चै-त् तमनहत्तोडु पादिरि-प् पू-च् चूट्ट वाराय्। 3

185. तेरुविन्-कण् निन्रु इळ आय्च्चिमार्हळं-त् तोमै शेय्यादे,
मरुवुम् दमनकमुम् शीर् मालै मणम् कमळ् किन्र,
पुरुवम् करुङ् कुळल् नेर्रि पोलिन्द मुहिल् कन्रु पोले,
उरुवम् अळहिय नम्बो ! अहन्दु इवै शूट्ट वाराय्। 4

186. पुळ्ळिनै वाय् पिळन्दिट्टाय् पोरु-करियिन् कोम्बु-ओशित्ताय्,
कळ्ळ-अरक्कियै मूक्कोडु कावलनै-त्-तलै कोण्डाय्,
अळ्ळि नी वेण्णेय् विळुङ्ग अञ्चादु अडियेन् अडित्तेन्,
तेळ्ळिय नीरिल् एळुन्द शेङ्कळुनीर् चूट्ट वाराय्। 5

187. एरुदुहळोडु पोरुदि एदुम् उलोपाय् काण् नम्बी !
करुदिय तीमैहळ् शेय्दु कञ्जनै-क्-काल्-कोडु पायन्दाय्,
तेरुविन् कण् तीमैहळ् शेय्दु शिक्केन मल्लर्हळोडु,
पोरुदु वरुहिन्र पोन्ने ! पुन्नै-प् पू-च् चूट्ट वाराय्। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. vii. आनिर

[धेनु-समूह]

(पुष्पों से अलंकृत करना)

182. घड़े में (रखे) दूध को पी जाते हो जिसे देख कर तुम से प्रेम न करनेवाले सब हँस पड़ते हैं। कानन में सर्वत्र घूम कर धेनु-समूह को तुम चराने जाते हो जिससे तुम्हारा श्यामल शरीर कुम्हला जाता है। जानते नहीं कि तुम एक दुर्लभ औषध हो। मधु से भी मधुर प्रभु ! चम्पक-पुष्प पहनाऊँ, आओ। 1

183. आँखें जल-गर्भित मेघों को देखती हैं तो ऐसा लगता है कि तुम्हीं को देखती हैं। लोचन-सौंदर्यमय ! आ कर तुम जनमे जिनसे सातों लोकों की सत्ता रहे। ऐश्वर्य-संपन्न लक्ष्मीदेवी के वल्लभ ! श्रीरंग-शायी ! सौरभ से नित्य समन्वित मल्लिका-पुष्प पहनाऊँ, आओ। 2

184. अट्टालिका तथा प्रासाद पर चढ़ कर ललनाओं के स्थान में प्रविष्ट हो, कंचुक एवं पट्ट-वस्त्र को फाड़, ज़रीदार साड़ियों को चीर, नित्य ही शरारत करनेवाले ! उन्नत श्रीवेंकट (गिरि) के मेरे स्वामी ! हरित दमनक (पुष्प) के साथ पाटली पुष्प पहनाऊँ, आओ। 3

185. वीथी में खड़े हो तरुण-गोपियों के प्रति शरारत मत करो। मरुआ और दमनक की ग्रंथित मालाएं सौरभ से सुगंधित हैं। भ्रू-नील अलक और ललाट से भासमान एक जलद-डिंभ के समान रूप-सौंदर्य युक्त पूर्ण ! सप्रेम इन्हें पहनाऊँ, तुम आओ। 4

186. (तुमने) पक्षी (बकासुर) का मुंह चीर डालनेवाले ! युद्धोन्मुख करी (हस्ती) का दांत तोडनेवाले ! वंचक राक्षसी (शूर्पणखा) की नासा तथा (राक्षसों के) रक्षक खर का सिर हरनेवाले ! हथेली भर मक्खन उठा तुमने खाया तो निर्भय हो कर दासभूता मैंने मारा। स्वच्छ जल में उत्पन्न कल्हार-पुष्प पहनाऊँ, आओ। 5

187. वृषभों के साथ लड़ते हो। (तब अपने शरीर आदिको सुरक्षित रखने का) तुम्हें कोई लोभ नहीं। कंसने तुम्हारे प्रति जो बुराइयां सोचीं उन्हें उसी के प्रति कर, पैर उठा (उसपर) झपटे। वीथी में ही शरारतें कर झट मल्लों के विरुद्ध युद्ध कर आनेवाले कांचन ! पुन्नाग-पुष्प पहनाऊँ, आओ। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

188. कुडङ्गळ् एडुत्तु एर-विट्टु-क् कूत्ताडवल्ल एङ्-कोवे !
मडङ्कोळ् मदि-मुकत्तारै माल् शेय्य-वल्ल एन् मैन्दा !
इडन्दिट्टु इरणियन् नेञ्जै इरु पिळवाह मुन् कीण्डाय्,
कुडन्दै-क् किडन्द एङ्-कोवे ! कुरुक्कत्ति-प् पू-च् चूट्ट वाराय् । 7

189. शेमालिकन् अवनोडु तोळमै कोळ्ळवुम् वल्लाय्,
शामारु अवनै नी एण्णि च् चक्करत्ताल् तलै कोण्डाय्,
आमारु अरियुम् पिराने ! अणि अरङ्गत्ते किडन्दाय्,
एमार्रम् एन्नै-त् तविर्त्ताय् इरुवाट्चि-प् पू-च् चूट्ट वाराय् । 8

190. अण्डत्तु अमरर्हळ् शूळ अत्ताणि-युळ् अङ्गु इरुन्दाय्,
तोण्डर्हळ् नेञ्जिल् उरैवाय् ! तू-मलराळ् मणवाळा,
उण्डिट्टु उलहिनै एळुम् ओर् आल्-इलैयिल् तुयिल् कोण्डाय् !
कण्डु नान् उन्नै उहक्क-क् करुमुहै-प् पू-च् चूट्ट वाराय् । 9

191. शेण्पह मल्लिकैयोडु शेङ्कळुनीर् इरुवाट्चि,
एण्पहर् पूवुम् कोणर्न्देन् इन्रु इवै शूट्ट वा एन्रु,
मण्पहर् कोण्डानै आय्च्चि माहिळ्न्दु उरै शेय्द इम्मालै,
पण्पहर् विल्लिपुत्तूर-क् कोन् पट्टर् पिरान् शोन्न पत्ते । 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

188. घड़ों को उठा, ऊपर फेंक, नर्तन करने में समर्थ मेरे प्रभु ! विनय-शील चन्द्र-मुखियों को प्रेम-विह्वल करने में समर्थ लाल ! पूर्व काल में हिरण्य की छाती में (नख) घुसेड़ कर उसके दो भागों में विदीर्ण करनेवाले ! कुडन्दै-शायी मेरे स्वामी ! 'कुरुक्कत्ति' (माधवी) पुष्प पहनाऊँ, आओ ।

[घट-नर्तन (कुड-क्-कूत्तु)—संपत्समृद्धि जीवन-सफलता आदि से उत्पन्न हर्ष के परिवाह रूप में गोप-जन घट-नर्तन करते थे । उस में गोप सिर पर चार-पांच घड़े रख, भुजाओं में एक-एक घड़ा रख, और दोनों हस्तों में एक एक घड़ा ले कर, दोनों घड़ों को ऊपर फेंक, दाएं हाथ से निकले घड़े को बाएं हाथ से और बाएं हाथ से प्रक्षिप्त घड़े को दाएं हाथ से पकड़ कर, फिर वैसे ही फेंक और पकड़, नृत्य करते थे और सिर और भुजाओं पर स्थित घड़े गिरे बिना पूर्ववत् ही होते थे । यही घट-नर्तन है जिसे करने में श्रीकृष्ण सिद्ध-हस्त थे ।] 7

189. श्रीमालिक (नामक बालक) से मित्रता रखने में भी तुम निपुण थे । यह संकल्प कर कि वह मर मिटे, चक्र द्वारा उसका सिर हर भी लिया । होनी को जाननेवाले प्रभु ! सुंदर श्रीरंग में शयन करनेवाले ! मेरी निराशा मिटानेवाले ! "इरुवाक्षि" पुष्प पहनाऊं, आओ ।

श्री मालिक की कथा

[एक असुर श्री मालिक नाम ले कर एक बालक के वेष में श्रीकृष्ण के पास आ उनका प्रिय मित्र बन गया । उसने श्रीकृष्ण से सब अस्त्र-शस्त्रों की विद्या सीखी और निपुणता प्राप्त कर ली । परंतु आसुरी स्वभाव के कारण वह घमंडी हो गया और साधु-भक्तों की अवहेलना करने और हिंसा करने लगा । कृष्ण के मना करने पर भी वह न माना । इससे कृष्ण दुखी हुए और सोचा कि साधु-रक्षा के लिये उसका वध करना ही होगा । एक दिन श्री मालिक ने कृष्ण के पास आ कर कहा कि "तुमने मुझे सभी अस्त्र चलाने सिखाये । परंतु चक्र चलाना तो नहीं सिखाया ।" श्रीकृष्ण बोले—यह एक भयानक आयुध है । इसका ज्ञान तुम्हें नहीं चाहिये ।" हठ कर उसने कहा—"क्या मेरी शक्ति कम है ? मैं अवश्य उसे भी सीख लूँगा ।" तब कृष्ण ने चक्रायुध ले, घुमा, ऊपर फेंका और उसके नीचे आते समय अनायास ही हाथ की उंगलियों से उसको ग्रहण कर लिया । जब श्रीमालिक ने वैसे ही करने का हठ किया, श्रीकृष्ण बोले—"यह तुम्हारी शक्ति के बाहर है, छोड़ दो । नहीं तो तुम्हारा सिर चक्र से कट जायगा ।" जब वह न माना, श्रीकृष्ण ने पहले की तरह चक्र घुमा ऊपर फेंका और श्रीमालिक से उसे पकड़ने को कहा । श्री मालिक ने हाथ उठाकर उसको ग्रहण करने का प्रयत्न किया । परंतु बड़ी तेजी से घूमते हुए चक्र ने श्रीकृष्ण के संकल्प के अनुसार श्री मालिक के सिर को काट ही डाला ।]

(यह वृत्तांत प्रसिद्ध पुराणों में नहीं दिखाई देता । श्रीविष्णुचित्तको भगवान् ने अपनी कृपा से यह लीला दिखायी जिसका यथायथ वे वर्णन करते हैं ।) 8

190. अंड (परम धाम) के भीतर घनिष्ठ अमरों से परिवृत हो वहाँ विराजमान होनेवाले ! भक्तों के हृदय में नित्य-वास करनेवाले ! पवित्र पद्म में आसीन लक्ष्मी के प्रियतम ! सातों लोकों को निगल कर एक वट-पत्र पर शयन करनेवाले ! नीलोत्पल-पुष्प पहनाऊँ, आओ जिससे तुम्हें देख मैं आह्लादित होऊँ । 9

191. "चंपक और मल्लिका के साथ कल्हार और इरुवाक्षि-पुष्प—यह सोच कर कि ये तुम्हारे योग्य हैं । कथित पुष्पों को लाई हूँ । अब इन्हें पहनाऊँ, आओ ।" यों कहकर (शास्त्रों में) कथित (अपनी ही) भूमि को (महाबलि से) ग्रहण करनेवाले से गोपिका सहर्ष जो वचन-माला बोली, उसी को गीत से संवलित श्रीविल्लिपुत्तुर के स्वामी श्रीभट्टनाथ (श्रीविष्णुचित्त) ने दस पदों में कहा ।

[गीत से संवलित श्रीविल्लिपुत्तुर—उस नगर में रहनेवाले इतने भक्तियुक्त और सुशिक्षित थे कि वे जब बोलते गीत के रूप में ही उनके वचन होते ॥] 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. viii. इन्दिरनोडु

(काप्पिडल्)

192. इन्दिरनोडु पिरमन् ईशन् इमैयवर् एल्लाम्,
मन्दिर मा-मलर् कोण्डु मरैन्दु उवराय् वन्दु निन्रार्,
चन्दिरन् माळिहै शेरुम् चतुरर्हळ् वेळ्ळरै निन्राय् !
अन्दि-अंम्-पोदु इदु आहुम् अळहने ! काप्पिड वाराय् । 1

193. कन्रुहळ् इल्लम् पुहुन्दु कदरुहिन्र पशु-एल्लाम्,
निन्रु-ओलिन्देन् उन्नै-क् कूवि नेशमेल् ओन्रुम् इलादाय्,
मन्रिल् निल्लेल् अन्दिप्पोदु मदिळ् तिरु-वेळ्ळरै निन्राय् !
नन्रुकण्डाय् एन् तन् शोल्लु नान् उन्नै-क् काप्पिड वाराय् । 2

194. शेप्पोदु मेन्-मुलैयार्हळ् शिरु शोरुम् इल्लुम् शिदैत्तिट्टु,
अप्पोदु नान् उरप्प-प् पोय् अडिशिलुम् उण्डिलै, आळ्वाय् !
मुप्पोदुम् वानवर् एत्तुम् मुनिवर्हळ् वेळ्ळरै निन्राय्,
इप्पोदु नान् ओन्रुम् शेय्येन् एम्-पिरान् काप्पिड वाराय् । 3

195. कण्णिल् मणर्-कोडु तूवि-क् कालिनाल् पाय्न्दनै एन्रेन्रु,
एण्णरुम् पिळ्ळैहळ् वन्दिट्टु इवराल् मुरैप्पडुकिन्रार्,
कण्णने ! वेळ्ळरै निन्राय् ! कण्डारोडे तीमै शेय्वाय् !
वण्णमे वेलैयदु-ओप्पाय् ! वळ्ळले ! काप्पिड वाराय् । 4

196. पल्लायिरवर् इन्-ऊरिल् पिळ्ळैहळ् तीमैहळ् शेय्वार्,
एल्लाम् उन् मेल् अन्रि-प् पोहादु एम् पिरान् ! नी इङ्गे वाराय्,
नल्लार्हळ् वेळ्ळरै निन्राय् ! ज्ञान-च् चुडरे ! उन् मेनि,
शोल्लार वाळ्त्ति निन्रु एत्ति-च् चोप्पड-क् काप्पिड वाराय् । 5

197. कञ्जन् करु-क् कोण्डु निन् मेल् करु-निर-च् चेम्मयिर्-प् पेयै,
वञ्जिप्पदर्कु विडुत्तान् एन्पदु ओर् वार्त्तैयुम् उण्डु,
मञ्जु तवळ् मणि-माड मदिळ् तिरु-वेळ्ळरै निन्राय् !
अञ्चुवन् नी अङ्गु निर्क अळहने ! काप्पिड वाराय् । 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

II. viii. इन्दिरनोड्

[इंद्र सहित]

(रक्षा-मंगल)

192. इंद्र-सहित ब्रह्मा, ईश (रुद्र) और अन्य सभी देव मंत्र-पूत उत्तम पुष्पों को ले कर अदृश्य आकर नातिदूर खड़े हैं। जिस क्षेत्र में चंद्र प्रासादों को छूता हुआ चलता है और निवासी चतुर हैं उस तिरु-वे ळ्ळरै क्षेत्र में अवस्थित होनेवाले ! यह है सायंकाल का समय। सौंदर्य-संपन्न ! तुम्हारा रक्षा-मंगल करूं, आओ। 1

193. (अपने) बछड़ों के स्थान में प्रविष्ट हो सभी गायें रंभा रही हैं। तुम्हें पुकारती मैं (खोयी सी) खड़ी रही (और बछड़ों को नहीं खोला)। तुम तो मुझ से थोड़ा भी स्नेह न करते। संध्या-समय में चौराहे पर खड़े मत रहो। प्राचीरों से घिरे तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले ! मेरा वचन हितमय है, समझो। मैं तुम्हारा रक्षा-मंगल करूं आओ।

[लोगों का विश्वास है कि भूत पिशाच आदि दुर्देवता सायंकाल के समय इधर उधर घूमते रहते हैं और छोटे बच्चे और गर्भिणी स्त्रियाँ बाहर रहें तो उन में वे आविष्ट होते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। अतः माताएँ उस समय बच्चों को बाहर रहने नहीं देतीं और कर्पूर जला तथा आरती उतार उनका रक्षामंगल करती हैं।] 2

194. कुंभोपमित कोमल स्तनवालियों का भात का छोटा पात्र और घरौंदा तुमने नष्ट कर दिया। तब मैंने डाँटा तो (कहीं) चल दिये और भोजन नहीं किया। मेरे स्वामी ! तीनों काल देवताओं से स्तुत, मुनि-जन-आश्रित तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले ! अब मैं कुछ नहीं करूंगी। मेरे उपकारक ! रक्षामंगल करूं, आओ।

[छोटी बालिकाएँ खेलने के लिये मिट्टी से घरौंदा बनाती हैं और रेत को फटक कर, चावल समझ, भात तैयार करती हैं। उनको खिझाने और रिझाने के लिये कान्ह वहां जा कर घरौंदा और छोटा भात का पात्र (अथवा स्तूप) चरण से मार कर चूर कर देता है।] 3

195. असंख्य बालक आकर बार बार उलहना देते हैं कि तुमने उनकी आंख में रेत छिड़की और चरण से लात मारी। कान्ह ! तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले ! जिन्हें देखते हो उनसे शरारत करते हो। वर्ण में सागर से उपमित ! वदान्य ! रक्षामंगल करूं, आओ। 4

196. अनेक सहस्र बालक हैं इस गाँव में जो शरारत करते हैं। वह सब (शरारत) तुम्हें छोड़ कर और किसी के ऊपर नहीं लगायी जाती। मेरे उपकारक ! तुम यहाँ आओ। सत्पुरुषों से आश्रित तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले ! ज्ञान-ज्योति ! तुम्हारे शरीर का शब्दों से भरपूर शरीर का अभिनंदन कर, स्तुति कर, सुचारु रूप से रक्षामंगल करूँ, आओ। 5

197. यह भी एक जनश्रुति है कि कंस ने तुम पर द्वेष कर कृष्ण-वर्ण रक्तकेशी दानवी को तुम्हारे ऊपर वंचना करने के लिये भेजा। तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले जिसके मणिमय प्रासादों पर बादल रेंग रहे हैं और जो प्राचीरों से परिवृत है ! मैं डरती हूँ कि तुम वहाँ खड़े रहते हो। सौंदर्यमय ! रक्षामंगल करूँ, आओ। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

198. कळ्ळ-च् चकडुम् मरुदुम् कलक्कळिय उदै शेय्द,
पिळ्ळै-अरशे ! नी पेयै-प् पिडित्तु मुलै उण्ड पिन्नै,
उळ्ळवारु ओन्रुम् अरियेन् ओळियुडै वेळ्ळरै निन्राय् !
पळ्ळि कोळ् पोदु इदुवाहुम् परमने ! काप्पिड वाराय् । 7

199. इन्पम्-अदनै उयर्त्ताय् ! ईमैयवर्क्कु एन्रुम् अरियाय् !
कुम्ब-क्-कळिरु अट्ट कोवे ! कोडुङ् कञ्जन् नेञ्जिनिल् कूर्रे !
शेम्पोन् मदिळ् तिरुवेळ्ळरैयाय् ! शेल्वत्तिनाल् वळर् पिळ्ळाय् !
कम्ब-क् कालि कण्ड अङ्गु कडिदु ओडि-क् काप्पिड वाराय् । 8

200. इरुक्कोडु नीर् शङ्गिर् कोण्डिट्टु एळिल् मरैयोर् वन्दु निन्रार्,
तरुक्केल् नम्बि ! शन्दि निन्रु ताय् शोल्लु क्-कोळ्ळाय् शिलनाळ्,
तिरुक्काप्पु नान् उन्नै-च् चात्त-त् तेशुडै वेळ्ळरै निन्राय् !
उरु-क् काट्टुम् अन्दि विळक्कु इन्रु ओळि कोळ्ळ एर्रुहेन् वाराय् । 9

201. पोदु-अमर्-शेल्व-क् कोळुन्दु-पुणर् तिरु-वेळ्ळरैयानै,
मादर्क्कु उयर्न्द अशोदै महन् तन्नै-क् काप्पिट्ट मार्रम्,
वेद-प् पयन् कोळ्ळ वल्ल विट्टुचित्तन् शोन्न मालै,
पाद-प् पयन् कोळ्ळ वल्ल पत्तर् उळ्ळार् विनै पोमे । 10

II, ix. वेण्णेय विळुङ्गि

(बाल-क्रीडा)

202. वेण्णेय् विळुङ्गि वेरुङ्-कलत्तै
वेर्पिडै इट्टु अदन् ओशै केट्कुम्,
कण्ण-पिरान् कर्र कल्वि तन्नै-क्
काक्क किल्लोम् उन् महनै-क् कावाय्,
पुण्णिर् पुळिप्पु एय्दाल् ओक्कुम् तीमै
पुरै-पुरैयाल् इवै शेयय वल्ल,
अण्णर्कु अण्णान् ओर् महनै-प् पेर्र
अशोदै-नङ्गाय् ! उन् महनै-क् कूवाय् । 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

198. वंचक शकट (असुर) तथा (यमल) अर्जुन को लात मार कर नष्टभ्रष्ट करनेवाले अर्भक-सार्वभौम ! तुम्हारे दानवी को पकड़ उसका स्तन-पान करने के बाद (तुम्हारे) यथार्थ स्वभाव से बिलकुल अनभिज्ञ हूँ । कांतियुक्त तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले ! यह शयन करने का समय है । परम ! रक्षामंगल करूँ, आओ । 7

199. आनंद के वर्धक ! देवों को सर्वदा दुर्लभ ! कुंभ-युक्त हस्ती के संहारक प्रभु ! क्रूर कंस के हृदय में मृत्यु ! अरुण स्वर्णमय प्राचीरवाले तिरुवेळ्ळरै के स्वामी ! ऐश्वर्य से पालित लाल ! (सबको) कंपा देनेवाला कपाली वहां है, देखो । शीघ्र ही दौड़ आओ, रक्षामंगल करूँ । 8

200. ऋक् (वेद के मंत्र-जप) के साथ शंख में जल लेकर विलक्षण श्रोत्रिय आ खड़े हैं । चौराहे में खड़े हो कर तर्क मत करो, पूर्ण ! कुछ दिन माता का बचन मानो ! तेजोविशिष्ट तिरुवेळ्ळरै में अवस्थित होनेवाले ! तुम्हारा रक्षा-मंगल करने के लिये (तुम्हारा) रूप दिखानेवाले दीप्तियुक्त संध्या-दीप जलाऊँ, आओ । 9

201. कमल पर आसीन ऐश्वर्य की देवी पल्लव-सम (लक्ष्मी) देवी से आलिंगित तिरुवेळ्ळरै के स्वामी से स्त्रियों में श्रेष्ठ यशोदा ने पुत्र के रक्षा-मंगल विषयक जो वचन कहे उसी को वेद-सार के ग्रहण करने में समर्थ श्रीविष्णुचित्त ने कहा । इस (वचन) माला में (चतुर्थ) पाद निर्दिष्ट पुरुषार्थ को ग्रहण करनेवाले भक्त हों तो उनके दुष्कृत दूर हो जायंगे ।

[चतुर्थ पाद में कान्ह का रक्षा-मंगल करना कहा गया है ।] 10

II. ix वेण्णेय् विलुङ्गि

[मक्खन् निगल]

(श्रीकृष्ण की शरारत और गोपियों का उलाहना)

202. मक्खन निगल, खाली भांडे को पत्थर पर मार, उसकी ध्वनि को श्रवण करनेवाले प्रभु कान्ह की सीखी (चोरी करने की) विद्या को हम रोक नहीं पातीं । (तुम ही) अपने पुत्र को रोको । व्रण में इमलीं (रस) डालने के समान घर-घर शरारत करने में निपुण और बड़े भाई से भिन्न-स्वभाववाले एक पुत्र को जन्म देनेवाली पूर्णा यशोदा ! अपने पुत्र को बुलाओ । 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

203. वरुह वरुह वरुह इङ्गे
वामन-नम्बी ! वरुह इङ्गे,
करिय कुळल् शेय्य वाय् मुकत्तु-क्
काकुत्त नम्बी ! वरुह इङ्गे,
अरियन् इवन् एनक्कु इन्रु नङ्गाय् !
अञ्जन-वण्णा ! अशल् अहत्तार्,
परिबवम् पेश-त् तरिक्क किल्लेन्
पावियेनुक्कु इङ्गे पोदराये । 2

204. तिरुवुडै-प् पिळ्ळै तान् तीयवारु
तेक्कम् ओन्रुम् इलन् तेशुडैयन्,
उरुह वैत्त कुडत्तोडु वेण्णेय्
उरिञ्चिच उडैत्तिट्टु-प् पोन्दु निनरान्,
अरुहिरुन्दार् तम्मै अनियायम्
शेय्वदु तान् वळक्को अशोदाय् !
वरुह एनरु उन् महन् तन्नै-क् कूवाय्
वाळ वोट्टान् मदु-शूदनने । 3

205. कोण्डल्-वण्णा ! इङ्गे पोदराये
कोयिर् पिळ्ळाय् ! इङ्गे पोदराये,
तेण्डिरै शूळ् तिरुप्पेर्-क् किडन्द
तिरु-नारणा ! इङ्गे पोदराये,
उण्डु-वन्देन् अम्मम् एन्रु शोल्लि
ओडि अहम् पुह आय्च्चि-तानुम्,
कण्डेदिरे शेन्रु एडुत्तु-क् कोळ्ळ-क्-
कण्ण-पिरान् कर्र कल्वि-ताने । 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(उलाहना सुन कर यशोदा पुत्र को बुलाती है)—

203. "आओ, आओ, आओ यहां। वामन ! पूर्ण ! आओ यहां। नीलालक बिंबाधर सुंदर मुख काकुत्स्थ ! पूर्ण ! आओ यहाँ।" (स्त्रियों की ओर देख कर), "ललनाओं ! अब तो वह मेरे लिये दुष्प्राप्य है।" "(फिर श्रीकृष्ण के प्रति मुड़ कर) "अंजनवर्ण ! पड़ोसिनों के ये परिभव-वचन मैं सह नहीं सकती। मुझ पापिन (को इस तरह के दुख से बचाने) के लिये यहां आ जाओ। 2

(एक गोपी का उलाहना)

204. ऐश्वर्य-संपन्न इस बालक की शरारत की रीति की कोई अवधि नहीं। (उससे तो) वह द्युतिमान होता है। धुलाने के लिये घड़े में रखे मक्खन को उसमें से चूस, (उसे) तोड़ कर चला जाता है। क्या पड़ोसिनों के प्रति अन्याय करना ही धर्म है ? यशोदा ! आओ कह, अपने पुत्र को बुलाओ। मधुसूदन हमें जीने नहीं देता। 3

(यशोदा श्रीकृष्ण को बुलाती हैं)—

205. "जलद-वर्ण ! यहां आओ। श्रीरंग (में विराजमान) बालक ! यहां आओ। निर्मल (नदी) तरंग-परिवृत तिरुप्पेर् (क्षेत्र) में शायित श्रीमन्नारायण ! यहां आओ।" "(मैं) चूची पी आया" कह दौडते हुए ज्यों ही (कान्ह) घर में प्रवेश करता है, गोपी स्वयं (उसे) देख, अभिमुख चल, गोद में लेती है। कैसी विद्या कान्ह प्रभु ने सीखी है ! 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

206. पालै-क् करन्दु अडुप्पेर वैत्तु-प्
पल्-वळैयाळ् एन् महळ् इरुप्प,
मेलै-यहत्ते नेरुप्पु वेण्डि-च् चेन्रु
इरै-प् पोळुदु अङ्गे पेशि निन्रेन्,
शाळ-क् किरामम् उडैय नम्बि
शायत्तु-प् परुहिट्टु-प् पोन्दु निन्रान्,
आलै-क् करुम्बिन् मोळि-यनैय
अशोदै नङ्गाय् ! उन् महनै-क् कूवाय् । 5

207. पोदर् कण्डाय् इङ्गे पोदर् कण्डाय्
पोदरेन् एन्नादे पोदर् कण्डाय्,
एदेनुम् शोल्लि अशल् अहत्तार्
एदेनुम् पेशनान् केट्क माट्टेन्,
कोदुकलम्-उडै क् कुट्टनेयो !
कुन्रु एडुत्ताय् ! कुडमाडु कूत्ता !
वेद-प् पोरुळे ! एन् वेङ्गडवा !
वित्तहने ! इङ्गे पोदराये । 6

208. शेन्-नेल् अरिशि-च् चिरु-परप्पु-च्
चेय्द अक्कारम् नरु-नेय् पालाल्,
पन्निरण्डु तिरु-वोणम् अट्टेन्
पण्डुम् इप्-पिळ्ळै परिशु अरिवन्,
इन्नम् उहप्पन् नान् एन्रु शोल्लि
एल्लाम् विळुङ्गिट्टु-प् पोन्दु निन्रान्,
उन् महन्-तन्नै अशोदै नङ्गाय् !
कूवि-क् कोळ्ळाय् इनैयुम् शिलवे । 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(और एक गोपी का उलाहना)

206. दूध दुह, चूल्हे पर चढ़ा, मेरी पुत्री के वहां रहते, (मैं) आग लाने के लिये पश्चिम घर जा, वहां क्षण-भर बातें करती खड़ी थी। सालग्राम (क्षेत्र) के प्रभु (मटका) ढाल (दूध) पीकर चला गया। यंत्र में (दिये) इक्षु-रसवत् मधुर वचनवाली यशोदा देवि ! अपने पुत्र को बुलाओ। 5

(यशोदा बुलाती है)

207. आ जाओ, समझे। इधर आ जाओ, समझे। 'न आऊँगा' कहे बिना आ जाओ, समझे। (तुम्हारे विषय में) पड़ोसी-जन (आपस में) जो बोल लेते हैं और (मुझसे) जो कहते हैं, मैं उसको सुन नहीं सकती। कुतूहली लाल ! गिरिधारी ! घट-नृत्य करनेवाले नट ! वेद के अर्थ ! (वेदप्रतिपाद्य !) मेरे वेंकट-गिरि के स्वामी ! विदग्ध ! इधर आ जाओ। 6

(अन्य एक गोपी का उलाहना)

208. शालि-धान का चावल, (मूंग की) छोटी दाल, परिष्कृत इक्षु-रस का गुड, सुगंधित घृत और दूध से बारह श्रवण नक्षत्रों के व्रतों के लिये (पर्याप्त) पकवान बनाया पहले ही (इस) बालक के स्वभाव से मैं परिचित हूं। इन सब को निगल कर "मुझे और भी चाहिये" कह चला गया। यशोदा देवि ! अपने पुत्र को बुला लो। क्या ये भी कुछ (प्रशंसा के योग्य) हैं ?

[अर्थात् इस तरह पुत्र की दुष्टता को रोके बिना छोड़ देना क्या उचित है ?] 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

209. केशवने ! इङ्गे पोदराये
किल्लेन् एन्नादु इङ्गे पोदराये,
नेशम्-इलादार् अहत्तु इरुन्दु
नी विळैयाडादे पोदराये,
तूशनम् शोल्लुम् तोळुत्तैमारुम्
तोण्डरुम् निन्र इडत्तिल् निन्रु,
ताय्-शोल्लु-क् कोळ्वदु तन्मम् कण्डाय्
दामोदरा ! इङ्गे पोदराये। 8

210. कन्नल् इलट्टुवत्तोडु शीडै
कार्-एळ्ळिन् उण्डै कलत्तिल् इट्टु,
एन्नहम् एन्रु नान् वैत्तु-प् पोन्देन्
इवन् पुक्कु अवर्रै-प् पेरुत्ति-प् पोन्दान्,
पिन्नुम् अहम् पुक्कु उरियै नोक्कि-प्
पिरङ्गोळि वेण्णेयुम् शोदिक्किन्रान्,
उन् महन्-तन्नै यशोदै नङ्गाय् !
कूवि-क् कोळ्ळाय इवैयुम् शिलवे। 9

211. शोल्लिल् अरशि-प् पडुदि नङ्गाय्,
शूळल् उडैयन् उन् पिळ्ळै ताने,
इल्लम् पुहुन्दु एन् महळै-क् कूवि-क्
कैयिल् वळैयै-क् कळर्रि-क् कोण्डु,
कोल्लैयिल् निन्रुम् कोणर्न्दु विर्र
अङ्गु ओरुत्तिक्कु अव्-वळै कोडुत्तु,
नल्लन नावर् पळङ्गळ् कोण्डु
नान् अल्लेन् एन्रु शिरिक्किन्राने। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(यशोदा श्रीकृष्ण से)

209. केशव ! इधर आ जाओ। 'नहीं (आ) सकता' कहे बिना इधर आ जाओ। स्नेह-हीन लोगों के घर में जा कर मत खेलो। इधर आ जाओ। दूषण देनेवाली दासियां और दास जहां खड़े हैं, उस स्थान से इधर आ जाओ। माता का वचन मानना धर्म है, समझो, दामोदर ! 8

(एक अन्य गोपी का उलाहना)

210. शक्कर के लड्डू के साथ 'शीडै', काले तिलकी गोल मिठाई बरतन में डाल, अपना घर समझ (उन्हें) रख (बाहर) गयी। यह (तुम्हारा पुत्र) घुस, सब को खा कर चला गया। फिर घर में प्रवेश कर, छींके की ओर देख, विलसित चमकीले मक्खन को भी खोजता है। यशोदा देवि ! अपने पुत्र को बुला लो। (उसके किये) ये भी कुछ ही हैं। (अर्थात् ऐसे और अनेक हैं।)। 9

211. कहने पर तो तुम क्रुद्ध होती हो, देवि ! तुम्हारा पुत्र तो चालाक है। घर में प्रवेश कर, मेरी पुत्री को पुकार, उसके हाथ के वलय को उतार, उपवन से (जामुन) ला कर बेचनेवाली एक स्त्री को वहां वह कंकण दे, अच्छे जामुन के फल ले, (मेरे पूछने पर कि किसने इसको यह वलय दिया) "मैं नहीं" कह हंसता है। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

212. वण्डु कळित्तु इरैक्कुम् पोळिल्-शूळ्
वरु-पुनल् काविरि-त् तेन्नरङ्गन्,
पण्डु अवन् शेय्द किरोडै एल्लाम्
पट्टर पिरान् त्रिट्टु-चित्तन् पाडल्,
कोण्डु इवै पाडि-क् कुनिक्क वल्लार्
कोविन्दन् तन्-नडियार्-हळ् आहि,
एण्डिशैक्कुम् विळक्कु आहि निर्पार्
इणैयडि एन् तलै मेलनवे। 11

II. v. आर्रिल इरुन्दु

213. आर्रिल् इरुन्दु विळैयाडुवोङ्गलै,
शेर्राल् एरिन्दु बळै तुहिल् कैक् कोण्डु,
कार्रिल् कडियनाय् ओडि अहम् पुक्कु,
मार्रमुम् तारानाल् इन्रु मुर्रुम्
वळै-त् तिरम् पेशानाल् इन्रु मुर्रुम्। 1

214. कुण्डळम् ताळ-क् कुळल् ताळ, नाण् ताळ,
एण्डिशैयोरुम् इरैञ्चि-त् तोळुदु एत्त,
वण्डमर् पूङ्-कुळलार् तुहिल् कैक् कोण्डु,
विण्डोय् मरत्तानाल् इन्रु मुर्रुम्,
वेण्डवुम् तारानाल् इन्रु मुर्रुम्। 2

215. तडम्-पडु तामरै-प् पोय्है कलक्कि,
विडम्-पडु नागत्तै वाल् पर्रि ईर्त्तु,
पडम् पडु पैन्दलै मेल्-एळ-प् पायन्दिट्टु
उडम्बै अशैत्तानाल् इन्रु मुर्रुम्
उच्चियिल् निन्रानाल् इन्रु मुर्रुम्। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

212. मत्त भ्रमरों की झंकार से गुंजित उपवन से तथा जल-प्रवाहित कावेरी (नदी) से घिरे रम्य श्रीरंग के स्वामी ने पूर्वकाल में (श्रीकृष्ण रूप में अवतरित हो) जो क्रीड़ाएँ कीं, उन सबको भट्टनाथ विष्णुचित्त ने (अर्थात् जिनके हृदय में श्रीविष्णु भगवान् निवास करते हैं) गाया। इन (पदों) को गा कर नृत्य करने में जो समर्थ हैं वे गोविंद के दास हो आठों दिशाओं के दीप बन कर रहेंगे। इन दासों के युगल चरण मेरे सिर पर हैं। (अर्थात् मैं उनके चरणों पर सिर रख प्रणाम करता हूं)। 11

II. x. आररिलिरुन्दु

[नदी में जा कर]

(पड़ोसिनों का उलाहना)

213. नदी में जा कर खेलनेवाली हमारे ऊपर कीचड़ फेंक, वलय तथा दुकूल छीन, वायु से भी तेज दौड, घर में घुस जाता है। (हम पूछती हैं तो) उत्तर न देनेवाले (इस कान्ह से) आज हम मारी गईं। वलय के बारे में कुछ न बोलनेवाले से आज हम मारी गईं। 1

214. कुंडल (कंधे तक आ) लटकते हैं, चिकुर (मुंह पर) लटकते हैं, कंठहार (नाभि तक) लटकता है। आठों दिशाओं के लोग प्रणत हो, पूजा कर, स्तुति करते हैं। भ्रमरासीन सुंदर कुंतलवालियों का दुकूल हरकर आकाश-स्पर्शी (कुंद) वृक्ष पर आरूढ़ (इस कान्ह) से आज हम मारी गईं। विनती करने पर भी न देनेवाले से आज हम मारी गईं। 2

215. विशाल कमल-सरोवर को क्षुब्ध कर, विष उगलनेवाले नाग की पूंछ पकड़ खींच, विस्तृत फण-मंडित सिर ऊपर उठा तो उसपर कूद, शरीर हिला नृत्य करनेवाले से आज हम मारी गईं। (उस नाग के) सिर पर अवस्थित (कान्ह) से आज हम मारी गईं। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

216. तेनुकन्-आवि शेहुत्तु, पनङ्-कनि
तान् एरिन्दिट्ट तडम् पेरुम् तोलिनाल्,
वानवर्-कोन् विड वन्द मळै तडुत्तु,
आनिरै कात्तानाल् इन्रु मुर्रुम्,
अवै उय्य-क् कोण्डानाल् इन्रु मुर्रुम्। 4

217. आय्च्चियर्-शेरि अळै तयिर् पाल् उण्डु,
पेर्त्तु अवर् कण्डु पिडिक्क-प् पिडि-युण्डु,
वेय्त्तडम् तोळिनार् वेण्णेय् कोळ् माट्टादु, अङ्गु
आप्पुण्डु इरुन्दानाल् इन्रु मुर्रुम्,
अडि-युण्डु अळुतानाल् इन्रु मुर्रुम्। 5

218. तळ्ळि-त् तळर् नडै इट्टु इळम् पिळ्ळैयाय्
उळ्ळत्तिन् उळ्ळे अवळै उर नोक्कि,
कळ्ळत्तिनाल् वन्द पेय्च्चि मुलै उयिर्
तुळ्ळ-च् चुवैत्तानाल् इन्रु मुर्रुम्,
तुवक्कर उण्डानाल् इन्रु मुर्रुम्। 6

219. मावलि-वेळ्वियिल् माण्-उरुवाय्-च् चेन्रु,
मूवडि ता एन्रु इरन्द इम् मण्णिनै,
ओर् अडि इट्टु इरण्डाम् अडि तन्निले,
तावडि इट्टानाल् इन्रु मुर्रुम्,
तरणि अळन्दानाल् इन्रु मुर्रुम्। 7

220. ताळै तण्णाम्बल् तडम् पेरुम् पोय्है वाय्,
वाळु मुदलै वलैप् पट्टु वादिप्पुण्,
वेळम् तुयर् केड विण्णोर् पेरुमानाय्,
आळि पणि कोण्डानाल् इन्रु मुर्रुम्,
अदर्कु अरुळ् शेयदानाल् इन्रु मुर्रुम्। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

216. (गधे के रूप में आये) धेनुक (असुर) के प्राणों का अंत करें, उसको विशाल वड़े भुज से ऊपर फेंका जिससे वहां के ताल के फल गिर पड़े। देवों के अधिप (इंद्र) से प्रेरित हो आये बादल रोक कर गायों की रक्षा करनेवाले से आज हम मारी गईं। उनका उद्धार करनेवाले से आज मारी गईं। 4

217. गोपियों के पाड़ में मथित दही और दूध खा चल के फिर वहां आया तो उनसे देख लिया गया और पकड़ लिया गया। वंश-सदृश विशाल भुजवालियों का मक्खन चुराने में असफल हो वहा बद्ध हो कर रहनेवाले से आज (हम) मारी गईं। मार खा कर रोनेवाले से आज मारी गईं। 5

218. लड़खड़ा कर लटपटी चाल से चलनेवाला बालक था। फिर भी वंचना से आगत दानवी के मन का भीतरी भाव देख, उसके तड़पते तड़पते उसके स्तन और प्राण चूसनेवाले से आज हम मारी गईं। (विष-दोष से) असंबद्ध ही (स्तन) पीनेवाले से आज मारी गईं। 6

219. महाबलि के यज्ञ में ब्रह्मचारी-रूप में जा, 'पद-त्रय (की भूमि) दो' कह याचित उस भूमि को एक पद से माप, दूसरे पद से बढ़ कर (सारे आकाश को मापनेवाले से आज (हम) मारी गईं। धरणी को मापनेवाले से आज मारी गयीं। 7

220. केतक और शीतल उत्पल-पुष्प से भूषित गंभीर विशाल ह्रद में रहनेवाले ग्राह-रूप जाल में फँस कर, व्यथा से पीडित गजेंद्र का दुख जिससे दूर हुआ (इस प्रकार) देवों के अधीश्वर के रूप में आ चक्र को काम में लानेवाले से आज (हम) मारी गईं। उस (गजेंद्र) पर कृपा करनेवाले से आज मारी गईं। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

221. कानत्तु एळुन्द मळै मुहिल् पोल्, एङ्गुम्
कानत्तु मेयन्दु कळित्तु विळैयाडि,
एनत्तु उरुवाय् इडन्द इम् मण्णिनै,
तानत्ते वैत्तानाल् इन्रु मुर्रुम्,
तरणि इडन्दानाल् इन्रु मुर्रुम्। 6

222. अङ् कमल-क् कण्णन् तन्नै यशोदैक्कु,
मङ्गै नल्लार्हळ् ताम् वन्दु मुरैप्पट्ट,
अङ्गु-अवर् शोल्लै-प् पुदुवै-क् कोन् पट्टन् शोल्
इङ्गु इवै वल्लवर्क्कु एदम् ओन्रु इल्लैये। 10

III. i तन्नेरायिरम्

223. तन्–नेरायिरम् पिळ्ळैहळोडु
तळर्–नडै इट्टु वरुवान्,
पोन्नेय् नेय्योडु पालमुदुण्डु
ओरु पुळ्ळुवन् पोय्ये तवळुम्,
मिन्नेर् नुण्णिडै वञ्ज-महळ् कोङ्गै
तुञ्ज वाय् वैत्त पिराने !
अन्ने उन्नै अरिन्दु कोण्डेन्
उनक्कु अञ्जुवन् अम्मम् तरवे 1

224. पोन् पोल् मञ्जनम् आट्टि अमुदु ऊट्टि-प्
पोनेन् वरुमळवु इप्पाल्,
वन् पार-च् चकडम् इर-च् चाडि
वडक्किल् अहम् पुक्कु इरुन्दु,
मिन् पोल् नुण्णिडैयाळ् ओरु कन्नियै
वेर्रुरुवम् शेयदु वैत्त,
अन्पा ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

221. आकाश में आरूढ जल-गर्भित जलद-सम वराह का रूप ले, कानन में सर्वत्र चर, हर्ष के साथ विहार कर, (हिरण्याक्ष के द्वारा अपहृत) इस भूमि को खोद, फ़िर उसके पूर्व स्थान पर रखनेवाले से आज (हम) मारी गईं। धरणी को खोंजनेवाले से आज मारी गईं। 9

222. सुंदर कमललोचन (कान्ह) के ऊपर तरुण सुशील बालिकाओं ने यशोदा के पास आकर जो उलाहना दिया, उनके वहां के वचनोंको श्रीविल्लिपुत्तूर के निर्वाहक श्रीभट्टनाथ बोले। यहां इनके कथन में समर्थों को कोई क्लेश नहीं। 10

III. i. तन्-नेर्-आयिरम्

[अपने सदृश सहस्र]

(श्रीकृष्ण के परत्व का स्मरण कर यशोदा के भाव)

223. अपने सदृश सहस्र बालकों से लटपटी चाल से चले आते हो। सुवर्ण उपमित घृत के साथ क्षीर-अमृत को पी कर झूठमूठ ही रेंगते हो, छली ! विद्युत्-सदृश सूक्ष्म-मध्या वंचक दानवी के स्तन पर (तुमने) ऐसा मुंह लगाया जिससे वह (सदाके लिये) सुप्त हो गयी। उपकारक ! माई री ! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 1

224. कांचन के समान (दिखाई देनेवाले तुमको) मज्जन करा, अमृत (स्तन्य) पिला मैं गयी। (मेरे) लौट आने के पहले ही सुदृढ भारी शकट (असुर) पर तुमने लात मारी जिससे वह ध्वस्त हुआ। (तदनंतर) उत्तर (दिशा) के घर में प्रवेश कर विद्युत्-तुल्य-सूक्ष्म-मध्या एक कन्या को (संभोग-चिह्नों से) एक दूसरी ही रूपवाली बना दिया। प्रेममय ! मैं तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

225. कुम्मायत्तोडु वेण्णेय् विळुङ्गि-क्-
कुड-त् तयिर् शाय्त्तु-प् परुहि,
पोय्-म् माय मरुदान अशुररै-प्
पोन्रुवित्तु इन्रु नी वन्दाय्,
इम्-मायम् वल्ल पिळ्ळै नम्बी ! उन्नै
एन् महने एन्पर् निन्रार्,
अम्मा ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे । 3

226. मैयार्-कण् मड आय्च्चियर् मक्कळै
मैयन्मै शेय्दु अवर्-पिन् पोय्,
कोय्यार् पून् दुहिल् पर्रि-त् तनि निन्रु
कुर्रम् पल पल शेय्दाय्,
पोय्या ! उन्नै-प् पुरम् पल पेशुव
पुत्तकत्तुक्कु उळ केट्टेन्,
ऐया ! उन्नै अरिन्दु-कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे । 4

227. मुप्पोदुम् कडैन्दु ईण्डिय
वेण्णेयिनोडु तयिरुम् विळुङ्गि,
कप्पाल् आयर्हळ् काविल् कोणर्न्द
कलत्तोडु शाय्त्तु-प् परुहि,
मेय्-प् पाल् उण्डु अळु पिळ्ळैहळ् पोल
नी विम्मि विम्मि अळुहिन्र्,
अप्पा ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन अम्मम् तरव । 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

225. पकी दाल के साथ मक्खन निगल, मटके का दही उंड़ेल पी, झूठे मायी अर्जुन (वृक्ष) रूप असुरों का वध कर अब तुम आये। ऐसे मायामय कार्य करने में समर्थ बालक हो तुम, प्रभु! तटस्थ कहते हैं कि तुम मेरे पुत्र ही हो। माई री! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 3

226. अंजनालंकृत-लोचनी सुशील गोपियों की बालिकाओं को प्रेम-विह्वल बना, उनके पीछे चल, उनके सुंदर तहदार दुकूल को पकड़, एकांत में खड़े हो, अपराध (तुमने) बहुत बहुत किये। असत्य! तुम्हारे पीठ पीछे (दूसरों की) कही हुई तुम्हारी अनेक बुराइयां मैंने सुनीं जो एक पूरी पुस्तक के लिये पर्याप्त हैं। तात! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 4

227. तीनों समय मंथन कर संगृहीत मक्खन के साथ दही को (तुमने) निगल लिया। गोप-जन अपने कंधों पर रख कांवर में जो (दूध-भरे) बरतन लाये, उन्हें उंड़ेल दूध पी लिया। (माता के) शरीर का दूध पीनेवाले बच्चे (उसके न मिलने से) जैसे रोते हैं, उसी तरह सिसक सिसक कर रोनेवाले मेरे तात! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ।

[तीनों समय—प्रातःकाल, मध्याह्न, तथा सायंकाल] 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

228. करुम्बार् नीळ् वयल् काय् कदिर्-च् चेन्नेलै-क्
कर्रु-आ निरै मण्डि-त् तिन्न,
त्रिरुम्बा-क् कन्रु ओन्रु कोण्डु
विळङ्-कनि वीळ एरिन्द पिराने !
शुरुम्बार् मेन् कुळल् कन्नि ओरुत्तिक्कु-च्
चूळ् वळै वैत्तु-त् तिरियुम्,
अरम्बा ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे। 6

229. मरुट्टार् मेन् कुळल् कोण्डु पोळिल् पुक्कु
वाय् वैत्तु अव्-वायर् तम् पाडि,
शुरुट्टार् मेन् कुळल् कन्नियर् वन्दु उन्नै-च्
चुर्रुम् तोळ निन्र शोदि !
पोरुट्टायम् इलेन् एम्-पेरुमान् उन्नै-प्
पेर्र कुर्रम्-अल्लाल्,
मर्रिङ्गु अरट्टा ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन्
उनक्कु अञ्जुवन् अम्मम् तरवे। 7

230. वाळावाहिलुम् काण-किल्लार्
पिरर् मक्कळै मैयन्मै शेय्दु,
तोळालिट्टवरोडु तिळैत्तु नी
शोल्लप् पडादन शेय्दाय्,
केळार् आयर् कुलत्तवर् इप्-पळि
केट्टेन् वाळ्वु इल्लै, नन्दन्
कालाय् ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

228. इक्षु-पूर्ण विशाल खेत में उगे शालि के धान को वत्स-सहित गायों के झुंड जब चर रहे थे तब (चरने में) अनिच्छुक जो एक वत्स वहां था उसे उठा कर इस प्रकार ऊपर फेंका जिससे कपित्थ-वृक्षके फ़ल गिर गये। उपकारक ! भ्रमरासीन कोमल-कुंतलवाली एक कन्या को फंसाने का (नेत्र) जाल बिछा घूमनेवाले नटखट ! तूम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 6

229. विमोहित करनेवाली कोमल बाँसुरी ले, उपवन में प्रविष्ट हो, (उसको) मुँह में रख (बजाया तो), निविड़-कोमल-कुटिल-कुंतलवाली कन्याएँ आ कर चारों तरफ घेर प्रणत होती हैं, ज्योति ! मेरे दाय-प्राप्त कोई संपत्ति नहीं सिवा इस अपराध के कि मैंने तुम्हें जन्म दिया। (एकमात्र तुम्हीं मेरी संपत्ति हो।) फिर यहाँ नटखट ! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 7

230. (यद्यपि तुम शरारत किये बिना चुप रहते हो यहाँ के लोग) कोई कारण न होने पर भी (असूया के कारण तुम्हें) देख नहीं सकते। इस स्थिति में दूसरों की बालिकाओं को प्रेम-विह्वल बना, भुजों से आलिंगन कर, (उनके संग) विहार कर, अवाच्य (लीलाएँ तुमने) कीं। गोप-कुलवाले यह निंदा नहीं सुनेंगे। (सुन कर न सहेंगे) मेरा तो सत्यनाश हो गया और अब सुखमय जीवन नहीं। नन्द-लाला ! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

231. ताय्मार् मोर् विर्क-प् पोवर् तहप्पन्मार्
कर्रानिरै-प् पिन् पोवर् नी
आय्प्पाडि इळङ् कन्निमार्हळै
नेर्पडवे कोण्डु पोदि,
काय्वार्क्कु एन्रुम् उहप्पनवे शेय्दु
कण्डार् कळर-त् तिरियुम्,
आया ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे । 9

232. तोत्तार् पूङ्-कुळल् कन्नि ओरुत्तियै-च्
चोलै-त् तडम् कोण्डु पुक्कु
मुत्तार् कोङ्गै पुणर्न्दु इरा नाळिगै
मूवेळु शेन्र पिन् वन्दाय्,
ओत्तार्क्कु ओत्तन पेशुवर् उन्नै
उरप्पवै नान् ओन्रुम् माट्टेन्
अत्ता ! उन्नै अरिन्दु कोण्डेन् उनक्कु
अञ्जुवन् अम्मम् तरवे । 10

233. कारार्-मेनि निरत्तु एम्-पिरानै-क्
कडि-क्कमळ् पूङ्-कुळल् आय्च्चि,
आरा इन्नमुदु उण्ण-त् तरुवन् नान्
अम्मम् तारेन् एन्र मार्रम्,
पारार् तोल्-पुहळान् पुदुवै मन्नन्
पट्टर् पिरान् शोन्न पाडल्,
एरार् इन्निशै मालै वल्लार्
इरुडीकेशन्-अडियारे । 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

231. माताएँ मट्ठा बेंचने जायेंगी। पिता-वर्ग वत्स-सहित गो-समूह के पीछे जायेंगे। तुम गोप-भूमि की तरुण कन्याओं को स्वाभीष्ट प्रकार से ले जाते हो। जलनेवालों का मनचाहा काम ही सदैव करते घूमते हो जिससे देखनेवाले उलाहना देते ही रहते हैं। गोपाल ! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 9

232. पुष्प-मंजरियों से भूषित केशवाली एक कन्या को उपवन-प्रदेश में ले जा, मुक्तालंकृत स्तन का आलिंगन कर, रात में त्रि-सप्त घड़ी बीत जाने के बाद (अर्थात् तीसरे पहर के बाद) तुम आये। लोग अपने अपने स्वभाव के अनुसार बोलेंगे। मैं तुम्हें डांट नहीं सकती। तात ! तुम्हें समझ गयी। तुम्हें चूची देने से डरती हूँ। 10

233. जलद-सम शरीर-वर्णवाले प्रभु से सुगंध-सुवासित सुंदर कुंतलवाली गोपिका (यशोदा) बोलीं—"खाने को वह अमृत दूंगी जिससे तृप्ति ही नहीं होती। चूची तो नहीं दूंगी"। (उनके) इस वचन को भूमंडल में पूर्ण और प्राचीन कीर्तिमान श्रीविल्लिपुत्तूर के निर्वाहक श्रीभट्टनाथ ने पदों में कहा जो राग से समन्वित मधुर गीत-माला-रूप में हैं। इनको कथन में समर्थ हृषीकेश के दास हैं। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. ii. अञ्जन-वण्णनै

234. अञ्जन वण्णनै आयर् कोल-क् कोळुन्दिनै,
मञ्जनम् आट्टि मनैहळ् तोरुम् तिरियामे,
कञ्जनै-क् कायन्द कळल् अडि नोव-क् कन्रिन् पिन्,
एन् शेय-प् पिळ्ळैयै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 1

235. पर्रु मञ्जळ् पूशि-प् पावैमारोडु पाडियिल्,
शिर्रिल् शिदैत्तु एङ्गुम् तीमै शेय्दु तिरियामे,
कर्रु-त् तूळि-युडै वेडर् कानिडै-क् कन्रिन् पिन्
एन् शेय-प् पिळ्ळैयै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 2

236. नन्-मणि मेकलै नङ्गैमारोडु नाडोरुम्,
पोन्-मणि मेनि पुळुदियाडि-त् तिरियामे,
कल्-मणि निन्रु अदिर् कान्-अदर् इडै-क् कन्रिन् पिन्,
एन् मणि वण्णनै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 3

237. वण्ण-क् करुङ्-कुळल् मादर् वन्दु अलर् तूर्रिड-प्
पण्णि-प् पल शेय्दु इप्-पाडि एङ्गुम् तिरियामे,
कण्णुक्कु इनियानै-क् कान्-अदर् इडै-क् कन्रिन् पिन्,
एण्णर्कु अरियानै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 4

238. अव्-वत्र्-विडम् पुक्कु अव्वायर् पेण्डिर्क्कु अणुक्कनाय्,
कोव्वै-क् कनि-वाय् कोडुत्तु-क् कूळैमै शेय्यामे,
एव्वुम् शिलै-युडै वेडर् कानिडै-क् कन्रिन् पिन्,
देय्व-त् तलैवनै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. ii. अञ्जन-वण्णनै

[अंजन वर्ण को]

234. अंजन-वर्ण को, गोपों के सुंदर पल्लव को (कान्ह को) मज्जन करा के घर-घर घूमते रहने न दे कर बछड़े के पीछे (मैंने) भेज दिया। कंस को ध्वस्त करनेवाले चरण को व्यथा अवश्य होगी। किस (प्रयोजन के) लिये मैंने भेजा ! हाय ! मेरा पाप ! 1

235. रंजित करनेवाली हल्दी का लेप कर रमणियों के संग गोप-भूमि में घरौंदे तोड़, सब कहीं नटखटी करते घूमते रहने न दे कर बछड़ों की धूल से व्याप्त व्याधों के कानन में बछड़ों के पीछे अपने पुत्र को किसलिये मैंने भेजा ? हाय ! (मेरा) पाप ! 2

236. श्रेष्ठ मणि-मेखला से भूषित गुणवतियों के संग प्रतिदिन सुंदर (नील) मणि-शरीर को धूलि-धूसरित कर के विचरते रहने न देकर शिलारूप घंटे की प्रतिध्वनि से युक्त कानन-मार्ग में बछड़ों के पीछे अपने मणिवर्ण को भेजा। हाय ! (मेरा) पाप ! 3

237. असंख्य (शरारतें) कर के जिससे सुंदर-नील-कुंतलवाली स्त्रियाँ आ कर उलाहना दिये बिना नहीं रह सकतीं, गोप-भूमि में सब कहीं घूमते रहने न दे कर नयनों को मधुर लगनेवाले को अप्रमेय को, कानन-मार्ग में बछड़ों के पीछे भेजा। हाय ! (मेरा) पाप ! 4

238. उस उस स्थान में जा उन अहीरिनों का अंतरंग रह कर, बिंब-फलाधर को दे, (उनके) मनोनुकूल करते रहने न दे कर, भयानक धनुष रखनेवाले किरातों के कानन में बछड़ों के पीछे देव-नायक को भेजा। हाय ! (मेरा) पाप ! 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

239. मिडरु मेळुमेळुत्तोड ञेण्णय् विळुङ्गि-प् पोय्,
पडिरु पल शेय्दु इप्-पाडि एङ्गुम् तिरियामे,
कडिरु पल तिरि कान्-अदर् इडं-क् कन्रिन् पिन्,
इडर एन् पिळ्ळैयै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 6

240. वळ्ळि नुडङ्गु-इडै मादर् वन्दु अलर् तूर्रिड,
तुळ्ळि विळैयाडि-त् तोळरोडु तिरियामे,
कळ्ळि उणङ्गु वेङ्-कान् अदर् इडै-क् कन्रिन् पिन्,
पुळ्ळिन् तलैवनै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 7

241. पन्निरु-तिङ्गळ् वयिर्रिर् कोण्ड अप्-पाङ्गिनाल्,
एन्-निळङ् कोङ्गं अमुदम् ऊट्टि एडुत्तु यान्,
पोन्नडि नोन-प् पुलरिये कानिर् कन्रिन् पिन्,
एन्-निळम् शिङ्गत्तै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 8

242. कुडैयुम् शेरुप्पुम् कोडादे दामोदरनै नान्,
उडैयुम् कडियन ऊन्रु वेप्-परर्कळ्-उडै,
कडिय वेङ्-कान्-इडै-क् काल् अडि नोव-क् कन्रिन् पिन्,
कोडियनेन् पिळ्ळैयै-प् पोक्किनेन् एल्ले पावमे। 9

243. एन्रुम् एनक्कु इनियानै एन् मणि-वण्णनै,
कन्रिन् पिन् पोक्किनेन् एन्रु अशोदै कळरिय,
पोन् तिहळ् माड-प् पुदुवैयर् कोन् पट्टन् शोल
इन् तमिळ् मालै वल्लवर्क्कु इडर् इल्लैये। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

239. मक्खन जिस प्रकार रपट रपट कर गले के नीचे जल्दी चले वैसे उसको निगल कर, अनेक शरारतें कर इस गोप-भूमि में सब कहीं घूमते रहने न दे कर, अनेक गज-संचरित कानन मार्ग में बछड़ों के पीछे ठोकर खाते (चलने के लिये) अपने पुत्र को भेजा। हाय ! मेरा पाप ! 6

240. वल्ली-सम कोमल-कटिवाली स्त्रियों के आ कर इसकी शरारत का उलाहना देते समय उछल कूद कर खेलते तथा मित्रों के संग घूमते रहने न दे कर कँटीले पौधे जहां सूख जाते हैं उस अत्युष्ण कानन-मार्ग में बछड़ों के पीछे पक्षी (गरुड़) के स्वामी को भेजा। हाय ! (मेरा) पाप ! 7

241. बारह महीने उदर में रखने से उत्पन्न उस वात्सल्य से अपने तरुण स्तन का अमृत पिला पालन कर (अब) मैं अपने बाल सिंह को प्रातःकाल में ही कानन में बछड़ों के पीछे भेजा जहां उसके सुनहले चरण दुखते रहेंगे। हाय ! (मेरा) पाप ! 8

242. छत्र और उपानह न दे कर क्रूर-हृदया मैंने दामोदर को बछड़ों के पीछे कठिन और गरम कानन में भेजा जहां (उष्णता के कारण) फट कर दुखद तीखे कंकड़ उसके पाद-तल को व्यथा देते हैं। हाय ! (मेरा) पाप ! 9

243. सर्वदा अपने को मधुर लगनेवाले को, अपने मणि-वर्ण को बछड़ों के पीछे भेज दिया कह कर यशोदा जो वचन बोली उसी को स्वर्ण-से उज्ज्वल प्रासादों से भूषित श्रीविल्लीपुत्तूर के निवासियों के अधिप श्रीभट्ट ने मधुर तमिल (पद) माला में बतलाया। इसके कथन में समर्थों को कोई क्लेश नहीं। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. iii. शीलै-क्-कुदम्बै

244. शीलै-क्-कुदम्बै ओरु कादु ओरु कादु
शेन्-निर मेल्-तोन्रि-प् पू,
कोल-प् पणै-क् कच्चुम् कूरै युडैयुम्
कुळिर् मुत्तिन् कोडालमुम्,
कालि-प् पिन्ने वरुहिन्र
कडल्-वण्णन् वेडत्तै वन्दु काणीर्,
ञालत्तु-प् पुत्तिरनै-प् पेर्रार्
नङ्गैमीर् नाने मर्रु आरुम् इल्लै। 1

245. कन्नि नन्-मा मदिळ् शूळ् तरु
पूम् पोळिल् काविरि-त् तेन् अरङ्गम्,
मन्निय शीर् मदुशूदना ! केशवा !
पानियेन् वाळ्वु उहन्दु,
उन्नै इळङ् कन्रु मेय्क्क-च्
चिरु-काले ऊट्टि ओरुप्-पडुत्तेन्,
एन्निल् वलियाळ् ओरु पेण् इल्लै
एन् कुट्टने ! मुत्तम् दा। 2

246. काडुहळ्-ऊडु पोय्-क् कन्रुहळ् मेय्त्तु
मरि-ओडि, कार्-क् कोडल्-पू-च्
चूडि वरुहिन्र दामोदरा !
कर्रु-त् तूळि काण् उन उडम्बु,
पेडै मयिर्-चायल् पिन्नै मणाळा !
नीराट्टु अमैत्तु वैत्तेन्,
आडि अमुदु शेय् अप्पनुम् उण्डिलन्
उन्नोडु उडने उण्पान्। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. iii. शीलै-क्-कुदम्बै

[-वस्त्र की वर्तिका]

(कान्ह का प्रत्यागमन देख यशोदा का आनंद)

244. एक कान में वस्त्र की वर्तिका है और एक कान में * बंधूक पुष्प। सुंदर विशाल कंचुक और पीतांबर और मोतियों का (चंद्रकला-तुल्य) टेढ़ा कंठहार (पहन कर) गो-समूह के पीछे आनेवाले सागर-वर्ण (कान्ह) के वेष को आ कर देखो, सुंदर वनिताओं ! लोक में ऐसे पुत्र को जन्म देनेवाली मैं ही हूँ, दूसरी कोई नहीं। 1

245. अक्षय सुंदर उन्नत परकोटे से परिवृत सुंदर उपवन एवं कावेरी नदी से रमणीय श्रीरंग में नित्यरहनेवाले गुणपूर्ण मधुसूदन ! केशव ! जीविका की समृद्धि की चाह से पापिनी मैंने अतिप्रात ही खिला-पिला कर बाल-वत्सों को चराने के लिये सज्जित किया। मुझ से कठिन-हृदया दूसरी कोई स्त्री नहीं। मेरे लाल ! चुम्बन दो। 2

246. जंगल से हो कर जा, (गो) वत्स-समूह चरा, (उनको) रोकने के लिये दौड़, नील-कोडल्-पुष्प पहन कर आनेवाले दामोदर ! वत्स-धूलि-धूसरित है तुम्हारा शरीर, देखो। मयूरी की-सी छायायुक्त नप्पिन्नै के प्रियतम ! स्नान करने के उपयुक्त वस्तुएँ सजा रखीं हैं। स्नान कर के खाओ। तुम्हारे साथ भोजन करने की इच्छा से (तुम्हारे) पिता ने (अभी तक) भोजन नहीं किया। 3

* मेल् तोन्रि-प् पू—बंधूक पुष्प।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

247. कडि-यार्-पोळिल् अणि-वेङ्गडवा !
करुम्-पोरेरे ! नी युकक्कुम्
कुडंयुम् शेरुप्पुम् कुळलुम् तरुविक्क-क्-
कोळ्ळादे पोनाय् माले !
कडिय वेङ्-कान् इडै-क् कन्रिन् पिन्
पोन शिरु-क् कुट्ट-च् चेङ्-कमल
अडियुम् वेदुम्बि, उन् कण्कळ् शिवन्दाय्
अशैन्दिट्टाय् नी एम्-पिरान् ! 4

248. पर्रार् नडुङ्ग मुन् पाञ्चशन्नियत्तै
वाय्-वैत्त पोरेरे ! एन्
शिर्रायर्-शिङ्गमे ! शीदै मणाळा !
शिरु-क्-कुट्ट-च् चेङ्कण् माले !
शिर्राडैयुम् शिरु-प् पवित्तिरमुम् इवै
कट्टिलिन् मेल् वैत्तु-प् पोय्,
कर्रायरोडु नी कन्रु मेय्त्तु-क्
कलन्दु उडन् वन्दाय् पोलुम् । 5

249. अञ्-चुडर्-आलि उन् कैयहत्तु एन्दुम्
अळहा ! नो पोय्गै पुक्कु,
नञ्चु-उमिळ् नागत्तिनोडु पिणङ्गवुम्
नान् उयिर् वाळ्न्दु इरुन्देन्,
एन् शेय्य एन्नै वयिरु मरुक्किनाय्
एदुम् ओर् अच्चम् इल्लै,
कञ्जन् मनत्तुक्कु उहप्पनवे शेय्दाय्
कायाम्बू वण्णम् कोण्डाय् । 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

247. सौरभ-मय उपवनवाले सुंदर वेंकट (गिरि) के स्वामी ! श्यामल युद्ध-वृषभ ! प्रेम-विग्रह ! तुम्हारे वांछित छतरी और उपानह ओर बाँसुरी को मंगाने पर भी उन्हें न ग्रहण कर तुम निकल गये। कठिन तप्त कानन में गो-वत्सों के अनुयायी नन्हे बालक के अरुण कमल-चरण झुलस गये, तुम्हारे नयन लाल हो गये और तुम परिश्रांत हुए, मेरे प्रभु ! 4

248. जिससे शत्रु काँप उठें उस प्रकार पूर्व काल में पांचजन्य के मुंह से लगानेवाले युद्ध-वृषभ ! मेरे बाल गोप-सिंह ! सीता-प्रियतम ! नन्हे लाल ! अरुण-लोचन प्रभु ! छोटा वस्त्र और छोटी (बाँसकी) छुरी इन्हें पर्यंक पर रख (भूल कर) जा, वत्स-चरानेवाले गोपों के साथ वत्सों को चरा, उनके संग ही आये हो। 5

249. रम्य ज्योतिर्मय चक्र हस्त में धारण करनेवाले सौंदर्य-संपन्न ! ह्रद में कूद विषोद्‌गारी नाग से तुम्हारे लड़ते समय भी मैं सप्राण जीवित ही रही। किसलिये मेरा पेट क्षुब्ध किया ? तुम्हें तो कोई भय नहीं। कंस की मनचाही किया करते हो, अतसी-पुष्प-वर्ण को अपनानेवाले ! 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

250. पन्रियुम् आमैयुम् मीनमुम् आहिय
पार्-कडल् वण्ण ! उन्मेल्
कन्रिन् उरुवाहि मेय्-पुलत्ते वन्द
कळ्ळ अशुरर् तम्मै,
शेन्रु पिडित्तु-च् चिरु कैहळाले
विळङ्गाय् एरिन्दाय् पोलुम्
एन्रुम् एन् पिळ्ळैक्कु-त् तीमैगळ्
शेय्वार्हळ् अङ्ङनम् आवर्हळे। 7

251. केट्टु अरियादन केट्किन्रेन्
केशवा ! कोवलर् इन्दिरर्कु,
काट्टिय शोरुम् करियुम् तयिरुम्
कलन्दु उडन् उण्डाय् पोलुम्,
ऊट्ट मुदल् इलेन् उन् तन्नै-क् कोण्डु
ओरु पोदुम् एनक्कु अरिदु,
वाट्टम्-इला-प् पुहल् वाशुदेवा !
उन्नै अञ्जुवन् इन्रु तोट्टुम्। 8

252. तिण्णार् वेण् शङ्गु उडैयाय् तिरु नाळ्
तिरुवोणम् इन्रु एळु नाळ्, मुन्
पण्णेर्-मोळियारै-क् कूवि मुळै-यट्टि-प्
पल्लाण्डु कूरुवित्तेन्.
कण्णालम् शेय्य-क्-करियुम्
कलत्तदु अरिशियुम् आक्कि वैत्तेन्,
कण्णा ! नी नाळै-त् तोट्टु-क् कन्रिन् पिन्
पोहेल् कोलम् शेय्दु इङ्गे इरु। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

250. वराह और कूर्म और मत्स्य रूप होनेवाले तथा पृथ्वी (को घेरे) समुद्र के वर्णवाले ! तुम्हारे ऊपर (आक्रमण करने के लिये) वत्स का रूप ले कर चरनेवाली भूमि में आगत वंचक असुरों के पास जा पकड़ नन्हे हाथों से कपित्थ (असुर) पर फेंक दिया। मेरे लाल की बुराई करनेवाले सदा वैसे ही हो जायेंगे। अर्थात् उन असुरों के समान ध्वस्त होंगे।

[अथवा दानों हथेलियों को एक साथ मोड़ कर इशारे से सूचित करती हैं कि वे नष्टभ्रष्ट हो जायेंगे।] 7

251. तुम्हारे विषय में अनसुनी अज्ञात बातें सुनती हूँ। केशव ! गोपों द्वारा इंद्र को निवेदित अन्न और शाक और दही सब मिला कर एक साथ खा लिया। (तुम्हें) खिलाने के लिये मेरे पास संपत्ति नहीं। तुम्हारे साथ रह कर (दिन का) एक अंश बिताना भी मेरे लिये अशक्य है। कभी कम न होनेवाले यश से युक्त वासुदेव ! अब तो मैं तुम से डरती हूँ। 8

252. सुदृढ़ धवल शंखवाले ! आज से सातवें दिन श्रवण नक्षत्र का मंगलोत्सव है। गीति-समन्वित मधुर-भाषिणियों को बुला कर अंकुरार्पण करा, 'बहुवर्ष विजयी रहो' का संकीर्तन भी करवाया। कल्याणतम उत्सव मनाने के लिये शाक और तण्डुल पात्रस्थ कर रखे। कान्ह ! कल से तुम वत्स के पीछे मत जाना। आओ, तुम्हें सजावें। तुम यहीं रहो। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

253. पुऱ्ऱवु-अलगुल्-अशोदै नल्-आय्च्चि
तन् पुत्तिरन् कोविन्दनै,
कऱ्ऱिनम् मेय्त्तु वर-क् कण्डु उहन्दु अवळ्
कऱ्पित्त माऱ्ऱम् एल्लाम्,
शेऱ्ऱम् इलादवर् वाळ् तरु तेन् पुदुवै
विट्टु चित्तन् शोल्,
कऱ्ऱु इवै पाड-वल्लार् कडल् वण्णन
कळल्-इणै काण्पार्हळे। 10

III. iv. तलैहलुम्

254. तळैहळुम् तोङ्गलुम् तदुम्बि एङ्गुम्
तण्णुमै एक्कम् मत्तळि ताळ-पीलि,
कुळलहळुम् गीतमुम् आहि एङ्गुम्
कोविन्दन् वरुकिन्ऱ कूट्टम् कण्डु,
मळै कोलो वरुकिन्ऱदु एन्ऱु शोल्लि
मङ्गैमार् चालक वाशल् पऱ्ऱि,
नुळैवनर् निऱ्पनराहि एङ्गुम् उळ्ळम्
विट्टु ऊण् मरन्दु ओळिन्दनरे। 1

255. वल्लि-नुण्-णिदळन्न आडै कोण्डु
वशै-यर-त् तिरु वरै विरित्तु उडुत्तु
पल्लि नुण् पऱ्ऱाह उडै-वाळ् शात्ति-प्
पणै-क् कच्चुन्दि-प् पल तळै नडुवे,
मुल्लै नन्नरु-मलर् वेङ्गै-मलर् अणिन्दु
पल्लायर् कुळाम् नडुवे
एल्लि-अम्-पोदाह-प् पिळ्ळै वरुम्
एदिर् निन्ऱु अङ्गु इन-वळै इळवेन्मिने। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

253. वल्मीकस्थ नाग-तुल्य नितंबवाली साध्वी गोपिका यशोदा ने अपने पुत्र गोविंद को वत्स-वृंद चरा कर आते देख प्रफुल्लित हो जो आदेश दिया उन वचनों को असूयारहितों से अधिष्ठित श्रीविल्लिपुत्तूर के श्रीविष्णुचित्त ने कहा। इन पदों को सीख कर गाने में समर्थ सागर-वर्ण के चरण-द्वय के दर्शन करेंगे। 10

III. iv. तळैहवुम् तोंगलुम्

(मोर पंख के छाते ओर छतरियाँ)

[वत्सों के पीछे आनेवाले कान्ह के दर्शन से गोपियों की प्रेम-दशा]

254, मोर-पंख के छाते और छतरियाँ फैली हैं ; पटह, एकतारा, मर्दल, मोरछल, बाँसुरियाँ और गीत सर्वत्र (गुंजित) हैं। (बालकों के) समूह के साथ गोविंद को आते देख "क्या जलद ही आता है ?" कहते हुए युवतियाँ वातायन पकड़ कर प्रविष्ट होती हुई ठिठकी रह गईं। मन गँवा कर भोजन को भी भूल गईं। 1

255. वल्ली के सूक्ष्म पल्लव-सदृश वस्त्र ले, फैला, निर्दोष रूप से कमर में पहन, छिपकली-जैसी चिपकी छुरी धारण कर, उत्तम मेखला बाँध, अनेक मोर पंखों के बीच सुगंधित और श्रेष्ठ मालती-पुष्प और 'वेंगै' पुष्प से सजा, असंख्य गोप-वृंद के मध्य में संध्या का समय होते-होते (मेरा) लाल आयेगा। (युवतियों !) सामने खड़ी हो कर (प्रेम-विह्वल हो) वलय-जाल मत गँवाना। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

256. शुरिकैयुम् तेरि-विल्लुम् शेण्डु-कोलुम्
मेल् आडैयुम् तोळन्मा़र कोण्डु ओड,
ओरु-कैयाल् ओरुवन्-तन् तोळै ऊन्रि
आ-निरै-इनम् मीळ-क् कुरित्त शङ्कम्,
वरुहैयिल् वाडिय पिळ्ळै कण्णन्
मञ्जळुम् मेनियुम् वडिवुम् कण्डाळ्,
अरुहे निन्राळ् एन् पेण् नोक्कि-क्-कण्डाळ्
अदु कण्डु इव्-वूर् ओन्रु पुणर्क्किन्रदे। 3

257. कुन्रु एडुत्तु आ-निरै कात्त-पिरान्
कोवलनाय्-क् कुळल् ऊदि ऊदि
कन्रुहळ् मेय्त्तु-त् तन् तोळरोडु
कलन्दु उडन् वरुवानै-त् तेरुविल् कण्डु,
एन्रुम् इवनै ओप्पारै नङ्गाय् कण्डु अरियेन्
एडि! वन्दु काणाय्,
ओन्रुम् निल्ला वळै कळन्रु तुहिल्
एन्दिळ मुलैयुम् एन् वशम् अल्लवे। 4

258. शुर्रि निन्रु आयर् तळैहळ् इट-च्
चुरुळ् पङ्गि नेत्तिरत्ताल् अणिन्दु,
पर्रि निन्रु आयर् कडैत्तलैये
पाडवुम् आड-क् कण्डेन्, अन्रि-प् पिन्
मर्रोरुवर्क्कु एन्नै-प् पेशल् ओट्टेन्
मालिरुञ्-चोलै एम्-मायर्कु अल्लाल्,
कोर्रवनुक्कु इवळ् आम् एन्रु एण्णि-क्
कोडुमिन्गळ् कोडीराहिल कोळम्बमे। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

256. छुरी और क्रीड़ा-धनुष और सगुच्छ लाठी और उत्तरीय छीन कर मित्र-गण भागते हैं। एक के कंधे पर एक हस्त रख गो-समूह को बुलाने के लिये शंख बजा (श्रीकृष्ण) लौटता है। (मेरे) लाल कान्ह के आते समय उसका मुरझाया हुआ पीताभ शरीर और रूप पार्श्व में खड़ी मेरी पुत्री ने गौर से देखा। इसे देख यह ग्राम (दोनों में एक) संबंध की उद्भावना करता है। 3

257. (गोवर्धन) गिरि को उठा कर पशु-समूह की रक्षा करनेवाला प्रभु गोप बन, बाँसुरी बजा-बजा, वत्सों को चरा, अपने मित्रों से एक हो, उनके संग आ रहा है। वीथी में उसे देख (एक गोप-बालिका कहती है) सखि! इसके समान और किसी को कभी मैंने नहीं देखा है। अरी! आ कर देख। वस्त्र खिसक जाता है और वलय टिकते ही नहीं। पीन तरुण स्तन भी मेरे वश में नहीं। 4

258. घर कर अवस्थित हो गोप-गण मोर-पंख की छतरियाँ लगा रहे हैं। मैंने देखा कि कुटिल कुंतल मोर-पंख से अलंकृत कर गोपों के द्वार पर स्थित हो, वह नाच, और गा रहा था। 'तिरु-माल्-इरुञ्चोल' (श्रीवनाचल) के मायावी प्रभु को छोड़ कर और किसी के साथ अपने को संबद्ध करके बोलने न दूँगी। यह समझ कर कि यह उन जयशील के ही योग्य है मुझको (उनके हाथ) सौंप दो। नहीं सौंपतीं तो क्षोभ ही होगा। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

259. शिन्दुरम् इलङ्ग-त् तन् तिरु नेर्रि मेल्
तिरुत्तिय कोरम्बुम् तिरु-क् कुळलुम्,
अन्तर-मुळव-त् तण्-तलै-क् काविन् कीळ्,
वरुम् आयरोडु उडन् वळै-कोल् वीश,
अन्दम् ओन्रु-इल्लाद आय-प् पिळ्ळै
अरिन्दु अरिन्दु इव्-वीदि पोदुमाहिल्,
पन्दु कोण्डान् एन्रु वळैत्तु वैत्तु-प्
पवळ वाय् मुरुवलुम् काण्पोम् तोळी। 6

260. शाल-प् पन्-नि-प् पिन्ने तळै-क् काविन् कीळ्-त्
तन् तिरुमेनि निन्रु ओळि तिहळ,
नील नन्-नरुङ् कुञ्चि नेत्तिरत्ताल्
अणिन्दु पल्लायर् कुळाम् नडुवे,
कोल-च् चेन्-ता मरै-क् कण् मिळिर-क्,
कुळल् ऊदि इशै पाडि-क् कुनित्तु, आयरोडु
आलित्तु वरुहिन्र आय-प् पिळ्ळै
अळहु कण्डु एन महळ् अयर्क्किन्रदे। 7

261. शिन्दुर-प् पोडि कोण्डु शेन्नि अप्पि-त्
तिरु-नामम् इट्टु अङ्गु ओर् इलैयन् तन्नाल्,
अन्तरम् इन्रि-त् तन् नेरि पङ्गियै
अळहिय नेत्तिरत्ताल् अणिन्दु,
इन्दिरन् पोल् वरुम् आय-प् पिळ्ळै
एदिर् निन्रु अङ्गु इन वळै इळवेल् एन्न,
शन्दियिल् निन्रु कण्डोर् नङ्गै
तन् तुहिलोडु शरि-वळै कळल् किन्रदे। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

259. (श्रीकृष्ण के) सुंदर ललाट में सिंदूर भासमान है। उसके ऊपर लगाया हुआ लटकन और चिकुर (सुशोभित) हैं। अंतरिक्ष में मर्दल वज उठता है। शीतल मोर-पंख की छतरी की छाया में आनेवाले गोपों के साथ झुकी हुई लाठी घुमाते हुए सर्व-दोष-रहित आभीर-बालक जान-बूझ कर इस वीथी से हो कर यदि जाता है तो यह उलहना देते हुए कि इसने हमारा कंदुक हर लिया कह उसको घेर रोक कर प्रवालाधर और स्मित को देखेंगी, सखि। 6

260. अनेक विविध धेनु-समूह के पीछे मोर-पंखों की छतरी के जाल के नीचे उसका शरीर शोभायमान है। नील सुंदर सुगंधित चिकुरों को (पंख) नेत्रों से सिंगार कर, अनेक गोप-वृंद के मध्य में रम्य रक्तिम कमल-नयन के स्फुरण के साथ बाँसुरी बजा, गीत गा, नृत्य कर गोपों के संग सकोलाहल आनेवाले गोप-बालक का सौंदर्य देख मेरी पुत्री का विह्वल हो जाना, अहो ! 7

261. सिंदूर चूर्ण को सिर पर डाल, एक पर्ण को मनोहर ऊर्ध्वपुंड्र के रूप में ललाट पर लगा, निविड़ घने कुटिल कुंतल को सुंदर मोर-पंख से सिंगार कर, यह गोप-बालक इंद्र के समान आयेगा। कहीं अभिमुख खड़ी हो कर वलय-जाल मत खोओ—मैंने (अपनी पुत्री से) कहा। परंतु वह सुंदरी तो चौराहे पर खड़ी रही। उसके दुकूल के साथ हस्त-वलय खिसक जाते हैं। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

262. वलङ्-कादिन् मेल् तोन्रि-प् पू अणिन्दु
मल्लिकै वनमालै मौवल्-मालै,
शिलिङ्गारत्ताल् कुळल् ताळ-विट्टु-त्
तोड्-कुळल् वाय् मडुत्तु ऊदि ऊदि,
अलङ्कारत्ताल् वरुम् आय-प् पिळ्ळै
अळहु कण्डु एन् महळ् आशै-प् पट्टु,
विलङ्गि निल्लादु एदिर् निन्रु कण्डीर्
वेळ्-वळै कळन्रु मेय्-म्-मेलिकिन्रदे। 9

263. विण्णिन् मीदु अमरर्हळ् विरुम्बि-त् तोळ
मिरैत्तु आयर्-पाडियिल् वीदि-ऊडे
कण्णन् कालि-प् पिन्ने एळुन्दरुल-क् कण्डु
इळ-आय्-क् कन्निमार् कामुर्र,
वण्णम् वण्डु-अमर् पोळिल् पुदुवैयर् कोन्
विट्टुचित्तन् शोन्न मालै पत्तुम्,
पण्-णिन्पम् वर-प् पाडुम् पत्तर् उळ्ळार्
परमान वैकुन्दम नण्णुवरे। 10

III. v. अट्टु-क्-कुवि

264. अट्टु-क् कुवि शोर्रु-प् परुप्पदमुम्
तयिर् वावियुम् नेय्-यळरुम् अडङ्ग-प्
पोट्ट-त् तुर्रु मारि-प् पहै पुणर्त्त
पोरु मा कडल् वण्णण् पोरुत्त मलै,
वट्ट-त् तडङ्-कण् मड-मान् कन्रिनै
वलै-वाय्-प् पर्रि-क् कोण्डु, कुर-महळिर्
कोट्टै-त् तलै-प् पाल् कोडुत्तु वळर्क्कुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडैये। 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

262. दक्षिण कण पर कल्हार-पुष्प पहन, मल्लिका-वनमाला और चमेली-माला से शृंगारित चिकुर को लटकते छोड़, मधुर बाँसुरी मुँह पर रख बजा-बजा अलंकार के साथ गोप-बालक आता है। उसका सौंदर्य देख मेरी पुत्री प्रेम-विह्वल हो, हट कर अवस्थित न हो, अभिमुख ही खड़ी रही तो धवल वलय (हाथ से) छूट गये और शरीर अवसन्न हो गया।

[वनमाला—विविध पुष्पों से गूँथी हुई आजानुलंबिनी माला ।] 9

263. अंतरिक्ष में अमरों के सोत्कंठ प्रणत होने पर भी उनकी उपेक्षा कर गोप-भूमि में वीथी से हो कर कान्ह को पशु-समूह के पीछे आते हुए देख कर तरुण गोप-कन्याओं के प्रेम-विह्वल होने के प्रकार का भ्रमरासीन उपवनों से घिरे श्रीविल्लिपुत्तूर के स्वामी श्रीविष्णुचित्तने वर्णन किया। उनके माला-सदृश दस पदों को जो भक्त इस तरह गाते हैं कि संगीत का आनंद आ जाय वे परम वैकुंठ को प्राप्त करते हैं। 10

III. v. अट्टु-क्-कुवि

264. पका कर एकत्रित किया अन्न-पर्वत और दधि-ह्रद और घृत-पंक सब को एक साथ झट खा, वर्षा रूप शत्रु को (इंद्र द्वारा) उपस्थित करवा कर तरंगित नील-सागर-वर्ण ने जिस गिरि को धारण किया वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिसमें किरात-कन्याएँ वर्तुल-विशाल-लोचनवाले हरिण-शावकों को जाल से छुड़ा कर, रूई को दूध में भिँगो उससे दूध पिला पालन करती हैं। 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

265. वळु-वोन्रुम् इल्ला-च् चेय्गै वान्वर् कोन्
वलिप्पट्टु मुनिन्दु विडुक्क-प् पट्ट,
मळै वन्दु एलु नाळ् पेय्दु मात्-तडुप्प
मदु-शूदन् एडुत्तु मरित्त मलै,
इळवु तरियाददु ओर् ईर्रु-प् पिडि
इळञ्-चीयम् तोडर्न्दु मुडुहदलुम्,
कुळवि-यिडै-क् काल् इट्टु एदिर्न्दु पोरुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क्-कुडैये। 2

266. अम् मै-त् तडङ्-कण् मड-वाय्च्चियरुम्
आन्-आयरुम् आ-निरैयुम् अलरि,
एम्मै-च् चरण् एन्रु कोळ् एन्रु इरप्प
इलङ्गु-आलि-क् कै एन्दै एडुत्त मलै,
तम्मै-च् चरण् एन्र तम् पावैयरै-प्
पुनम् मेय्किन्र मान्-इनम् काण्मिन् एन्रु,
कोम्मै-प् पुय-क् कुन्रर् शिलै कुनिक्कुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क्-कुडैये। 3

267. कडुवाय्-च्-चिन वेङ्कट्-कळिर्रिनुक्कु-क्
कवळम् एडुत्तु-क् कोडुप्पान् अवन् पोल्,
अडि-वाय् उर-क् कै-यिट्टु एळ-प् परित्तिट्टु
अमर्र् पेरुमान् कोण्डु निन्र मलै,
कडल् वाय्-च् चेन्रु मेहम् कविळ्न्दु इरङ्गि-क्
कदुवाय्-प् पड नीर् मुहन्दु एरि एङ्गुम्
कुडवाय्-प् पड निर्रु मळै पोळियुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडैये। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

265. (पदवी-प्राप्ति के लिये) दोष-हीन क्रियावाले देवाधिप (इंद्र) के अधीन हो, उससे सक्रोध प्रेरित बादलों ने आ, जब सात दिन निरंतर वरस कर (गो-गोप को) गतिहीन वनाया, तब मधुसूदन ने उनके रक्षार्थ जिस गिरि को उठा औंधा कर पकड़ा, वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिसमें माता हथिनी पीछा कर आक्रमण करनेवाले बाल-सिंह से अपने वच्चे को जो पीड़ा हुई उसको न सहकर, उस बच्चे के पैरों के मध्य में रख कर (सिंह पर) झपट कर आक्रमण करती है। 2

266. अंजनालंकृत सुंदर विशाल-लोचन सुशील गोपिकाएँ और धेनु-रक्षक गोप और धनु-समूह सबने जब चीख कर प्रार्थना की 'हमें अपनी शरण में लो' उज्ज्वल-चक्र-हस्त हमारे स्वामी ने जिस गिरि को उठाया, वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिसमें बृहद्-भुज पर्वतीय (जब) शरण में आयी अपनी स्त्रियों से कहते हैं कि 'मैदान में चरनेवाले (अपने नेत्रों से स्पर्धा करनेवाले) मृग-यूथ को देखो' और (उन पर तीर छोड़ने के लिये) धनुष झुकाते हैं। 3

267. क्रूर-मुख क्रोध-रक्त नेत्रवाले हस्ती को, (महावत) जैसे एक कौर उठा कर देता हो, उस प्रकार जिस (गिरि) के मूल में हाथ डाल कर (उसको) उखाड़, अनायास उठा धारण कर देवों के अधीश्वर (श्रीकृष्ण) खड़े रहे, वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिस पर मेघ जो सागर पर उतर जल ले—जिससे सागर का जल कम हो गया हो—(आसमान पर) चढ़ खड़े सर्वत्र घड़ों की धारा सी वर्षाधारा बरसाता है।

[इस पद में मेघ की उपमा हस्ती से, पर्वतकी उपमा कौर से, और उसको उठानेवाले श्रीकृष्ण की उपमा महावत से दी गयी है।] 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

268. वानत्तिल् उळ्ळीर् ! वलियीर् उळ्ळीरेल्
अरैयो ! वन्दु वाङ्गुमिन् एन्पवन् पोल्,
एनत्तु उरुवाहिय ईशन् एन्दै
इडवन्-एळ वाङ्गि एडुत्त मलै,
कान-क्-कळि-यानै तन् कोम्बु इळन्दु
कदुवाय् मदम् शोर-त् तन् कै-एडुत्तु,
कूनल् पिरै वेण्डि अण्णान्दु निर्कुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडैये । 5

269. शेप्पाडुडैय तिरुमाल् अवन् तन्
शेन-तामरै-क् कै-विरल् ऐन्दिनैयुम्,
कप्पाह मडुत्तु मणि नेडुन् तोळ्
काम्बाह-क् कोडुत्तु-क् कवित्त मलै,
एप्पाडुम् परन्दु इळि तेळ्-अरुवि
इलङ्गु मणि मुत्तु वडम् पिरळ,
कुप्पायम् एन निन्रु काट्चि तरुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क्-कुडैये । 6

270. पडङ्गळ् पल-वुडै-प् पाम्बु अरैयन्
पडर् पूमियै-त् ताङ्गि-क् किडप्पवन् पोल्,
तडङ्-कै विरल् ऐन्दुम् मलर वैत्तु-त्
तामोदरन् ताङ्गु तड-वरै तान्
अडङ्ग-च् चेन्रु इलङ्गैयै ईडळित्त
अनुमन् पुहळ् पाडि-त् तङ्-कुट्टन्गळै,
कुडङ्गै-क् कोण्डु मन्दिहळ् कण् वळर्त्तुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क्-कुडैये । 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

268. "स्वर्गवासियों ! यदि तुम शक्तिमान हो तो आओ, इसे ले लो (देखूँ)" यह कहते-से वराह-रूप सर्वेश्वर हमारे स्वामी ने मिट्टी के ढेले के समान अनायास उठाकर जिस गिरि को धारण किया वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिसमें वन्य मत्त-हस्ती जिसका एक दाँत (कहीं क्रीड़ा में) टूट गिर गया हो व्रणित मुँह से मद-जल बहाता अपनी सूँड़ उठा, वक्र (चंद-) कला को (टूटे दाँत का टुकड़ा समझ उसको) प्राप्त करने की इच्छा से मुँह ऊपर किये खड़ा रहता है। 5

269. आर्जव-गुण-संपन्न श्रियःपति ने अपने अरुण तामरस-हस्त की पाँच उँगलियों को आधार के रूप में पसार, सुंदर दीर्घ भुज को दंड के रूप में लगा, जिस गिरि को औंधा कर पकड़ा, वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिस पर सब कहीं फैल बहनेवाले स्वच्छ झरने उज्ज्वल सुंदर मोतियों की लड़ जैसे प्रकाशमान हैं और एक मुक्ता-कंचुक जैसे दिखाई देते हैं। 6

270. जिस प्रकार अनेक फणवाला सर्पराज (आदिशेष) विशाल भूमि को धारण कर पड़ा रहता है, उसी तरह विशाल हस्त की पाँचों अंगुलियों को विकसित बना दामोदर ने जिस उन्नत गिरि को धारण किया, वह है गोवर्धनरूप विजय-छतरी जहाँ बंदरियाँ अपने बच्चों को गोद में ले, हनुमान का प्रशंसामय गीत गा कर सुलाती हैं—हनुमान का जिन्होंने जा कर सारी लंका का सत्यानाश किया था। 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

271. शाल-मा-मुहिल् पल्-कण-प्-पोर्-क् कळत्तु-च्
चरमारि पोळिन्दु एङ्गुम् पृशल् इट्टु,
नलित्रान्-उर-क् केडहम् कोप्पवन् पोल्
नार'यणन् मुन् मुकङ्-कात्त मलै,
इलै-वेय् कुरम्बै-त् तव-मा मुनिवर्
इरुन्दार् नडुवे शेन्रु अणार् शोरिय,
कोलै वाय्-च् चिन वेङ्गैहळ् निन्रु उरङ्गुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडैये। 8

272. वन्-पेय् मुलै-उण्डदु ओर् वायुडैयन्
वन्-तूण् एन निन्रदु ओर् वन् परत्तै,
तन् पेर्-इट्टु-क् कोण्डु तरणि तन्निल्
तामोदरन् ताङ्गु तड-वरै तान्,
मुन्पे वळि काट्ट मुशु-क् कणङ्गळ्
मुदुहिल् पेयदु तम्मुडै-क् कुट्टन्गळै,
कोम्बु एर्रि इरुन्दु कुदि पयिर्रुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडैये। 9

273. कोडि—एरु शेन्-तामरै-क् कै-विरल्हळ्
कोलमुम् अळिन्दिल वाडिर्रिळ,
वडिवु-एरु तिरु-उहिर् नोन्दुम् इल
मणि-वण्णन् मलैयुम् ओर् शम्पिरदम्,
मुडि एरिय मा-मुहिल् पल् कणङ्गळ्
मुन्-नेर्रि नरैत्तन पोल, एङ्गुम्
कुडि एरि इरुन्दु मळै पोळियुम्
कोवरत्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडैये। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

271. जब जल से भरे बड़े बादल झुंडके झुंड युद्ध-क्षेत्र में सब कहीं शर-वर्षा कर, युद्ध कर पीड़ा देने आये, तब नारायण ने ढाल सम्हालने वाले के जैसा जिस गिरि को उठा कर (उससे) बढ़ आनेवाली वर्षा के आक्रमण को रोक कर गायों की रक्षा की, वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिसमें हिंस्रमुख क्रोधित शार्दूल पर्णों की बनी कुटियों में स्थित तपस्या से श्रेष्ठ मुनियों के मध्य में जा कर खड़े हो जाते हैं और जब वे उनकी गरदन खुजलाते हैं तब वे व्याघ्र खड़े-खड़े सो जाते हैं। 8

272. दृढ़ स्तंभ के समान स्थित एक सुदृढ़ भारी गिरि को अपना ही नाम पहना कर, बलिष्ठ दानवी-स्तन पीनेवाले विलक्षण मुखयुक्त दामोदर ने जिस विशाल गिरि को धारण किया वह है गोवर्धन-रूप विजय-छतरी जिसमें जंगली बंदर-गण पहले ही मार्ग बताने के लिये अपने बच्चों को पीठ पर लगा, शाखाओं पर चढ़ा, (उधर) बैठ, कूदना सिखाते हैं ॥

[गायों को जंगल ले जा कर हरी घास चरा कर उनका पालन करने से श्रीकृष्ण का नाम गोवर्धन हुआ अर्थात गायों की वृद्धि करनेवाला पालक। पर्वत भी गायों को घास आदि दे कर उनकी वृद्धि करता है। अतः कृष्ण की तरह उनका भी नाम गोवर्धन हुआ।] 9

273. ध्वज (आदि रेखाओं) से चिह्नित अरुण कमल-हस्त और उँगलियाँ सौंदर्यहीन न हुईं, न कांतिहीन हुईं। सुरूप-संपन्न श्रीनख भी व्यथित न हुए। मणिवर्ण का गिरि (उठाना) भी एक इंद्रजाल था। वह गिरि गोवर्धन-रूप विजय-छतरी है जिसके शिखर पर आरूढ़ झुंड केझुंड बड़े बादल, जो ललाट के पुरोभाग के पके बाल-से हैं सर्वत्र ही वास ले वृष्टि बरसाते हैं ॥

[ऊँचे गिरि के शिखर पर सदा बादल बैठे रहते हैं। जब जल-पूर्ण हैं, तब नील वर्ण बने रहते हैं। जल बरसने के बाद वे धवल हो जाते हैं। पिछली अवस्था को ले कर यहाँ कहा जाता है कि वे बादल गिरि के ललाट के पुरोभाग के पके केश तुल्य हैं।] 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

274. अरविल् पळ्ळि कोण्डु अरवम् तुरन्दिट्टु
अरव-प् पहै ऊर्दि अवनुडैय,
कुरविल् कोडि मुल्लैहळ् निन्रु उरङ्गुम्
कोवर्त्तनम् एन्नुम् कोर्र-क् कुडै मेल्
तिरुविल् पोलि मरै-वाणर् पुत्तूर्-त्
तिहळ् पट्टर् पिरान् शोन्न माले पत्तुम्,
परवु मन नन्गु-उडै-प् पत्तर् उळ्ळार्
परमान वैकुन्दम् नण्णुवरे। 11

III. vi. नावलम्

(कुळल्-ऊदल्-शिरप्पु)

275. नावल्-अम्-पेरिय-तीविनिल् वाळुम्
नङ्गैमीर्गळ्! इदु ओर् अर्पुदम् केळोर्,
तू-वलम्-पुरि-युडैय तिरुमाल्
तूय वायिल् कुळल् ओशै वळियै,
कोवलर् शिरुमियर् इळङ्-कोङ्गै
कुतूहलिप्प उडल् उळ् अविळ्न्दु, एङ्गुम्
कावलुम् कडन्दु कयिरु माले याहि
वन्दु कविळ्न्दु निन्रनरे। 1

276. इड-अणरै इडन्-त् तोळोडु शाय्त्तु
इरु कै कूड-प् पुरुवम् नेरिन्दु एर,
कुड-वयिरु पड वाय् कडै कूड-क्
कोविन्दन् कुळल्-कोडु ऊदिन-पोदु
मड-मयिल् हळोडु मान्-पिणै पोले
मङ्गैमार्हळ् मलर्-क् कून्दल् अविळ,
उडै नेहिळ ओर् कैयाल् तुहिल् पर्रि
ओल्हि ओडु-अरि-क्-कण्-ओड निन्रनरे। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

274. (आदिशेष) सर्प पर शयन कर, (कालिय) सर्प को (दह से) भगा, सर्पशत्रु (गरुड़)-वाहन को चलानेवाले श्रीकृष्ण की गोवर्धन-गिरि-रूप जो विजय-छतरी है, उस पर कुरव वृक्ष पर चमेली-लताएँ खड़ी-खड़ी सोती हैं। उस गिरि विषयक दस (पद) मालाओं के रचनेवाले श्रीभट्टनाथ वैष्णव श्री से उद्भासित वेदज्ञ महापुरुषों के श्रीविल्लिपुत्तूर में विलसितहैं। इन (मालाओं) के संकीर्तन में निरत उत्तम मनवाले जो भक्त होते हैं, वे परम (धाम) श्रीवैकुंठ को प्राप्त करेंगे ॥ 11

IV. v. नावल् अम्पेरिय

[जंबू सुंदर विशाल]

(वेणु-गान)

275. जम्बू (नाम के) सुंदर विशाल द्वीप में रहनेवाली गुणवतियों ! यह एक अद्भुत (घटना) सुनो। शुभ्र दक्षिणावर्त-शंखवाले श्रीमन्नारायण के पावन मुख की मुरली--ध्वनि के मार्ग से गोप-कुमारियाँ सब नियमों को तोड़ कर (अपने घर से) दौड़ी हुई आती हैं। जिससे उनके तरुण स्तन कुतूहल (कौतुक) से नाचते हैं और उनके शरीर तथा हृदय अवसन्न हो गये हैं। वे कुमारियाँ रस्सी में बँधी माला के समान हो, (कान्ह के पास आ) लज्जा से (सिर) झुका खड़ी हो गयीं। 1

276. (जब श्रीकृष्ण मुरली बजाते हैं) उनका वाम कपोल वाम भुज के समीप झुक गया है ; दोनों हाथ मुरली से लगे हैं ; भौंहें टेढ़ी हो ऊपर चढ़ी हैं : उदर (वायु से) भरा घड़ा-सा है ; अधर (मुरली के रंध्र के पास) जुड़े रहते हैं। इस प्रकार गोविंद के मुरली ले बजाते समय, मुग्ध मयूरों के साथ हरिणियों के समान कुमारियाँ दौड़ आती हैं। उनके पुष्पालंकृत केश-भार खुल गये हैं। खिसकनेवाले दुकूल को एक हाथ से पकड़ कर, (लाल) डोरोंवाले नयन को श्रीकृष्ण की ओर दौड़ाए खड़ी हो गयीं।

[खुले केश भार के कारण वे कन्याएँ मयूर-सदृश हैं और मुग्ध नयनों के कारण हरिणी-सदृश हैं।] 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

277. वान्-इलवरशु वैकुन्द-क् कुट्टन
वाशुदेवन् मदुरै मन्नन्, नन्द-
कोन् इळ-वरशु कोवलर् कुट्टन्
कोविन्दन् कुळल्-कोडु ऊदिन-पोदु,
वान्-इळम्पडियर् वन्दु वन्दु ईण्डि
मनम् उरुहि मलर्-क् कण्गळ् पनिप्प.
तेन्-अळवु शेरि कून्दल् अविळ-च्
चेन्नि वेर्प्प-च् चेवि शेर्त्तु निन्रनरे। 3

278. देनुकन् पिलम्बन् काळियन् एन्नुम्
तोप्प-प् पूडुहळ् अडङ्ग उळक्कि,
कानहम् पडि उलावि उलावि-क्
करुञ्-शिरुक्कन् कुळल् ऊदिन-पोदु,
मेनकैयोडु तिलोत्तमै अरम्बै
उरुप्पशियर्-अवर् वेळ्हि मयङ्गि,
वानहम्-पडियिल् वाय् तिरप्पिन्रि
आडल् पाडल् अवै मारिनर् तामे। 4

279. मुन् नर-शिङ्गम् अदाहि अवुणन् मुक्कियत्तै
मुडिप्पान् मू-उलहिल्
मन्नर् अञ्जुम् मदुशूदनन् वायिल्
कुळलिन् ओशै शेवियै-प् पर्रि वाङ्ग,
नन्-नरम्बुडैय तुम्बुरुवोडु
नारदनुम् तम्-तम् वीणै मरन्दु,
किन्नर-मिदुनङ्गळुम् तम्-तम्
किन्नरम् तोडुहिलोम् एन्रनरे। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

277. परमधाम के युवराज, श्रीवैकुंठ-वालक, वासुदेव, मथुरा के महाराज, नंद-राज के युवराज, गोप-वालक, गोविंद ने जव मुरली ले वजायी, तव स्वर्ग की युवतियाँ आ आ एकत्रित हो गईं। उनका मन विगलित हुआ और कमल-लोचन प्रसृत आनन्दाश्रु से शीतल हुए। (पुष्पों के) मधु से समन्वित घने चिकुर खुल गये। उनका आनन पसीने की बूँदों से संयुक्त है। (देव-कन्याएँ श्रीकृष्ण के वेणुगान की दिशा में) कान लगाये खड़ी हो गयीं।

[श्री वैकुंठ में भगवान नित्य-सूरियों को प्राधान्य दे कर उनके वचनानुसार बरतते हैं। अतः सूरियों को वृद्ध-सामंत और परमात्मा को युवराज कहते हैं।] 3

278. धनुक प्रलंवक और कालिय-रूपी सभी क्रूर पौधों को कुचल कर जव श्याम वालक (श्रीकृष्ण) ने कानन-प्रदेश में घूम घूम कर मुरली वजायी, तव मेनका के साथ तिलोत्तमा, रंभा, उर्वशी आदि अप्सराएँ लज्जित और अचेत हो, अंतरिक्ष तथा भूमि में मुँह न खोल, स्वयं नाच-गान भूल कर रह गयीं।

[धेनुक—गधे के रूप में आगत एक असुर।
प्रलंब—आभीर-बालक के वेष में आगत एक असुर।] 4

279. पूर्वकाल में नरसिंह का रूप धारण कर असुर (हिरण्यकशिपु) के मुख्यत्व का अंत करनेवाले तथा लोकत्रय में राजाओं को भयभीत करनेवाले मधुसूदन (श्रीकृष्ण) के मुँह से मुरली की ध्वनि कान को इतना आकर्षक थी कि तुम्बुरु के साथ नारद भी श्रेष्ठ तंत्रीवाली अपनी वीणा को भूल कर रह गये और किन्नर मिथुनों ने शपथ ली कि हम अपना अपना किन्नर (किन्नरी वीणा) छुएँगे नहीं।

[तुम्बुरु और नारद—वीणा-वादन में समर्थ महर्षि हैं। किन्नर—अश्व-शरीर और मनुष्य-मुखवाले देवजाति-विशेष जो किन्नर नामक बाजा बजाने में सिद्धहस्त कहलाते हैं।] 5

९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

280. शेम्-पेरुन् तडङ् कण्णन् तिरळ् तोळन्
देवकि शिरुवन् देवर्हळ् शिङ्गम्,
नम्-परमन् इन्-नाळ् कुळल् ऊद-क्
केट्टवर्हळ् इडर्-उर्रन केळीर्,
अम्बरम् तिरियुम् कान्दप्पर्-एल्लाम्
अमुद गति वलैयाल् शुरुक्कुण्डु,
नम्-परम् अन्रु एन्रु नाणि मयङ्गि
नैन्दु शोर्न्दु कैम्-मरित्तु निन्रनरे। 6

281. पुवियुळ् नान् कण्डदु ओर् अर्पुदम् केळीर्
पूणि मेय्क्कुम् इळङ्-कोवलर् कूट्टत्तु
अवैयुळ् नाहत्तु अणैयान् कुळल् ऊद
अमर-लोकत्तळवुम् शेन्रु इशैप्प,
अवि-उणा मरन्दु वानवर्-एल्लाम्
आयर् पाडि निरैय-प् पुहुन्दु ईण्डि,
शेवियुळ् नाविन् शुवै कोण्डु महिळ्न्दु
कोविन्दनै-त् तोडर्न्दु एन्रुम् विडारे। 7

282. शिरु-विरल्हळ् तडवि-प् परिमार-च्
चेङ्-कण् कोड-च् चेय्य वाय् कोप्पळिप्प,
कुरु-वेयर्-प् पुरुवम् कूडलिप्प-क्
कोविन्दन् कुळल्-कोडु ऊदिन-पोदु,
परवैयिन् कणङ्गळ् कूडु तुरन्दु
वन्दु शूळ्न्दु पडु-काडु किडप्प,
करवैयिन् कणङ्गळ् काल् परप्पिट्टु-क्
कविळ्न्दु इरङ्गि-च् चेवि आट्ट किल्लावे। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

280. अरुण सुविशाल लोचनवाले पीन भुजवाले देवकी-बालक, देवों के सिंह और हमारे परम (पुरुष) के मुरली बजाने को सुननेवालों के विद्ध होने के प्रकार सुनो—अंबर-चारी सब गंधर्व अमृत-गीत-जाल से बद्ध हो कर बोले कि (गायन) अब हमसे नहीं हो सकता। लज्जित और अचेत हो, विह्वल और निरुत्साह हो, हाथ फैला कर खड़े रहे। 6

281. इस भूमि में मैंने जो अद्भुत देखा, उसे सुनो। बछड़ों को चरानेवाले बाल-गोप-समूह की गोष्ठी में नाग-शयन-शायी (श्रीकृष्ण) ने मुरली बजायी तो उसकी ध्वनि अमर-लोक तक व्याप्त हो मधुर सुनाई पड़ी। सभी देवता हविर्भक्षण को भूल कर गोप-भूमि में कचपच प्रवेश कर जुड़ गये और कान की अंतर्जिह्वा से मधुर (नाद) रस का आस्वादन कर हर्षित हो, गोविंद का अनुगमन कर, कभी उनको नहीं छोड़ते।

[नाग-शायी परमपुरुष का गोप-बालकों से एक हो कर मुरली बजाना, मुरली-ध्वनि का स्वर्ग तक व्याप्त होना, उसको सुन कर देवों का अपने प्रिय हविर्भक्षण को भूल जाना, मनुष्य-गंधको भी असह्य समझनेवाले देवों का भूमि में आना और निम्नजाति वाले गोपों के मध्य में रहना, और एक क्षण के लिये श्रीकृष्ण को न छोड़ना—यही अद्भुत है जो इस भूमि में उससे पहले कभी न देखा गया, न सुना गया।] 7

282. (कान्ह की) नन्ही उँगलियाँ (वेणुरंध्र का) स्पर्श करने में व्यस्त हुईं, अरुण विलोचन कुछ झुके-से थे, रक्तिम मुँह वायु से भरा था; पसीने की बूँदों से भीगी भ्रू-लताएँ कुटिल थीं। इस प्रकार गोविंद के मुरली बजाते समय पक्षियों के गण अपना घोंसला छोड़ आ, कान्ह को घेर, कटे वन (के वृक्ष) जैसे पड़े थे। गायों के गण चरण फैला, (सिर) झुका, (शांत हो) कान हिलाने में भी असमर्थ थे।

[गायें वेणुगान में इतनी मग्न थीं कि कान के हिलने का शब्द भी उन्हें असह्य था।] 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

283. तिरण्डु एळु तळै मलै मुहिल्-वण्णन्
शेङ्-कमल-मलर् शूळ् वण्डिनम् पोलें,
शुरुण्डु इरुण्ड कुळल्-ताळ्न्द मुकत्तान्
ऊदुकिन्र कुळल्-ओशै वळिये,
मरुण्डु मान्-कणङ्गळ् मेय्है मरन्दु
मेयन्द पुल्लुम् कडै वाय्-वळि शोर,
इरण्डु पाडुम् तुलुङ्गा-प् पुडै पेयरा
एळुदु चित्तिरङ्गळ् पोल निन्रनवे। 9

284. करुङ्-कण् तोहै मयिल्-पीलि अणिन्दु
कट्टि नन्गु उडुत्त पीतक-आडै,
अरुङ्-कल उरुविन् आयर् पेरुमान्
अवन् ओरुवन् कुळल् ऊदिन-पोदु,
मरङ्गल् निन्रु मदु तारैहळ् पायुम्
मलर्हळ् वीळुम् वळर् कोम्बुहळ् ताळुम्,
इरङ्गुम् कूम्बुम् तिरुमाल् निन्र निन्र
पक्कम् नोक्कि अवै शेय्युम् गुणमे। 10

285. कुळल् इरुण्डु शुरुण्डु एरिय कुञ्चि-क्
कोविन्दनुडैय कोमळ वायिल्,
कुळल् मुळैञ्जुहळिन्-ऊडु कुमिळ्त्तु-क्
कोळित्तु इळिन्द अमुद-प् पुनल् तन्नै,
कुळल् मुळवम् विळम्बुम् पुदुवै-क् कोन्
विट्टु-चित्तन् विरित्त तमिळ् वल्लार्,
कुळलै वेन्र कुळिर्-वायिनर् आहि-च्-
चादु-कोट्टियुळ् कोळ्ळ-प्-पडवारे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

283. एकत्र हो, ऊपर उठ, बरस पड़नेवाले घने जलदों के वर्णवाले श्रीकृष्ण का मुख नील कुटिल प्रलंवित अलकों से घिरा हुआ है जो भ्रमर-वृंद से घिरे अरुण कमल-पुष्प के समान है। जव श्रीकृष्ण ने मुरली वजायी, उस मुरली के नाद के मार्ग से हरिण के झुंड विह्वल हो, चरना भूल कर रह गये, और चरे तृण भी (उनके) मुँह के कोने से गिर रहे थे। न तो वे दोनों तरफ़ (आगे और पीछे) हिले, न पार्श्व में पैर बढ़ाया। खींचे चित्रों के जैसे खड़े थे। 9

284. मयूर-पुच्छ के नीललोचनवाला पंख सिर पर पहन कर, भलीभाँति पहने पीतांवर और आभरणों से शोभित शरीरवाले गोपों के नायक अद्वितीय उस (कान्ह) के मुरली वजाते समय तरु-समूह से मधु-धाराएँ स्रवित होती हैं; पुष्प गिर पड़ते हैं; उन्नत टहनियाँ अवनत होती हैं; विह्वल होती हैं। जहाँ-जहाँ श्रीमन्नारायण खड़े हैं उस उस दिशा की ओर मुड़, हाथ जोड़ती हैं। कैसा अद्भुत है उन (की चेष्टाओं) का गुण! 10

285. नील कुटिल अलक तथा उन्नत चिकुर-भार से युक्त गोविंद के कोमल मुँह से निकल, मुरली के रंध्रों के द्वारा बुदबुद के साथ स्रवित और प्रवाहित अमृत-जल को वेणु-नाद के समान रचनेवाले श्रीविल्लिपुत्तूर के निर्वाहक श्रीविष्णुचित्तने तमिल के पदों में विवरण किया। इसके कथन में समर्थ वंशी को जीतनेवाले शीतल मुखवाले (अर्थात् मधुर भाषी) हो साधु-गोष्ठी में अंगीकृत हो जायंगे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. vii. ऐय-पुलुदि

286. ऐय-पुळुदि उडम्बु अळंन्दु
इवळ् पेच्चुम् अलन्दलैयाय्,
शेय्य नूलिन् शिऱ्ऱाडै
शेप्पिन् उडुक्कत्तुम् वल्लळ् अल्लळ्,
कैयिनिऱ् चिरु-तूदैयोडु
इवळ् मुऱ्ऱिल् पिरिन्दुम् इलळ्,
पै-अरवणै-प् पळ्ळियानोडु
कै-वैत्तु इवळ् वरुमे। 1

287. वायिल् पल्लुम् एळुन्दिल
मयिरुम् मुडि कूडिऱ्ऱिल,
शाय्विलाद शिल कुरुन्तलै-च्
चिल पिळ्ळैहळोडु इणङ्गि,
ती-इणक्कु इणङ्गु आडि वन्दु
इवळ् तन्नन्न शेम्मै शोल्लि,
मायन् मा-मणि वण्णन् मेल्
इवळ् माल्-उरुहिन्राळे। 2

288. पोङ्गु वेण्-मणर् कोण्डु
शिऱ्ऱिलुम् मुऱ्ऱत्तिळ् इळैक्कल् उरिल्,
शङ्गु चक्करम् तण्डु वाळ्
विल्लुम् अल्लदु इळैक्कल् उराळ्,
कोङ्गै इन्नम् कुविन्दु एळुन्दिल
कोविन्दनोडु इवळै-च्
चङ्कैयाहि एन्-उळ्ळम्
नाडोरुम् तट्टुळुप्पाहिन्ऱदे। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. vi. ऐय-पुलुदि

[रमणीय धूल]

[श्रीमन्नारायण के मंगलाशासन से प्रारंभ कर संत श्रीविष्णुचित्त ने कृष्णावतार की विविध लीलाओं को नाना प्रकार से अनुभव किया जिसमें वात्सल्य-रस प्रधानतया दिखाई पड़ता है। आगे के पदों में श्रीकृष्ण-विषयक अपने प्रेम को नायिका-भाव से वर्णन करते हैं। उसमें वचन-रीति तीन प्रकार की होती है—एक नायिका के वाक्यों के रूप में, एक उसकी माता के वाक्यों में और एक उसकी सखी के वाक्यों में। अगले दशक में श्रीविष्णुचित्त नायिका के भाव में हैं। माता अपनी पुत्री की दशा का वर्णन करती है।

संतों के अनुभव में भक्ति शृंगार के रूप में परिणत होती है और वचन शृंगार-रसमय हैं।]

286. (माता कहती है)—यह (मेरी पुत्री) रमणीय धूल में विहार कर आयी है और इसके वचन भी अटपट हैं। रक्तिम धागों से बुना छोटा वस्त्र सीधा पहनने में भी समर्थ नहीं। हाथ में छोटे पाक-पात्र के साथ सूप से भी अलग हो कर नहीं रहती। फन-युक्त सर्प-शय्या पर शयन करनेवाले के संग हाथ पकड़ कर आती है। 1

287. मुँह में दाँत निकले भी नहीं। केश भी बाँधने योग्य बड़े नहीं। अनियंत्रित दुराचारी कुछ बालिकाओं के संग में पड़ दुःशील व्यक्ति के संग में पड़ कर आयी है। यह अपनी चेष्टा को निर्दोष बताती है। मायी नीलमणिवर्ण पर मोहित हो गयी है।

(यहाँ 'अनियंत्रित बालिका' शब्द से उन परम-भागवतों का उल्लेख किया जाता है जो सांसारिक वस्तुओं की आशा छोड़ कर परमात्मा को ही एकमात्र प्राप्य मान कर विलक्षण रीति से जीवन बिता रहे हैं।) 2

288. कछार की धवल रेत से आँगन में घरौंदा बनाने में प्रवृत्त होती है तो शंख चक्र गदा खड्‌ग धनुष (भगवान् के इन पाँच आयुधों) को छोड़ और किसी (वस्तु) को चित्रित करने में नहीं लग जाती। इसके स्तन अब तक मुकुलित हो नहीं निकले हैं। (फिर भी) गोविंद के साथ इसके संसर्ग की शंका कर मेरा मन प्रतिदिन क्षुब्ध होता रहता है। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

289. एळै पेदै ओर् बालकन् वन्दु
एन् पेण्-मह्ळै एळ्हि,
तोळि-मार् पलर् कोण्डु पोय्-च् चेय्द
शूळ्च्चियै यार्क्कु उरैक्केन्,
आळियान् एन्नुम् आळ-मोळैयिल्
पाय्च्चिच अहप्पडुत्ति,
'मूळै उप्पु अरियाद्दु' एन्नुम्
मूदुरैयुम् इलळे। 4

290. नाडुम् अरुम् अरियवे पोय्
नल्ल तुळाय्-अलङ्गल्
शूडि, नारणन् पोम् इडम् एल्लाम्
शोदित्तु उळितरुहिन्राळ्,
केडु वेण्डुहिन्रार् पलर् उळर्
केशवनोडु इवळै,
पाडि कावल् इडुमिन् एन्रु एन्रु
पार् तडुमारिन्रदे। 5

291. पट्टम् कट्टि-प् पोर्रोडु पेय्दु
इवळ् पाडहमुम् शिलम्बुम्,
इट्टमाह वळर्त्तु एडुत्तेनुक्कु
एन्नोडु इरुक्कल् उराळ्,
पोट्ट-प् पोय्-प् पुरप्पट्टु निन्रु इवळ्
पूवै-प् पू-वण्णा! एन्नुम्,
पट्ट-वार् कुळल् मङ्गैमोर्!
इवळ् माल् उरुहिन्राले। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

289. यह (मेरी पुत्री) एक मुग्ध बालिका है जिसका चित्त दृढ़ नहीं। अनेक सखियों ने आ कर, रुचि उत्पन्न कर, मेरी पुत्री को ले जा, जो कुटिलता की इसको किससे कहूँ ? चक्रधर रूपी एक गहरे ह्रद में (इसको) गिरा फँसा दिया। "दर्वी को नमक की पहचान नहीं"—यह पुराना वचन भी इसके विषय में लागू नहीं।

[दर्वी पकाने का साधन मात्र है। पक्व-पदार्थ के रस का आस्वादन करने की शक्ति उसमें नहीं। इस बातको बतानेवाला जो पुराना वचन है वह भी मेरी पुत्री के विषय में झूठा निकला। क्यों कि यह तो भगवान् के संश्लेष में आ कर उसके रसको पहचान गयी और दूसरी किसी वस्तु की ओर देखती तक नहीं।] 4

290. इस प्रकार यह बाहर निकल गयी कि देश और ग्राम सब को इसकी चेष्टा विदित हो गयी। (संभोग काल में संपन्न माला-परिवर्तन से) यह सुगंधित तुलसी-माला को पहन कर उन सब स्थानों का शोधन करते (ढूँढ़ते) हुए घूम रही है जहाँ नारायण के संचार की संभावना है। (इस कुल की) अवनति चाहनेवाले तो अनेक हैं। "केशव के पास इसको पहुँचा कर इसकी रक्षा करो।"—यों कह—कह कर भूमि में (सहृदय) लोग विकल होते हैं। 5

291. (ललाट पर) पट्टिका बाँध, कांचन कर्णभूषण पहना, कड़ा और नूपुर (पहना), इसकी इच्छानुसार (गोद में) ले कर इसका पालन-पोषण मैंने किया। यह मेरे साथ रहना नहीं चाहती। सहसा उठ, बाहर निकल खड़ी हो बोल उठती है—"अतसी-पुष्प-सवर्ण"। कुटिल दीर्घ केशवाली सुंदरियों ! यह व्यामोह में पड़ गयी है। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

292. पेशवुम् तरियाद पेण्मैयिन्
पेदैयेन् पेदै इवळ्,
कूशम्-इन्रि निन्रार्हळ् तम् एदिर्
कोल् कळिन्दान् मूळैयाय्,
केशवा ! एन्रुम् केडिली ! एन्रुम्
किञ्चुक वाय् मोळियाळ्
वाश-वार् कुळल् मङ्गैमीर !
इवळ् माल् उरुहिन्राळे । 7

293. कारै पूणुम् कण्णाडि काणुम्
तन् कैयिल् वळै कुलुक्कुम्,
कूरै उडुक्कुम् अयर्क्कुम् तन्
कोव्वै-च्-चेव्वाय् तिरुत्तुम्,
तेरि-त् तेरि निन्रु आयिरंम् पेर्-त्
तेवन् तिरम् पिदर्रुम्,
मारिल् भामणि वण्णन् मेल् इवळ्
माल् उरुहिन्राळे । 8

294. कै-त् तलत्तु उळ्ळ माडु आळिय-क्
कण्णालङ्गळ् शेय्दु, इवळै
वैत्तु वैत्तु-क् कोण्डु एन्न
वाणिपम् नम्मै वडु-प पडुत्तुम्,
शेय्-त् तलै एळु नार्रु-प् पोल् अवन्
शेय्वन शेय्दु कोळ्ळ,
मै-त् तड-मुहिल् वण्णन् पक्कल्
वळर विडुमिन्कळे । 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

292. इसका स्त्रीत्व इतना कोमल है कि वह वचन को सह नहीं सकती। मैं स्वयं मुग्धा हूँ और यह मेरी पुत्री भी मुग्धा है। किंशुक (पलाश) (पुष्प के समान रक्तिम) अधरवाली तथा शुक (के समान मधुर) वचनवाली यह दंडहीन दर्वी की तरह (मुझ से वियुक्त) हो, (पास) खड़े लोगों के सामने निस्संकोच बोल उठती है—'केशव' और 'दोषहीन'। सुगंधित दीर्घ केशवाली सुंदरियों! यह व्यामोह में पड़ गयी है। 7

293. कंठहार पहनती है। दर्पण देखती है। अपने हाथ के कंकण हिलाती है। वस्त्र पहनती है। सुधबुध खो बैठती है। अपने बिंब-तुल्य रक्तिम अधरों का सिंगार करती है। ढाढ़स पा-पा कर खड़ी हो सहस्र-नामवाले देव के स्वभाव का प्रलाप करती है निरुपम नीलमणिवर्ण के व्यामोह में यह पड़ गयी है। 8

294. हस्त-तल-गत संपत्ति का व्यय कर कल्याणमय कार्यों को कर इसको (घर में ही) रख-रख कर पालन करने से क्या वाणिज्य (कार्य, अर्थात् प्रयोजन) है? हमको अपयश लायेगी। (लोग कहेंगे कि नियमों को तोड़ कर हमारी कन्या स्वतंत्र हो कर निकल गयी)। केदार (क्यारी) में उत्पन्न पौद की तरह (जैसे उसका स्वामी अपनी इच्छानुसार उससे बरतता है) इसको नील बृहत् जलद के वर्णवाले के पास पहुँचा दो जिससे वे जो करना चाहें कर लें। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

295. पेरु-प्-पेरुत्त कण्णालङ्गळ् शेय्दु
पेणि नम् इल्लत्तु-उळ्ळे,
इरुत्तुवान् एण्णि नाम् इरुक्क
इवळुम् ओन्रु एण्णुहिन्राळ्,
मरुत्तुव-प् पदम् नीङ्गिनाळ्
एन्नुम् वार्त्तै पडुवदन्-मुन्,
ओरुप्पडुत्तुमिन् इवळै
उलहु अळन्दान्-इडैक्के। 10

296. आल-मुर्रुम् उण्डु आलिलै-त् तुयिल्
नारायणनुक्कु, इवळ्
मालदु आहि महिळ्न्दनळ् एन्रु
ताय्-उरै शेय्ददनै,
कोलम्-आर् पोळिल् शूळ् पुदुवैयर् कोन्
विट्टु-चित्तन् शोन्न
मालै पत्तुम् वल्लवर्हट्कु
इल्लै वरु तुयरे। 11

III. viii. नल्लदोर् तामरै

297. नल्लदु ओर् तामरै-प् पोय्है
नाण्-मलर् मेल् पनि शोर,
अल्लियुम् तादुम् उदिर्न्दिट्टु
अळहु अळिन्दाल्-ओत्तदालो !
इल्लम् वेरि ओडिर्रु आलो !
एन् महळै एङ्गुम् काणेन्,
मल्लरै अट्टवन् पिन् पोय्
मदुरै-प् पुरम् पुक्काळ् कोलो ! 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

295. 'वड़े-वड़े कल्याणमय कार्यों को कर, (कुल-मर्यादा का) पालन कर, अपने गृह के भीतर इसको रख लें'—जब हम यह विचार कर रहे थे, यह कुछ और ही विचार रखती ह । (माता के इस वचन पर संबंधी-जन कहते हैं—) चिकित्सा की अवस्था के बाहर यह हो गयी—इस तरह की वार्ता के उत्पन्न होने के पहले ही लोक मापनेवाले (त्रिविक्रम) के पास इसे पहुँचा दो । 10

296. सारे भुवन को निगल कर वट-पत्र पर शयित नारायण के व्यामोह में पड़ कर यह (मेरी पुत्री) प्रफुल्लित हुई—इस प्रकार माता जो वचन बोली उसको सौंदर्य से पूर्ण उपवनों से घिरे श्रीविल्लिपुत्तूर वालों के स्वामी श्रीविष्णुचित्त ने दस (पदोंवाली) माला में वर्णित किया । इसके कथन में समर्थों के पास आनेवाला कोई क्लेश नहीं । 11

III. viii. नल्लदोर्-तामरै

[सुंदर एक तामरस]

(माता की पुत्री-विषयक चिंता)

[पुत्री को घर में न देख कर माता चिंता करने लगती है—"पुत्री की अनुपस्थिति से घर सूना हो गया । अवश्य कान्ह ही उसको अपने साथ ले गया होगा । क्या वह नियम के अनुसार उसके साथ विवाह कर लेगा ? क्या सास प्रेम से इसके साथ व्यवहार करेंगी ? नन्दगोप इससे प्रीति करेंगे ? क्या श्रीकृष्ण अपनी अन्य महिषियों के सामने इसका आदर करेगा ? क्या यह ससुराल में मथन आदि कार्यों में कुशल होगी ?"]

297. मानो एक सुंदर तामरस-सरोवर के अभिनव कमल पर तुहिन के गिरने से पुष्प-दल और मकरंद गिर गये हों और सरोवर का सौंदर्य नष्ट हुआ हो, मेरा घर सूना पड़ गया है, हाय ! मेरी पुत्री कहीं दिखाई नहीं देती । मल्लों का अंत करनेवाले के पीछे चल कर मथुरा के परिसर में (गोप-भूमि में) प्रविष्ट हूई होगी क्या ? 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

298. ओन्रुम् अरिवु ओन्रु इल्लाद
उरुवरै-क् कोपालर् तङ्गळ्,
कन्रु काल् मारुमा पोले
कन्नि इरुन्दालै-क् कोण्डु,
नन्रुम् किरि शेय्दु पोनान्
नारायणन् शेय्द तीमै,
एन्रुम् एङ्गळ् कुडिक्कु ओर्
एच्चु-क् कोल् आयिडुङ् कोलो ! 2

299. कुमरि मणम् शेय्दु-कोण्डु
कोलम् शेय्दु इल्लत्तु इरुत्ति,
तमरुम् पिररुम् अरिय-त्
तामोदरर्कु एन्रु शार्रि,
अमरर् पति-युडै-त् तेवि
अरशाणियै वळि पट्टु,
तुमिलम् एळ-प् परै कोट्टि-त्
तोरणम् नाट्टिडुङ् कोलो ! 3

300. ओर महळ् तन्नै उडै येन्
उलहम् निरैन्द पुहळाल्
तिरु-महळ् पोळ वळर्त्तेन्
शेङ्-कण् माल् तान् कोण्डु पोनान्,
पेरु-महळाय्-क् कुडि वाळ्न्दु
पेरुम् पिळ्ळै पेर्र अशोदै
मरु-महळै-क् कण्डु उहन्दु
मणाट्टु-प् पुरम् शेय्युम्-कोलो ! 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

298. जिनमें न एक चैतन्य (गुण) हैं, न रूप, वे गोप जिस प्रकार (अच्छे) बछड़ों की चोरी कर ले जाते हैं, कन्या हो (मेरे अधीन) रहनेवाली मेरी पुत्री को अतिकुटिल उपाय कर के हरण कर ले जानेवाले नारायण ने जो नटखटी की क्या वह सर्वदा हमारे कुल की अपकीर्ति का ही हेतु होगी ? (अथवा कीर्ति की ?) 2

299. कुमारी का विवाह (मंगल) करा, अलंकृत कर, घर में स्थापित कर, अपने तथा पराये लोगों को जैसे विदित हो इस प्रकार घोषणा कर कि यह दामोदर की हैं, अमरों के पति (श्री मन्नारायण) की इस देवी से अश्वत्थ-शाखा की पूजा करा, पटह बजा कर कोलाहल-ध्वनि को उत्पन्न कर तोरण को स्थापित करेंगे क्या ?

[आभीर कुल के विवाह में यह एक विधि है कि विवाह-मंडप की वेदी पर अश्वत्थ-वृक्ष की एक शाखा रखी जाती है और दुलहन से उसकी पूजा करवाई जाती है।] 3

300. मेरे एकमात्र पुत्री थी जिसकी कीर्ति सारे लोक में भर गयी थी। लक्ष्मी देवी के समान ही मैंने उसको पाला। अरुण नयनवाले प्रभु स्वयं उसको हर ले गये। प्रधान महिला हो, गृहिणी का जीवन खिला, विख्यात पुत्र को जन्म देनेवाली यशोदा बहू को देख प्रफुल्लित हो, वैवाहिक मंगल-कार्यों को करेंगी क्या ?

[कहा जाता है कि जब श्रीवत्सांक मिश्र (कूरत्ताळवान्) का देहांत हुआ, तब उनके आचार्य श्रीरामानुज इस पद को दोहराते रह गये।] 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

301. तम्-मामन् नन्द-गोपालन्
तळीइ-क् कोण्डु एन् महळ् तन्नै,
शेम्मान्दिरे एन्ऱु शोल्लि-च्
चेळुङ्-कयर्-कण्णुम शेव्वायुम्,
कोम्मै मुलैयुम् इडैयुम्
कोळुम् पणै-त् तोळ्हळुम् कण्डिट्टु,
इम-महळै-प् पेऱ्ऱ तायर्
इनि-त् तरियार् एन्नुङ् कोलो ! 5

302. वडर् मर-क् कुलल् पोले
वेण्डिऱ्ऱु-च् चेय्दु एन् महळै,
कूडिय कूट्टमे-याह-क् कोण्डु
कुडि वाळुङ् कोलो !
नाडुम् नगरुम् अरिय
नल्लदु ओर् कण्णालम् शेय्दु,
शाडु इर-प् पाय्न्द पेरुमान्
तक्कवा कै-प् पऱ्ऱुङ् कोलो ! 6

303. अण्डत्तु अमरर् पेरुमान्
आळियान् इन्ऱु एन् महळै,
पण्ट-प् पळिप्पुक्कळ् शोल्लि-प्
परिशु अर् आण्डिडुङ् कोलो !
कोण्डु कुडि वाळ्क्कै वाळ्न्दु
कोवल-प् पट्टम् कवित्तु,
पण्डै मणाट्टिमार् मुन्ने
पादुकावल् वैक्कुङ कोलो ! 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

301. मेरी पुत्री को उसके ससुर नंदगोप गले लगा, 'भव्य हो कर रहो' कह, (उसके) सुंदर मत्स्य (तुल्य) नेत्र, अरुण अधर, वर्तुल स्तन, (सूक्ष्म) मध्य, पीन वंश-सदृश भुजाएँ देख, क्या कहेंगे कि "ऐसी पुत्री को जन्म देनेवाली माता (इसके वियोग को) अब सह नहीं सकतीं।" 5

302. निषाद और भील कुल के जैसे मनमाना कुछ कर के (स्त्री-पुरुष की परस्पर इच्छा से) संजात एक संयोग मात्र समझ, (मेरी पुत्री को) अपने परिवार में ले कर रहेंगे क्या ? (अथवा) शकट (असुर) को लात मार कर चूर चूर करनेवाले प्रभु ग्राम और नगर के लोगों को जिससे सुविदित हो, उस प्रकार एक सुंदर कल्याण-कार्य कर उचित पाणि-ग्रहण करेंगे क्या ? 6

303. अंड-वर्ती अमरों के स्वामी चक्रधर आज मेरी पुत्री के रूप आदि की निंदा के वचन बोल, उचित रूप से ग्रहण न कर क्या अनादर से उसके साथ व्यवहार करेंगे ? (अथवा) उसको स्वीकार कर, उसके साथ गृहस्थ-जीवन बिता, गोप-महिषी की पदवी दे कर पुरानी विवाहित स्त्रियों के सामने अंतःपुर में सुरक्षित स्थान दे रखेंगे क्या ? 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

304. कुडियिल् पिरन्दवर् शेय्युम्
गुणम् ओन्रुम् शेय्दिलन् अन्दो !
नडै-ओन्रुम् शेय्दिलन् नङ्गाय् !
नन्द-गोपन् महन् कण्णन्,
इडै इरु-पालुम् वणङ्ग
इळैत्तु इळैत्तु एन् महळ् एङ्गि,
कडै-क्कयिरे पर्रि वाङ्गि-क्-
कै तळुम्बु एरिडुङ्-कोलो ! 8

305. वेण्-णिर्-त् तोय् तयिर् तन्नै
वेळ् वरै प्पिन् मुन् एळुन्दु,
कन् उरङ्गादे इरुन्दु
कडैयवुम् तान् वल्लळ् कोलो !
ओण्-णिर्-त् तामरै-च् चेङ्-कण्
उलहु अळन्दान् एन् महळै,
पण्णरैया-प् पणि कोण्डु
परिशु अर आण्डिडुङ् कोलो ! 9

306. मायवन् पिन् वळि शेन्रु
वळि-यिडै मार्रङ्गळ् केट्टु,
आयर्हळ् शेरियिलुम् पुक्कु
अङ्गुत्तै मार्रमुम् एल्लाम्,
ताय्-अवळ् शोल्लिय शोल्लै-त्
तण्-पुदुवै-प् पट्टन् शोन्न
तूय तमिळ्-प् पत्तुम् वल्लार्
तू-मणि वण्णनुक्कु आळरे । 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

304. कुलीन जो (शास्त्रीय कर्म) करते हैं उनमें से गुण-युक्त एक भी कर्म नंदगोप के पुत्र कान्ह ने नहीं किया। हाय! न लोकाचार के अनुसार ही कुछ किया। सुंदरि! क्या मेरी पुत्री (ससुराल जा जात्युचित दधि-मंथन में लग जायगी जब उसकी कमर दोनों पार्श्वों में अवनत होगी और वह थक थक कर अवसन्न हो, नेती को ही पकड़ खींचेगी जिससे उसके ह थ में घट्ठा पड़ जायगा ? 8

305. (रात भर) नेत्र बंद किये विना रह, उषाकाल के पहले ही उठ, धवल-वर्ण जमे दधि का मन्थन करने में वह समर्थ भी होगी क्या ? उज्ज्वल-वर्ण तामरस-अरुण लोचन-वाले लोकविक्रांत (त्रिविक्रम) मेरी पुत्री को नियम-रहित परिचर्या में नियुक्त कर अनादर के साथ शासन करेगा क्या ? 9

306. मायी प्रभु के पीछे मार्ग में चलना, मार्ग-मध्य के वचन सुनना, आभीरों की व्रजभूमि में भी प्रवेश करना, और वहाँ के वचन जो माता द्वारा कथित हुए उन सब को शीतल श्रीविल्लिपुत्तूर के भट्टनाथ ने पावन तमिल में दस पदों में निर्दिष्ट किया, इनके कथन में समर्थ निर्मल मणिवर्ण (प्रभु) के दास हो जाते हैं। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. ix. एन्-नादन्

(उन्दि परत्तल्)

307. एन्-नादन् देविक्कु अन्रु इन्प-प् पू ईयादाळ्,
तन् नादन् काणवे तण् पू-मरत्तिनै,
वन्-नाद-प् पुळ्ळाल् वलिय-प् परित्तिट्ट,
एन्-नादन् वन्मै यै-प् पाडि-प् पर
एम्-पिरान् वन्मै यै-प् पाडि-प् पर। 1

308. 'एन् विल्-वलि कण्डुगो' एन्रु एदिर् वन्दान्
तन् विल्लिनोडुम् तवत्तै एदिर् वाङ्गि,
मुन् विल् वलित्तु मुदु पेण्-उयिर् उण्डान्
तन् विल्लिन् वन्मै यै-प् पाडि-प् पर
दाशरति तनमै यै-प् पाडि-प् पर। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. ix. एन्-नातन्

[मेरे नाथ]

(ताल-सहित गाते हुए कन्याओं का परिक्रमा करना)

[अब तक श्रीकृष्णावतार का अनुभव चला। एक ही समय श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों अवतारों की रसानु-भवेच्छा से प्रेरित हो श्रीविष्णुचित्त दो गोपियाँ बन जाते हैं जिनमें एक श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करती है, और दूसरी श्रीराम की लीलाओं का।

यहाँ पर एक ऐतिह्य प्रचलित है—आचार्य श्री पराशर भट्ट से उनके शिष्य नंजीयर ने प्रश्न किया—"एक ही समय आलवार को दो कुमारियों की दशा कैसे हो सकती है ?" श्रीभट्ट ने उत्तर दिया—"उपनिषत् से विदित होता है कि श्रीवैकुंठ में विद्यमान आत्माओं में से एक एक अनेक शरीर धारण कर परमात्मा की सेवा करता है। उसी तरह आलवार भी कर सकते हैं।]

307. मेरे नाथ की देवी (सत्यभामा) को उस दिन वांछित (पारिजात) पुष्प न देनेवाली (इंद्राणी) के नाथ (इंद्र) के देखते देखते शीतल पुष्प-वृक्ष को बलपूर्वक उखाड़ कर नादस्वरूपी पराक्रमी पक्षी (गरुड़) पर (आरूढ़ हो), (सत्यभामा के उपवन में) रोपनेवाले मेरे नाथ के पराक्रम का गान कर उड़ो।

मेरे उपकारक के पराक्रम का गान कर उड़ो।

[उन्दि परत्तल्—गान करते हुए कूद कूद कर उड़ना। यह कन्याओं की एक क्रीड़ा है जिसका उल्लेख प्राचीन तमिल संघकाल साहित्य में पाया जाता है। बीच में जलते हुए एक स्तंभ-दीप को रख कर कन्याएँ चक्राकार में खड़ी हो जाती हैं और हस्त-ताल के साथ गाते हुए झुकते-उठते परिक्रमा करती हैं। एक पक्ष की कन्याएँ पद के पूर्वार्ध को और दूसरे पक्ष की कन्याएँ उत्तरार्ध को गाती हैं। यह क्रीड़ा 'उन्दि परत्तल' कहलाती है।] 1

308. "मेरे धनुष की शक्ति देख (आगे) बढ़ो"—यह कहते हुए जो (परशुराम) संमुख आये, उनके धनुष के साथ उनकी तपस्या को भी उनके सामने ही छीन लेनेवाले, तथा पहले धनुष झुका कर बूढ़ी (राक्षस-) स्त्री (ताड़का) के प्राण लेनेवाले (श्रीराम) के धनुष की शक्ति का गान कर उड़ो।

दाशरथी के स्वभाव का गान कर उड़ो।

[श्रीमन्नारायण के दशावतारों में यद्यपि कौसल्या-राम और परशु-राम दोनों का उल्लेख है, दोनों में कुछ अंतर है। कौसल्या-राम से परशुराम की हार होती है। परशुराम में भगवान् के स्वरूप का आवेश-मात्र है जिसके कारण परशुराम स्वरुपावेशावतार कहलाते हैं। कौसल्या-राम तो साक्षादवतार हैं। साक्षादवतार से स्वरूपावेश-अवतार निम्नश्रेणी का है और शक्त्यावेश-अवतार उससे भी निम्न श्रेणी का।

यहाँ यह समझ लेना चाहिये—परमात्मा के अवतार तीन प्रकार के होते हैं—पहला साक्षादवतार, दूसरा स्वरूपावेश अवतार और तीसरा शक्त्यावेश अवतार। राम, कृष्ण, नरसिंह आदि साक्षादवतार हैं जिनमें परमात्मा स्वयं अवतरित होते हैं। परशुराम आदि स्वरूपावेश अवतार हैं जिनमें पहले ही उत्पन्न व्यक्तिओं में कार्य-विशेष को संपन्न करने के लिये भगवान् अपने स्वरूप को नियत काल के लिये आविष्ट करते हैं। कार्तवीर्यार्जुन आदि शक्त्यावेशावतार हैं जिनमें निर्दिष्ट कार्य और समय के लिये परमात्मा की शक्ति मात्र का आवेश है।] 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

309. उरुप्पिणि नङ्गै यै-त् तेर् एर्रि-क् कोण्डु,
विरुप्पु-उर्रु अङ्गु एह विरैन्दु एदिर् वन्दु,
चेरुक्कु-उर्रान् वीरम् शितैय, तलैयै-च्
चिरैत्तिट्टान् वन्मै यै-प् पाडि-प् पर
देवकि-शिङ्गत्तै-प् पाडि-प् पर। 3

310 मार्रु-त्-ताय् शेन्रु वनम् पोहे एन्रिड,
ईर्रु-त् ताय् पिन् तोडर्न्दु एम्-पिरान् एन्रु अळ,
कूर्रु-त् ताय् शोल्ल-क् कोडिय वनम् पोन,
शीर्रम् इलादानै-प् पाडि-प् पर
शीतै-मणाळनै-प् पाडि-प् पर। 4

311. पञ्चवर् तूदनाय्-प् पारदम् कै-शेय्दु,
नञ्जु-उमिळ् नागम् किडन्द नर्-पोय्गै पुक्कु,
अञ्च-प् पणत्तिन् मेल् पाय्न्दिट्टु अरुळ् शेय्द,
अञ्जन-वण्णनै-प् पाडि-प् पर
अशोदै तन् शिङ्गत्तै-प् पाडि-प् पर। 5

312. मुडि ओन्रि मू-उलहङ्गळुम् आण्डु, उन्
अडियेर्कु अरुळ् [illegible]रु अवन् पिन् तोडर्न्द
पडियिल् कुणत्तु-प् परद-नाम्बिक्कु, अन्रु
अडि-निलै ईन्दानै-प् पाडि-प् पर
अयत्तियर् कोमानै-प् पाडि-प् पर। 6

313. काळियन् पोय्गै कलङ्ग-प् पाय्न्दिट्टु, अवन्,
नीळ् मुडि ऐन्दिलुम् निन्रु नडम् शेय्दु,
मीळ अवनुक्कु अरुळ् शेय् वित्तहन्,
तोळ् वलि वीरमे पाडि-प् पर
तू-मणि-वण्णनै-प् पाडि-प् पर। 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

309. कन्या रुक्मिणी को रथ पर चढ़ा, साभिलाष (श्रीकृष्ण) वहाँ से जा रहे थे तो तेजी के साथ संमुख आगत गर्व करनेवाले (रुक्मी) का वीर्य जिससे चूर चूर हो गया इस तरह उसका सिर मुड़ानेवाले (श्रीकृष्ण) के पराक्रम का गान कर उड़ो।

देवकी-सिंह का गान कर उड़ो। 3

310. अन्य माता (सुमित्रा देवी) ने जा कर (श्रीराम से) कहा कि "तुम वन चले ही जाओ"। जन्मदेनेवाली माता (कौसल्या देवी) अनुगमन कर 'मेरे प्रभु' कह रो उठी। मृत्यु (सदृश) माता (कैकेयी) के कहने से कठिन वन जानेवाले क्रोध-विहीन (श्रीराम) का गान कर उड़ो।

सीता-प्रियतम का गान कर उड़ो।

[कैकेयी के वचनानुसार जब रामजी वन जाने को उद्यत हुए तब लक्ष्मण भी उनके साथ जाने का निश्चय करके माता सुमित्रा से बिदा लेने उनके पास गये। माता ने सहर्ष लक्ष्मण को आशीष दे कर उपदेश दिया कि राम और सीता की छाया की तरह उनके पीछे जा कर वहाँ उनकी सेवा-शुश्रूषा करते रहो। यह है वाल्मीकि रामायण में कथांश।

परंतु इस पद में श्रीविष्णुचित्त कहते हैं कि पुत्र को उपदेश देने के बाद सुमित्रा जी स्वयं श्रीराम के पास जा कर उनसे बोलीं—"यहाँ स्वार्थी लोग राज्य चाहते हैं। अतः तुम्हें वन चला जाना ही उचित है जहाँ ऐसे नीच जन नहीं रहते। तुम वन चले ही जाओ।"

यद्यपि वाल्मीकि-रामायण में इसका उल्लेख नहीं, फिरभी परमात्मा की लीलाओं का उनकी कृपा से यथावत् साक्षात्कार करनेवाले संत कहते हैं तो यह सचमुच घटित हुआ होगा। उसका प्रमाण चाहते हैं तो पुराणांतर में अथवा कल्पांतर की रामायण-कथा में देखा जा सकता है।] 4

311. पाँचों (पाडवों) के दूत बन, भारत (युद्ध) का संचालन कर, स्वच्छ ह्रद में, जो विष उगलनेवाले नाग का बसेरा था, प्रवेश कर, उसके फन पर कूद, जिसे देख सभी भयभीत हुए, (उसकी पत्नियों की प्रार्थना करने पर) उस पर कृपा करनेवाले अंजनवर्ण का गान कर उड़ो।

यशोदा के सिंह का गान कर उड़ो। 5

312. किरीट को धारण कर (अभिषिक्त हो), लोक-त्रय का पालन कर तुम्हारे दास मुझ पर कृपा करो—यह कहते हुए (राम का) अनुगमन करनेवाले अनुपम गुणपूर्ण भरत नम्बि को उस दिन पादुका देनेवाले का गान कर उड़ो।

अयोध्या के अधीश्वर का गान कर उड़ो। 6

313. कालिय के ह्रद में कूद कर जिससे वह विक्षुब्ध हुआ, उस (कालिय) के विशाल पाँच फनों पर खड़े हो नाट्य कर, पुनः उस पर कृपा करनेवाले विदग्ध के भुज-बल और वीर्य का गान कर उड़ो।

विशुद्ध मणिवर्ण का गान कर उड़ो। 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

314. तार्क्कु इळन्-तम्बिक्कु अरशु ईन्दु, दण्डकम्
नूर्रवळ् शोल् कोण्डु पोहि, नुडङ्गु-इडै-च्
चूर्प्पणकावै-च् चेवियोडु मूक्कु, अवळ्
आर्क्क अरिन्दानै-प् पाडि-प् पर
अयोत्तिक्कु अरशनै-प् पाडि-प् पर। 8

315. माय-च्-चकडम् उदैत्तु मरुदु इरुत्तु,
आयर्हळोडु पोय् आ-निरै कात्तु, अणि
वेयिन् कुळल् ऊदि वित्तहनाय् निन्र,
आयर्हळ् एर्रिनै-प् पाडि-प् पर
आ-निरै मेय्त्तानै-प् पाडि-प् पर। 9

316. कारार् कडलै अडैत्तिट्टु इलङ्गै पुक्कु,
ओरादान् पोन् मुडि ओन्पदोडु ओन्रैयुम्,
नेरा अवन् तम्बिक्के नीळ् अरशु ईन्द,
आरा-अमुदनै-प् पाडि-प् पर
अयोत्तियर् वेन्दनै-प् पाडि-प् पर। 10

317. नन्दन् मदलै यै-क् काकुत्तनै नविन्रु,
उन्दि परन्द ओळि-इळैयार्हळ् शोल्,
शेन्-र्तमिळ्-त् तेन् पुदुवै विट्टु-चित्तन् शोल्
ऐन्दिनोडु ऐन्दुम् वल्लार्क्कु अल्लल् इल्लैये। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

314. अनुज को, जिसे अभिषेक-माला का अधिकार नहीं, राज्य-प्रदान कर, दंडक (अरंण्य) को भगानेवाली (कैकेयी) के वचनानुसार जा, कोमल कमरवाली शूर्पणखा के कर्ण सहित नासिका को उसके चीखते चिल्लाते काटनेवाले (राम) का गान कर उड़ो।

अयोध्या के राजा का गान कर उड़ो।

[यद्यपि वाल्मीकि रामायण के अनुसार शूर्पणखा के नाक-कान लक्ष्मण ने काटे. यहाँ आलवार कहते हैं कि श्रीराम ने वह काम किया। राम की आज्ञा से लक्ष्मण ने यह किया अतः लक्ष्मण प्रयोज्य-कर्ता हैं और श्रीराम प्रयोजन-कर्ता। अथवा राम की दक्षिण बाहु हैं लक्ष्मण—"रामस्य दक्षिणो बाहुः"। अत: लक्ष्मण की जो क्रिया है उसे राम की कहना युक्तियुक्त है।

भरत ने राज्य को स्वीकार नहीं किया। तब आलवार का कथन कि भरत को राज्य प्रदान किया कैसे संगत है? यहाँ 'राज्य-प्रदान' से 'कोसल-राज्य प्रदान' अर्थ नहीं। परंतु सेवा करने की स्वतंत्रता ही अर्थ है। अर्थात् कैंकर्य-साम्राज्य ही दिया।] 8

315. माया-शकट को लात मार कर, अर्जुन (-वृक्षों) का भंजन कर, गोपों के संग जा, गो-समूह की रक्षा कर, सुंदर वंश के वेणु बजा, विस्मय-जनक रूप से अवस्थित गोपों के वृषभ (पुंगव) का गान कर उड़ो।

गो-समूह चरानेवाले का गान कर उड़ो। 9

316. नील रंगवाले समुद्र को बाँध कर, लंका में प्रविष्ट हो, अविचारी (रावण) के नौ के साथ एक (अर्थात् दस) सुवर्ण किरीटों (से युक्त सिरों) को काट, उसके अनुज ही को चिरकाल के लिये राज्य-प्रदान करनेवाले अपर्याप्त अमृत (सदा अमृतवत् भोग्य भगवान्) का गान कर उड़ो।

अयोध्या के सम्राट् का गान कर उड़ो। 10

317. नंदलाल का, काकुत्स्थ का नाम ले गान कर उड़नेवाली उज्ज्वल भूषणवालियों ने जो कहा, उसको रमणीय श्रीविल्लिपुत्तूर के विष्णुचित्त ने शेन्तमिल् (अर्थात् रम्य प्राचीन तमिल भाषा) में पाँच के साथ पाँच पदों में कहा। इनके कथन में समर्थों को कोई क्लेश नहीं।

[इस दशक में श्रीकृष्णविषयक पाँच पद हैं और श्रीरामविषयक पाँच। श्रीकृष्णप्रेमी कन्याओं का दल कृष्ण-विषयक पदों को और श्रीरामप्रेमी दल रामविषयक पदों को मानों स्पर्धा में गा कर नृत्य करते हैं।] 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. x. नेरिन्द करुङ्-कुलल्

[शीतैक्कु अनुमन् तेरिवित्त अडैयाळम]

318. नेरिन्द करुङ्-कुळल् मडवाय् !
निन्-अडियेन् विण्णप्पम्,
शेरिन्द मणि मुडि-च् चनकन्
शिलै इरुत्तु निनै-क् कोणर्न्ददु
अरिन्दु, अरशु कळै कट्ट
अरुन्-तवत्तोन् इडै विलङ्ग,
शेरिन्द शिलै कोडु तवत्तै-च्
चिदैन्तदुम् ओर् अडैयाळम् । 1

319. अल्लि अम्-पू मलर्-क् कोदाय् !
अडि पणिन्देन् विण्णप्पम्,
शोल्लुहेन् केट्टु-अरुळाय्
तुणै मलर्-क् कण् मड-माने !
एल्लि अम्-पोदु इनिदु इरुत्तल्
इरुन्ददु ओर् इड-वहैयिल्
मल्लिकै मा-मालै कोण्डु अङ्गु
आर्त्तदुम् ओर् अडैयाळम् 2

320. कलक्किय मा-मनत्तनळाय्-क्
कैकेशि वरम् वेण्ड,
मलक्किय मा-मनत्तिननाय्
मन्नवनुम् मरादु ओळिय,
'कुल-क्-कुमरा काडु उरैय-प्
पो' एन्रु विडै कोडुप्प,
इलक्कुमणन् तन्नोडुम् अङ्गु
एहियदु ओर् अडैयाळम् । 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

III. x. नेरिन्द—करुङ्-कुलल्

[घन नीलकेशी]

(सीता देवी को हनुमान् के बताए अभिज्ञान)

[श्रीरामावतार के प्रसंग से आळ्वार को रामगुणानुभव की इच्छा जाग्रत हुई जिससे हनुमान् के बचनों द्वारा वे उसमें प्रवृत्त होते हैं।]

[अशोक-वन में रावण की कटूक्ति और राक्षसियों के तर्जन से सीता को असह्य दुख हुआ और वे आत्म-हत्या कर लने को उद्यत हुईं। उस समय शिंशुपा-वृक्ष में छिपे हनुमान् उनकी रक्षा के लिये राम-चरित का कीर्तन करते हुए उनके संमुख आये। सीता को संतोष हुआ, साथ साथ संदेह भी हुआ कि क्या सचमुच यह राम का दूत है अथवा रावण ही इस वेष में आया है। शंका दूर कर उन्हें विश्वास दिलाने के लिये रामचंद्र से प्रोक्त अभिज्ञानों को एक एक कर के हनुमान ने बतलाया और अंत में उनके भेजे अंगुलीयक को भी समर्पित किया। इसीका उल्लेख इस दशक में है।]

318. घन नीलकेशी सुंदरी! यह आपके दास की बिनती है, (सुनिये)। रत्न जड़ित मुकुटवाले जनक (महाराज) के धनुष का भंजन कर राम आप को ले आए। यह (वृत्तांत) जान कर (दुष्ट) क्षत्रियों को गिरानेवाले महातपस्वी (परशुराम) ने (मार्ग) मध्यमें उनको रोका। राम ने तो (उनके हाथ से गृहीत) प्रबल धनुष से ही उनकी तपस्या को छिन्न-भिन्न कर दिया। यह भी एक अभिज्ञान है।

["यह भी एक अभिज्ञान है" कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे ही और बहुत से अभिज्ञान हैं।] 1

319. मनोज्ञ दल-सहित सुंदर पुष्प-माला सदृश (देवी)! (आपके) चरण में प्रणत मैं बिनती निवेदन करता हूँ, कृपया सुनिये! एक दिन रात्रिकाल में मनोहर अवस्थिति के अनुकूल एक स्थान में रहते समय उत्तम मल्लिका-माला से (प्रणयी राम को) वहाँ बाँधना भी एक अभिज्ञान है॥

[यह वृत्तांत बहुत एकांत में घटित है और राम और सीता मात्र को विदित है। वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख नहीं। परंतु राम के प्रणयित्व और सीता के वात्सल्य की सूचक यह लीला परमात्मा की कृपा से आलवार ने साक्षात्कार की और उसको यहाँ प्रकट करते हैं।] 2

320. जब (रानी) कैकेयी ने, जिसका विशाल मन (मंथरा की कुटिलता से) कलंकित हो गया था, वरों की याचना की, क्षोभ से भरे महामना महाराज (दशरथ) उसका प्रत्याख्यान नहीं कर सके और (शोक से) अचेत पड़े थे। उस समय (राम को बुला कर) "कुल-कुमार! वन-वास के लिये निकल जाओ" कह कर कैकेयी ने बिदा दिया। (तब) लक्ष्मण के साथ वहाँ (दंडकारण्य को राम का) निकल जाना भी एक अभिज्ञान है। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

321. वार्-अणिन्द मुलै मडवाय् !
वैदेवी ! विण्णप्पम्,
तेर्-अणिन्द अयोत्तियर्-कोन्
पेरुन्-देवी ! केट्टु अरुळाय्,
कूर्-अणिन्द वेल्-वलवन्
कुहनोडुम् कङ्गै तन्मिल्,
शीर्-अणिन्द तोळमै
कोण्डदुम् ओर् अडैयाळम् । 4

322. मान्-अमरुम् मेन्-नोक्कि
वैदेवी ! विण्णप्पम्,
कान् अमरुम् कल्-अदर् पोय्-क्
काडु उरैन्द कालत्तु,
तेन्-अमरुम् पोळिल् शारल्
चित्तिर-कूडत्तु इरुप्प,
पाल्-मोळियाय् ! परद-नम्बि
पणिन्ददुम् ओर् अडैयाळम् । 5

323. चित्तिर-कूडत्तु इरुप्प-च्
चिरु-काक्कै मुलै तीण्ड,
अत्तिरमे कोण्डु एरिय
अनैत्तु उलहुम् तिरिन्दु ओडि,
वित्तहने ! इरामाओ !
निन्-अपयम्' एन्रु अळैप्प
अत्तिरमे अदन् कण्णै
अरुत्तदुम् ओर् अडैयाळम् । 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

321. कंचुक-धारण किए हुए स्तन वाली विनम्र-स्वभावा वैदेही ! रथों से भूषित अयोध्या के महाराज (राम) की महादेवी ! विनती सुन लीजिये। तीक्ष्णधार बरछा (चलाने में) समर्थ गुह के साथ गंगा के तीर पर (शृंगिबेरपुर में) सौहार्द से शोभित मित्रता का स्वीकार करना भी एक अभिज्ञान है। 4

322. हरिण-तुल्य मुग्ध-लोचना वैदेही ! दुग्ध-सम मधुर-वचना ! (यह) विनती है। कठोर वन के घने प्रदेश में कंकड़-(भरे) मार्ग में जाकर वन-वास करने के काल में भ्रमरासीन उपवनों से पूर्ण चित्रकूट की तराई में रहत समय गुण-पूर्ण भरत के आ कर (राम के चरण में) प्रणत होना भो एक अभिज्ञान है। 5

323. चित्रकूट में (आप लोगों के रहते समय) क्षुद्र काक ने (आप के) स्तन का छुआ। राम ने एक अस्त्र ले कर फेंका। (उससे भयभीत) वह काक सभी लोकों में भाग घूम फिर कर (कहीं रक्षा न पाने से राम के चरण में गिर कर) पुकारा—"विदग्ध ! राम ! तुम्हारी दुहाई ! हाय !" उस अस्त्र ही ने उसके एक नेत्र को निकाल डाला। यह भी एक अभिज्ञान है।

[वाल्मीकि—रामायण में यह वृत्तांत सीता हनुमान से कहती हैं। यहाँ राम से यह सुन कर हनुमान् सीता से कहते हैं। आलवार का एक विलक्षण अनुभव है यह।) 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

324. मिन्-ओत्त नुन्-इडैयाय् !
मेय्-अडियेन् विण्णप्पम्,
पोन्-ओत्त मान् ओन्रु
पुहन्दु इनिदु विळैयाड,
निन्-अन्पिन् वळि निन्रु
शिलै पिडित्तु एम्-पिरान् एह,
पिन्ने अङ्गु इलक्कुमणन्
पिरिन्ददुम् ओर् अडैयाळम्। 7

325. मै-त् तहु मा-मलर्-क् कुळलाय् !
वैदेवी ! विण्णप्पम्,
ओत्त पुहळ् वानर-क् कोन्
उडन् इरुन्दु निनै-त् तेड,
अत्-तहु शीर् अयोत्तियर् कोन्
अडैयाळम् इवै मोळिन्दान्,
इत्-तहैयान् अडैयाळम्
ईदु अवन् कै-म् मोदिरमे। 8

326. तिक्कु-निरै पुहळ्-आळन्
ती-वेळ्वि-च् चेन्रु अन्-नाळ्
मिक्क पेरुम् शपै नडुवे
विल् इरुत्तान् मोदिरम् कण्डु,
ओक्कुमाल् अडैयाळम्
अनुमान् एन्रु उच्चि मेल्,
वैत्तु-क् कोण्डु उहन्दनळाल्
मलर्-क्-कुळलाळ् शीतैयुमे। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

324. विद्युत्-सदृश सूक्ष्म कटिवाली (देवी) ! मुझ सच्चे दास की विनती सुनिये। (पंचवटी में) सुवर्णोपमित एक हिरण प्रविष्ट हो मनोहारी विहार कर रहा था। हमारे स्वामी (श्रीराम) आप के प्रेम के मार्ग में अवस्थित हो, धनुष ग्रहण कर, (उसको पकड़ने) निकले तो वहाँ आप को छोड़ कर उनके पीछे लक्ष्मण का निकलना भी एक अभिज्ञान है। 7

325. अंजन-सम नील उत्तम पुष्पालंकृत केशों से युक्त वैदेही ! विनती (सुनिये)। (राम के सुख-दुख में भाग लेने से) सदृश कीर्तिमान् वानराधिप (सुग्रीव) जब (राम के) साथ रह कर आप का अन्वेषण कर रहे थे, तब समुचित (प्रणयित्वादिक) गुणों से युक्त अयोध्यामहाराज (राम)ने ये अभिज्ञान कहे, (जिनका मैंने वर्णन किया)। यह हैं उन (अभिज्ञानों) का प्रकार। यह है उनके हाथ की अंगूठी। (यह कहते हुए हनुमानने अंगूठी को समर्पित किया)। 8

326. दिगन्त-व्याप्त कीर्तिमान् (जनक-महाराज) के अग्नि (-युक्त) यज्ञ में जा कर सुमहान् सभा-मध्य में धनुर्भंग करनेवाले (राम) की अंगूठी देख कर पुष्पों से अलंकृत केशवाली सीता बोलीं "हनुमान् ! (ये) अभिज्ञान समुचित हैं" और अंगूठी को सिर पर रख कर प्रफुल्लित हुईं। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

327. वारारुम् मुलै मडवाळ्
वैदेवि तनै-क् कण्डु,
शीरारुम् तिरल् अनुमन्
तेरिन्दु उरैत्त अडैयाळम्,
पारारुम् पुहळ्-प् पुदुवै-प्
पट्टर् पिरान् पाडल् वल्लार्,
एरारुम् वैकुन्दत्तु
इमैयवरोडु इरुप्पारे। 10

IV. i. कदिर्-आयिरम्

328. कदिर्-आयिरम् इरवि कलन्दु
एरित्ताल् ओत्त नीळ् मुडियन्,
एदिर्-इल् पेरुमै इरामनै
इरुक्कुम् इडम् नाडुदिरेल्,
अदिरुम् कळल् पोरु-तोळ्
इरणियन् आहम् पिळन्दु, अरियाय्
उदिरम् अळैन्द कैयोडु इरुन्दानै
उळ्ळवा कण्डार् उळर्। 1

329. नान्दकम् शङ्कु तण्डु
नाण्-ओलि-च् चार्ङ्गम् तिरु-च् चक्करम्,
एन्दु पेरुमै इरामनै
इरुक्कुम् इडम् नाडुदिरेल्,
कान्दळ्-मुहिळ् विरल् शीदैक्कु आहि-क्
कडुम् शिलै शेन्रु इरुक्क,
वेन्दर् तलैवन् चनक-राजन् तन्
वेळ्वियिल् कण्डार् उळर्। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

327. कंचुक-भूषित-स्तना, कोमल-स्वभावा वैदेही को देख, गुणवान् महावीर हनुमान् ने समझ-बूझ कर इन अभिज्ञानों का वर्णन किया। भूतल में व्याप्त कीर्तिमान् श्रीविल्लिपुत्तूर के श्री भट्ट नाथ ने इन पदों में उनको कहा। इन अभिज्ञानों के कथन में समर्थ (मनुष्य) मंगल-पूर्ण वैकंठ में नित्यसूरियों के संग रहेंगे ॥ 10

IV. i. कदिर्-आयिरम्-इरवि

[इस दशक में संत श्रीविष्णुचित्त को एक विलक्षण भगवदनुभव दिखाई देता है। परमात्मा एक ही हैं जो मत्स्य कूर्म वराह नरसिंह राम कृष्ण आदि अनेकों रूपों में अवतरित होते हैं और भिन्न भिन्न अवतारों में हिरण्यकशिपु रावण शिशुपाल आदि भिन्न भिन्न दुष्टों का संहार करते हैं। इस तत्त्व को श्रीविष्णुचित्त एक विचित्र प्रकार से प्रकाशित करते हैं। राम का अन्वेषण करनेवाले उनको नरसिंह में पाते हैं। अतः राम ही नरसिंह हैं। दोनों में रूप भेद है, परंतु धर्मी एक है।]

328. यदि तुम उस स्थान की खोज में हो जहाँ राम रहते हैं, राम—जिनकी महिमा अतुलनीय है, और जिनका दीर्घ मुकुट (असंख्य) किरणवाले सहस्र रवियों के मिल कर दीप्त होने की तरह भासमान है, (सुनो)—

झंकृत नूपुर धारण करनेवाले एवं युद्धोन्मुख भुजवाले हिरण्य (कशिपु) के शरीर को जिन्होंने हरिरूप (सिंहरूप) ले फाड़ डाला, रक्त-लिप्त हस्तों से युक्त उन (श्रीनरसिंह) का यथावत् जिन्होंने साक्षात्कार किया है, ऐसे (भक्त) हैं।

(यहाँ प्रश्न राम के विषय में है और उत्तर नरसिंह के विषय में। इससे यह सूचित किया जाता है कि जो राम हैं, वे ही नरसिंह हैं।

अगले पद में प्रश्न और उत्तर दोनो ही राम के विषय में होने से यह स्पष्ट है।) 1

329. नंदक शंख गदा ज्याघोष युक्त शार्ङ्ग श्रीचक्र इन (आयुधों) के धारण करनेवाले महिमावान् राम जहाँ रहते हैं उस स्थान के अन्वेषण में तुम हो तो (सुनो),—

'कांदळ्' पुष्प से मुकुल के सदृश उँगलीवाली सीता (की प्राप्ति) के लिये नृपतियों के अधिप जनक-राज के यज्ञ में जा कर कठिन धनुष का भंजन करनेवाले का जिन्होंने साक्षात्कार किया है ऐसे (भक्त) हैं।

(कांदळ् पुष्प संस्कृत भाषा में लांगलम् अथवा लांगली कहा जाता है।) 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

330. कोलै-यानै-क् कोम्बु परित्तु-क्-
कूडलर् शेनै पोरुदु अळिय,
शिलैयाल् मरामरम् एय्द देवनै-च्
चिक्केन नाडुदिरेल्,
तलैयाल् कुरक्कु-इनम् ताङ्गि-च् चेन्रु
तड-वरै कोण्डु अडैप्प,
अलैयार् कडल् करै वीर्रिरुन्दानै
अङ्गुत्तै-क् कण्डार् उळर्। 3

331. तोयम् परन्द नडुबु शूळलिल्
तोल्लै वडिवु कोण्ड,
माय-क् कुळवि-यदनै नाडुरिल्
वम्मिन् शुवडु उरैक्केन्,
आयर् मड-महळ् पिन्नैक्कु आहि
अडल् विडै एळिनैयुम्,
वीय-प् पोरुदु वियर्त्तु निन्रानै
मेय्म्मैये कण्डार् अळर्। 4

332. नीरेरु-शेञ्-चडै नील-कण्टनुम्
नान्-मुकनुम्, मुरैयाल्
शीरेरु वाचकम् शेय्य निन्र
तिरु-मालै नाडुदिरेल्,
वारेरु कोङ्गै उरुप्पिणियै
वलिय-प् पिडित्तु-क् कोण्डु,
तेर्-एर्रि शेनै नडुवु पोर् शेय्य-च्
चिक्केन-क् कण्डार् उळर्। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

330. घातक हस्ती का दाँत उखाड़, शत्रुओं की सेना से युद्ध कर, उसका नाश करनेवाले तथा धनुष से साल (वृक्ष) पर (वाण) चलानेवाले देव के शीघ्र (पाने के) अन्वेषण में हो तो (सुनो)—

विपुल पर्वत को सिर पर धारण कर ले जा जब वानर-समूह (समुद्र पर) पुल बाँध रहा था; उस समय तरंगों से पूर्ण सागर के तट पर विराजमान होनेवाले को जिन्होंने वहाँ देखा है, ऐसे (भक्त) हैं। 3

331. फैले तोय (समुद्र) के मध्य में चतुराई से प्राचीन (विराट्) रूप को (संकुचित) करनेवाले मायावी शिशु के अन्वेषण में हो तो आओ, उसका अभिज्ञान बताऊँगा—

(कुंभ नामक) गोप की गुणवती पुत्री नप्पिन्नै (की प्राप्ति) के लिये प्रबल सातों वृषभों को युद्ध में मार कर स्वेद-युक्त अवस्थित (कृष्ण) का यथावत् जिन्होंने साक्षात्कार किया है, ऐसे (भक्त) हैं।

[इस पद में वटपत्रशायी और कृष्ण का धर्म्यैक्य है] 4

332. (गंगा के) जल से प्लावित अरुण जटावाले नीलकंठ और चतुर्मुख से यथाविधि रचित उत्कृष्ट शब्दमय स्तुति का विषय हो कर अवस्थित श्रीमन्नारायण के अन्वेषण में हो तो (सुनो) कंचुक से बद्ध स्तनवाली रुक्मिणी को बलपूर्वक पकड़, रथ पर चढ़ा, सेना के मध्य में युद्ध करनेवाले का जिन्होंने अनन्य भाव से साक्षात्कार किया है, ऐसे (भक्त) हैं। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

333. पोल्ला वडिवुडै-प् पेय्च्चि तुञ्ज-प्
पुणर् मुलै वाय् मडुक्क
वल्लानै, मा-मणि वण्णनै
मरुवुम् इडम् नाडुदिरेल्,
पल्लायिरम् पेरुन् देविमारोडु
पोवम्-एरि तुवरै
एल्लारुम् शूळ-च् चिङ्गाशनत्ते
इरुन्दानै-क् कण्डार् उळर्। 6

334. वॆळ्ळै विळि शङ्गु वॆञ्-चुडर्-त्
तिरु-च् चक्करम् एन्दु कैयन्,
उळ्ळ इडम् विनविल् उमक्क इरै
वम्मिन् शुवडु उरैक्केन्,
वॆळ्ळै-प् पुरवि-क् कुरक्कु वॆल् कोडि-त्
तेर्-मिशै मुन्पु निन्रु,
कळ्ळ-प् पडै-त् तुणै आहि-प् पारदम्
कै-शेय्य क् कण्डार् उळर्। 7

335. नाळिकै कूरु-इट्टु-क् कात्तु
निन्र अरशर्हळ् तम् मुहप्पे,
नाळिकै पोह-प् पडै पोरुदवन्
देवकि-तन् शिरुवन,
आळि कोण्डु अन्रु इरवि मरैप्प-च्
चयत्तिरदन् तलैयै,
पाळिल् उरुळ-प् पडै पोरुदवन्
पक्कमे कण्डार् उळर्। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

333. भयंकर रूपवाली दानवी (पूतना) की मृत्यु जिससे हुई उस प्रकार उसके घन स्तन पर मुँह लगाने में चतुर नीलमणिवर्ण जहाँ रहते हैं उस स्थान के अन्वेषण में हो तो (सुनो)—

अनेक सहस्र महादेवियों के संग सागर तरंगों से टकराये द्वारका में सबसे घिरे सिंहासन पर विराजमान का जिन्होंने साक्षात्कार किया है, ऐसे (भक्त) हैं। 6

334. उजला आह्वान-शंख तथा तीव्र-ज्योति चक्र-धारक हस्तवाले के रहने का स्थान पूछते हो, तो जरा आओ, मैं तुम्हें अभिज्ञान बताऊँगा—

श्वेताश्व तथा विजयी कपिध्वजवाले रथ के अग्रभाग में अवस्थित हो, युद्ध में चतुर साथी हो, भारत (युद्ध) का संचालन करनेवाले का जिन्होंने साक्षात्कार किया है, ऐसे (भक्त) हैं।

[श्वेताश्व-अर्जुन के रथ के अश्वों का रंग श्वेत था, और उनके ध्वज में (हनुमान् का चिह्न था।)] 7

335. (दिन की) नाड़िकाओं का विभाजन कर बारी बारी से (जयद्रथ की) रक्षा करते हुए खड़े राजाओं के देखते देखते इस प्रकार युद्ध संचालन करनेवाले, कि (सबने सोचा कि दिन की) सब नाड़िकाएँ बीत गयीं, देवकी के बालक के चक्र-द्वारा रवि को छिपाने पर युद्ध कर जयद्रथ के सिर को भूमि में लुढ़कानेवाले (अर्जुन) के पास ही जिन्होंने उनका साक्षात्कार किया है ऐसे (भक्त) हैं। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

336. मण्णुम् मलैयुम् मरि कडल्हळुम्
मर्रुम् यावुम् एल्लाम्,
तिण्णम् विळुङ्गि उमिळ्न्द
तेवनै-च् चिक्केन नाडुदिरेल्,
एण्णर्कु अरियदु ओर् एनम् आहि
इरु-निलम पुक्कु इडन्दु,
वण्ण-क् करुङ्-कुळल मातरोडु
मणन्दानै-क् कण्डार् उळर्। 9

337. करिय मुहिल् पुरै मेनि मायनै-क्
कण्ड शुवडु उरैत्तु,
पुरवि-मुकम् शेय्दु शेन्नेल्
ओङ्गि विळै कळनि-प् पुदुवै,
तिरुविल् पोलि मरै-वाणन् पट्टर् पिरान्
शोन्न मालै पत्तुम्,
परवु मनम् उडै-प् पत्तर् उळ्ळार्
परमन् अडि शेर्वर्हळे। 10

IV. ii. अलम्बा वेरुट्टा

(तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै-च्-चिरप्पु)

338. अलम्बा वेरुट्टा-क् कोन्रु
तिरियुम् अरक्करै,
कुलम् पाळ् पडुत्तु-क्
कुल-विळक्काय् निन्र कोन् मलै,
शिलम्बु आर्क्क वन्दु देय्व
महळिर्कळ् आडुञ् शीर्-च्
चिलम्बारु पायुम् तेन्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये। 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

336. भूमि और पर्वत और तरंगित सागरों तथा अन्य जो जो हैं सभी को दृढ़ता से निगल कर उगलनेवाले देव के अन्वेषण में त्वरावान् हो तो (सुनो)—

अप्रमेय एक वराह बन (प्रलय समुद्र में) डूब, विशाल भूमि को निकाल, नीलवर्ण केशवाली उस देवी से परिणय करनेवाले का जिन्होंने साक्षात्कार किया है, ऐसे (भक्त) हैं। 9

337. नलमेघ तुल्य शरीरवाले मायावी को जिन अभिज्ञानों से देखा उन्हें कह कर, अश्वमुख कर के (अर्थात् झुक कर) अवस्थित उन्नत अभिवृद्धशाली सस्यों से पूर्ण खेतों से घिरे श्रीविल्लिपुत्तूर के (वैष्णव) श्री से समुज्ज्वल वेदविशारद श्री भट्टनाथ ने जो दस पदों की माला रची, उसके कहने में लगे, मनवाले भक्त हों तो वे परम के चरण को प्राप्त करेंगे। 10

IV. ii. अलम्बा वेरुट्टा

[राम कृष्ण आदिक अवतार काल के अनंतर उत्पन्न हम जैसे लोगों के रक्षणार्थ अर्चारूप में श्रीरंग वेंकटाद्रि आदिक दिव्य देशों में जो भगवान् सदा विराजमान हैं, उनके गुणगान में संत अब लग जाते हैं। प्रथमतः तिरु-माल्-इरुञ्चोलै नाम से प्रसिद्ध वनाचल क्षेत्र में विराजमान सुंदरबाहु नामक सौंदर्यराज (अळगर्) के रूप और गुणों का अनुभव करते हैं। उससे भी पहले उनके वासस्थान पर्वत के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट करते हैं।]

338. हल्ला मचा, (सब जीवों को) भयभीत कर, मार कर घूमनेवाले राक्षसों के कुल का ध्वंस कर (रघु) कुलदीपक बन कर अवस्थित अधीश्वर का पर्वत है सुंदर वनाचल (तिरुमाल्-इरुञ्चोलै मलै) जहाँ श्रेष्ठ नूपुर-गंगा प्रवाहित होती है जिसमें देव-स्त्रियाँ नूपुरों की मधुर ध्वनि के साथ आ कर स्नान करती रहती हैं।

[त्रिविक्रमावतार के काल में जब भगवान् का एक चरण उपरितन लोकों को मापते हुए ब्रह्मलोक में पहुँचा, तब ब्रह्मा ने अपने कमंडलु के जल से चरण धो कर सत्कार किया। वही जल गंगा के रूप में बह निकला। उस समय कमंडलु के जल का एक अंश भगवान् के नूपुर पर गिर कर बहने लगा। उसी का नाम 'नूपुर-गंगा' है जो वनाचल क्षेत्र में बह रही है।] 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

339. वल्लाळन् तोळुम्
वाळ्-अरक्कन् मुडियुम्, तङ्गं
पोल्लाद मूक्कुम् पोक्कुवित्तान्
पोरुन्दुम् मलै,
एल्ला-इडत्तिलुम् एङ्गुम् परन्दु
पल्लाण्डु-ओलि,
शेल्ला निर्कुम् शीर्-त् तेन्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये। 2

340. तक्कार् मिक्कार्हळै-च्
चञ्चलम् शेय्युम् चलवरै,
तेक्का नेरिये पोक्कुविक्कुम्
शेल्वन् पोन् मलै,
एक्कालमुम् शेन्रु
शेवित्तिरुक्कुम् अडियरै,
अक्-कानेरियै मार्रुम्
तण् माल्-इरुञ्-चोलैये। 3

341. आनायर् कूडि अमैत्त
विळवै, अमरर् तम्
कोनार्क्कु ओळिय
कोवर्त्तनत्तु-च् चेय्दान् मलै,
वानाट्टिल् निन्रुम्
मा मलर्-क् कर्पकत् तोत्तु इळि
तेन्-आरु पायुम्
तेन् तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

339. पराक्रमी (कुंभकर्ण) के भुज को खड्ग धारण करनेवाले राक्षस (रावण) के सिर को, तथा (उनकी) अनुजा (शूर्पणखा) की भयावनी नासिका को जिन्होंने काट डाला वे सुख से जिस जिस पर्वत में रहते हैं वह है सुंदर तिरु-माल्-इरुञ्चोलै (श्रीवनाचल) जहाँ 'बहुवर्ष' (जीओ) (मंगलाशासन) की ध्वनि सब स्थानों में तथा सब कहीं व्याप्त हो सुनाई पड़ती है। 2

340. (आदर के) योग्य व्यक्तियों और सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों (के मन) को चंचल बनानेवाले छलियों को दक्षिण (दिशा) से मार्ग में (अर्थात् यमलोक के) मार्ग में चलानेवाले श्रीमान् का सुनहला पर्वत है शीतल वनाचल जो सभी कालों में जा कर सेवन करनेवाले दासों को उस वन मार्ग से बचाता है।

[वनाचल के स्वामी प्रतिकूलों को यमलोक के मार्ग में भेजते हैं; परंतु वनाचल अनुकूलों को उस मार्ग में जाने से बचाता है।] 3

341. गोपालक अहीरों ने एकत्रित हो जो उत्सव (अन्नकूटोत्सव) मनाने की तैयारी की थी, उसे देवों के अधिप (इंद्र) के लिये न हो कर, जिन्होंने उसे गोवर्धन के लिये करवाया, उनका पर्वत है दक्खिनी श्रीवनाचल जहाँ स्वर्ग-लोक से उत्तम पुष्पवाले कल्पवृक्ष के (पुष्प) गुच्छों से प्रसृत मधु-नदी बहती है। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

342. ओरु वारणम् पणि कोण्डवन्
पोय्गैयिल् कञ्चन् तन्
ओरु वारणम् उयिर् उण्डवन्
शेन्रु उरैयुम् मलै
करु-वारणम् तन् पिडि तुरन्दु
ओड, कडल्-वण्णन्
तिरु-आणै कूर-त् तिरियुम्
तण् माल्-इरुञ्-चोलैये । 5

343. एविर्रु-च् चेय्वान् एन्रु
एदिर्न्दु वन्द मल्लरै,
शाव-त् तहर्त्त
शान्तु अणि तोळ् चतुरन् मलै,
आवत्तनम् एन्रु
अमरर्हळुम् नन् मुनिवरुम्,
शेवित्तु इरुक्कुम्
तेन् तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये । 6

344. मन्नर् मरुह मैत्तुनन्मार्क्कु
ओरु तेरिन् मेल्,
मुन्-अङ्गु निन्रु
मोळै एळुवित्तवन् मलै
कोन्-नविल् कूर्-वेल् कोन्
नेडु-मारन् तेन् कूडल्-कोन,
तेन्नन् कोण्डाडुम्
तेन् तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये । 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

342. एक वारण (हाथी) की सेवा दह में ग्रहण करनेवाला, तथा कंस के एक वारण के प्राण हरनेवाला जिस पर्वत में जाकर नित्यवास करता है वह है शीतल वनाचल जहाँ (प्रणय-कलह के कारण) जब हस्तिनी (पति को) तज कर भागती है, वह काला वारण कहता है "सागरवर्णश्री की सौगंध (मत जाओ)", वह लौट आती है। 5

343. जो मल्ल इस भाव से कि इस (राजा के) आज्ञाकारी हैं, आक्रमण करने आये, उन्हें वध कर गिरानेवाले, (कुब्जा के) चंदन से अलंकृत भुजवाले चतुर का पर्वत है दक्खिनी श्रीवनाचल जिसमें अमर और श्रेष्ठ मुनिजन (सुंदरबाहु भगवान् को) 'आपद्धन' मान कर सेवा करते रहते हैं। 6

344. (शत्रु) राजाओं को क्षुब्ध करते हुए, फुफेरे भाइयों के लिये (अर्जुन के) रथ के अग्रभाग में अवस्थित होनेवाले, एवं (उसके रथ के अश्वों की प्यास बुझाने के लिये युद्ध-क्षेत्र में ही) जल-स्रोत को उत्पन्न करनेवाले का पर्वत है दक्खिनी श्रीवनाचल जिसका उपलालन दक्षिण देश का अधिप नेडुमारन् (मलयध्वज) करता है, जो घातक तीक्ष्ण शूल धारण करता है और जो दक्खिनी कूडल नगर का स्वामी है।

[नेडुमारन् (मलयध्वज) दक्षिण भारत में पांड्य देश का राजा था। उसकी राजधानी मधुरा थी जो कूडल कहलाती है। मलयध्वज ने शपथ ली थी कि मैं धर्म से राज्य-पालन करूँगा। एक समय वह गंगा-स्नान करने के लिये रथ पर निकला। मधुरा से कुछ ही दूर जाने पर उसका रथ रुक गया और घोड़े आगे नहीं बढ़े। धर्मिष्ठ होने के कारण उसने सोचा कि यहाँ अवश्य कोई पुण्यतीर्थ है और देवता का सान्निध्य भी। तब भगवान् सुंदरबाहु आविर्भूत हो बोले—"महाराज! यह हमारा पवित्र स्थान वनाचल है और यहाँ नूपुर-गंगा बहती है। यह गंगा के समान पावन है और इसकी उत्पत्ति हमारे नूपुर से हुई। मलयध्वज ने गंगा-स्नान की इच्छा छोड़ कर नूपुर-गंगा में स्नान कर सुंदरबाहु के दर्शन कर अपने को कृतार्थ माना। वहाँ भगवान् का मंदिर बना बड़े समारोह से उत्सव मनाया।

राजा मलयध्वज की इस भक्ति से प्रभावित हो कर आळ्वार उसका उल्लेख इस पद में करते हैं।] 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

345. कुरुहाद मन्तरै-क्
कूडु कलक्कि, वेङ् कान्-इडै-च्
चिरु काल् नेरिये पोक्कुविक्कुम्
शेल्वन् पोन् मलै,
अरु-काल् वरि वण्डुहळ्
आयिर नामम् शोल्लि,
शिरु-कालै-प् पाडुम्
तेन तिरु-माल्-इरुञ्-योलैये। 8

346. शिन्द-प्-पुडैत्तु-च्
चेङ्-कुरुदि कोण्डु, पूदङ्गळ्,
अन्दि-प् पलि कोडुत्तु
आवत्तनम् शेय् अप्पन् मलै,
इन्दिर गोपङ्गळ्
एम्-पेरुमान् कनि-वाय् ओप्पान्
शिन्दुम् पुरविल्
तेन् तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये। 9

347. एट्टु-न् तिशैयुम्
एण्-णिरन्द पेरुन् देविमार्,
विट्टु विळङ्ग
वीर्रिरुन्द विमलन् मलै,
पट्टि-प् पिडिहळ् पहडु
उरिञ्चि-च् चेन्रु, मालै-वाय्-त
तेट्टि-त् तिळैक्कुम्
तेन् तिरु-माल्-इरुञ्-चोलैये। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

345. समीप न आनेवाले (अनभिमुख) राजाओं का शरीर विक्षुब्ध कर कठोर कानन के बीच छोटी पगडंडी से (उन्हें) चलानेवाले श्रीमान् (श्रीमन्नारायण) का सुनहला पर्वत दक्खिनी श्रीवनाचल है जहाँ षट्पदवाले सुंदर भ्रमर (भगवान् के) सहस्र नामों का कीर्तन कर अति प्रातः काल (प्रबोधन गीत) गाते हैं।

[षट्पदवाले भ्रमर से षट्पद मंत्र के जप करनेवाले भगवान् के भक्तों का संकेत है। षट्पदवाला मंत्र 'द्वय' या 'मंत्ररत्न' कहलाता है और यहाँ के भक्त उसके जप तथा अर्थ के मनन में लीन रहते हैं।] 8

346. (क्षेत्र को दूषित करनेवाले आवें तो) जहाँ के भूतगण उन्हें इस प्रकार मार कर, जिससे शरीर से रक्त स्रवित हो, लाल रक्त को ले संध्या-बलि समर्पित कर जिस स्वामी की परिक्रमा करते हैं उसका पर्वत है दक्खिनी श्रीवनाचल जिसके उपवन में हमारे प्रभु के (बिंब) फलाधर से उपमित इंद्रगोप (वीर बहूटी कीड़े) सब कहीं बिखरे पड़े हैं।

[नर-मांस और रक्त भूत-गणों के खाद्य हैं। वनाचल के भूतगण जो भगवान् के भक्त हैं उनकी पूजा कर अपने खाने योग्य नर मांस और रक्त को भगवान् को निवेदन कर उनके प्रसाद के रूप में उसे खाते हैं। भगवान भक्ति ही को देखते हैं, न भक्त के कुल पर विचार करते हैं, न उसकी समर्पित वस्तु पर।] 9

347. अष्ट दिशाओं में असंख्य महादेवियाँ कान्ति को फैलाती भासमान हैं। उनके बीच में विराजित विमल का पर्वत दक्खिनी श्रीवनाचल है जिसमें स्वेच्छा से संचरण करनेवाली हथिनियाँ हाथियों को रगड़ते हुए जा रात में स्पर्श के सुख का अनुभव कर प्रमुदित रहती हैं। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

348. मरुद-प्-पोळिल् अणि
माल्-इरुञ्-चोलै-मलै तन्नै,
करुदि उरैकिन्र
कार्-क् कडल् वण्णन् अम्मान् तन्नै,
विरदम् कोण्डु एत्तुम्
विल्लिपुत्तुर विट्टु चित्तन् शोल्,
करुदि उरैप्पवर् कण्णन्
कळल्-इणै काप्पवर्हळे । 11

IV. iii. उरुप्पिणि-नङ्गै

349. उरुप्पिणि-नङ्गै तन्नै मीट्पान्
तोडर्न्दु ओडि-च् चेन्र
ऊरुप्पनै योट्टि-क् कोण्डिट् टु उरैत्तिट्ट
उरैप्पन् मलै
पोरुप्पिडै-क्-कोन्रै निन्रु मुरि-यालियुम्
काशुम् कोण्डु
विरुप्पोडु पोन्-वळङ्गुम् वियन्-मालिरुञ्-
चोलै यदे ॥ 1

350. कञ्जनुम् कालियनुम् कलिरुम् मरुदुम् एरुदुम्
वञ्जनैयिल् मडिय वळर्न्द मणि-वण्णन् मलै
नञ्जुमिळ्-नाहम् एळुन्दु अणवि नळिर् मा-मदियै
शेञ्जुडर्-ना वळैक्कुम् तिरु-मालिरुञ्चोलैयदे ।। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

348. अर्जुन (वृक्षों) वाले उपवन से भूषित वनाचल को (आदरणीय) मान नित्य वास करनेवाले नील सागरवर्ण स्वामी की स्तुति, व्रत ले कर, करनेवाले श्रीविल्लिपुत्तुर के विष्णुचित्त ने जो कहा उसे समझ कर कहनेवाले कान्ह के चरणयुगल के दर्शन करेंगे। 11

IV. iii. अरुप्पिणि नङ्गै

349. कन्या रुक्मिणी को छुड़ाने के विचार से, पीछा कर दौड़ आनेवाले रुक्मी को भगा, पकड़, (रथ से) बाँध, पराभूत करनेवाले वीरवर का पर्वत है वह अद्भुत वनाचल जिसके शिखरों के मध्य में खड़े 'कोन्रै' (नामक वृक्ष) टूटी अंगूठी और दीनार ला सप्रेम सुवर्ण प्रदान करते हैं।

[कोन्रै—एक वृक्ष जिसको संस्कृत में शम्याक या आरग्वध कहते हैं। उसके पुष्पों का रंग स्वर्ण जैसा है और आकार टूटी अंगूठी और दीनार के जैसा।] 1

350. कंस और कालिय और (कुवलयापीड) हस्ती और (यमल) अर्जुन (वृक्ष), और (अरिष्टासुर) वृषभ सब वंचना से जिससे नष्ट हुए इस प्रकार वर्धित मणिवर्ण का पर्वत है वह श्रीवनाचल जिसमें विष उगलनेवाला नाग उठ शीतल चंद्र के पास जा, रक्ताभ जीभ से उसको घेरता है। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

351. मन्नु-नरकन्-तन्नै-च्-चूळ् पोहि वळैत्तु एरिन्दु,
कन्नि महळिर् तन्नै-क्-कवर्न्द कडल्-वण्णन् मलै,
पुन्नै शेरुन्दियोडु पुन-वेङ्गैयुम् कोङ्गुम् निन्रु,
पोन्नरि-मालैहळ् शूळ् पोळिल् मालिरुञ्-चोलैयदे ॥ 3

352. मावलि-तन्नुडैय महन् वाणन्-महळ् इरुन्द,
कावलै-क् कट्टाळित्त तनि-क्-काळै कारुदुम् मलै,
कोवलर् गोविन्दनै-क्-कुर-मादर्हळ्, पन्-कुरिञ्चि-प्-
पात्तोलि-पाडि नडम्-पयिल् मालिरुञ्-चोलैयदे ॥ 4

353. पल पल नाळम् शोल्लि-प् पळित्त शिशुपालन्-तन्नै
अलवलैमै तविर्त्त अळहन् अलङ्कारन् मलै,
कुल-मलै कोल-मलै कुळिर् मा-मलै कोर्र-मलै,
निल-मलै नोण्ड-मलै तिरु-मालिरुञ् चोलैयदे ॥ 5

354. पाण्डवर् तम्मुडैय पाञ्चालि-मरुक्कम् एल्लाम्,
आण्डु अङ्गु नूर्रुवर्-तम् पेण्डिर् मेल् वैत्त अप्पन् मलै,
पाण्-तहु वण्डिनङ्गळ् पगळ् पाडि मदु-प् परुह,
तोण्डलुडैय मलै तोल्लै मालिरुञ्-चोलैयदे ॥ 6

355. कनङ्-कुळैयाळ् पोरुट्टा-क् कणै पारित्तु, अरक्कर् तङ्गळ्
इनम् कळु एर्रुवित्त एळिल् तोळ् एम्-मिरामन् मलै,
कनङ्-कोळि तेळ्-ळरुवि वन्दु शूळ्न्दु अहल् आलम् एल्लाम्
इनम् कुळु-आडुम् मलै एळिल्-मालिरुञ्-चोलैयदे ॥ 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

351. (अपने को) नित्य (माननेवाले) नरक (असुर) को (जीतने का) उपाय सोच, उसे घेर, (जीत) दूर फेंक, उससे (अपहृत) कन्या ललनाओं को हर लेनेवाले सागरवर्ण का पर्वत है वह वनाचल जिसका उपवन पुंनाग और 'चेरुन्दि' (वृक्षों) के साथ उर्वरा 'वेंगैं' (वृक्ष) तथा 'कोंगु' (वृक्ष) से इस प्रकार घिरा हुआ है मानों सुनहली सुंदर मालाओं से परिवृत हो। 3

352. महाबलि के पुत्र वाण की पुत्री (उषा) जिस बंधन में थी उसको समूल नष्ट करनेवाले अद्वितीय युवक से आदृत पर्वत है वह वनाचल जिसमें भील महिलाएँ गोपों के गोविंद-विषयक गीत को 'कुरिञ्चि' नामक राग में उच्च स्वर में गान कर नृत्य करती हैं। 4

353. अनेक अनेक दूषण कर निंदा करनेवाले शिशुपाल बकवास का वारण करनेवाले सौंदर्यवान् और अलंकारवान् का पर्वत है वह श्रीवनाचल जो (भक्तों का) कुल पर्वत है, सौंदर्य-पर्वत है, शीतल विपुल पर्वत है, विजय पर्वत है, हरा भरा पर्वत है तथा उन्नत पर्वत है। 5

354. पांडवों की (रानी) पांचाली के सारे दुखों को ध्यान में रख, समय पर सौ (भाइयों) की स्त्रियों को (उन दुखों को) देनेवाले स्वामी का पर्वत है वह अनादि वनाचल जिसकी समृद्धि ऐसी है कि गाने में निपुण मधुकर-वृंद राग गाते गाते मधु का पान करते हैं। 6

355. कनक कुंडलवाली (सीता को छुड़ाने) के लिये जिसने बाणों को तैयार कर राक्षसों के समूह को सूली पर चढ़ाया (अर्थात् संहार किया) हमारे उस सुंदर भुजवाले राम का पर्वत है वह सुंदर वनाचल जिसके स्वच्छ झरने में, जो कनक के साथ प्रवाहित है, विशाल पृथिवी के सब (लोग) झुंड के झुंड आ, घेर, स्नान करते हैं। 7

१२

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

356. एरि शितरुम् शरत्ताल् इलङ्गैयिनै, तन्नुडैय
वरिशिलै वायिर् पेय्दु वाय्क्कोट्टम् तविर्त्तु उहन्द,
अरैयन् अमरुम् मलै अमररोडु कोनुम् शेन्रु,
तिरि-शुडर् शूळुम् मलै तिरु-मालिरुङ्-चोलैयदे ॥ 8

357. कोट्टु मण् कोण्डु इडन्दु कुडङ्गैयिल् मण् कोण्डु अळन्दु,
मोट्टुम् अदु उण्डु उमिळ्न्दु विळैयाडु विमलन् मलै,
ईट्टिय पल् पोरुळ्गळ् एम्-पिरानुक्कु आडियुरै एन्रु,
ओट्टरुम् तण् शिलम्बारुडै मालिरुङ्-चोलैयदे ॥ 9

358. आयिरं तोळ् परप्पि मुडि आयिरम् मिन्-निलह,
आयिरम् पैन्दलैय अनन्त-शयनन् आळुम् मलै,
आयिरम् आरुहळुम् शुनैहळ् पल आयिरमुम्,
आयिरम् पूम्-पोळिलुम् उडै मालिरुञ् चोलैयदे ॥ 10

359. मालिरुञ्-चोलै एन्नुम् मलैयै-युडैय मलैयै,
नालिरु मूर्त्ति तन्नै नाल् वेद-क् कडल् अमुदै
मेलिरुङ् कर्पहत्तै वेदान्त विळुप्पोरुळिन्,
मेलिरुन्द विळक्कै विट्टचित्तन् विरित्तनने ॥ 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

356. आग छितरानेवाले शर से लंका को अपने रेखांकित (सुन्दर) धनुष के मुँह में गिरा, (रावण की) गर्वोक्ति को चूर कर दर्पित होनेवाले सम्राट् जिस पर्वत में विराजित हैं वह है श्रीवनाचल जहाँ जा कर अमरों के साथ (उनके) अधिप (इंद्र) तथा संचरणशील ज्योति (अर्थात् सूर्य और चंद्र) उसकी परिक्रमा करते हैं। 8

357. (हिरण्याक्ष से अपहृत) भूमि को निकाल दंष्ट्रा में धारण कर, हथेली में (महावलि से दान का जल) ग्रहण कर भूमि को माप, फिर उसको निगल, उगल, विहार करनेवाले विमल का पर्वत है वह वनाचल जहाँ संचित अनेक वस्तुएँ परमात्मा के चरण की भेंट हैं इस भाव से (उन्हें साथ लेते हुए) शीतल नूपुर-सरित् बहती है।

[यह सरित् नूपुर-गंगा नाम से प्रसिद्ध है।] 9

358. जिसके सहस्र किरीट विद्युत् के समान चमकते हैं, जो सहस्रभुजाओं को फैला कर विस्तृत सहस्र फण वाले अनंत (आदिशेष) पर शयन करता है, वह अनंतशयन जिस पर्वत का शासन करता है वह है वनाचल जिसमें सहस्र नदियाँ, अनेक सहस्र निर्झर और सहस्र सुंदर उपवन विद्यमान हैं। 10

359. माल्-इरुन्-चोलै नामक पर्वतवाले पर्वत का (अर्थात् भगवान् का), चतुर्गुण मूर्तिद्वय का, चतुर्वेद सागर के अमृत का, उन्नत और बृहत् कल्प (वृक्ष) का, वेदांत के सारतम अर्थ के ऊपर विराजित दीप का विष्णुचित्त ने विवरण किया।

[चतुर्गुण मूर्तिद्वय—अष्टमूर्ति श्रीमन्नारायण। पंच भूत, चन्द्र, सूर्य और यज्ञ करनेवाला (यजमान) ये भगवान् की अष्टमूर्तियाँ हैं।]

अथवा आठ अक्षरवाले अष्टाक्षर के प्रतिपाद्य श्रीमन्नारायण।] 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. iv. नावकारियम्

(तिरुक्-कोट्टियूर् दिव्य-प्रभावम्)

360. नावकारियम् शोल्-इलादवर् नाडोरुम् विरुन्दु-ओम्बुवार्,
देव-कारियम् शेय्दु वेदम् पयिन्रु
वाऴ् तिरु-क् कोट्टियूर्,
मूवर् कारियमुम् तिरुत्तुम् मुदल्वनै-च्
चिन्दियाद, अप्
पाव कारिहळै-प् पडैत्तवन्
एङ्नम् पडैत्तत्तन् कोलो। 1

361. कुर्रम् इन्रि-क् कुणम् पेरुक्कि-क्
कुरुक्कळुक्कु अनुकूलराय्,
शेर्रम् ओन्रुम् इलाद वण् केयिनार्हळ्
वाऴ् तिरु-क् कोट्टियूर्,
तुर्रि एऴ्-उलहु उण्ड तू-मणि
वण्णन् तन्नै-त् तोऴादवर्,
पेर्र तायर् वयिर्रिनै प् पेरु-
नोय् शेय्वान् पिरन्दार्हळे। 2

362. वण्ण-नन्-मणियुम् मरकतमुम्
अऴुत्ति निऴल् एऴुम्
तिण्णै-शूऴ्, तिरु-क् कोट्टियूर्
तिरु-माल्-अवन् तिरु-नामङ्गळ्,
एण्ण-क् कण्ड विरल्हळाल् इरै-प्
पोऴुदुम् एण्ण-किलादु पोय्,
उण्ण-क् कण्ड तम् ऊत्तै वाय्क्कु-क्
कवळम् उन्दुकिन्रार्हळे। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. iv. नावकारियम्

360. जिनकी जिह्वा में अकथनीय वचन (अर्थात् असत्य) नहीं, जो प्रतिदिन अतिथि-सत्कार करनेवाले हैं, जो देव-कार्य (अर्थात् भगवान् की आराधना) कर वेद का पाठ करनेवाले हैं, उनके रहने का स्थान तिरुक्कोट्टियूर् (श्रीगोष्ठीपुर) है जिसका प्रभु तीनों का कार्य निभानेवाला प्रथम है (अर्थात् जगत्कारण है)। इसका चिंतन न करनेवाले उन पापकारियों की सृष्टि किस प्रयोजन से सृष्टि करनेवाले ने की ?

[तीनों का कार्य—तीन हैं ब्रह्मा, शिव और इंद्र। आपत् से भगवान् इन तीनों की रक्षा करते हैं। असुर ने ब्रह्मा से जब वेदों को छीन लिया, तब भगवान् ने असुर का संहार कर वेदों को ला ब्रह्मा को सौंप दिया। ब्रह्महत्या के पाप से पीड़ित हो शिव जब कपाली बन भटक रहे थे, भगवान् ने उनका पाप दूर किया। असुरों की पीड़ा से इंद्र की रक्षा भगवान् ने की। इस प्रकार तीन मुख्य देवताओं की आपत् दूर कर उनके कार्य को भगवान अच्छी तरह निभाते हैं। 1

361. जो दोष को त्याग, गुणों की वृद्धि कर, गुरुजनों के अनुकूल होते हैं, जिनमें कुछ भी असूया नहीं और जो उदार हस्तवाले हैं उनका आवास है तिरु-क्-कोट्टियूर् जहाँ विराजित है निर्मल मणिवर्ण जिसने सप्त लोकों को निगला था। उस (भगवान्) की नति जो नहीं करते उन्होंने जननेवाली माता के उदर को बड़ी पीड़ा देने के लिये जन्म लिया। 2

362. वर्णवाले उत्तम मणि और मरकत जुड़े छवि से प्रकाशमान दालानों से परिवृत तिरुक्-कोट्टियूर् के श्रीमन्नारायण के श्रीनामों को गिनने के लिये प्राप्त उँगलियों से क्षण मात्र भी उन्हें गिनने में तत्पर नहीं रह कर, भक्षण करने में लगे अपने दुर्गंधित मुंह में (अन्न के) कवलों को ठूँसते हैं। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

363. उरग-मेल्-अयान् कैयिल् उरै
शङ्कम् पोल् मड अन्नङ्गळ्,
निरै-गणम् परन्दु एरुम् शेङ्-कमल-
वयल् तिरु-क् कोट्टियूर्,
नरक-नाशनै नाविल् कोण्डु
अळैयाद मानिड शादियर्
परुहु नीरुम् उडुक्कुम् कूरैयुम्
पावम् शेय्दनताङ्-कोलो। 4

364. आमैयिन् मुदुहत्तिडै-क् कुदि
कोण्डु तू-मलर् शाडि-प् पोय्,
तीमै शेय्दु इळ वाळैहळ् विळैयाडु
नीर्-त् तिरु-क् कोट्टियूर्,
नेमि-शेर् तडङ्-कैयिनानै निनैप्पु-
इला वलि नेञ्चुडै,
पूमि पारङ्गळ् उण्णुम् शोर्रिनै
वाङ्गि-प् पुल्लै-त् तिणिमिने। 5

365. पूदम् ऐन्दोडु वेळ्वि ऐन्दु
पुलन्गळ् ऐन्दु पोरिहळाल्,
एदम् ओन्रुम् इलाद वण्मैयिनार्हळ्
वाळ् तिरु-क् कोट्टियूर्,
नादनै नरशिङ्गनै नविन्रु
एत्तुवार्हळ् उळक्किय
पाद-तूळि पडुदलाल् इव्
उलहम् पाक्कियम् शेय्ददे। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

363. उरग (रूप) कोमल शय्यावाले के हाथ में स्थित शंख के सदृश मुग्ध हंसों की पंक्तियों के गण फैल जिन पर चढ़ते हैं उन रक्तकमलों से भरे खेतवाले तिरुक्-कोट्टियूर् के नरकनाशक को लेकर जीभ से जो नहीं पुकारते वे मनुष्य-जातीय जिस जल (को) पीते हैं और (जिस) वस्त्र (को) पहनते हैं उन्होंने (जल और वस्त्र ने) संभवतः पाप ही किया हो ? 4

364. कछुए की पीठ के मध्य पर कूद, विमल कमल से टकराते जा, उपद्रव कर जिस (नगर के सरोवरों) के जल में तरुण मत्स्य खिलवाड़ करते हैं उस तिरुक्-कोट्टियूर् के चक्रसहित दीर्घ हस्तवाले के स्मरण से शून्य कठोर चित्तवाले जो हैं वे भूमि के भार मात्र हैं। वे जो अन्न खाते हैं उसको हटा (उनके मुँह में) तृण को ठूँसो। 5

365. पंचभूत (से उत्पन्न शरीर) के साथ पंच महायज्ञों, पंच विषयों तथा इंद्रियों के संबंध में सब प्रकार के कलंकों से रहित होने की ख्यातिवाले जहाँ रहते हैं उस तिरुक्कोट्टियूर् के नाथ का, नरसिंह का, कीर्तन कर जो स्तुति करते हैं उनके संचरण से उड़ाई पाद-धूलि (इस लोक पर) लग जाती है। (इससे विदित होता है कि) इस लोक ने सौभाग्य किया है।

[पंच भूत—भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश जिनसे शरीर उत्पन्न है।

पंच महायज्ञ—1. ब्रह्मयज्ञ (वेद का अध्ययन)

2. देवयज्ञ—देवों की तृप्ति के लिये अग्नि में आहुति देना।

3. भूत-यज्ञ—प्राणियों का समाराधन।

4. पितृ-यज्ञ—पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान।

5. मनुष्य-यज्ञ—अतिथि का सत्कार।

पंच विषय—रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द।

पंच इंद्रिय—चक्षु, श्रोत्र, रसना, नासिका और त्वचा।] 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

366. कुरुन्दम् ओन्रु ओशित्तानोडुम्
शेन्रु कूडि आडि विला-च् चेय्दु,
तिरुन्दु नान् मरैयोर् इरा-प् पहल्
एत्ति वाळ् तिरु-क् कोट्टियूर्,
करुन्तड मुहिल्-वण्णनै-क् कडै-क् कोण्डु
कै तोळुम् पत्तर्हळ्,
इरुन्द ऊरिल् इरुक्कुम् मानिडर्
एत् तवङ्गळ् शेय्दार् कोलो। 7

367. नळिर्न्द शीलन् नयाचलन्
अभिमान-तुङ्गनै, नाडोरुम्
तेळिन्द शेल्वनै-च् चेवकम् कोण्ड
शेङ्-कण् माल् तिरु-क् कोट्टियूर्
कुळिर्न्दु उरैहिन्र कोविन्दन्
गुणम् पाडुवार्-उळ्ळ नाट्टिनुळ्,
विळैन्द तानियमुम् ईराक्कदर्
मीदु कोळ्ळ किलार्हळे। 8

368. कोम्बिन्-आर् पोळिल् वाय्-क् कुयिल्-इनम्
कोविन्दन् कुणम् पाडु शीर्
शेम्पोन्-आर् मदिल् शूळ् शेळुङ्
कळनियुडै-त् तिरु-क् कोट्टियूर्,
नम्बनै नर-शिङ्गनै नविन्रु
एत्तुवार्हळै-क् कण्डक्काळ्,
एम्-पिरान्-तन चिम्नङ्गळ् इवर्-इवर्
एन्रु आशैहल् तीर्वने। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

366. जो विधिवत् चार वेदों का अध्ययन करनेवाले हैं वे (असुराविष्ट) एक कुंद (वृक्ष) के भंजन करनेवाले से जा, एक हो, नाच, उत्सव मना, रात दिन (उसकी) स्तुति करते हुए तिरुक्कोट्टियूर् में रहते है। वहाँ के काले विपुल जलदवर्ण का अपनी नीचता का स्मरण कर अंजलि करते रहनेवाले भक्तजन जिस स्थान में रहते हैं वहाँ रहनेवाले मनुष्यों ने (न जाने) कैसी तपस्या की है। 7

367. शीतल-शील, नय में अचल (अर्थात् नीति मार्ग में सुदृढ़), (भगवान् के) अभिमान से उत्तुंग, दिन-दिन स्वच्छ (मतिवाले) शेल्व (श्रीमान्) को दास रूप से ग्रहण करनेवाले अरुणलोचन प्रभु का (स्थान) है तिरुक्कोट्टियूर्। वहाँ शीतल हो कर (आराम से) विराजित हैं गोविंद। उनके गुण-गान करनेवाले (भक्त) जिस जनपद में रहते हैं वहाँ उत्पन्न धान्य को भी ग्रहण करने में राक्षस असमर्थ हैं।

[सात्विक भक्तों के उपयोग के लिये वह धान्य है। तमोगुणवाले राक्षस उसको हड़प नहीं सकते।] 8

368. तिरुक्कोट्टियूर् की महिमा यह है कि (वृक्षों की) शाखाओं से भरे उपवन में कोकिल के वृंद गोविंद के गुणगान करते हैं। वह उत्तम सुवर्ण के बने प्राकारों से परिवृत है और समृद्ध क्षेत्रवाला है। तिरुक्कोट्टियूर् के विश्वास-स्थल (अर्थात् भगवान्) का, नरसिंह का संकीर्तन कर उनकी स्तुति करनेवालों को देखूँ तो, 'मेरे प्रभु के चिह्न हैं ये' यों कह कर सफल आशावाला हो जाऊँगा। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

369. काशिन्-वाय्-क् करम् विर्किलुम्
करवादु मार्रिलि शोरु इट्टु,
तेश-वार्त्ते पडैक्केम् वण्-कयिनार्हळ्
वाळ् तिरु-क् कोट्टियूर्,
'कुशवा ! पुरुडोत्तमा ! किळर्-
शोदियाय् ! कुरळा !' एन्रु,
पेशुवार-अडियार्हळ् एन्-तम्मै
विर्कवुम् पेरुवार्हळे । 10

370. शीत-नीर् पुडै शूळ् शेळुङ्-कळनि-
युडै-त् तिरु-क् कोट्टियूर्,
आदियान् अडियारैयुम् अडिमै
इन्रि-त् तिरिवारैयुम्,
कोदिल् पट्टर् पिरान् कुळिर्
पुदुवै मन् विट्टुचित्तन् शोल्,
एदम्-इन्रि उरैप्पवर्
इरुडीकेशनुक्कु आळरे । 11

IV. v. आशै-वाय्

371. आशै-वाय्-च् चेन्र चिन्तैयर् आहि
अन्नै अत्तन् एन् पुत्तिरर पूमि,
वाश-वार् कुळलाळ् एन्रु मयङ्गि
माळुम् एल्लै-क् कण् वाय् तिरवादे,
केशवा ! पुरुषोत्तमा ! एन्रुम्
केळल् आहिय केडिलो एन्रुम्
पेशुवार् अवर् एय्दुम् पैरुमै
पेशुवान् पुहिल् नम् परम् अन्रे । 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

369. (अकाल के कारण) एक मुद्रा के लिये मुट्ठी भर के (धान्य के) विकने पर भी (अपने पास जो है उसे) नहीं छिपा कर, प्रत्युपकार की अपेक्षा किये विना अन्न दे कर तेज-वार्ता (अर्थात् प्रशंसामय वचन) के भागी उदार हस्तवालों का आवास है तिरुक्कोट्टियूर्। वहाँ "केशव ! पुरुषोत्तम ! वर्धमान ज्योतिवाले ! वामन !" यों संकीर्तन करनेवालों के जो दास हैं वे (चाहें तो) हमें बेचने के भी अधिकारवाले होंगे। 10

370. शीतल नीर से चारों ओर घिरे समृद्ध खेतवाले तिरुक्कोट्टियूर् के आदि (पुरुष) के दासों के तथा दासता-रहित भटकनेवालों के विषय में निर्दोष भट्टनाथ, जो शीतल पुदुवै के स्वामी और विष्णुचित्त हैं (अर्थात् जिनके चित्त में विष्णु हैं), उनके वचनों को त्रुटिहीन कहनेवाले हृषीकेश के दास हैं। 11

IV. v. आशै-वाय्

[आशा के पीछे]

371. आशा के पीछे चलनेवाली चिन्ता से युक्त हो, 'माता पिता, मेरे पुत्र, भूमि, सुगंध प्रवाहित कुंतलवाली (पत्नी) इस भाव से मोहित हो, मरने की अवस्था में (उन सबों को पुकारने के लिये) मुँह खोलना छोड़कर, "केशव ! पुरुषोत्तम, और वराह बननेवाले निर्दोष !" बोलनेवालों को जो महिमा प्राप्त होती है उसे कहने में हम प्रवृत्त हों तो वह हमारे वश का नहीं। (अर्थात् उसका वर्णन हमारी शक्ति के बाहर है)। 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

372. शीयिनाल् शेरिन्दु एरिय पुण् मेल्
शेऱ्ऱल् एरि-क्-कुळम्बिरुन्दु, एङ्गुम्
ईयिनाल् अरिप्पुण्डु मयङ्गि
एल्लै-वाय्-च् चेन्ऱु शेर्वदन् मुन्नम्,
वायिनाल् नमो नारणा एन्ऱु
मत्तहत्तु इडै-क् कैहळै-क् कूप्पि-प्
पोयिनाल् पिन्नै, इत्-तिशैक्कु
एन्ऱुम् पिणै कोडुक्किलुम् पोह ओट्टारे। 2

373. शोर्विनाल् पोरुळ् वैत्तदु उण्डाहिल्
शोल्लु शोल्लु एन्ऱु शुर्ऱुम् इरुन्दु,
आर् विनविलुम् वाय् तिरवादे
अन्त-कालम् अडैवदन् मुन्नम्,
मार्वम् एन्पदु ओर् कोयिल् अमैत्तु
मादवन् एन्नुम् देय्वत्तै नाट्टि,
आर्वम् एन्पदु ओर् पू-इड वल्लार्क्कु
अरव-दण्डत्तिल् उरयलुम् आमे। 3

374 मेल् एळुन्ददु ओर् वायु-क् किळर्न्दु
मेल् मिडर्ऱिनै उळ्-एळ वाङ्गि
कालुम् कैयुम विदिर् विदिर्त्तु एरि-क्
कण्-उरक्कमदु आवदन् मुन्नम्
मूलम्-आहिय ओर्ऱै एळुत्तै
मून्ऱु मात्तिरै उळ्-एळ वाङ्गि
वेलै वण्णनै मेवुदिर्-आहिल्
विण्णहत्तिल् मेवलुम् आमे। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

372. पीव से भरे वर्धित व्रण में कृमियों के अंडों के उत्पन्न होने से और उनके फूटने से वहाँ आनेवाली मक्खियों द्वारा सब कहीं जो खुजलाहट होती है उससे मूर्च्छित हो अंतिम समय में जा पहुँचने के पहले यदि (कोई) मुँह से 'नमो नारायण' कह कर मस्तक पर हाथ जोड़ कर (शरीर को त्याग कर) चला जाता है तो प्रतिभू देने पर भी (भगवान्) फिर इस दिशा की ओर (उन्हें) आने नहीं देते। (अर्थात् नामसंकीर्तन करनेवाले आवागमन-रहित मोक्ष को प्राप्त करते हैं।) 2

373. यदि चोरी से धन रखा है तो बताओ बताओ कहते हुए चारों ओर बैठकर किसी के पूछने पर भी (प्रतिवचन देने के लिये) मुँह खोलने न पा कर, अंत काल को प्राप्त करने के पहले हृदय कहलानेवाले एक आलय का निर्माण कर, श्रीमन्नारायण कहलानेवाले देव की प्रतिष्ठा कर, प्रेम कहलानेवाला एक पुष्प समर्पित करने में जो समर्थ हैं (उनके लिये) यम दंड से छुटकारा पाना भी संभव है।

[जिन्होंने आत्म-समर्पण किया है उन्हें यम का भय नहीं।] 3

374. ऊर्ध्वश्वास वेग से चलने, कंठ अवरुद्ध होने, पैर और हाथ में कंपन होने और नयन मुँदने के पहले (सकल वेदों के) मूलभूत एक अक्षर (अर्थात् ओंकारात्मक प्रणव) का उच्चारण तीन मात्राओं के काल में कर, जिससे (उसकी ध्वनि) भीतर ही रहे, सागरवर्ण का आश्रय लेते हो तो परमधाम में पहुँच जाना भी संभव है। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

375. मडि-वळि वन्दु नीर् पुलन् शोर
वायिल् अट्टिय कञ्जियुम् मीण्डे,
कडै-वलि वार-क् कण्टम् अडैप्प-क्
कण्-उरक्कमदु आवदुन् मुन्नम्,
तोडै-वळि उम्मै नाय्हळ् कवरा
शूलत्ताल् उमै-प् पाय्वदुम् शेय्यार्,
इडै-वळियिल् नीर् कूरैयुम् इळवीर्
इरुडीकेशन् एन्रु एत्त-वल्लीरेल्। 5

376. अङ्गम् विट्टु अवै ऐन्दुम् अहर्रि
आवि मूक्किनिल् शोदित्त पिन्नै,
शङ्गम् विट्टु अवर् कैयै मरित्तु-प्
पैयवे तलै शाय्प्पदन् मुन्नम्,
वङ्गम्-विट्टु उलवुम् कडल्-पळ्ळि
मायनै मदुशूदनै मार्बिल्
तङ्ग विट्टु वैत्तु, आवदु ओर् करुमम्
शादिप्मार्क्कु एन्रुम् शादिक्कलामे। 6

377. तेन्नवन् तमर् शेप्पम् इलादार्
शे-अदवकुवार् पोल-प् पुहुन्दु,
पिन्नुम् वन् कयिर्राल् पिणित्तु एर्रि-प्
पिन् मुन्नाह इळुप्पदन् मुन्नम्
इन्नवन् इनैयान् एन्रु शोल्लि
एण्णि उळ्ळत्तिल् इरुळ्-अर नोक्कि,
मन्नवन् मदु-शूदनन् एन्पार्
वानहत्तु मन्राडिहळ् तामे। 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

375. इससे पहले कि जल (मूत्र) लिंगेंद्रिय से हो वस्त्र में टपकता है, मुँह में डाली कंजी (लपसी) अंदर नहीं जा कर मुँह के कोने से निकलती है, कंठ अवरुद्ध हो जाता है, और नयन मुँद जाते हैं, यदि हृषीकेश कह स्तुति कर सकते हो तो कुत्ते तुम्हें पिंडली में पकड़ नहीं चीरेंगे, (यम के किंकर) शूल से चुभायेंगे भी नहीं, मार्ग के बीच में तुम वस्त्र खोओगे भी नहीं । 5

376. पंच (प्राणें) के शरीर छोड़ कर निकलने, नाक में साँस की शोध (परीक्षा) कर चुकने के बाद आशा छोड़, हाथ मल, धीरे धीरे (लोगों के शोक से) सिर झुकाने के पहले, भंगों को (तरंगों को) उछाल संचरण करनेवाले सागर पर शायित मायी मधुसूदन को हृदय में अवस्थित होने दे, (अपने से) साध्य एक कर्म को सिद्ध करनेवालों के लिये यह कर्म (अर्थात् हृदय में अवस्थित होने देना) किसी भी समय साध्य है । 6

377. बैल को दमन करनेवालों के जैसे दक्षिण (दिशा) वाले (यमराज) के निर्दय किंकरों के प्रवेश कर, फिर प्रबल पाश से बाँध, लात मार, आगे-पीछे घसीट, ले जाने के पहले, जो (भगवान् के विषय में) 'वह ऐसा है, ऐसे स्वभाव का है' कह, ध्यान कर देख जिससे हृदय का अंधकार दूर हो, 'महाराज' 'मधुसूदन' बोल कीर्तन करते हैं, वे परमधाम में चौराहे पर निस्संदेह नृत्य करनेवाले होते हैं । 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

378. कूडि-क् कूडि उर्रार्हळ् इरुन्दु
कुर्रम् निर्क नर्रङ्गळ् परैन्दु,
पाडि-प् पाडि ओर् पादैयिल् इट्टु
नरि-प् पडैक्कु ओरु पा कुडम् पोले
कोडि मूडि एडुप्पदन् मुन्नम्
कोत्तुवम् उडै-क् कोविन्दनोडु,
कूडि आडिय उळ्ळत्तर्-आनाल्
कुरिप्पिटम् कडन्दु उय्यलुम् आमे। 8

379. वाय् ओरु पक्कम् वाङ्गि वलिप्प
वार्न्द नीर्-क् कुळि-क् कण्गळ् मिळर्र
ताय् ओरु पक्कम् तन्दै ओरु पक्कम्
तारमुम् ओरु पक्कम् अलर्र,
ती ओरु पक्कम् शेर्वदन् मुन्नम्
शेङ्-कण् मालोडुम् शिक्केन-च् चुर्रम्
आय् ओरु पक्कम् निर्क वल्लार्क्कु
अरव-दण्डत्तिल् उय्यलुम् आमे। 9

380. शेत्तु-प्-पोवदु ओर् पोदु निनैन्दु
शेय्युम् शेय्कैहळ् तेव-पिरान् मेल्,
पत्तराय् इरन्दार् पेरुम् पेर्रै-प्
पाळि-त् तोळ् विट्टु चित्तन् पुत्तूर्-क् कोन्,
चित्तम् नन्कु ओरुङ्गि-त् तिरुमालै-च्
चेय्द मालै इवै पत्तुम् वल्लार्,
चित्तम् नन्गु ओरुङ्गि-त् तिरुमाल् मेल्
चेन्र चिन्दै पेरुवर् तामे। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

378. एकत्रित हो हो कर, बन्धु-जन के बैठ कर (उसके) कुकर्मों के रहते सुकर्मों को प्रकट कर, रो रो कर, एक अरथी पर लिटा, गीदड़ के झुंड को एक उपहार जैसे नये कपड़े से ढक कर उठाने के पहले, कौस्तुभ (रत्न) वाले गोविंद से एक हो यदि हर्षित मनवाले होते हैं तो (पापियों के लिये) निर्दिष्ट स्थान (अर्थात् यमलोक) को लाँघ कर निस्तार प्राप्त करना भी संभव है। 8

379. मुँह एक ओर टेढ़ा हो खिंच जाता है। टपकते (अश्रु) जल के साथ धँसे नयन दृष्टि-शून्य हो जाते हैं। माता एक ओर, पिता एक ओर तथा दारा एक ओर विलपती है। (इस दशा में) आग के एक ओर आ जुटने के पहले अरुण-लोचन प्रभु से झट से बंधु हो, (उनके) एक पार्श्व में खड़े होनेवालों को यमदंड से छुटकारा पाना भी संभव है। 9

380. मर जाने के समय में होनेवाली चेष्टाओं का स्मरण कर, देवाधिराज के भक्त हो कर मरनेवाले जो हैं उनको जो पुरुषार्थ प्राप्त होता है, उसको प्रबल भुजवाले श्रीविल्लिपुत्तुर के स्वामी श्रीविष्णुचित्त ने, जब चित्त अच्छी तरह एकाग्र हो पड़ा, श्रीमन्नारायण पर यह माला रची। इन दस मालाओं के कथन में समर्थ चित्त को अच्छी तरह एकाग्र दशा प्राप्तकर कर श्रीमन्नारायण में लगी चिंता (ध्यान) को निस्संदेह प्राप्त करेंगे। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. vi. काशुम् करै-युडै

381. काशुम् करै-युडै-क्-कूरैक्कुम्
अङ्गु ओर् कर्रैक्केम्
आशैयिनाल्, अङ्गु अवत्त-प् पेर्
रडुम् मादर्हाळ्,
केशवन् पेर् इट्टु नीङ्गळ्
तेनित्तु इरुमिनो,
नायकन् नारणन् तम् अन्नै
नरकम् पुहाळ् 1

382. अङ्गु ओरु कूरै अरैक्कु
उडुप्पदन् आशैयाल्,
मङ्गिय मानिड शादियिन्
पेर् इडुम् मादर्हाळ् !
शेङ् कण् नेडु माल् शिरी दरा
एन्रु अळैत्तक्काल्,
नङ्गैहाळ् ! नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाळ्। 2

383. उच्चियिल् एण्णेयुम् शुट्टियुम्
वळैयुम् उहन्दु,
एच्चम् पोलिन्दीर्हाळ् !
एन् शेय्वान् पिरर् पेर् इट्टोर्,
पिच्चै पुक्काहिलुम्
एम् पिरान् तिरु नाममे
नच्चुमिन्, नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाळ्। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. vi. काशुम् करैयुडै

[कौड़ी और धव्वोंवाले]

381. कौड़ी और धव्वोंवाले वस्त्र की तथा वहाँ एक मुट्ठी पुआल की आशा से वहाँ (पुत्रों को) अवद्य (कुत्सित) नाम देनेवाले कुबुद्धियों ! केशव का नाम दे तुम सनेही हो कर रहो। नायक (प्रभु) नारायण (के नामवाले पुत्र) की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 1

382. वहाँ एक वस्त्र (पा), कमर पर पहन लेने की आशा से नश्वर मनुष्य जाति (वालों) का नाम देनेवाले कुबुद्धियों ! (पुत्र को भगवान् का नाम दे उसे) 'अरुणलोचन सर्वेश्वर ! श्रीधर !' बोल कर पुकारती हो तो, गुणवतियों ! नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 2

383. सिर पर तेल और (माथे पर) लटकन और (हाथ पर) वलय की कामना कर, ऐ संतान से भासमानों, क्या करने (किस प्रयोजन से) (पुत्र को) दूसरे किसी का नाम दिया ? यदि भीख माँग कर (ही जीवन बिताना पड़ता है, तो) भी मेरे प्रभु के नाम ही के लोलुप हो जाओ। नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

384. मानिड शादियिल् तोन्रिर्रु
ओर् मानिड शादियै
मानिड शादियिन् पेर् इट्टाल्
मरुमैक्कु इल्लै,
वानुडै मादवा ! कोविन्दा !
एन्रु अळैत्तक्काल्,
नानुडै नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाल्। 4

385. मलम्-उडै ऊत्तैयिल् तोन्रिर्रु
ओर् मल ऊत्तैयै,
मलम्-उडै ऊत्तैयिन् पेर् इट्टाल्
मरुमैक्कु इल्लै,
कुलम्-उडै-क् कोविन्दा ! कोविन्दा !
एन्रु अळैत्तक्काल्
नलम्-उडै नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाळ्। 5

386. नाडु-नहरुम् अरिय मानिड-प् पेर् इट्टु,
कूडि अळुङ्गि-क् कुळियिल्
वोळ्न्दु वळुक्कादे,
शाडु-इर-प् पाय्न्द तलैवा !
तामोदरा ! एन्रु
नाडुमिन्, नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाळ्। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

384. मनुष्य जाति में उत्पन्न एक मनुष्य जातिवाले को मनुष्य जातिवाले का नाम देते हो तो (उससे) परलोक का कुछ नहीं होता। 'परमधाम वाले माधव ! गोविंद' बोल कर पुकारते हो, तो मेरे नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 4

385. मलवाले कचरे से उत्पन्न एक मलमय कचरे को मलवाले कचरे का नाम देते हो तो (उससे) परलोक का कुछ नहीं होता। 'कुलीन गोविंद ! गोविंद !' बोल पुकारते हो, तो सद्गुणवाले नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 5

386. जनपद और नगर को विदित हो इस प्रकार (किसी) मनुष्य का नाम (स्वार्थवश) दे कर (उस पुत्र से) एक हो, डूब, गड्ढे में गिर भ्रष्ट हुए बिना शकट जिससे ध्वस्त हो इस प्रकार टूट पड़नेवाले प्रमुख ! दामोदर ! कह (उनकी) वांछा करो नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

387. मण्णिल् पिरन्दु मण्-आहुम्
मानिड-प् पेर् इट्टु, अङ्गु
एण्णम् ओन्रु इन्रि इरुक्कुम्
एळै मनिशर्हाळ् !
कण्णुक्कु इनिय करुमुहिल्
वण्णन् नाममे
नण्णुमिन्, नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाल्। 7

388. नम्बि पिम्बि एन्रु
नाट्टु मानिड-प् पेर् इट्टाल्,
नम्बुम् पिम्बुम् एल्लाम्
नालु नाळिल् अळुङ्गि-प् पोम्,
शेम्-पेरुन् तामरै-क् कण्णन्
पेर् इट्टु अळैत्तक्काल्,
नम्बिहाळ् ! नारणन् तम्
अन्नै नरकम् पुहाळ्। 8

389. ऊत्तै-क् कुळियिल् अमुदम्
पाय्वदु पोल्, उङ्गळ्
मूत्तिर-प् पिळ्ळैयै एन्
मुहिल् वण्णन् पेर् इट्टु
कोत्तु-क् कुळैत्तु-क्
कुणालम् आडि-त् तिरिमिनो,
ना-त् तहु नारणन् तम्
अन्नै नरकम पुहाळ् 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

387. मिट्टी से जन्म ले मिट्टी हो जानेवाले मनुष्य का नाम दे कर, वहाँ (परलोक) के विचार से शून्य हो कर रहनेवाले चपल मनुष्यों ! नयनों को मधुर नील मेघवर्ण के नाम के पास जाओ। (अर्थात् नाम में रुचि रखो।) नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 7

388. 'नम्बि' 'बिंबि' जैसे जनपद के मनुष्य का नाम देते हो तो नम्बु और बिंबु सब चार दिन में चूर चूर हो जायँगे। अरुण विशाल पंकजलोचन का नाम दे कर पुकारते हो तो गुणवालों ! नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 8

389. अशुचि गर्त में अमृत के प्रवाहित होने के जैसे तुम्हारे मूत्र-पुत्र को (अर्थात् मूत्र-द्वार से निकले शुक्ल और शोणित के परिणामभूत पुत्र को) मेरे जलदवर्ण का नाम दे (उसके द्वारा उनसे) संबद्ध हो, संमिलित हो यथेच्छ नर्तन कर घूमते रहो। जीभ के (कहने) योग्य नारायण की माता नरक में प्रविष्ट नहीं होती। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

390. शीर्-अणि माल् तिरु नाममे इड-त् तेर्रिय,
वीर्-अणि तोल् पुहळ् विट्टु चित्तन् विरित्त,
ओर्-अणि ओण् तमिळ्
ओन्पदोडु ओन्रुम् वल्लवर्,
पेर्-अणि वैकुन्दत्तु एन्रुम् पेणि इरुप्परे। 10

IV. vii. तङ्गैयै मूक्कुम्

[कण्डम् एन्नुम् तिरुप्पदि]

391. तङ्गैयै मूक्कुम् तमैयनै-त्-तलैयुम्
तडित्त एम्-दाशरति पोय्,
एङ्गुम् तन् पुहळा इरुन्दु अरशु-आण्ड
एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै,
गङ्गै गङ्गै एन्र वाचकत्ताले
कडु-विनै कळैन्दिड किर्कुम्,
गङ्गैयिन् करै मेल् कै तोळ निन्र
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे 1

392. चलम् पोदि उडम्बिल् तळल्-उमिळ् पेळ्-वाय्-च्
चन्दिरन् वेङ् कदिर् अञ्ज,
मलर्न्दु एळुन्दु अणवि मणि-वण्ण उरुविन्
माल् पुरुडोत्तमन् वाळ्वु,
नलन्-तिहळ् शडैयान् मुडि-क् कोन्रै मलरुम्
नारणन् पाद-त् तुळायुम्,
कलन्दु इळि पुनलाल् पुहर् पडु गङ्गै-क्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

390. मंगल गुणों से अलंकृत प्रभु का श्रीनाम देने का आदेश देनेवाले, वीर्य से अलंकृत और अनादि कीर्तिमान् विष्णुचित्त से वर्णित अनुपम अलंकारों से युक्त समुज्ज्वल तमिल के नौ (पदों) से समन्वित एक के (अर्थात् दस पदों के) कथन में जो समर्थ हैं वे अति सुंदर श्रीवैकुंठ में सादर सर्वदा रहेंगे। 10

IV. vii. तङ्गैयै मूक्कुम्

[अनुजा की नासा]

[पिछले दो दशकों में भगवान् से विमुख रहनेवाले संसारियों को उपदेश दे उन्हें भक्त बनाने का प्रयत्न किया है। इस दशक में पुनः संत भगवान् के गुणानुभव में लग जाते हैं। बदरिकाश्रम के मार्ग गंगातीर पर स्थित श्रीखंड नामक क्षेत्र की महिमा गाते हैं जहाँ भगवान् पुरुषोत्तम नाम से विराजित हैं। वह क्षेत्र आजकल देवप्रयाग नाम से प्रसिद्ध है और वहीं अलकनंदा और गंगा का संगम होता है।]

391. (रावण की) अनुजा की नासा और (शूर्पणखा के) अग्रज के सिर काटनेवाले हमारे दाशरथि (दशरथ के पुत्र राम) ने जा कर सर्वत्र अपनी ख्याति बनाए रख शासन किया। हमारे उन पुरुषोत्तम का स्थान श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है जो गंगा के तट पर स्थित है और (सब से) अंजलि बाँध पूजित है, गंगा-जो गंगा गंगा वाचक (शब्द) से घोर पापों को उखाड़ फेंकने में समर्थ है। 1

392. (हिम अंशु होने के कारण) जल से भरे शरीरवाला चंद्र तथा अग्नि को उगलनेवाले विशाल मुख वाला और उष्ण किरण वाला सूर्य जिसमें भयभीत हुए इस प्रकार विकसित (और) वर्धित हो व्याप्त होनेवाले मणिवर्ण के रूपवाले प्रभु पुरुषोत्तम (के रहने) का स्थान गंगा (के तट पर स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है—गंगा जो रक्त वर्ण से उद्भासित जटाधर (शिव) के शिर के कोन्रै पुष्प तथा नारायण की पादतुलसी से युक्त हो गिरनेवाले जल की कांति से संपन्न है। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

393. अदिर् मुकम्-उडैय वलम्-पुरि कुमिळ्त्ति
अळल् उमिळ् आळि कोण्डु एरिन्दु, अङ्गु
एदिर्-मुक अशुरर् तलैहळै इडरुम्
एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै,
चतुमुकन् कैयिल् चतु-प् पुयन् ताळिल्
शङ्करन् शडैयिनिल् तङ्गि,
कतिर् मुक-मणि कोण्डु इळि पुनल् गङ्गै-क्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 3

394. इमैयवर् इरुमान्दु इरुन्दु अरशु आळ
एर्रु वन्दु एदिर् पोरु शेनै,
नम-पुरम् नणुह नन्दकम् विशिरुम्
नम् पुरुडोत्तमन् नगर् तान्,
इमवन्तम् तोडङ्गि इरुङ्कडल् अळवुम्
इरु करै उलहु इरैत्तु आड,
कमै उडै-प् पेरुमै-क् कङ्गैयिन् करै मेल्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 4

395. उळुवदु ओर् पडैयुम् उलक्कैयुम् विल्लुम्
ओण् शुडर् आळियुम् शङ्गुम्,
मळुवोडु वाळुम् पडैक्कलम् उडैय
माल् पुरुडोत्तमन् वाळ्वु,
एळुमैयुम् कूडि ईण्डिय पावम्,
इरै-प् पोळुदु अळविनिल् एल्लाम्,
कळुविडुम् पेरुमै-क् कङ्गैयिन् करै मेल्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

393. घोषयुक्त मुँहवाला दक्षिणावर्त (शंख) बजा, अग्नि उगलनेवाले चक्र का प्रयोग कर, आक्रमण करनेवाले असुरों के सिरों को ठोकर मारने वाले हमारे पुरुषोत्तम का स्थान गंगा (के तीर पर स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा—जिसका जल चतुर्मुख (ब्रह्मा) के हाथ में, चतुर्भुज (विष्णु) के चरण में तथा शंकर की जटा में रुक किरणवाले मणियों को लाते गिरता है। 3

394. देवों के घमंडी हो बैठ राज करते समय (अपनी क्षमता पर) भरोसा रख आ कर आक्रमण करनेवाली (असुरों की सेना) जिससे यमपुर पहुँच गई इस प्रकार नांदक (खड्ग) चलानेवाले हमारे पुरुषोत्तम का नगर तो है गंगा के तीर पर (अवस्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर, गंगा—जिसकी महिमा ऐसी है कि हिमवान् से लेकर विशाल समुद्र तक कोलाहल करते हुए स्नान करनेवाले दोनों तीरों के लोगों (के पापों को दूर करने की क्षमता वह रखती है)। 4

395. जोतनेवाले अद्वितीय हल और मुसल, और धनुष, और समुज्ज्वल तेजोमय चक्र, और शंख और परशु के साथ खड्ग ये जिनके आयुध हैं, उन प्रभु पुरुषोत्तम का स्थान गंगा के तीर पर (स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा—जिसकी महिमा ऐसी है कि सप्त जन्मों में मिला कर संचित सारे पापों को क्षणकाल में वह धो डालती है। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

396. तलैप्पेय्दु कुमुरि-च् चलम् पोदि मेकम्
चल चल पोळिन्दिड-क् कण्डु,
मलै-प् पेरुङ् कुडैयाल् मरैत्तवन् मदुरै
माल् पुरुडोत्तमन् वाळ्वु,
अलैप्पुडै-त् तिरै-वाय् अरुन्-तव मुनिवर्
अवपिरतम् कुडैन्दु आड,
कलप्पैहळ् कोळिक्कुम् गङ्गैयिन् करै मेल्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 6

397. विर्-पिडित्तु इरुत्तु वेळत्तै मुरुक्कि
मेल् इरुन्दवन् तलै शाडि,
मर्-पोरुदु एळ-प् पाय्न्दु अरैयनै उदैत्त
माल् पुरुडोत्तमन् वाळ्वु,
अर्पुदम् उडै ऐरावत मदमुम्
अवर्-इळम् पडियर् ओण् शान्दुम्,
कर्पक मलरुम् कलन्दु इळि गङ्गै-क्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 7

398. तिरै-पोरु कडल् शूळ् तिण् मडिळ् तुवरै
वेन्दु-तन् मैत्तुनन् मार्क्काय,
अरशिनै अविय अरशिनै अरुलुम्
अरि पुरुडोत्तमन् अमर्वु,
निरै निरैयाह नेडियन यूपम्
निरन्तरम् ओलुक्कु विट्टु, इरण्डु
करै पुरै वेळ्वि-प् पुहै कमळ् गङ्गै-क्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

396. जल से भरे मेघों के एकत्रित हो, गरज, छल छल शब्द से बरसते देख, पर्वत-रूप बड़े छाते से निवारण करनेवाले, प्रबल मधुरा के प्रभु पुरुषोत्तम का स्थान गंगा के तीर पर स्थित श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा—जिसकी उछलनेवाली तरंगों में दुष्कर तपवाले मुनिजन अवभृथ-स्नान करते हैं और (याग-भूमि को जोतने में उपयुक्त) हल-समूह बहते हैं।

[अवभृथ-स्नान—यज्ञांत स्नान।] 6

397. (कंस की आयुधशाला में प्रविष्ट हो) धनुप ग्रहण कर तोड़, हस्ती को मरोड़, उस पर बैठनेवाले का सिर काट, मल्लों से युद्ध कर, उछल कर कूद राजा (कंस) को लात मारनेवाले प्रभु पुरुषोत्तम का स्थान गंगा (के तीर पर स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा अद्भुत ऐरावत के मदजल, वहाँ की तरुण शरीरवाली (अप्सराओं) के शोभायमान चंदन, कल्प (वृक्ष) के पुष्प, सब से युक्त हो उतरती है। 7

398. तरंगें जहाँ टकराती हैं ऐसे सागर से घिरे दृढ़ प्राकारवाले द्वारावती के राजा, अपने फुफेरे भाइयों के हो कर, (शत्रुओं का) राजत्व जिससे ध्वस्त हुआ इस प्रकार (उन्हें) राजत्व प्रदान करनेवाले हरि पुरुषोत्तम जहाँ विराजमान हैं, वह गंगा (के तीर पर स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा—जिसके दोनों तीरों पर समान रूप से पंक्ति पंक्ति से ऊँचे यूप (स्तंभ) निरंतर (लगातार) स्थापित हैं, और यज्ञ के धूम से सुगंधित हैं। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

399. वड-दिशै मदुरै शाळक्-किरामम्
वैकुन्दम् तुवरै अयोत्ति,
इडम्-उडै वदरि इड-वहै युडैय
एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै,
तड-वरै अदिर-त् तरणि विण्डु इडिय-त्
तलै-प् परि-क् करै मरञ्-चाडि,
कडलिनै-क् कलङ्ग-क् कडुत्तिळि-गङ्गै-क्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 9

400. मून्रु एळुत्तु-अदनै मून्रु एळुत्तु-अदनाल्
मून्रु एळुत्तु आक्कि, मून्रु एळुत्तै
एन्रु कोण्डु इरुप्पार्क्कु इरक्कम् नन्गु उडैय
एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै,
मून्रु अडि निमिर्त्तु मून्रिनिल् तोन्रि
मून्रिनिल् मून्रु उरुवानान्,
कान्-तडम् पोळिल् शूळ् गङ्गैयिन् करै मेल्
कण्डम् एन्नुम् कडि-नगरे। 10

401. पोङ्गु-ओलि गङ्गै-क् करै मलि कण्डत्तु
उरै पुरुडोत्तमन् अडि मेल्,
वेङ्-कलि नलिया विल्लिपुत्तुर्-क् कोन्
विट्टु चित्तन् विरुप्पु-उर्रु,
तङ्गिय अन्पाल् शेय् तमिळ् मालै
तङ्गिय नः-उडैयार्क्कु,
गङ्गैयिल् तिरु-माल् कळल् इणै-क् कोळे
कुळित्तु इरुन्द कणक्कामे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

399. उत्तर दिशा की मधुरा, शालग्राम, बैकुंठ, द्वारावती, अयोध्या, विस्तारवाला वदरी—ये जिनके आवास हैं, हमारे उन पुरुषोत्तम का स्थान वह गंगा (के तीरपर स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा—जो इतने वेग से बहती है कि ऊँचे पर्वत काँप उठते हैं, धरणी टूट ढहती है, तीर पर स्थित वृक्षों के शिखर तक उछल वह उन्हें गिरा देती हैं, और सागर क्षुब्ध हो जाता है। 9

400. 1 तीन अक्षरवाले उस (प्रणव) को, 2 तीन अक्षरवाले उस (निरुक्त नामक ग्रन्थ में कथित प्रक्रिया) से (तीन पदात्मक) 3 तीन अक्षर वना (मान), (उन) 4 तीन अक्षरों को मन में रखनेवालों पर अधिक कृपा (करने)वाले हमारे पुरुषोत्तम का स्थान सुगंधित तड़ागों और उपवनों से परिवृत गंगा के तीर पर (स्थित) श्रीखंड नामक उत्कृष्ट नगर है, गंगा—जो उस भगवान् की है जो (उस प्रणव को) 5 तीन पदों में वर्धित कर, 6(जीव-संबंध) तीन (गुणों) को प्रकाशित कर, (उन गुणों के 7 प्रतिसंबंधी) तीन (गुणों) से 8 तीन रूपवाले हुए।

[1. तीन अक्षरवाला प्रणव—प्रणव में तीन अक्षर हैं—अकार, उकार और मकार (अ, उ और म्)।

2. तीन अक्षरवाला निरुक्त—छः वेदांगों में से एक निरुक्त है। 'निरुक्त' शब्द तीन वर्ण स्वर हैं।

3. तीन अक्षर बना—प्रणव का एक एक अक्षर एक एक अर्थबोधक पद माना जाता है। अतः तीन अक्षर तीन पद माने-जाते हैं।

4. तीन अक्षरों को मन में रखना—तीन अक्षर तीन पद हुए। प्रथम पद 'अ' में यह अर्थ कहा जाता है कि भगवान् ही कारण, स्वामी और रक्षक है। द्वितीय पद 'उ' का अर्थ है—जीव परमात्मा मात्र का दास है। तृतीय पद 'म्' का अर्थ है—जीव ज्ञानस्वरूप है और शरीर से अतिरिक्त है।

5. प्रणव से आठ अक्षरवाले अष्टाक्षर मंत्र या मूल मंत्र वर्धित हुआ जिसमें तीन पद हैं—ओं, नमः और नारायणाय।

6. (जीव संबंधी) तीन अर्थ—प्रथम पद से यह कहा जाता है कि जीव परमात्मा से रक्ष्य है; द्वितीय पद से शरणागति ही जीव के निस्तार का उपाय है, और तृतीय पद से परमात्मा की सेवा ही जीव का प्राप्य पुरुषार्थ है।

7. तत्प्रतिसंबंधी तीन अर्थ—परमात्मा ही जीवात्मा का रक्षक है, वही उपाय है और वही सेवनीय है।

8. तीन रूपवाले—परत्व से युक्त होना, सौलभ्य से युक्त होना और भोग्यता से युक्त होना।

(ये अर्थ अष्टाक्षर मंत्र में मुख्यतया प्रतिपादित हैं और प्रणव उस मंत्र का प्रथम तथा मुख्य पद है।)] 10

401. उछलती घोषवाली गंगा के तीर पर (स्थित) सुगम श्रीखंड (नगर) में विराजित पुरुषोत्तम के चरण में, क्रूर कलि-पीड़ा से रहित श्रीविल्लिपुत्तुर के स्वामी विष्णुचित्त ने वांछा से युक्त हो स्थिर भक्ति से तमिल (पदों) की यह माला रची। यह जिनकी जिह्वा पर टिकती है, उनको गंगा में श्रीमन्नारायण के चरणयुग के मूल में स्नान कर विराजित होने की-सी दशा प्राप्त होती है। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. viii. मा-तवत्तोन्

402. मा-तवत्तोन् पुत्तिरन् पोय् मरि कडल्-वाय्
माण्डानै,
ओदुवित्त तक्कणैया उरु-उरुवे
कोडुत्तान् ऊर्,
तोद-वत्ति-त् तूय्-मरैयोर् तुरै पडिय-त्
तुळुम्बि एङ्गुम्
पोदिल् वैत्त तेन् शेरियुम्
पुनल् अरङ्गम् एन्पदुवे । 1

403. पिरप्पहत्ते माण्डोळिन्द
पिळ्ळैगलै नाल्वरैयुम्,
इरै-प् पोळुदिल् कोणर्न्दु कोडुत्तु
ओरुप्पडुत्त उरैप्पन् ऊर्
मरै-प् पेरुम् तो वळर्त्तु इरुप्पार्
वरु विरुन्दै अळित्तु इरुप्पार्
शिरप्पुडैय मरैयवर् वाळ्
तिरु-अरङ्गम् एन्पदुवे । 2

404. मरु-मगन्-तन् शान्तदियै
उयिर् मीट्टु मैत्तुनन्-मार्,
उरु-मकत्ते वीळामे
गुरु मुकमाय्-क् कात्तान् ऊर्,
तिरु-मुकमाय्-च् चेङ् कमलम्
तिरु-निरमाय्-क् करुङ् कुवळै
पोरु-मुकमाय् निन्रु अलरुम्
पुनल् अरङ्गम् एन्पदुवे । 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. viii. मानवत्तोन्

[महा तपस्वी]

(श्रीरंग पर तीन दशक)

402. महातपस्वी (आचार्य सांदीपिनी) के पुत्र को, जो (बहुत काल पहले) तरंगित समुद्र में जा कर मर गया था, अध्यापन कर्म की दक्षिणा (गुरु-दक्षिणा) के रूप में जैसा के तैसा वही रूप जिन्होंने दे दिया उनका स्थान श्रीरंग कहलाता है जिस (कावेरी नदी) के जल में धौत-वस्त्र-धर शुद्ध वेदवित् घाट में स्नान करते हैं और जल के उच्छल कर उठने से (संचालित) पुष्पों में संचित मधु प्रवाहित होता है। 1

403. सूतिका गृह में ही मृत हो जानेवाले चारों पुत्रों को क्षण-काल में ला दे कर (माता-पिता को) संतुष्ट करनेवाले शक्तिमान का स्थान श्रीरंग कहलाता है जिसमें वेदोक्त महान् अग्नि को वर्धित करनेवाले तथा आगत अतिथियों का आदर-सत्कार करनेवाले महत्त्व-युक्त वेदवित् रहते हैं। 2

404. भानजे (अभिमन्यु) की संतति (परीक्षित्) को पुनर्जीवित कर के फुफेरे भाई (पांडव) जिससे (भारत-युद्ध रूप) महा-यज्ञ में पतित न हुए इस प्रकार गुरु-रूप से उनकी रक्षा करनेवाले का स्थान श्रीरंग कहलाता है जिसके जल में रक्त कमल (भगवान् के) श्रीमुख जैसे और नील कुवलय (उनके) श्रीवर्ण जैसे हो कर मानों स्पर्धा करते हुए विकसित होते हैं। 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

405. कून् तोळुत्तै शितहु उरैप्प-क्
कोडियवळ् वाय्-क् कोडिय शोल् केट्टु
ईन्रेडुत्त तायरैयुम् इराच्चियमुम्
आङ्गु ओळिय,
कान्-तोडुत्त नेरि पोहि-क्
कण्टकरै-क् कळैन्दान् ऊर्
तेन् तोडुत्त मलर्-च् चोलै-त्
तिरु-अरङ्गम् एन्पदुवे । 4

406. पेरु-वरङ्गळ् अवै पर्रि-प्
पिळक्कुडैय इरावणनै
उरु अरङ्ग-प् पोरुदु अळित्तु इव्
उलहिनै-क् कण् पेरुत्तान् ऊर्
कुरवु अरुम्ब-क् कोङ्गु अलर-क्
कुयिल् कूवुम् कुळिर् पोळिल् शूळ्
तिरु-अरङ्गम् एन्पदुवे
एन् तिरुमाल् शेर्वु-इडमे । 5

407. कीळ् उलहिल् अशुरर्गळै-क्-
किळङ्गु इरुन्दु किळरामे,
आळि विडुत्तु अवरुडैय
करु अळित्त अळिप्पन् ऊर्
ताळै मडल्-ऊडु उरिञ्जि-त्
तवळ वण्ण-प् पोडि अणिन्दु
याळिन् इशै वण्डिनङ्गळ्
आळम् वैक्कुम् अरङ्गमे । 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

405. कुबड़ी दासी ने कुटिल वचन कहे। उससे क्रूर वन जानेवाली (कैकेयी) के कठिन वचन सुन जन्म देनेवाली माता (कौसल्या) को और राज्य को वहीं तज, कानन के भीतरी मार्ग से जा कर कंटकों (राक्षसों) को निरानेवाले का स्थान श्रीरंग कहलता है जो मधु बहानेवाले पुष्पों से भरे उपवन से भूषित है। 4

406. महान् वरों को प्राप्त कर अत्याचार करनेवाले रावण का शरीर जिससे छिन्न-भिन्न हुआ इस प्रकार लड़कर, संहार कर, इस लोक की रक्षा करनेवाले मेरे श्रीमन्नारायण जिस स्थान में जा निवास करते हैं वह श्रीरंग कहलाता है जो शीतल उपवनों से परिवृत है जिनमें कुरवक अंकुरित होते हैं, 'कोङ्गु' पुष्प विकसित होते हैं, और कोकिल कूक उठते हैं। 5

[कोङ्गु-द्रु मोत्पल, कर्णिकार।]

407. अधो लोकों में स्थित असुर, जिसमें समूल रह कर न उठें, इस प्रकार चक्र का प्रयोग कर उनके गर्भों का नाश करनेवाले संहारक का स्थान श्रीरंग है जिसमें वीणा-नादवाले भ्रमर-बृंद केतक दलों से हो कर टकराते हुए जा, उनके धवल वर्ण के (मकरंद) रज धारण कर गुंजन करते रहते हैं। 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

408. कोळुप्पुडैय शेळुङ्-कुरुदि
कोळुत्तु इळिन्दु कुमिळ्त्तु एरिय
पिळक्कुडैय अशुरर्गळै-प्
पिणम् पडुत्त पेरुमान् ऊर्
तळुप्पुरिय चन्दनङ्गळ्
तडवरै-वाय् इर्त्तु-क् कोण्डु
तेलिप्पुडैय काविरि वन्दु
अडि तोळुम् शीर् अरङ्गमे । 7

409. वल्लेयिर्रु-क् केळलुमाय्
वाळ् एयिर्रु-च् चीयमुमाय्
एल्लै इल्ला-त् तरणियैयुम्
अवुणनैयुम् इडन्दान् ऊर्
एल्लि अम्-पोदु इरुळ् चिरै वण्डु
एम्पेरुमान् गुणम् पाडि
मल्लिकै वेण्-शङ्कु ऊदुम्
मदिळ् अरङ्गम् एन्पदुवे । 8

410. कुन्राडु कोलु-मुहिल् पोल्
कुवळैहळ् पोल् कुरै कडल् पोल्
निन्राडु कण मयिल् पोल्
निरम्-उडैय नेडुमाल् ऊर्
कन्रूडु पोळिल् तुळैन्दु
कोडि इडैयार् मुलै अणवि
मन्रूड्ड तेन्रल् उलाम्
मदिळ् अरङ्गम् एन्पदुवे । 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

408. जिससे मांस-मिश्रित निबिड रक्त-धारा सबुद्बुद् तरंगित हो निरंतर प्रवाहित हो इस प्रकार अत्याचारी असुरों को शव बना देनेवाले स्वामी का स्थान श्रीरंग है जहाँ ध्वनित कावेरी (नदी) चंदन वृक्षों को जिनका आलिंगन नहीं किया जा सकता उन्नत पर्वत से बहाते हुए ला कर, (प्रभु के) चरण में प्रणाम करती रहती है। 7

409. वलिष्ठ दंष्ट्रा से युक्त वराह हो, तथा उद्भासित दंष्ट्रा से युक्त (नर) सिंह हो कर (क्रमशः) सीमारहित धरणी का उद्धरण तथा असुर का विदारण करनेवाले (भगवान्) का स्थान प्राकार-परिवृत श्रीरंग कहलाता है जहाँ सायंकाल के समय विशाल पंखवाले भ्रमर प्रभु के गुण गान करते हुए मल्लिका (पुष्प) रूपी धवल-शंख की ध्वनि करते हैं। 8

410. पर्वत पर झूमते वृहत् मेघ के सदृश, कुवलय पुष्पों के सदृश, ध्वनित सागर के सदृश, सदैव नृत्य करनेवाले मयूर-गण के सदृशवर्णवाले सर्वेश्वर का स्थान श्रीरंग कहलाता है जहाँ दक्षिण पवन पर्वत के उद्यानों से प्रविष्ट हो कर वल्ली-सम सुमध्याओं के पयोधर का आलिंगन कर के चौराहे पर संचार करता रहता है। 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

411. परु-वरङ्गळ्-अवै पर्रि-प्
पडै आलित्तु एळुन्दानै
शेरु अरङ्ग-प् पोरुदु अळित्त
तिरुवाळन् तिरुप्पदि मेल्
तिरु अरङ्ग-त् तमिळ् मालै
विट्टुचित्तन् विरित्तन कोण्डु
इरुवर्-अङ्गम् एरित्तानै
एत्त वल्लार् अडियोमे। 10

IV. ix. मरवडियै

412. मरवडियै-त्-तम्बक्कु वान् पणैयम्
वैत्तु-प्-पोय् वानोर् वाळ
शेरुवुडैय तिशै-क् करुमम् तिरुत्ति
वन्दु उलहु आण्ड तिरु-माल् कोयिल्
तिरुवडि-तन् तिरु-उरुवुम् तिरुमङ्गै
मलर्-क् कण्णुम् काट्टि निन्रु
उरुवुडैय मलर् नीलम् कार्राट्ट
ओशलिक्कुम् ओळि अरङ्गमे। 1

413. तन्-अडियार् तिरत्तहत्तु-त्-
तामरैयाळ् आहिलुम् शिदहु उरैक्कुमेल्
एन्-अडियार् अदु शेय्यार् शेय्दारेल्
नन्रु शेय्दार् एन्पर् पोलुम्
मन्नुडैय विपोडणर्काय् मदिळ् इलङ्गै-त्
तिशै नोक्कि मलर्-क् कण् वैत्त
एन्नुडैय तिरु-अरङ्गर्कु
अन्रियुम् मर्रु ओरुवर्क्कु आळावरे 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

411. महत्तर वरों को प्राप्त कर समर में गर्वित हो जो उठा, युद्ध रंग में लड़ कर उसका संहार करनेवाले वीर श्री संपन्न (भगवान्) के श्रीक्षेत्र पर श्रीविष्णुचित्त ने श्रीरंग-तमिल-माला रची। (मधुकैटभ नामक) दो असुरों के अंग को दग्ध करनेवाले (भगवान्) की इस (माला) के द्वारा स्तुति करने में जो समर्थ हैं, उनके हम दास हैं।

[इस दशक के हर एक पद में श्रीरंग शब्द का उल्लेख होने के कारण इसको 'श्रीरंग-तमिल-माला' कहते हैं।] 10

IV. ix. मरवडियै

[पादुका को]

(श्रीरंग-क्षेत्र)

412. पादुका को अनुज (भरत) के पास उत्तम प्रतिभू रख जा, देवताओं के सुख के लिये युद्ध के कारणभूत (दक्षिण) दिशा के (रावणवध आदिक) कार्यों को संपन्न कर, प्रतिनिवृत्त हो, लोक की रक्षा करनेवाले श्रीमन्नारायण का स्थान उज्ज्वल श्रीरंग है जहाँ परमात्मा के श्रीरूप और महालक्ष्मी के कमल लोचन को दिखानेवाला रूपवान् नील उत्पल वायु के बहने से संचलित होता रहता है। 1

413. अपने दासों के विषय में यदि साक्षात् पद्मजा (लक्ष्मी जी) भी कोई उलाहना करती हैं तो भगवान् कहेंगे "मेरे दास तो वह नहीं करेंगे ; यदि किया तो समीचीन ही किया है"। नित्यता से संपन्न विभीषण के हो कर प्राकारावृत लंका की दिशा की ओर कमल-लोचन को रखनेवाले मेरे प्रभु श्रीरंगनाथ को छोड़ कर क्या और किसी अन्य के दास होंगे ? 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

414. करुळ्-उडैय पोळिल् मरुदुम्
कद-क् कळिरुम् पिलम्बनैयुम् कडिय मावुम्
उरुळ्-उडैय शकटरैयुम् मल्लरैयुम्
उडैय विट्टु ओशै केट्टान्,
इरुळ्-अहर्रुम् एरि कदिरोन् मण्डलत्तूडु
एर्रि वैत्तु एणि वाङ्गि
अरुळ् कोडुत्तिट्टु अडियवरै
आट्-कोळ्वान् अमरुम् ऊर् अणि अरङ्गमे। 3

415. पदिन्-आराम् आयिरवर् तेविमार्
पणि शेय्य तुवरै एन्नुम्
अदिल् नायकर् आहि वीर्रिरुन्द
मणवाळर् मन्नु कोयिल्
पुदु-नाण् मलर्-क् कमलम् एम्पेरुमान्
पोन् वयिर्रिल् पूवे पोल्वान्
पोदु नायकम् पावित्तु इरुमान्दु
पोन् शाय्क्कुम् पुनल्-अरङ्गमे। 4

416. आमैयाय्-क् कङ्गैयाय् आळ् कडलाय्
अवनियाय् अरु वरैगळ्-आय्
नान्-मुकनाय् नान्-मरैयाय् वेळ्वियाय्-त्
तक्कणैयाय्-त् तानुम् आनान्,
शेमम्-उडै नारदनार् शेन्रु शेन्रु
तुदित्तु इरैञ्च-क् किडन्दान् कोयिल्
पू मरुवि-प् पुळ्-इनञ्गळ्
पुळ्-अरैयन् पुहळ् कुळरुम् पुनल् अरङ्गमे। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

414. क्रोध से युक्त (हरेभरे होने के कारण) उपवन-सम (यमल) अर्जुन (वृक्ष), क्रोधित (कुवलयापीड) हाथी, प्रलंव, (केशी नामक) क्रूर अश्व, चक्रवाला शकट और मल्ल, सब को तोड़कर (प्रशंसात्मक) शब्द सुननेवाले और अंधकार-विनाशक किरणों से उद्भासित सूर्य-मंडल के द्वारा दासों को ऊपर चढ़ा, सीढ़ी को हटा (जिससे वे न लौट सकें) अपनी कृपा प्रदान कर (उनकी) सेवा को स्वीकार करनेवाले (प्रभु) जिस नगर में विराजमान हैं, वह है सुंदर श्रीरंग। 3

415. द्वारका कहलानेवाले (नगर) में, जहाँ षोडश सहस्र देवियाँ सेवा करती थीं, नायक हो कर जो दूल्हे (के समान) विराजमान थे उनका आश्रित आलय श्रीरंग है जिसमें अभिनव विकसित कमल पुष्प प्रभु के कमनीय उदर में (उत्पन्न) कमल के समान सब के नायक (प्रथम) होने की भावना कर के गर्व के साथ (अन्य पुष्पों की) छवि को पराभूत करता है। 4

416. कूर्म हो, गंगा हो, अगाध सागर हो, अपनी (भूमि) हो, उन्नत पर्वत-गण हो, चतुर्मुख हो, चार वेद हो, यज्ञ हो, दक्षिणा हो कर तथा स्वयं आप ही हो कर भगवान् जहाँ शयन करते हैं वह मंदिर है श्रीरंग जहाँ (ब्रह्म की उपासना-रूप) क्षेम से संपन्न नारद (महर्षि) जा जा कर, स्तुति कर, प्रणति करते रहते हैं और जहाँ पुष्पों पर बैठे पक्षी-गण पक्षि-राज की प्रशंसा में चहकते रहते हैं।

[इस पद में नीचे लिखी कहानी का उल्लेख है—

श्रीकृष्ण की राजधानी द्वारका की महिमा, समृद्धि तथा वहाँ श्रीकृष्ण की श्रेष्ठता को सुन कर एक समय नृपति-वर्ग उनसे मित्रता बढ़ाने के उद्देश्य से अपनी सेना सहित आ पहुँचे। श्रीकृष्ण ने सभी का स्वागत कर आदर-सत्कार किया। बाद मे एक विशाल मंडप में राजाओं को आसन दे कर स्वयं एक सिंहासन पर विराजमान हुए। उस समय महर्षि नारद वहाँ आये और कृष्ण को प्रणाम कर कहा—"पुरुषोत्तम! देवों के मध्य में तुम आश्चर्य हो और धन्य हो। तुम्हारे समान दूसरा कोई नहीं।"

("आश्चर्यः खलु देवानाम् एकस्त्वं पुरुषोत्तम! धन्यश्चासि महाबाहो! लोके नान्योऽस्ति कश्चन॥")

यह सुन कर श्रीकृष्ण ने मुसकराते हुए उत्तर दिया—"मैं दक्षिणा के साथ आश्चर्य और धन्य कहा गया हूँ।"

("आश्चर्यश्चैव धन्याश्च दक्षिणाभिः सहेरितः।")

नारद ने फिर कहा—"कृष्ण! आप के वचन मेरे लिये पर्याप्त हैं। मैं बिदा लेता हूँ।"

("कृष्ण! पर्याप्तवाक्योऽस्मि गमिष्यामि यथागतम्"।)

सभी राजा-लोग इससे कुछ नहीं समझ सके और श्रीकृष्ण से ही पूछा कि नारद के वचन और आप के प्रतिवचन का तात्पर्य क्या है। तब कृष्ण की आज्ञा से नारद, जो नहीं निकले थे, कहने लगे—मैं एक समय गंगा में स्नान कर जप कर रहा था। तब एक बहुत बड़ा कछुआ वहाँ आया जिसे देख कर मैंने उससे कहा—'तुम आश्चर्य और धन्य हो। इतना बड़ा शरीर ले कर स्वेच्छा से घूम रहे हो।' कूर्म ने कहा—मुझमें तो न आश्चर्य है, न धन्यता। गंगा नदी मुझ से महत्तर है जिसमें मेरे जैसे कितने ही प्राणी-समूह जीवित हैं।' नारदने गंगा के पास जा कर कहा—तुम आश्चर्य हो और धन्य हो।' गंगा ने उत्तर दिया—मेरी जैसी कितनी ही नदियाँ जा कर समुद्र में गिरती हैं। वही आश्चर्य और धन्य हैं।' तब नारद समुद्र के पास गये और वे ही वचन बोले। उसने कहा कि भूमि मुझसे महिमावान् है। जब नारद ने भूमि के पास जा कर उसकी प्रशंसा की, उसने उत्तर दिया कि 'मेरा धारण करनेवाला भूधर (पर्वत) श्रेष्ठ है'। पर्वत ने ब्रह्मा को श्रेष्ठ बताया, ब्रह्मा ने वेदों की स्तुति की और वेदों ने यज्ञों की। नारद ने जब यज्ञों के पास जा कर कहा—"तुम आश्चर्य हो और धन्य हो" तब यज्ञ बोले—हमारी कोई महिमा नहीं, आज्य हवि आदिक हमें जो मिलता है वह सब विष्णु की ही देन है। विष्णु एक ही आश्चर्य और धन्य हैं।" तब यह सुन कर मैं श्रीकृष्ण के पास आया जो साक्षात् विष्णु हैं और यहाँ जो आपके बीच में विराजमान हैं। मैंने उनसे निवेदन किया 'तुम ही आश्चर्य और धन्य हो' और उन्होंने उसे स्वीकार कर कहा "दक्षिणा के साथ मैं वह हूँ"। अर्थात् दक्षिणा के साथ किये जानेवाले सब यज्ञों के फल परमात्मा विष्णु ही हैं। अतः कूर्म से ले कर एक एक करके श्रीकृष्ण तक आकर मैंने जो प्रश्न किया उसका पर्याप्त संतोषजनक उत्तर श्रीकृष्ण से मुझे प्राप्त हुआ कि दक्षिणा सहित यज्ञों का फल वे हैं और वे ही आश्चर्य और धन्य हैं। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने नारद को और राजाओं को अपनी महिमा दिखायी।

—श्रीहरिवंश 159

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

417. मैत्तुनन्-मार् कादलियै मयिर् मुडिप्पित्तु
अवर्गळैये मन्नर् आक्कि
उत्तरं-तन् शिरुवनैयुम् उय्य-क्-कोण्ड
उयिर्-आळन् उरैयुम् कोयिल्
पत्तर्गळुम् पगवर्गळुम्
पळमोळि-वाय् मुनिवर्गळुम् परन्द नाडुम्
शित्तर्गळुम् तोळुदु इरैञ्च-त्-
तिशै-विळक्काय् निर्किन्र तिरु-अरङ्गमे। 6

418. कुरट्-पिरम-चारियाय् मावलियै-क्
कुरुम्बु अदक्कि अरशु वाङ्गि
इरै-प्-पोळुदिल् पाताळम् कल-विरुक्कै
कोडुत्तु उहन्द एम्मान् कोयिल्
एरिप्पु-उडैय मणि वरै मेल् इळ-ञायिरु
एळुन्दार पोल् अरवणैयिन् वाय्
शिरप्पु उडैय पणङ्गळ् मिशै-च्
चेळु मणिगळ् विट्टु एरिक्कुम् तिरु-अरङ्गमे। 7

419. उरम् पर्रि इरणियनै उहिर् नुदियाल्
ओळ्ळिय मार्पु उरैक्क ऊन्रि
शिरम् पर्रि मुडि इडिय-क् कण् पिदुङ्ग
वाय् अलर-त् तेळित्तान् कोयिल्
उरम् पेर्र मलर्-क् कमलम् उळहु अळन्द
शेवडि पोल् उयरन्दु काट्ट
वरम्पु-उर्र कदिर्-च् चेन्नेल् ताळ् शायत्तु-त्
तलै वणक्कुम् तण्-अरङ्गमे। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

417. (फुफेरे) भाइयों (पांडवों) की प्रियतमा के केश बँधवा, उन्हीं को राजा बना, उत्तरा के बालक (परीक्षित) को पुनर्जीवित करनेवाले आत्माओं के अधीश्वर जिस आलय में रहते हैं वह है श्रीरंग जिसको भक्त-जन और संन्यासी-गण और मुनि-वृंद, जिनके मुँह में पुराने वचनरूप वेद हैं, और विशाल जनपद और सिद्ध (सब) प्रणाम कर स्तुति करते हैं और जो दिशा-दीप के समान अवस्थित है। 6

418. वामन ब्रह्मचारी बन कर महाबलि के अभिमान को चूर कर, उसके राजत्व को ग्रहण कर, क्षणकाल में पाताल लोक को उसकी राजधानी बना दे कर प्रसन्न होनेवाले हमारे स्वामी का आलय श्रीरंग है जिसमें शेष-शय्या के उत्कृष्ट फणा-मंडलों के चमकीले मणि प्रकाशमान हैं मानों उज्ज्वल मणिपर्वत पर बाल सूर्य उदित हुआ हो। 7

419. हिरण्य (कशिपु) को उर में पकड़, उज्ज्वल हृदय को नखाग्र से चीर कर उसका सिर पकड़ कर गर्जन किया जिससे (उसका) किरीट टूट गया, नेत्र निकल पड़े, मुँह क्रंदन कर उठा। ऐसे भगवान् का आलय शीतल श्रीरंग है जिसमें खाद से समृद्ध कमल-पुष्प लोक मापनेवाले अरुण चरण के समान उन्नत हो दिखाई देते हैं और खेत की मेड़ तक फैली बालियों से युक्त शालिधान डंठल झुका नत-मस्तक होते हैं। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

420. तेवुडैय मनीमाय् अमैयाय्
एनमाय् अरियाय्-क्-कुरळाय्
मू-उरुविल् इरामनाय्-क् कण्णनाय्
कर्कियाय् मुडिप्पान् कोयिल्
शेवलोडु पेडै-अन्नम्
शेङ्-कमल मलर् एरि ऊशल् आडि
पूवणै मेल् तुदैन्दु एलु शेम्
पोडि आडि विळैयाडुम् पुनल् अरङ्गमे। 9

421. शेरुवाळुम् पुळ्ळाळन् मण्णाळन्
शेरु-च् चेय्युम् नान्दकम् एन्नुम्
औरु-वाळन् मरैयाळन् ओडाद
पडैयाळन् विळुक्कै याळन्
इरवाळन् पगलाळन् एन्नै-याळन्
एळुलह-प् पेरुम्-पुर वाळन्
तिरुवाळन् इनिदाह-त् तिरु-क् कण्गळ्
बळर्गिन्र तिरु अरङ्गमे। 10

422. कैन्नागत्तु इडर् कडिन्द कनल् आळि-प्
पडै-उडैयान् करुदुम् कोयिल्
तेन्-नाडुम् वड नाडुम् तोळ निन्र
तिरु-अरङ्गम् तिरु-प् पदियिन् मेल्
मेय्न्नावन् मेय्यडियान् विट्टुचित्तन्
विरित्त तमिळ् उरैक्क वल्लार्
एञ्ञान्रुम् एम्पेरुमान् इणै अडि-क् कीळ्
इणै पिरियादु इरुप्पार् तामे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

420. तेजस्वी मत्स्य हो, कूर्म हो, वराह हो, (नर) हरि हो, वामन हो, (परशुराम, दशरथराम और बलराम इन) तीन रूपों में राम हो, कान्ह हो और कल्कि हो (देवकार्य को) पूर्ण करनेवाले का आलय श्रीरंग है जिसके जल में हंस के साथ हंसी अरुण कमल पुष्प पर चढ़ झूलकर पुष्प-शय्या में निमज्जित हो उठती है और रक्तिम रज में स्नान कर विहार करती रहती है। 9

421. युद्ध-संचालन करनेवाले पक्षी (गरुड़) के स्वामी पृथिवी के स्वामी, युद्ध करने में उन्मुख नंदक नामक अद्वितीय खड्‌ग के स्वामी, वेद के स्वामी, अजेय आयुधों के स्वामी, उत्कृष्ट उदारता के स्वामी, रात्रि के स्वामी, दिवस के स्वामी, मेरे स्वामी, सप्तलोक रूप विपुल क्षेत्र के स्वामी तथा लक्ष्मी के स्वामी के, हर्षित हो, श्रीनेत्र मूँद कर सोने का स्थान श्रीरंग है। 10

422. (दीर्घ) हस्त (सूँड़) से युक्त नाग (हाथी) की पीड़ा के निवारक अग्निवत् उज्ज्वल चक्रायुध के स्वामी का प्रिय आलय है श्रीरंग जिसको दक्षिण देश तथा उत्तर देश प्रणति करते रहते हैं। श्रीरंग नामक इस दिव्य क्षेत्र का, सत्यजिह्वावाले एवं सच्चे दास श्रीविष्णुचित्त ने तमिल में विस्तृत वर्णन किया। इसके कथन में समर्थ भगवान् के युगल-चरण के मूल में विश्लेष रहित सर्वदा अवस्थित होंगे। 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

423. तुप्पु-उडैयारै अडैवदेल्लाम्
शोर्विडत्तु-त् तुणै आवर् एन्रे
ओप्पिलेन् आहिलुम् निन्-अडैन्देन्
अनेक्कु नी अरुळ् शेय्दमैयाल्
एय्प्पु एन्नै वन्दु नलियुम् पोदु अङ्गु
एदुम् नान् उन्नै निनैक्क माट्टेन्
अप्पोदैक्कु इप्पोदे शोल्लि वैत्तेन्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 1

424. शामिडत्तु एन्नै-क् कुरिक्कोळ् कण्डाय्
शङ्कोडु शक्करम् एन्दिनाने !
ना मडित्तु एन्नै अनेक दण्डम्
शेय्वदा निर्पर् नमन् तमर्गळ्
पोमिडत्तु उन् तिरत्तु एत्तनैयुम्
पुहा वण्णम् निर्पदु-ओर् मायै वल्लै
आमिडत्ते उन्नै-च् चोल्लि वैत्तेन्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 2

425. एल्लैयिल् वाशल् कुरुह-च् चेन्राल्
एर्रि नमन् तमर् पर्रुम् पोदु
निल्लुमिन् एन्नुम् उपायम् इल्लै
नेमियुम् शङ्कमुम् एन्दिनाने !
शोल्ललाम् पोदे उन् नामम् एल्लाम्
शोल्लिनेन् एन्नै-क् कुरिक्कोण्डु एन्रुम्
अल्लर् पडा-वण्णम् काक्क वेण्डुम्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

IV. x. तुप्पुडैवारै

[शक्तिमानों को]

[श्रीरंग के भगवान् श्रीरंगनाथ के चरणकमलों की शरण लेकर श्रीविष्णुचित्त निवेदन करते हैं—

"अपुनरावृत्ति-लक्षण मोक्ष तुम्हारी कृपा से मुझे अवश्य प्राप्त होगा। परन्तु शरीर-वियोग के समय यमभटों से होनेवाले क्लेश का स्मरण कर मैं भयभीत होता हूँ। उस समय मैं तुम्हारा स्मरण नहीं कर पाऊँगा। अतः अभी स्मरण करता हूँ। मेरी रक्षा करो।"

423. शक्तिमानों की शरण में जाते हैं तो, वह यह सोच कर कि अवसन्न होते समय वे सहायक होंगे। यद्यपि मैं (उन शरणागतों के) सदृश नहीं, मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ इसलिये कि तुमने गजेंद्र पर कृपा की थी। (अंतिम काल में) जब श्रान्ति आ कर मुझे सताएगी, तब किसी भी तरह मैं तुम्हारा स्मरण नहीं कर सकूंगा। श्रीरंग में शेष शय्या पर शायित (प्रभो) ! तब के लिये मैं अब ही कहे देता हूँ। 1

424. शंख के साथ चक्र के धारक ! (मेरे) अंतकाल में मुझे ध्यान में रखो, समझे। यम-भट जीभ मोड़ कर मुझको अनेक दंड देते रहेंगे जिससे (शरीर छोड़) जाते समय (मेरा मन) तुम्हारे प्रति थोड़ा भी निविष्ट नहीं होगा इस प्रकार अवस्थित माया में (अर्थात् ऐसी माया में) तुम समर्थ हो। (अतः) जब मुझसे हो सकता है तभी कहे देता हूँ, श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (स्वामी) ! 2

425. अंतिम काल में (यमलोक का) द्वार जब समीप हो जाता है, और यम किंकर लात मार कर पकड़ते हैं, तब (उन से "हटकर) खड़े हो जाओ" कहने का उपाय (मेरे पास) नहीं। नेमि (चक्र) और शंख को धारण करनेवाले ! जब कह सकता हूँ तभी तुम्हारे सब नामों का कीर्तन करता हूँ। मुझे ध्यान में रख कर इस प्रकार मेरी रक्षा करो जिससे किसी भी समय दुख का अनुभव नहीं करूँ, श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (स्वामी) ! 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

426. ओर्रै विडैयनुम् नान्-कनुम्
उन्नै अरिया-प् पेरुमैयोने !
मुर्र उलहु-एल्लाम् नीये आहि
मून्रु एळुत्ताय मुदल्वनेयो !
अर्रदु वाणाळ् इवर्कु एन्रु एण्णि
अञ्च नमन् तमर् पर्रल् उर्र
अर्रैक्कु नी एन्नै-क् काक्क वेण्डुम्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 4

427. पै-अरविन् अणै-प् पार् कडलुळ्
पळ्ळि कोळ्किन्र परम-मूर्ति !
उय्य उलहु पडैक्क वेण्डि
उन्दियिल् तोर्रिनाय् नान्-मुकने
वैय मनिशरै-प् पोय् एन्रु एण्णि-क्
कालनैयुम् उडनै पडैत्ताय्
ऐय ! इनि एन्नै-क् काक्क वेण्डुम्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 5

428. तण्णन इल्लै नमन् तमर्गळ्
शाल-क् कोडुमैगळ् शेय्या निर्पर्
मण्णोडु नीरुम् एरियुम् कालुम्
मर्रुम् आकाशमुम् आहि निन्राय्
एण्णलाम् पोदे उन् नामम् एल्लाम्
एण्णिनेन् एन्नै-क् कूरिक्कोण्डु एन्रुम्
अण्णले ! नी एन्नै-क् कावक वेण्डुम्
आरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

426. प्रभु ! तुम्हारी महिमा इतनी है कि अद्वितीय वृष वाले (शिव) और ब्रह्मा भी तुमको नहीं जान सकते । तुम ही पूर्णतया तीन लोक हो और अक्षरत्रयात्मक प्रथम हो। (अर्थात् सर्व जगत्कारण हो तथा प्रणव का मुख्य वाच्य हो ।) जब यम-किंकर, यह सोच कर कि इसका जीवन काल समाप्त हो गया, भयानक रूप से मुझे पकड़ने आएँगे उस दिन तुम्हें मेरी रक्षा करनी होगी, श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (प्रभो) ! 4

427. फनयुक्त सर्पशय्या पर क्षीरसमुद्र में शयन करनेवाले परममूर्ति ! निस्तार के लिये लोक-सृष्टि करने के उद्देश्य से नाभि से चतुर्मुख को उत्पन्न किया। भूमंडल के मनुष्यों को असत्य (अर्थात् नश्वर) जान कर कालदेव (मृत्युदेव) की भी सद्यएव सृष्टि की। स्वामी ! अतःपर (इस दशा में) (तुम्हीं को) मेरी रक्षा करनी होगी, श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (प्रभो) ! 5

428. यमकिंकर तो दया से वियुक्त हैं। पर्याप्त हिंसाएँ करते ही रहेंगे । भूमि के साथ जल और अग्नि और वायु तथा फिर आकाश भी हो कर तुम रहे। स्मरण करने की शक्ति के रहते समय ही तुम्हारे सब नामों का मैंने स्मरण किया। सर्वदा मेरा ध्यान रख कर, स्वामी, तुम्हें मेरी रक्षा करनी होगी। श्रीरंग में सर्पशय्या पर शायित (प्रभु) ! 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

429. शेन्बोल् मरै-प् पोरुळ् आहि निन्र
तेवर्गळ् नायकने ! एम्माने !
एञ्चल्-इल् एन्नुडै इन्-अमुदे !
एळुलहुम् उडैयाय् ! एन् अप्पा !
वञ्च उरुविन् नमन्-तमर्गळ्
वलिन्दु नलिन्दु एन्नै-प्-पर्रुम्-पोदु
अञ्चलम् एन्रु एन्नै-क् काक्क वेण्डुम्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 7

430. नान् एदुम् उन् मायम् ओन्रु अरियेन्
नमन् तमर् पर्रि नलिन्दिट्टु इन्द
ऊने पुहे एन्रु मोदुम्-पोदु
अङ्गु एदुम् नान् उन्नै निनैक्क माट्टेन्
वानेय् वानवर् तङ्गळ् ईशा !
मदुरै-प् पिरन्द मा मायने ! एन्
आनाय् ! नो एन्नै-क् काक्क वेण्डुम्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 8

431. कुन्रु एडुत्तु आ-निरै कात्त आया !
को-निरै मेय्त्तवने ! एम्माने !
अन्रु मुदल् इन्रु अरुदिया
आदि अञ्-चोदि मरन्दु अरियेन्
नन्रुम् कोडिय नमन् तमर्गळ्
नलिन्दु वलिन्दु एन्नै-प् पर्रुम्-पोदु
अन्रु अङ्गु नी एन्नै-क् काक्क वण्डुम्
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने । 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

429. सत् शब्दमय वेद का तात्पर्य हो कर अवस्थित देवनायक ! मेरे प्रभु ! पूर्णतया मधुर मेरे अमृत ! सात लोकों के स्वामी ! मेरे तात ! वंचक रूप में यम-किंकर बलपूर्वक पीड़ा दे जब मुझे पकड़ें, तब 'अभय' कह कर तुम्हें मेरी रक्षा करनी होगी। श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (प्रभु) ! 7

430. मैं तो तुम्हारी माया कुछ भी नहीं जानता। जब यम-किंकर पकड़, पीड़ा दे, 'इस (यातना) शरीर में प्रविष्ट हो जाओ' कह ढकेलें उस समय मैं तुम्हारा स्मरण कर ही नहीं सकता। परमधाम में स्थित देवों (नित्यसूरियों) के अधीश ! मथुरा में जात महामायावी प्रभु ! मेरे हस्ती ! तुम्हें मेरी रक्षा करनी होगी। श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (स्वामी) ! 8

431. गिरि को उठा गो-समूह की रक्षा करनेवाले गोप ! गो-समूह को चरानेवाले ! मेरे प्रभु ! उस दिन से ले कर अद्यावधि सुंदर आदि ज्योति (अर्थात् तुम) को भूलना ही न जाना। बहुत ही क्रूर यम-किंकर पीड़ा देकर जिस समय बलपूर्वक मुझे पकड़ें तब वहाँ तुमको मेरी रक्षा करनी होगी, श्रीरंग में सर्प-शय्या पर शायित (प्रभु) ! 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

432. मायवनै मदु-शूदननै मादवनै
मरैयोर्गळ् एत्तुम्
आयर्गळ् एर्रिनै अच्चुदनै
अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियानै
वेयर्-पुहळ् विल्लिपुत्तूर् मन्
विट्टुचित्तन् शोन्न मालै पत्तुम्
तूय मनत्तनर् आहि वल्लार्
तू मणि वण्णनुक्कु आळर् तामे। 10

V. i. वाक्कु-त्-तूय्मै

433. वाक्कु-त् तूय्मै इलामैयिनाले मादवा !
उन्नै वाय्-क् कोळ्ळ माट्टेन्
नाक्कु निन्नै अल्लाल् अरियादु
नान् अदु अञ्चुवन् एन् वशम् अन्रु
मूर्क्कु-प् पेशुकिन्रान् इवन् एन्रु
मुनिवायेलुम् एन् नाविनुक्कु आर्रेन्
काक्कै वायिलुम् कट्टुरै कोळ्वर्
कारणा ! करुल-क् कोडियाने ! 1

434. शळक्कु नाक्कोडु पुन् कवि शोन्नेन्
शङ्कु चक्करम् एन्दु कैयाने !
पिळैप्पार् आहिलुम् तम्-अडियार् शोल्
पोरुप्पदु पेरियोर् कडन् अन्रे
विळिक्कुम् कण्-इलेन् निन्कण् मर्रु-अल्लाल्
वेरु ओरुवरोडु एन् मनम् पर्रादु
उळैक्कु ओर् पुळ्ळि मिहै अनरु कण्डाय्
ऊळि एळ्-उलहु उण्डु उमिळ्न्दाने। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

432. मायावी को, मधुसूदन को, माधव को, वैदिकों से स्तुत गोप-पुंगव को, अच्युत को, श्रीरंग में सर्पशय्या पर शायित को (मन में रख) श्रीविष्णुचित्त ने, जो वेयर कुल से स्तुत हैं और श्रीविल्लिपुत्तूर के हैं, (पदों की) माला रची। परिशुद्ध मनवाले हो इसके कथन में जो समर्थ हैं वे निर्मल मणिवर्ण के स्वयं ही दास हैं। 10

V. i. वाक्कु-त्-तूय्मै

[वाक् की शुद्धि]

(अपनी नीचता का निवेदन)

433. वाक् की शुद्धि न होने के कारण, माधव, तुम्हें मुंह पर नहीं लाऊँगा। रसना तो तुम्हें छोड़कर और कुछ नहीं जानती। उसके इस स्वभाव से मैं भयभीत हूँ। वह मेरे वश में नहीं। यह मूर्खता के वचन (अर्थात् परस्पर विरुद्ध वचन) बोलता है—यह सोच यद्यपि तुम कुपित होते हो अपनी रसना को नियंत्रण में नहीं रख सकता।

काक के मुंह से भी सुभाषित ग्रहण करते हैं, (जगत्) कारण ! गरुड़ध्वज (प्रभु) ! 1

434. दूषित जिह्वा से क्षुद्र कविता (मैंने) कही। शंख-चक्रधर-हस्तवाले ! अपना दास अपराधी ही क्यों न हो, उसके वचन को क्षमा करना महापुरुषों का धर्म है न ? (रक्षक) तुम्हारे नेत्र को छोड़कर (रक्षणार्थ मेरी ओर) देखनेवाला अन्य कोई नेत्र नहीं। किसी दूसरे से मेरा मन नहीं लग जायगा। (मुझे ग्रहण करने से तुमको कोई क्षति नहीं होगी।) कृष्णसार (हरिण) को और एक दाग तो अत्यधिक नहीं हो जायगा, समझे। (जिसके शरीर पर असंख्य रेखाबिंदु होते हैं, उनमें और एक बिंदु आ जाय तो उससे उसको कोई हानि नहीं।) प्रलय काल में सात लोकों को निगल कर उगलनेवाले (प्रभु) ! 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

435. नन्मै तीमैगळ् ओन्रुम् अरियेन्
नारणा एन्नुम् इत्तनै अल्लाल्
पुन्मैयाल् उन्नै-प्-पुळ्ळुवम् पेशि-प्
पुहळ्वान् अन्रु कण्डाय् तिरुमाले !
उन्नुम्-आरु उन्नै ओन्रुम् अरियेन्
ओवादे नमो नारणा एन्पन्
वन्मैयावदु उन् कोयिलिल् वाळुम्
वैट्टवणन् एन्नुम् वन्मै कण्डाये। 3

436. नेडुमैयाल् उलहु एळुम् अळन्दाय्
निन्मला ! नेडियाय् ! अडियेनै
कुडिमै कोळवदर्कु ऐ-उर वेण्डा
कूरै शोरु इवै वेण्डुवदु इल्लै
अडिमै एन्नुम् अक्-कोयिन्मैयाले
अङ्गङ्गे अवै पोदरुम् कण्डाय्
कोडुमै-क्-कञ्चनै-क्-कोन्रु निन् तादै
कोत्त वन् तळै कोळ् विडुत्ताने। 4

437. तोट्टम् इल्लवळ् आ-त् तोळु ओडै
तुडवैयुम् किणरुम् इवै एल्लाम्
वाट्टम् इन्रि उन् पोन् नडि-क् कीळे
वळैप्पु अहम् वहुत्तु-क् कोण्डु इरुन्देन्
नाट्टु मानिडत्तोडु एनक्कु अरिदु
नच्चुवार् पलर् केळल् ओन्रु आहि
कोट्टु मण् कोण्ड कोळ्गैयिनाने
कुञ्चरम् वीळ-क् कोम्बु ओशित्ताने। 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

435. नारायण शब्द कहने के अतिरिक्त साधुता या असाधुता कुछ नहीं जानता। श्रीमन्नारायण ! क्षुद्र स्वभाव के कारण असत्य वचन कह कर तुम्हारी स्तुति करनेवाला तो मैं नहीं हूँ। तुम्हारा ध्यान करने का प्रकार तो मैं कुछ नहीं जानता। निरंतर नमो नारायण कहता ही रहता हूँ। 'यह तुम्हारे आलय में रहनेवाला वैष्णव है'—ऐसा कहा जानेवाला जो बल है, वही तो बल है, समझे। 3

436. ऊँचाई से सात लोकों को मापनेवाले ! निर्मल ! सर्वोच्च ! दास की सेवा को ग्रहण करने में संदेह नहीं करना। वस्त्र और अन्न, इनकी तो चाह नहीं। दास्य कहलानेवाले उस राज-संबंध से वे तो वहाँ वहाँ मिल जायँगे, समझे। क्रूर कंस का वध कर अपने पिता को प्रबल निगड़-बंध के अनुभव से छुड़ानेवाले ! 4

437. उपवन, गृहिणी, गो, गोशाला, सरित्, कृषिभूमि, कूप, बिना कुम्हलाये ये सब अलग अलग तुम्हारे कमनीय पादमूल में ही हैं, ऐसा मान मैं जीवन व्यतीत कर रहा था। जनपद के मनुष्यों की संगति मेरे लिये दुस्सह है। इसकी कामना करनेवाले तो बहुत हैं। निरुपम वराह बन कर दंष्ट्रा पर भूमि को धरने के स्वभाववाले ! हाथी को गिरा (उसका) दाँत तोड़नेवाले ! 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

438. कण्णा ! नान्-मुकनें-प् पडैत्ताने !
कारणा ! करियाय् ! अडियेन् नान्
उण्णा नाळ् पशि आवदु ओन्रु इल्लै
ओवादे नमो नारणा एन्रु
एण्णा-नाळुम् इरुक्कु एशु-च् चाम-
वेद नाण् मलर् कोण्डु उन पादम्
नण्णा नाळ् अवै तत्तुरुमाहिल्
अन्रु एनक्कु अवै पट्टिनि नाळे। 6

439. वेळ्ळै वेळ्ळत्तिन् मेल् ओरु
पाम्पै मेत्तैयाह विरित्तु अदन् मेले
कळ्ळ नित्तिरै कोळ्किन्र मार्क्कम्
काणलाम् कोल् एन्रु आशैयिनाले
उळ्ळम् शोर उहन्दु एदिर् विम्मि
उरोम कूपङ्गळ् आय् कण्ण नीर्गळ्
तुळ्ळम् चोर-त् तुयिल् अणै कोळ्ळेन्
शोल्लाय् यान् उन्नै-त् तत्तुरुम् आरे। 7

440. वण्ण माल् वरैये कुडैयाह
मारि कात्तवने ! मदुशूदा !
कण्णने ! करि कोळ् विडुत्ताने॥
कारणा ! कळिरु अट्ट पिराने !
एण्णुवार् इडरै-क् कळैवाने !
एत्तरुम् पेरुम् कीर्तियिनाने !
नण्णि नान् उन्नै नाडोरुम् एत्तुम्
नन्मैये अरुळ् शेय् एम्-पिराने ! 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

438. कान्ह ! चतुर्मुख की सृष्टि करनेवाले ! कारण ! श्यामल-शरीर ! दास हूँ मैं (तुम्हारा)। जिस दिन भोजन नहीं करता वह तो भूखा रहने का दिन नहीं। परंतु यदि ऐसे दिन प्राप्त हों जिनमें 'नमो नारायण' मंत्र का निरंतर ध्यान नहीं करता और जिनमें ऋक् यजुस् सामवेदात्मक अभिनव पुष्प ले कर तुम्हारे चरणों के पास नहीं पहुँचता, वे ही दिन मेरे लिये भूख के दिन हैं। 6

439. धवल क्षीर-प्रवाह पर एक सर्प को गद्दी की तरह फैला, उस पर चोर-निद्रा (योग-निद्रा) करने के (तुम्हारे) मार्ग (अर्थात् मुद्रा) का साक्षात्कार हो सकता है—इस आशा से मन विह्वल होता है, हर्षित हो उछलता है। रोम-कूप उभरते हैं। अश्रुजल के विंदु स्रवित होते हैं। शय्या पर निद्रित नहीं हो पाता। जिस प्रकार से मैं तुम्हें प्राप्त कर सकूँ वह मुझे बताओ। 7

440. (धातुओं के) वर्ण से युक्त महान् पर्वत को ही छत्र बना वर्षा-निवारक ! मधुसूदन ! कान्ह ! गजेंद्र के दुःख-विनाशक ! कारण ! (कुवलयापीड़) हाथी के संहारक उपकारक ! ध्यान करनेवालों के क्लेश-निरासक ! अति विपुल यशस्वी जिसकी स्तुति करना ही अशक्य है ! मेरे उपकारक ! मुझे यह सौभाग्य देने की कृपा करो जिससे अभिगमन कर प्रतिदिन मैं तुम्हारी स्तुति करूँ। 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

441. नम्बने ! नविन्रु एत्त-वल्लार्गळ्
नादने ! नरशिङ्गम् अदु आनाय् !
उम्बर् कोन् उलहु एळुम् अळन्दाय्
ऊळि आयिनाय् ! आळि मुन् एन्दि
कम्ब मा-करि कोळ् विडुत्ताने !
कारणा ! कडलै-क् कडैन्दाने !
एम्-पिरान् ! एन्नै आळुडै-त् तेने !
एळैयेन् इडरै-क् कळैयाये । 9

442. कामर् तादै करुदलर् शिङ्गम्
काण इनिय करुङ्-कुळल् कुट्टन्
वामनन् एन् मरकत वण्णन्
मादवन् मदु-शूदनन् तन्नै
शेम-नन्कु अमरुम् पुदुवैयर् कोन्
विट्टु चित्तन् वियन् तमिळ् पत्तुम्
नामम् एन्रु नविन्रु उरैप्पार्गळ्
नण्णुवार् ओल्लै नारणन् उलहे । 10

V. ii. नेय्-क-कुडत्तै

443. नेय्-क् कुडत्तै-प् पर्रि एरुम्
एरुम्बुगळ् पोल् निरन्दु एङ्गुम्
कैक् कोण्डु निर्किन्र नोय्गाळ् !
कालम् पेर् उय्य-प् पोमिन्
मेय्-क् कोण्डु वन्दु पुहुन्दु
वेद-प् पिरानार् किडन्दार्
पैक्-कोण्डु पाम्बणैयोडुम्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

441. विश्वसनीय ! संकीर्तन कर स्तुति करने में समर्थों के नाथ ! नरसिंह रूप से अवतरित ! देवों के अधीश्वर ! सात लोकों को मापनेवाले ! युगों के नियंता ! पूर्वकाल में चक्र को धारण कर, (भय से) कंपित उन्नत गजेंद्र के क्लेश-निवारक ! (जगत्) कारण ! सागर-मंथन करनेवाले ! मेरे प्रभु ! मुझे दास बनानेवाले मधु ! चंचल प्रकृति का हूँ। मेरा क्लेश दूर करो। 9

442. काम-जनक (अर्थात् मन्मथ के पिता), चिंतन न करनेवालों (अभक्तों) के सिंह, देखने को मधुर नीलालक बालक, वामन, मेरे मरकत-वर्ण, माधव, मधुसूदन की स्तुति क्षेम से सुसंपन्न श्रीविल्लिपुत्तूर वालों के स्वामी श्रीविष्णुचित्त ने अद्भुत तमिल (भाषा) के दस पदों में की। इनको (भगवान् के) नाम मान, सीख, जो संकीर्तन करते हैं, वे नारायण के लोक को अबाधित प्राप्त करेंगे। 10

V. ii. नेय्-क्-कुडत्त

[घृतकुंभ को]

443. घृतकुंभ को पकड़ कर बढ़नेवाली चींटियों की तरह सर्वत्र फैल कर (शरीर को) ग्रहण कर स्थित व्याधियों ! समय रहते (अपनी) रक्षा के लिये भाग जाओ। विस्तृत फन-युक्त सर्प-शय्या के साथ वेदवेद्य प्रभु मेरे शरीर को अपना कर, प्रविष्ट हो, शायित हो गये। (अब मेरे शरीर तथा आत्मा की स्थिति) पूर्व जैसी नहीं। पत्तन की रक्षा (संपन्न हो गयी)।

(आत्मा का वासस्थान होने के कारण शरीर पत्तन कहलाता है।) 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

444. चित्तिर गुत्तन् एलुत्ताल्
तेन् पुलक्कोन् पोरि ओर्रि
वैत्त इलच्चिनै मार्रि-त्
तूतुवर् ओडि ओळित्तार्
मुत्तु-त् तिरै-क् कडल् शेर्प्पन्
मूदरिवाळर् मुदल्वन्
पत्तर्क्कु अमुदम् अडियेन्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे। 2

445. वयिर्रिल् तोळुवै-प् पिरित्तु
वन् पुळ-च् चेवै अदक्कि
कयिर्रुम् अक्काणि कळित्तु-क्
कालिडै-प् पाशम् कळर्रि
एयिर्रिडै मण् कोण्ड एन्दै
इरा-प् पहल् ओदुवित्तु एननै-प्
पयिर्रि-प् पणि शेय्य-क् कोण्डान्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे। 3

446. मङ्गिय वल् विनै नोय्गाळ्!
उमक्कुम् ओर् वल् विनै कण्डीर्
इङ्गु-प् पुहेन्मिन् पुहेन्मिन्
एळिदु अन्रु कण्डीर् पुहेन्मिन्
शिङ्ग-प् पिरान् अवन् एम्मान्
शेरुम् तिरु-क् कोयिल् कण्डीर्
पङ्ग-प् पडादु उय्य-प् पोमिन्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

444. चित्रगुप्त के जिस लेख पर, दक्षिण दिशा के अधिप (यमराज) ने हस्ताक्षर कर मुद्रा लगा रखी थी, (यम) दूत उसको बदल कर भाग छिप गये। मोती सहित तरंगों से युक्त समुद्र पर शायित, अनादिसिद्ध ज्ञानवन्त (नित्य-सूरियों) के नायक, भक्तों के अमृत का दास हूँ मैं। (अब तो) पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा (हो गयी)। 2

445. उदर के कारावास से (सदा के लिये) मुक्त कर, बलिष्ठ इंद्रिय-वृषभ को दमन कर, स्नायु तथा अस्थिमय शरीर के संग को काट कर, (यमभटों से बाँधे) चरणों का पाश खोल कर दंष्ट्रा-मध्य में भूमि को ग्रहण करनेवाले मेरे स्वामी ने रात-दिन (वेदार्थों का) अध्यापन कर, मुझसे उनका अनुष्ठान करा, (अपनी) सेवा में ग्रहण कर लिया। (अब तो) पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा हो गयी। 3

446. प्रबल पाप (जन्य) व्याधियों! वे (पाप) शक्तिहीन हो गये। तुम से भी एक प्रवल कर्म है, समझे। यहाँ प्रवेश मत करो, प्रवेश मत करो। (प्रवेश) सुलभ नहीं समझे। प्रवेश मत करो। यह (शरीर) है श्रीमंदिर जहाँ हमारे प्रभु नरसिंह भगवान् आ विराजमान हैं (समझे)। भंग (नाश) को प्राप्त हुए बिना अपनी रक्षा के लिये भाग जाओ। पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा हो गयी। 4

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

447. माणि-क् कुरळ् उरुवाय
मायनै एन् मनत्तुळ्ळे
पेणि-क् कोणर्न्दु पुहुद
वैत्तु-क् कोण्डेन् पिरिदु इन्रि
माणिक्क-प् पण्डारम् कण्डीर्
वलि वन् कुरुम्बर्गळ् उळ्ळोर्
पाणिक्क वेण्डा नडमिन्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे ।

448. उर्र उरु पिणि नोग्गाळ् !
उमक्कु ओन्रु शोल्लुहेन् केण्मिन्
पेर्रङ्गळ् मेय्क्कुम् पिरानार्
पेणुम् तिरु-क् कोयिल् कण्डीर्
अर्रम् उरैक्किन्रेन् इन्नम्
आळ्-विनैगाळ् ! उमक्कु इङ्गु ओर्
पर्रु इल्लै कण्डीर् नडमिन्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे । 6

449. कोड्गै-च् चिरु वरै एन्नुम्
पोदुम्बिनिल् वीळ्न्दु वळुक्कि
अङ्गु ओर् मुळैयिनिल् पुक्किट्टु
अळुन्दि-क् किडन्दु उळल्वेनै
वङ्ग-क् कडल् वण्णन् अम्मान्
वल्-विनै आयिन मार्रि
पङ्ग-प् पडा वण्णम् शेय्दान्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे । 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

447. सौंदर्यमय वामन रूपवाले मायी को अपने मन के भीतर सोपचार ला, बिछोह के बिना स्थापित कर लिया। (यह शरीर) माणिक्य-भंडार है, समझे। प्रबल और क्रूर (दुष्टेंद्रिय रूप) उपद्रवियों! विलंब मत करना। चले जाओ। पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा हो गयी। 5

448. चिरात् सहागत अत्यधिक दुखद व्याधियों! तुमसे एक (बात) कहता हूँ, सुनो। गो-समूहों को चरानेवाले उपकारी का आदरणीय श्रीमंदिर है (यह मेरा शरीर)। फिर निश्चित (वचन) बताता हूँ, गाढ़ पाप-राशियों तुम्हें यहाँ कोई अवलंब नहीं, समझे। चले जाओ। पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा हो गयी। 6

449. स्तन, सूक्ष्म मध्य कहलानेवाले गर्त में गिर, फिसल, वहाँ एक गुहा में प्रविष्ट हो, मग्न रह (मैं) भटक रहा था। भंगवाले (तरंगवाले) सागरवर्ण स्वामी ने प्रबल कर्म कहलानेवाले सब का अंत कर इस प्रकार मेरी रक्षा कर दी जिससे मेरा भंग (परिभव) नहीं हुआ। (अब तो) पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा हो गयी। 7

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

450. एदङ्गळ् आयिन एल्लाम्
इरङ्ग विडवित्तु एन्-उळ्ळे
पीतक-आडै-प् पिरानार्
पिरम गुरु वाहि वन्दु
पोदिल् कमल वन्-नेञ्चम्
पुहुन्दु मेन् शेन्नि-त् तिडरिल्
पाद इलच्चिनै वैत्तार्
पण्डु अन्रु पट्टिनम् काप्पे। 8

451. उरहल् उरहल् उरहल्
ओण्-शुडर् आळिये ! शङ्के !
अर-वेरि नान्दक वाळे !
अळगिय शार्ङ्गमे ! तण्डे !
इरवु पडामल् इरुन्द
एण्मर् उलोक पालीर्गाळ् !
परवै अरया ! उरहल्
पळ्ळि अरै कुरिक् कोण्मिन्। 9

452. अरवत्तु-अमळियिनोडुम्
अळगिय पार् कडलोडुम्
अरविन्द-प् पावैयुम् तानुम्
अहम्पडि वन्दु पुहुन्दु
परवै-त् तिरै पल मोद-प्
पळ्ळि कोळ्किन्र पिरानै
परवुकिन्रान् विट्टु चित्तन्
पट्टिनम् कावल् पोरुट्टे। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

450. दुख कहलानेवाले सब जिससे उतर गये इस प्रकार मुझे छूड़ा कर पीतांबरधारी उपकारी (प्रभु) ब्रह्मगुरु बन मेरे भीतर आ कर सौंदर्यमय कमल-तुल्य दृढ़ हृदय में प्रविष्ट हुए और शीर्ष प्रदेश में चरण-लांछन (चिह्न) लगाया। पूर्व जैसा नहीं। पत्तन की रक्षा हो गयी। 8

451. सोओ मत, सोओ मत, सोओ मत, उज्ज्वल ज्योतिर्मय चक्र! शंख! पूर्ण रूप से (शत्रुओं के) नाशक नन्दक (नामक) खड्‌ग! सुंदर शार्ङ्ग! गदा! (अपने कर्म से) कभी न चूकनेवाले अष्ट लोकपालक! पक्षिराज! सोओ मत। परमात्मा के शयनागार की देखभाल करना (अर्थात् अंतर्यामी भगवान् का शयनागार मेरा शरीर है। उसकी देखभाल करो।)। 9

452. अरविंद पर आसीन लक्ष्मी तथा भगवान् स्वयं सर्प शय्या के साथ और सुन्दर क्षीरसागर के साथ आ मेरे हृदय में प्रविष्ट हो गये और वहाँ शयन करते हैं जब सागर की अनेक तरंगें आ टकरा रही हैं। उन उपकारी प्रभु का वर्णन करते हैं श्रीविष्णुचित्त (हृदयरूप) पत्तन के रक्षणार्थं। 10

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

V. iii. तुक्क-च्-चुळलैयै

453. तुक्क-च् चुळलैयै-च् चूळ्न्दु
किडन्द वलैयै अर-प् परित्तु
पुक्किनिर् पुक्कु उन्नै-क् कण्डु कोण्डेन्
इनि-प् पोह विडुवदु उण्डे ?
मक्कळ् अरुवरै-क् कल्लिडै मोद
इळन्दवळ् तन् वयिर्'रिल्
चिक्केन वन्दु पिरन्दु निन्राय्
तिरु-माल् इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 1

454. वळैत्तु वैत्तेन् इनि-प् पोगल् ओट्टेन्
उन्तन् इन्दिर ञालङ्गळाल्
ओळित्तिडिल् निन् तिरु आणै कण्डाय्
नी ओरुवर्क्कुम् मेय्यन् अल्लै
अळित्तु एङ्गुम् नाडु नगरमुम्
तम्मुडै-त् ती-विनै तीर्क्कल् उर्रु
तेळित्तु वलम् शेय्युम् तीर्थम् उडै-त्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 2

455. उनक्कु-प् पणि शेय्दु एरुक्कुम् तवम्
उडैयेन् इनि-प् पोय् ओरुवन्
तवक्कु-प् पणिन्दु कडैत्तलै निर्कै
निन् चायै अळिवु कण्डाय्
पुनत्तिनै-क् किळ्ळि-प् पुदु अवि काट्टि
उन् पोन्नडि वाळ्ग एन्रु
इन-क् कुरवर् पुदियदु उण्णुम्
एळिल् माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

V. iii. तुक्क-च्-चुळलैयै

[दुःखभँवर को]

(अनिष्ट-निवृत्ति प्रार्थनानंतर इष्टप्राप्ति की प्रार्थना)

453. दुख-भँवर को (और) घेरे हुए जाल को पूरी तरह काट, तुम्हारे स्थान में प्रविष्ट हो (मैंने) तुम्हें देख लिया। इसके वाद तुम्हें जाने देने की क्या संभावना है। षट् पुत्रों को शिला पर (कंस के) पटकने से पुत्रविहीना (देवकी) के उदर में शीघ्र ही आ जन्म ले कर रहे। तिरु-माल्-इरुञ्-शोलै (वनाचल) के हमारे स्वामी ! 1

454. मैंने (तुम्हें) घेर कर रखा है। इसके बाद जाने नहीं दूँगा। अपने इंद्रजालों से यदि (तुम अपने को) छिपाते हो तो तुम्हारी लक्ष्मी की सौगंध समझो। तुम किसी के भी यथार्थ नहीं हो। तिरुमाल्-इरुञ्-चोलै (वनाचल) के हमारे स्वामी जहाँ ऐसे पावन तीर्थ हैं जो जनपद और नगर की सब कहीं रक्षा करते हैं और अपने दुष्कृतों को दूर करने में उद्यत लोग जिनको (अपने ऊपर) छिड़कते हैं और जिनकी परिक्रमा करते हैं। 2

455. तुम्हारी सेवा करते रहने की तपस्या से युक्त हूँ। ऐसा होने पर (अन्यत्र) जा कर किसी दूसरे की प्रणति कर उसके द्वार पर खड़ा रहना तुम्हारी छाया (अर्थात् महिमा, द्युति) की हानि है, समझो। खेत से यव (धान्य) को काट, (पका), तुम्हें नया हवि निवेदित कर, 'तुम्हारे कमनीय चरण की जय हो' कह कर भील-गण जहाँ प्रथम भोजन करते हैं, ऐसे तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के स्वामी ! 3

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

456. कादम् पलवुम् तिरिन्दु उळन्रेर्कु
अङ्गु ओर् निळल् इल्लै नीरुम् इल्लै उन्
पाद निळल् अल्लाल् मर्रु ओर् उयिर्प्पु इडम्
नान् एङ्गुम् काण्किन्रिलेन्
तूतु शेन्राय् कुरु पाण्डवर्क्काय् अङ्गु
ओर् पोय-च् चुर्रम् पेशि-च् चेन्रु
पेदम् शेय्दु एङ्गुम् पिणम् पडुत्ताय्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 4

457. कालुम् एळा कण्ण-नीरुम् निल्ला
उडल् शोर्न्दु नडुङ्गि कुरल्
मेलुम् एळा मयिर्-क् कूच्चुम् अरा
एन तोळ्गळुम् वोळ्वु ओळिया
माल् उहळा निर्कुम् एन् मनने
उन्नै वाळ-त् तलै-प् पेय्दिट्टेन्
शेल् उहळा निर्कुम् नीळ् शुनै शूळ्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 5

458. एरुत्तु-क् कोडि-उडैयानुम् पिरमनुम्
इन्दिरनुम् मर्रुम्
ओरुत्तरुम् इप् पिरवि एन्नुम्
नोय्क्कु मरुन्दु अरिवारुम् इल्लै
मरुत्तुवनाय् निन्र मा मणि वण्णा !
मरु पिरवि तविर-त्
तिरुत्ति उन् कोयिल् कडै-प् पुह-प् पेय्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

456. अनेक योजन में (विस्तृत भूमंडल में सर्वत्र) भ्रमण कर भटकनेवाले मुझको कहीं न छाया है, न जल है। तुम्हारी पादच्छाया को छोड़ कर दूसरा कोई विश्राम स्थल मैं कहीं नहीं देखता। कुरु (वंशज) पांडवों की ओर से तुम दूत बन कर गये। वहाँ झूठमूठ एक संबंध को बोल, (वहाँ से) जा, (दोनों दलों में) भेदभाव उत्पन्न कर, सब (युद्धभूमि) को शवमय बना दिया। तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के हमारे स्वामी ! 4

457. चरण नहीं बढ़ते। अश्रुजल नहीं रुकता। शरीर विह्वल हो काँपता है। (कंठ से) ध्वनि भी नहीं निकलती। और रोमांच नहीं छूटता। मेरी अंजलि भी नहीं छूटती। मेरा मन तो उन्मत्त हो उछलता रहता है। जीने के लिये तुमसे एक हो गया। मत्स्य-संचरित लंबे निर्झरों से घिरे तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के मेरे स्वामी ! 5

458. वृषध्वजवाला (रुद्र) और ब्रह्मा और इंद्र और अन्य कोई भी जन्म-रूप इस व्याधि की औषध नहीं जानता। वैद्य बन कर रहनेवाले नीलमणि वर्ण ! मेरा वैसा सुधार करो जिससे मेरा पुनर्जन्म न हो और अपने मंदिर के मुखद्वार में प्रवेश करने दो। तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के मेरे स्वामी ! 6

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

459. अक्करै एन्नुम् अनत्त-क् कडलुळ्
अळुन्दि उन् पेर् अरुळाल्
इक्करं एरि इळैत्तु इरुन्देनै
अञ्चेल् एन्रु कै कवियाय्
चक्करमुम् तड-क् कैगळुम्
कण्गळुम् पीतक आडै-ओडुम्
चेक्कर् निरत्तु-च् चिवप्पु-उडैयाय्
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 7

460. एत्तनै कालमुम् एत्तनै ऊळियुम्
इन्रोडु नाळै एन्रे
इत्तनै कालमुम् पोय्-क् किरि-प् पट्टेन्
इनि उन्नै-प् पोहल् ओट्टेन्
मैत्तुनन्-मार्गळै वाळ्वित्तु
मार्रलर् नूर्रुवरै-क् केडुत्ताय्
चित्तम् निन् पालदु अरिदि अन्रे
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय ! 8

461. अन्रु वयिर्रिल् किडन्दु इरुन्दे
अडिमै शेय्यल् उर्रु-इरुप्पन्
इन्रु वन्दु इङ्गु उन्नै-क् कण्डु कोण्डेन्
इनि-प् पोग विडुवदु उण्डे
शेन्रु अङ्गु वाणनै आयिरम् तोळुम्
तिरु-च् चक्करम् अदनाल्
तेन्रि-त् तिशै तिशै वीळ-च् चेर्राय
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै एन्दाय् ! 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

459. उस पार कहलानेवाले अनर्थ सागर में (अर्थात् संसार में) मग्न हुआ था। अब तुम्हारी असीम कृपा से इस पार चढ़ (अर्थात् तुम्हारे पास आ), (तुम्हारी प्राप्ति न होने से) विह्वल ही रहनेवाले मुझको 'डरो मत' कह अभयप्रदान नहीं करते। चक्र और दीर्घ बाहु और नेत्र और पीतांबर के साथ संध्या-गगन-सम अरुण वर्णवाले! तिरु-माल-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के मेरे स्वामी!

[भगवान् के निरंतर चिंतन से संत श्रीविष्णुचित्त अपने को भगवान् के निकट देखते हैं। अतः भगवत्स्थान को 'इस पार' कहते हैं। उन्हें संसार अतिदूर दिखाई देता है। अतः उसे 'उस पार' कहते हैं। फिर भी यथामनोरथ भगवत्प्राप्ति और गुणानुभव न मिलने के कारण उनका मन विह्वल होता है।] 7

460. आज और कल कहलानेवाले कितने ही काल और कितते ही कल्प (बीत गये) इतने कालों में जा कर मायाजाल में फँसा हुआ था। (अब तुमने अपनी ओर आकृष्ट किया!) इसके बाद तुमको जाने नहीं दूँगा। फुफेरे भाइयों को सुखी रख शत्रु शत (कौरवों) को नष्ट किया (मेरा) चित्त तुम ही पर है। यह तुम जानते हो न? तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के हमारे स्वामी! 8

461. जब (माता के) गर्भ में पड़ा रहा उसी समय (तुम्हारी) सेवा करने की रुचि रखता था। आज यहाँ आकर (मैंने) तुमको देख लिया। इसके बाद तुम्हें जाने देना क्या संभव भी है? बाण के यहाँ जा कर उसके सहस्र भुजों को श्रीचक्र के द्वारा काट दिशा दिशा में गिरा पराजित किया। तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के मेरे स्वामी! 9

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

462. शेन्रु उलहम् कुडैन्दु आडुम् शुनै-तै-
तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै तन्नुळ्
निन्र पिरान् अडि-मेल् अडिमै-त् तिरम्
नेर्-पड विण्णप्पम् शेय्
पोन्-तिहळ् माडम् पोळिन्दु तोन्रुम्
पुदुवै-क् कोन् विट्टु चित्तन्
ओन्रिनोडु ओन्पदुम् पाड वल्लार्
उलहम् अळन्दान् तमरे । 10

V. iv. शेन्नि-ओङ्गु

463. शेन्नि ओङ्गु तण्
तिरु-वेङ्कटम् उडैयाय् ! उलहु-
तन्नै वाळ निन्र नम्बी !
दामोदरा ! शातिरा !
एन्नैयुम् एन् उडैमैयैयुम् उन्
चक्कर-प् पोरि ओर्रि-क् कोण्डु
निन्-अरुळे पुरिन्देन्
इनि एन् तिरु-क् कुरिप्पे । 1

464. परवै एरु परम् पुरुडा !
नी एन्नै-क् कै-क्-कोण्ड पिन्
पिरवि एन्नुम् कडलुम् वर्रि-प्
पेरुम् पदम् आहिन्रदाल्
इरवु शेय्युम् पाव-क् काडु
तो-क् कोलीइ वेहिन्रदाल्
अरिवै एन्नुम् अमुद आरु
तलै-प् पर्रि वाय्-क् कोण्डदे । 1

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

462. (सारे) लोक जाकर जिनमें अवगाहन कर स्नान करते हैं ऐसे निर्झरों से भरे तिरु-माल्-इरुञ्-चोलै (श्रीवनाचल) के भीतर खड़े उपकारक के चरणों के सेवा प्रकार को श्रीविष्णुचित्त ने, सुचारु रूप से निवेदन किया—श्रीविष्णुचित्त, जो कांचन से उज्ज्वल प्रासादों से उद्भासित हो शोभायमान श्रीविल्लिपुत्तूर के स्वामी हैं। उनके रचित एक से समन्वित नौ (अर्थात् दस) पदों का गान करने में समर्थ लोकविक्रांत (त्रिविक्रम) के दास हैं। 10

V. iv. शेन्नि-योङ्गु

[शिखरों से उत्तुंग]

(हृदय भर कर भगवान् का विकास)

463. शिखरों से उत्तुंग शीतल श्रीवेंकटाचल के स्वामी ! लोक को सुखी रखनेवाले तथा कल्याण गुणों से पूर्ण प्रभु ! दामोदर ! चतुर ! अपने को और अपनी वस्तुओं को तुम्हारे चक्र-चिह्न से अंकित कर, तुम्हारी कृपा ही की प्रतीक्षा में मैं रहा। इसके बाद क्या है तुम्हारा श्रीसंकल्प ? 1

464. गरुड़ पर आरूढ़ परमपुरुष ! तुमने मुझको अपना लिया। उसके उपरांत जन्म कहलानेवाला सागर भी शोषित हो महत्तर पद (परम धाम) हो गया है। अंतकारी पाप-वन भी आग लग कर जल रहा है। ज्ञानरूप अमृत नदी वर्धित हो सिर डुबो कर प्रवाहित हो गयी। 2

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

465. एम्मना ! एन् कुल देय्वमे !
एन्नुडैय नायकने !
निन् उळ्ळेनाय्-प् पेर्र नन्मै
इव्-वुलहिनिल् आर् पेरुवार्
नम्मन् पोले वीळ्त्तु अमुक्कुम्
नाट्टिल् उळ्ळ पावम् एल्लाम्
शुम्-एनादे कै विट्टु ओडि-त्
तूरुगळ् पाय्न्दनवे। 3

466. कडल् कडैन्दु अमुदम् कोण्डु
कलशत्तै निरैत्तार् पोल्
उडल् उरुगिवाय् तिरन्दु मडुत्तु
उन्नै निरैत्तु-क् कोण्डेन्
कोडुमै शेय्युम् कूर्रमुम् एन्
कोलाडि कुरुग-प् पेरा
तड वरै-त् तोळ् चक्कर पाणी।
शार्ङ्ग विल् शेवकने। 4

467. पोन्नै-क् कोण्डु उरै कल् मीदे
निरम् एळ उरैत्तार् पोल्
उन्नै-क् कोण्डु एन् ना-अहम् पाल्
मार्रु इन्रि उरैत्तु-क् कोण्डेन्
उन्नै-क् कोण्डु एन्नुळ् वैत्तेन्
एन्नैयुम् उन्लिल् इट्टेन्
एन्-आप्पा ! एन् इरुडीकेशा !
एन्-उयिर्-क् कावलने ! 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

465. मेरे शासन करनेवाले ! मेरे कुल देवता ! मेरे नायक ! तुममें अंतर्भूत हो मैंने जो महत्ता प्राप्त की, उसे इस लोक में कौन प्राप्त कर सकता है ? जनपद में स्थित सभी पाप जो यम के जैसे गिरा दबानेवाले हैं, वे चुं न कर, छोड़, भाग, झाड़ियों में घुस गये । 3

466. समुद्र को मथ, अमृत निकाल, कलश को भरने की तरह, विगलित शरीर, मुंह खोल, तुम्हें पान कर, (अपने में) भर लिया। क्रूर कर्मकारी मृत्यु भी मेरे शासन के अधीन स्थान के पास फटक नहीं सकती। विशाल पर्वतोपमित भुजवाले चक्रपाणि ! शार्ङ्ग धनुषधर वीर ! 4

467. सुवर्ण को ले कर उसकी शुद्धता परखने के लिये निकष-शिला पर घिसते हैं उसी तरह तुमको भी ले मैंने अपनी रसना पर निर्दोष रूप से घिस लिया। तुमको ले अपने भीतर रखा और अपने को भी तुम्हारे भीतर रख दिया। मेरे तात ! मेरे हृषीकेश ! मेरे आत्मा के रक्षक ! 5

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

468. उन्नुडैय विक्किरमम्
ओन्रु ओळियामल् एल्लाम्
एन्नुडैय नेञ्वहम् पाल्
शुवर् वळि एळुदि-क् कोण्डेन्
मन्-अडङ्ग मळु वलम्
कै-क् कोण्ड इराम नम्बी !
एन्निडै वन्दु एम्-पेरुमान्
इनि एङ्गु-प् पोगिन्रदे । 6

469. परुप्पदत्तु-क् कयल् पोरित्त
पाण्डियर् कुल-पति पोल्
निरु-प् पोलिन्द शेवडि एन्
शेन्नियिन् मेल् पोरित्ताय्
मरुप्पु ओशित्ताय् मल् अडर्त्ताय्
एन्रु एन्रु उन् वाचकमे
उरु-प् पोलिन्द नाविनेनै
उनक्कु उरित्ताक्किनैये । 7

470. अनन्तन् पालुम् गरुडन् पालुम्
ऐदु नोय्दाह वैत्तु एन्
मनम् तन्नुळ्ळे वन्दु वैगि
वाळ-च् चेय्दाय् एम् पिरान् !
निनैन्दु एन् उळ्ळे निन्रु
नेक्कु-क् कण्गळ् अशुम्बु ओळुह
निनैन्दु इरुन्दे शिरमम् तीरन्देन्
नेमि नेडियवने । 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

468. तुम्हारे सभी विक्रमों को भी छोड़े बिना अपने हृदय में दीवार (पर चित्र) के प्रकार से मैंने लिख लिया। (दुष्ट) राजाओं के दमनार्थ परशु को दक्षिण हस्त में ग्रहण करनेवाले (परशु) राम ! गुणपूर्ण ! मेरे पास आ कर (ठहरे) मेरे स्वामी ! इसके बाद तुम कहाँ जाते हो ? 6

469. (मेरु) पर्वत पर जिस प्रकार पांड्यों के कुलपति ने (स्वचिह्न) मकर को अंकित किया। वैसे ही श्रीसंपन्न अरुण चरण मेरे सिर पर (तुमने) अंकित किया (कुवलयापीड के) दंत का भंजन (तुमने) किया, मल्ल का नाश किया यह कह कहकर तुम्हारे ही वाचकों (अर्थात् नामों) की छाप से शोभित है मेरी जिह्वा। ऐसी जिह्वावाले मुझको तुमने अपना बना लिया।

[दक्षिण के मधुरा नगर में पांड्य वंश के नृपति राज करते थे। उस पांड्यवंश का मलयध्वज नामक एक राजा उत्तर के देशों पर चढ़ाई कर राजाओं को जीत कर मेरु पर्वत तक गया और उसने अपनी विजययात्रा के उपलक्ष्य में मेरु शिखर पर अपना नाम तथा ध्वज मकर दोनों को अंकित किया।

नीचे लिखे पुराण-वचनों पर यह वृत्तांत आधारित है—

"पुरूरवस्सुतः श्रीमान् इन्द्रद्युम्नो महाबलः।
पुत्रो महाभागो मलयाचलकेतुमान् ॥
स विजित्य नृपान् सर्वान् मेरोः दक्षिणपार्श्वगान्।
मेरौ स्वनाम चिह्नौ च लिखित्वा नृपसत्तमः ॥"

(पुरूरवा का पुत्र प्रबल श्रीमान् इंद्रद्युम्न था। उसका पुत्र था महाभाग मलयध्वज। मेरु के दक्षिण-पार्श्व में रहनेवाले सभी राजाओं को जीत कर इस नृपश्रेष्ठ मलयध्वज पांड्य ने मेरु पर्वत पर अपने नाम और (मकरध्वज) चिह्न को अंकित किया।)] 7

470. अनंत (नाग) पर तथा गरुड़ पर (अपने को) कुछ अध्रुव ही रख, मेरे मन के भीतर आ डटा रह, मुझको सुखी बना रखा (तुमने), मेरे प्रभु ! अपने भीतर ही (मनमें) सोच कर स्थित हो विगलित हो नेत्रों से अश्रुजल बहा, ध्यान करते करते श्रमविहीन (अर्थात् निश्चित) हुआ। चक्रधर सर्वोधिक ! 8

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

471. पनि-क् कडलिल् पळ्ळिकोळै-प्
पळग-विट्टु ओडि वन्दु एन्
मन-क् कडलिल् वाळ वल्ल
माय मणाळ ! नम्बी !
तनि-क् कडले ! तनि-च् चुडरे !
तनि उलहे ! एन्रु एन्रु
उनक्कु इडमाय् इरुक्क एन्नै
उनक्कु उरित्ताक्किनैये । 9

472. तड-वरै वाय् मिलिर्न्दु मिन्नुम्
तवळ नेडुङ् कोडि पोल्
शुडर् ओळियाय् नेञ्चिन् उळ्ळे
तोन्रुम् एन् शोदि ! नम्बी !
वड तडमुम् वैकुन्दमुम्
मदिळ् तुवरापतियुम्
इडवगैगळ् इहळ्न्दिट्टु
एन् पाल् इट वगै कोण्डनैये । 10

473. वेयर्-तङ्गळ् कुलत्तु उदित्त
विट्टु चित्तन् मनत्ते
कोयिल्-कोण्ड कोवलनै-क्
कोळुम् कुळिर् मुहिल् वण्णनै
आयर् एर्रै अमरर् कोवै
अन्दणर्-तम् अमुदत्तिनै
चाथै पोल्-प् पाड वल्लार्
तामुम् अणुक्कर् गळे । 11

पेरियाळवार तिरुमोळि

मुर्रिर्रु

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

471. हिमसागर में (क्षीर सागर में) शयन को विस्मरण कर, दौड़े हुए आ मेरे मन-समुद्र में सुखी रहने में समर्थ मायावी दूल्हा ! गुण-पूर्ण ! निरुपम सागर (क्षीर-सागर), निरुपम सूर्य (मंडल), निरुपम लोक (परमधाम) ऐसे ऐसे स्थान यद्यपि तुम्हारे लिये हैं, (तुमने) मुझको अपना बना लिया । 9

472. ऊँचे पर्वत पर उद्भासित हो चमकनेवाले धवल दीर्घ ध्वज के जैसे द्युतिमान तेज हो हृदय के भीतर आविर्भूत मेरे ज्योति ! गुणपूर्ण ! उत्तर (दिशा के क्षीर समुद्र) तट और वैकुंठ और प्राकार-परिवृत द्वारावती अपने रहने के इन स्थानों का तिरस्कार कर मुझमें ही स्थानग्रहण कर लिया । 10

473. वेयर्-समूह के कुल में उदित विष्णुचित्त के मन में ही आलय ग्रहण करनेवाले गोपाल को सुंदर शीतल जलदवर्ण को, आभीर-वृषभ को, अमरों के अधिदेव को, ब्राह्मणों के अमृत को गाने में जो समर्थ हैं वे स्वयं छाया जैसे अतरंग हैं । 11

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

॥ हिन्दी भवन, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन ॥

१९८०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Address	Customer Care Number
2nd Floor, S.C.O. 26, Commercial Complex, [illegible]	51617766
Plot No. 6, Community Centre, Push Vihar, South Delhi - 110062	51617766
Pragati Deep, 3rd Floor, Unit Nos. 301 to 308, Plot No. 8, Laxmi Nagar Distt Centre, Vikas Marg, New Delhi - 110092	51617766
Plot No. K-3, 6th Floor, Brahm Datt Tower, Sector 18, Noida - 201301, Uttar Pradesh	51617766
Plot A-9, Netaji Subhas Palace, Pitampura, West Delhi - 110034	51617766
B-1, Mahatta Tower, 4th Floor, DDA Commercial Centre, Janakpuri - 110058	51617766
1st & 2nd Floor, Plot No. 255 256, Sector 12, Phase I, Urban Estate, Karnal - 132001	9896177766
1st Floor, S.C.O.-9/10/11, Sector 9-D, Madhya Marg, Chandigarh - 160017	9815977766
Plot No. 22-23, 1st Floor, G.T. Road, Above Panjab & Sindh Bank, Jallandhar - 144001	9815977766
7th & 8th Floor, S.C.O. 146 & 147, Land Mark Chambers, Firoz Gandhi Market,Ludhiyana - 14100	9815977766
Building No. 6, 2nd Floor, Chotti Baradari, Patiala - 147001	9815977766
ATS Computer, 2nd Floor, Above Bharat Overseas Bank, Court Road, Amritsar - 143001	9815977766
1st Floor, Raj Honda Building, Plot No. 195/11, Kacheri Road, Ajmer - 305001	9828020066
Plot No. C-93, Subhas Marg, C Scheme, Jaipur - 302001	9828020066
117/4, PWD Colony, 1st Floor, Jodhpur - 342003	9828020066
15-A, Rajpur Road, Dehradun - 248001	9897307766
Padamdeep Building, 1st Floor, Sanjay Place, Agra - 282002	9897307766
13, S.P. Marg, Civil Lines, Allahabad - 211001	9897307766
Kailash Building, 1st Floor, 12 C & 12 D, Civil Lines, Near Old R.T.O.Office, Bareilly- 243001	9897307766
J.S.Tower, 6th Floor, 16/106, Mall Road, Kanpur - 208001	95522 229455
Mayfair, 1st & 2nd Floor, Thandani Mansion, 31/49, M.G. Marg, Hazratgunj, Lucknow - 226001	9935277766
Krishna Palace, 3rd Floor, Tejgarhi, Garh Road, Meerut - 250005	9897307766
5th Floor, Arihant Complex, Sigra, Varanasi - 221010	9897307766

West	
Address	Customer Care Number
6th Floor, Abhijeet III, Law Garden Road, Near Mithakali, 6 Road, Ahmedabad - 380006	9898277766
Corporate House, 3rd Floor, Judges Bunglow Road, Bodakdev, A32/832, Sarkhej Gandhi Nagar Highway, Ahemdabad - 380015	9898277766
2nd Floor, Landmark Complex, Race Course Circle, Baroda - 390007	9898277766
Orbit Plaza, 2nd Floor, Swami Vivekanand Chowk, Dr. Yagnik Road, Rajkot - 360001	9898277766
Empire State Building, 1st Floor, Unit No. 101, Udhna Darwaja, Ring Road, Surat - 395002	9898277766
Royal Gold, 2nd Floor, 201-207, Y.N. Road, Indore - 452001	9898277766
Alankar Palace, 1st Floor, Plot No. 11, Zone - II, M.P. Nagar, Bhopal - 462011	9898277766
Alaknanda, 2nd Floor, Adalat Road, Aurangabad - 431005	9898277766
1089, Appa Saheb Marathe Marg, Prabhadevi, Mumbai - 400025	28307766
2nd Floor, Ketan Bhavan, Jamsheda Tata Road (Near Eros Cinema), Churchgate, Mumbai - 40[illegible]	28307766
Indraprastha, 1st Floor, Linking Road, Santacruz (W), Mumbai - 400054	28307766
601, Akrup Arcade, Jaiprakash Road, Opp Wadia High School, Andheri (W), Mumbai - 40005[illegible]	28307766
Shroff Arcade, 1st Floor, Sodawala Lane, Borivali (W), Mumbai - 400092	28307766
1st Floor, Shreepal Complex, M.G. Road, Ghatkopar (W), Mumbai - 400086	28307766
1st Floor, Golden Plaza, Golden Dyes' Compound (Near Royal Inn), Old Agra Road, Thane (W) - [illegible]0601	28307766
5th Floor, Dev - vrata (Near UTI), Sector 17, Vashi, New Mumbai - 400705	28307766
Gupta House, 2nd Floor, Ravindranath Tagore Road, Civil Lines, Nagpur - 440001	9890447766
Suyojit Chambers, Plot No. 186 C, 3rd Floor, Trimbak Road, Trimbak Naka, Nashik - 422002	9890447766
Sharang House, 5th Floor, Jungli Maharaj Road, Shivaji Nagar, Pune - 411005	9890447766
Sakh Ganga, S. No. 710, T.P. No. 3, Shankar Seth Road, Gultekadi, Swargate, Pune - 41100	9890447766
Dempo Towers, 3rd Floor, Units No. 204,305 & 306, Plot No. 16, EDC Plaza, Patto, Panjim - [illegible]001	9890447766

South	
Address	Customer Care Number
6-13-14, 1st Floor, Pizza World Building, 13th Lane, Arundelpet, Main Road, Guntur - 522002	9849577766
5th Floor, Reliance Classic, Road No. 1, Banjara Hills, Hyderabad - 500034	9849577766
4-1-52/6, 1st Floor, Sainag Complex, M.G. Road, Near Benz Circle, Vijayawada - 520010	9849577766
3rd Floor, 401, 402, 403, 10-1-03, Travelers Bungalow Road, CBM Compound, Visakhapatnam - [illegible]003	9849577766
Cears Plaza, 2nd Floor, #136, Residency Road, Bangalore - 560025	9849577766
No 84, 9th Main, 3rd Block, Jayanagar, Bangalore - 460011	9849577766
1st Floor, City Light Building, Balmatta Road, Hampankatta, Manglore - 575001	9849577766
Eureka Junction, 2nd Floor, Travellers Bungalow Road, Hubli - 580029	9849577766
3rd Floor, Thomson Towers, M.G. Road, North End, Kochi - 682035	9849577766
Skyline Citadel, 1st Floor, K.K. Road, Kottayam - 686004	9849577766
Poinchery's Building, 5th Floor, Kuruppath Lane, Round North, Thrissur - 680001	9849577766
4th Floor, Karimpanal Arcade, East Fort, Trivandrum - 695023	9849577766
Wavesha Corporate Center, No. 1, Village Road, Nungambakkam, Chennai - 600034	52107766
K.R. Buildings, 1st & 2nd Floor, Plot No. 11, Lattice Bridge Road, Above Pizza Corner, Adyar, Chennai - 600020	52107766
2nd Floor, Vigneswar Crestz, 1095, Avanashi Road, P.N. Palayam, Coimbatore - 641037	9894477766
Taos Complex, 3rd Floor, 41-Williams Road, Cantonment, Tiruchirapalli - 620001	9894477766
184/2, 2nd Floor, Gowri Plaza, Bye Pass Road, Madurai - 625010	9894477766

East	
Address	Customer Care Number
1st Floor, P.P. Towers, Main Road, Bistupur, Jamshedpur - 831001	1600222020
Ashirwad Mansion, 2nd Floor, Main Road, Ranchi - 834001	1600222020

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

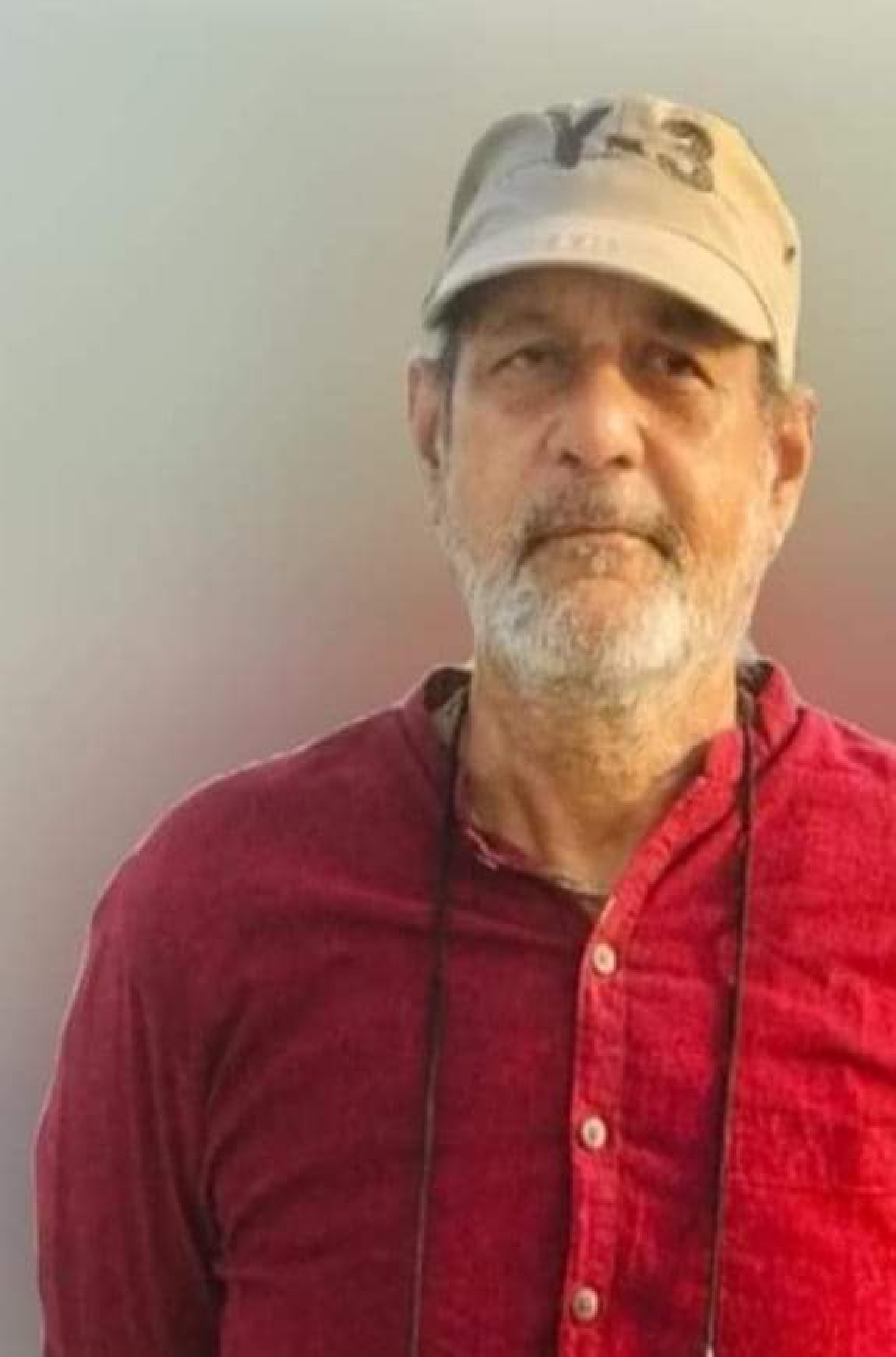
Y-3

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.